लालकिताब

1952

ग्रामर का हिस्सा

पेज 1 से 234

(कुल 1173 पेज में से)

(पंडित रूपचंद जोशी जी लिखित मूल उर्दू लिपित लालकिताब 1952 संसकर्ण में से एस्ट्रोस्टुडेंट्स द्वारा हिंदी लिपि में नक्ल की एक कोशिश)



पंडित रूप चंद जोशी जी

This is an attempt to tranliterate 234 out of 1173 pages of Lalkitab 1952 Original urdu edition-There may be errors. If you find any please convey at nirbhar@gmail.com and to be a part of this project. Thanks in advance.

आवाज सुनता हर किसी की

न ही भूला कोई हो

सब से पहले याद उसकी

फिर सभी दुनिया की हो

फेहरिस्त मज़ामीन

प्रथम

याद रहे या न रहे, मगर ख्याल जरूर रहे कि :-

इंसान बंधा खुद लेख से अपने लेख विधाता कलम से हो
कलम चले खुद करम पे अपने झगड़ा- अक्ल[1] न किस्मत[2] हो

क्योंकि

लिखा जब किस्मत का कागज वक्त था वह गैब का
भेद उसने गुम था रखा मौत दिन और ऐब का
ख्याल रखना था बताया कृतघ्न इंसान का
एवज लड़की लड़का बोला खतरा था शैतान का

1- हवाई ख्याल की बुनियादी दीवार का मजबून बेशक तुझे मौत का दिन, किसी के भेद या ऐब और माता के पेट में लड़का है या लड़की का इशारा कर देगा । अगर ऐसी बातों को अपने वक्त से पहले ही जाहिर कर देगा तेरे खून को कोढ़ (की बीमारी) का सबूत देगा । क्योंकि दुनिया में अगर इलाज है तो सिर्फ बीमारी का ही, मगर मौत का कोई चारा नहीं, और ज्योतिष भी गैब की वाक्फियत का इलम जरूर है । मगर कोई जादू-मंतर नहीं। यह सब दुनियावी हिसाब किताब है कोई दावा ए खुदाई नहीं। अगर है तो सिर्फ अपने जाति बचाव में किसी हद तक रूह की शांति के लिए मदद का ज़रिया है । मगर किसी दूसरे पर हमला करने का हथियार नहीं । किस्मत के मैदान में अगर कहीं पानी की नाली पीछे से भरी आ रही हो और उसके रास्ते में कोई ईंट पत्थर गिर कर उसकी रवानी को रोक रहा हो, तो मजमून की मदद से उस कंकर,

1- बुध 2- बृहस्पति

पत्थर को दूर कर के पानी की चाल को दुरुस्त करने की बामौका कोशिश की जा सकती है । मगर पानी की मिकदार या किस्मत के मैदान में कोई कमी बेशी नहीं की जा सकती। हाँ इतना जरूर है यह मजमून बाज़ औकात अपनी बरकत से किसी प्राणी पर हमला करने बाले ज़ालिम शेर के सामने एक ऐसी गैबी दीवार खड़ी कर देगा, जिससे कि वो शेर उसका कुछ बिगाड़ न सके। फिर भी शेर अगर और ऊँची छलांग से हमला करे तो ये मज़मून गैबी दीवार को और भी ऊँची करता चला जाएगा, मगर हमला करने वाले शेर पर न गोली चलाएगा और न ही उसकी टांग पकड़ेगा, मगर रूहानी मदद से वो शेर थक हार कर खुद ब खुद ही चला जाये या हमले का इरादा ही छोड़ देगा। जिससे दोनों अलहदा-अलहदा हो जाने पर वो प्राणी सुख का सांस लेने लगेगा ।

2.- मज़मून की बुनियाद पर "लाल किताब" की जिल्द सुर्ख खूनी लाल रंग की जो चमकीला न हो मुबारिक होगी । इस रंग के इलावा बाकि सब रंग मनहूस असर के ही होंगे ।

3- इस किताब में इल्म सामुद्रिक की अलिफ बे (35 हरफ) मुकम्मल तौर पर देने की कोशिश की गई है- मगर चूँकि एक फरमान दूसरे से बिलकुल जुदा ही होता चला गया है, इसलिए तमाम की तमाम किताब शुरू से आखिर तक कई दफा बार-बार बतौर नावल (बेशक बगैर समझे ही) पढते जाना खुद ब खुद ही मज़मून का भेद बता देगा ।

4.- किसी बात को आजमाने से पहले उसे अपने जाती फैसला से गलत समझ कर वहम खड़ा कर लेना मज़मून की वाक्फियत के लिए मददगार न होगा।

5.- किताब के बगैर फर्जी मन मानी या मनघडंत बात वहम पैदा कर देगी और वहम का इलाज शायद ही कहीं मिलता होगा ।

6.- कुंडली का बनाना और उसकी दुरुस्ती को जांचना तमाम मुतलका इलम की वाकफी के बाद शुरू करें और दरम्यानी वक्त में मौजूदा ज्योतिष के असूल पर बनाई हुई कुंडली से ही तजुर्बा हासिल करें, मगर ख्याल रहे कि अपने ही हाथ का खाना या अपनी ही

जन्म कुंडली, मजमून सीखने के रास्ते में सबसे बड़ी रूकावट होगी।

7.- मज़मून की गलती बताने वाला इस इल्म को बढ़ाने के लिए सबसे मददगार दोस्त होगा, क्योंकि असल दोस्त वो है जो नुक्स बतलाएं।

8.- बात की असलियत को पाने के लिए किसी दूसरे इल्म या आलिम की बदखोई से परहेज़ चाहिये।

9.- इसमें शक नहीं कि लड़कपन की तबियत वाले निंदक (बदखोई करने वाला) और कुएं के मेंढक (अपने दायरे में महदूद) जैसे दिमागी मालिक और मखौल उड़ाने वाले भोले बादशाह (बेवकूफ) से कराहत आ ही जाया करती है, मगर दुनियावी साथीयों को हस्बे हैसियत, इस इल्म से फायदा पहुँचाना इन्सानी शराफत होगी, क्योंकि :-

कर भला – होगा भला आखीर भले का भला

नये और पुराने मजमून का फर्क

यह किताब

जन्म वक्त दिन, माह उम्र सब कुछ इस्म नाम को भी मिटा देती है
फकत रेखा फोटो मकानों से कुंडली जन्म मय चंदर बना देती है
लिखत जब बिधाता किसी की हो शक्की उपाओ मामूली बता देती है
ग्रह फल व राशि के टुकड़े दो करती या रेखा में मेखा लगा देती है.

1- इस इल्म की बुनियाद इल्म समुद्रिक पर है. जिस से मौजूदा ज्योतिष के मुताबिक बनी हुई जन्म कुंडली के लगन की दुरुस्ती करने में मदद मिलती है. जब प्राचीन ख्यालात पर सनिचर की 2½ मंदी चाल के 3-बड़े चक्करों (2½ X3- साढ़े सात साला साढ़ सती की फिकर माननी पड़े, तो लाल किताबी मजमून की बुनियाद पर सनिचर के मंदे वाक्यात मसलन सांप डसने की वारदातें, मकान गिर जाने या बिक जाने, आंखों की नजर(बुनियाद) की खराबियां, चचे पर जान तक की तकलीफ, या मवेशियों के नुकसान वगैरह वगैरह अपना सबूत देंगे, कि सनिचर मंदा हो बैठा. गर्जेकि सूरज की अंतरदशा या सनिचर कि साढ़ सती चल रही है के क्यासी ख्याल की बजाये ठोस चीजों और पक्के वाक्यात की बुनियाद पर जिंदगी के ख्यालात के ज्वाबों को दुरुस्त माना गया है। हस्त रेखा से टेवा टिपड़ा दुरुस्त करके जिंदगी के हालात मालूम करने के इलावा इस इल्म में हर शख्स के टेवे से उस 120 बर्ष की उमर तक वर्षफल चँद मिंटों में बना लेने के लिये ग्रह चाल फहरिस्त मौजूद है.

2.- शक्की असर की हालत के वक्त शक का फायदा उठाने के लिये उपाओ निहायत

आसान और कम कीमत के बताये गये हैं, जो अमूमन ठीक वक्त पर असर देते हुए पाये गये हैं.

3.- मजमून बहुत लंबा चौड़ा होने की वजह से सिर्फ उन ही वाक्यात का ज़िक्र है जो निहायत संगीन शदीद बल्कि खून से लिखे जाने के काबिल हों. मामूली तप (बुखार) या साधारण कष्ट की बजाय तपदिक, मिर्गी, अधरंग, इंसान बाकि है या चल गया(मर गया) वगैरह का बयान किया गया है. गर्जेकि दरमियानी शक्की जवाब को दूर करने की कोशिश की गयी है.

4.- प्राचीन (पुराने) ज्योतिष में अगर राहू जन्म कुंडली के पहले घर में हो तो केतु उस कुंडली में हमेशा लगन से 7वें होगा. बुध भी सूरज के आगे पीछे या नजदीक साथ साथ चलता होगा. मगर ग्रहों की ये कैदें इस मजमून में नहीं रखी गयीं. बल्कि इस मजमून के मुताबिक वर्षफल बनाने की दी हुई फहरिस्त की बुनियाद पर राहू और केतु एक दूसरे के नजदीक घरों में इकट्ठे भी आ सकते हैं. इसी तर्ह हो सकता है कि बुध का ग्रह सूरज से ख्वाह कितने ही घर दूर हो जावे. गर्जेकि इस मजमून में हर एक ग्रह अपनी अपनी जगह आजाद होगा. और उस की अपनी बैठक, ग्रह चाली हालत या तरीका असर पर किसी तरह की कैद न होगी. और तमाम ग्रह मुसावी हकूक के मालिक होंगे.

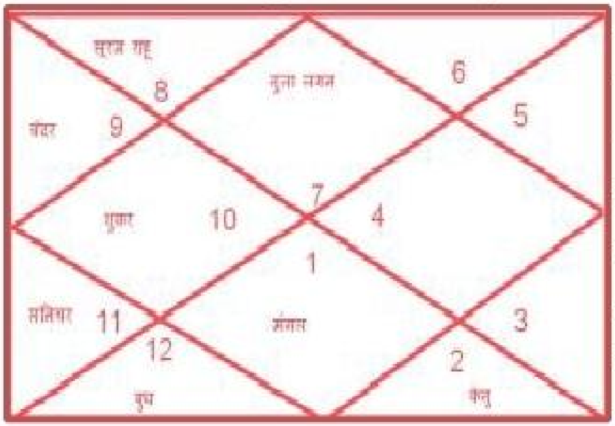
5.- खास बात ये है कि टेवे या कुंडली से जिंदगी का मुतलका फलादेश देखने के असूलों में :-

राशि छोड़ नछत्तर भुलाया	न ही कोई पँचांग लिया
मेख राशि खुद लगन को गिन कर	12 पक्के घर मान गया

इल्म ज्योतिष के मुताबिक बनी हुई जन्म कुंडली लगन वाला घर लाल किताब में मेख राशि का पक्का घर हमेशा हिंदसा नंबर 1 होगा, जिस के बाद बाकी सब घर बातरतीब गिनती में होंगे, यानि पुराने इल्म ज्योतिष वाले ख्वाह कोई भी जन्म राशी रख कर लगन मुकर्रर करें, उन की जन्म राशी

या लगन वाले खाना नंबर को "लाल किताब" के मुताबिक खाना नंबर एक और फिर बाकि घरों को बातरतीब ही मिलेगा.

मसलन कोई जन्म कुंडली बमूजिब तुला लगन हस्बज़ैल है:-



अब तमाम घरों से सिर्फ हिन्दसे मिटा दिये. मगर ग्रह वैसे के तैसे ही लिखे रहने दिये. इस के बाद उस में हिंदसे मिटाये हुये की कुंडली के लगन के घर को एक का हिंदसा दिया तो वह हस्ब जैल होगी (सिर्फ हिंदसा नंबर बदल जायेंगे,मगर ग्रह हूबहू उन ही घरों में रहेंगे,जहाँ कि वह पहले थे.



अब हालात देखने के लिये बृहस्पति खाना नंबर 1, सूरज नंबर 2 वगैरह मुलहजा करें. इसी तरह ही बर्षफल पढ़ लेंगे.

इस तरह ~~पड़~~ Per प्राचीन ज्योतिष के मुताबिक राशियों का लगन की तब्दीली के कारण जन्म कुंडली में घूमते रहने का चक्कर जाता रहा. पँचांग की लंबी चौड़ी गिनती उड़ गई. और आखिर पर फलादेश देखने के वक्त 28 नछतर और 12 राशियाँ भी भुला दी गयी.

6.- जन्म कुंडली में इकट्ठे बैठे हुए ग्रह वर्षफल में भी अलहदा अलहदा न किये गये. जिस से लगनेश धनेश वगैरह की पुरानी गिनती का ख्याल खुद बखुद ही खत्म हुआ.

7.- ग्रहों का असर उनकी अश्या , कारोबार, या रिश्तेदार मुत्तलिका के कायम होने से पक्का होने का भेद जाहिर हुआ. जो जरूरत के वक्त मददगार साबित हुआ.

आगाज़

हाथ रेखा को समुंदर गिनते नज़ूम फलक का काम हुआ
इल्म क्याफा- ज्योतिष मिलते लालकिताब का नाम हुआ

लाल किताब के फरमान

लालकिताब के फरमाए यूं अक्ल[1] लेख[2] से लड़ती क्यों

जबकि

न गिला तदबीर अपनी न ही खुद तहरीर हो

सब से उत्तम लेख गैबी माथे की तकदीर हो

उमंगो से भरे हुए शहज़ोर और जमाने के बहादुर पहाड़ चीरने वाले नौजवान ने हाथ पर हाथ रखे हुए आसमान की तरफ देखने की बजाय जब अपने सैर से पाँव तक कोशिश करने के बाद नतीजा हस्ब निशा न पाया, और अपनी आँखों के सामने एक मामूली नाचीज हस्ती को जिन्दगी के चँद लम्हों में दुनिया की सब जरूरियात का मालिक और जमाना का सरताज होते हुए देखा तो उस के वजूद के अंदर छुपा हुआ दिल तड़प कर उसकी पेशानी से पानी के कतरे हो कर बहता हुआ पूछने लगा जि इस में भेद क्या है कि जिस के जवाब में फरमान हुआ कि :-

न जरूरी नफ्स ताकत न ही अंग दरकार हो
लेख चमके जब फकीरी राजा आ दरबार हो.

Pardesh

दोनो मुश्तर्का खाली आकाश – में हवाई दुनिया का ~~प्रवेश~~ – 1- बुध , 2- बृहस्पति

फ़रमान नम्बर 1

कुदरत से किस्मत किस तरह आई

1. हुक्म बिधाता जन्म मिले तो लेख ज्योतिष बतलाता है
लाल किताब बच्चा[1] ग्रह चाली किस्मत साथ ले आता है
2. इस बच्चे की नन्हीं मुट्ठी में पकड़ा देव आकाश का है
भरा खज़ाना जिसके अंदर निद्धि सिद्धि की माला है
3. 9 निद्धि को ग्रह 9 माना सिद्धी 12 राशि है
9 में ज़रब जब 12 देते होती माला[2] पूरी है

जब बच्चा पैदा होता है बँद मुट्ठी लाता है, जिसे वह अमूमन बँद ही रखता है और आसानी से किसी दूसरे को अपने हाथ की हथेली देखने नही देता गोया बचपन में वह अपना कुदरती भेद और छोटी से मुट्ठी का खज़ाना किसी दूसरे को दिखाना नही चाहता, बँद मुट्ठी में क्या

[1] **ग्रहचाली बच्चा-** आसमान और पाताल से घिरे हुऐ आकाश में दोनों जहान और दोनों अवस्था (जन्म और मरन) की हवा को गांठ लगा देने वाली चीज़ बच्चा ग्रहचाली कहलाई।
[2] **ग्रह चाली माला** - 9 ज़रब 12=108 मनकों की माला और मुकम्मल इँसान के नाम के पहले 108 का हिंदसा ग्रहचाली माना गया है।

है, सिर्फ़ खाली जगह जिसका दूसरा नाम आकाश है, और उसमें सिर्फ़ हवा भरपूर है। मुट्ठी के हिलते ही उसके अंदर की हवा में हरकत आई, गोया हरकत से गरमी, गरमी से आग और आग से पानी, पानी से मिट्टी और मिट्टी से दुनिया का सब ब्रह्माँड पैदा हुआ या यूं कहो कि जब बच्चे ने मुट्ठी खोली तो उसमें हाथ की हथेली और उंगलीओं का हिस्सा जुदा जुदा मालूम होने लगा। कहीं लकीरें - कहीं निशान पाए गए। उंगलियों के भी कई कई टुकड़े जुदा जुदा और फिर इकट्ठे एक ही में मिले हुए नज़र आने लगे। हाथ की हथेली .खुश्की का एक निहायत ही बड़ा बर्रेआज़म या ब्रह्माँड माना गया। हथेली पर पहाड़ की तरह ऊपर को उभरी हुई जगह का नाम बुर्ज मुकर्रर हुआ। लकीरों को रेखा का नाम मिला, जो पानी के दरिया लहरें मारते और इधर उधर भागते हुए माने गए। किसी को उम्र रेखा और किसी को किस्मत रेखा से याद किया गया, और आख़ीर पर सब इकट्ठे मिल मिलाकर एक समंदर बना, जिसकी वजह से इस इल्म का नाम भी सामुद्रिक या समंदर की विद्या ही ठहराया गया।

फ़रमान नम्बर- 2

उस की कुदरत का हुकमनामा कहां पाया गया

अक्स ग़ैबी ज़ाहिर पहले था सितारों पर हुआ
नक्श जिसका, पीछे दुनिया के दिमाग़ों, आ हुआ
दिमाग़ी खानों का असर, तब हाथ की रेखा, हुआ
चांद सूरज, फलकी दुनिया से जहां दो, बन गया
इल्म ज्योतिष, इस तरह पर जब सितारों से हुआ।
सीधी टेढ़ी, हाथ रेखा के कियाफ़ा, चल पड़ा।

दिमाग़ दायां / बायां हाथ बाएं /दाएं पर चमक जब दे चुका

हुक्मनामा उसकी कुदरत /अपनी किस्मत मुट्ठी बँद, ईँसान था

दरअसल सब के मालिक ने ईँसान के साथ उसके लिए मुकर्रर किए हुए कामों का हुक्मनामा हथेली पर लिखा हुआ उसके अपने ही कब्ज़े में ऐसे ढंग से भेजा है कि वह कभी गुम न होने पाए, और न ही उसमें कोई तब्दीली या धोकादही की जा सके। मगर उसकी शक्की हालत को दुरुस्त करके उसकी शक का फ़ायदा बेशक उठा लिया जाए।

हथेली के वसीह बर्रेआज़म पर ऊपर को उठे हुए बुर्ज या पहाड़ जिस कद्र ऊंचे ~~और~~ लम्बे चौडे और मज़बूत होंगे, उसी कद्र ही एक दूसरे की अच्छी या बुरी हवा की रोक थाम कर सकेगें।

दरिया की नदियां या समंदर के मददगार दरिया जिस कद्र गहरे और साफ तह ज़मीन वाले होंगे उसी कद्र ही उनमें पानी की ज्यादा चाल या पक्का असर होगा। जिस कद्र नदियां और दरिया कम गहरे और तंग होंगे उसी कद्र उनमें न सिर्फ़ पानी कम या उनका असर हलका होगा बल्कि असर के वक्त की रफतार भी मद्दम होगी। रेखा में ,मुख्तलिफ निशान दरिया में बरेती जज़ीरे या रास्ते की रुकावटें होंगी. दरिया, या रेखा, जिस जिस पहाड़ या बुर्ज के इलाके से गुज़र कर आएंगे, उसी उसी किस्म का असर उनकी साथ लाई हुई मिट्टी में मौजूद होगा, ओर बुर्ज या पहाड़ की जड़ी बूटियों और मुख्तलिफ किस्म की दवाइयों के पौदों से आई हुई तेज़, मध्यम, मीठी या कड़वी हवा के असर का साथ होगा। हूबहू यही अवस्था ग्रहों की मुख्तलिफ राशियों के लिए मुकर्रर किए हुए घरों में होने पर इंसानी जिंदगी में होगी।

अगर कुण्डली हथेली का बर्रेआज़म बनी तो ग्रहों की नज़र का रास्ता या उनकी बाहमी द्रिष्टी ब्रह्मॉंड के दरियाओं की गुज़रगाह होगी, जो उनके असर में ग्रह मण्डल की ज़ाती दोस्ती व दुश्मनी से

पैदा शुदा लहरों की उकसाहट से **हज़ारहा** किस्म की तब्दीलियां वाकय करने का बहाना होगी। और ग्रहों की मुकर्ररा मियादों पर अक्सर ज़ाहिर हुआ करेंगी।

उगंलियों के पोरों (हिस्सों) और हथेली के बर्रेआज़म हर दो ही के बारह बारह टुकड़े हुए, और बुर्जो या पहाड़ों को 9 हिस्सों में तकसीम किया गया। **यही 9 निधि (ग़ैबी ताकत) और 12 सिद्वि (इंसानी हिम्मत) इस इल्म की बुनियाद हुई।**

ग्रह राशि और रेखा के अलावा, मकान, जाये रिहाइश, ख्वाब माल मवेशी, दुनिया के दूसरे साथी, दीगर शगुन (शुभ निशानियां) और इल्म कियाफ़ा इस मज़मून के ज़रुरी पहलू गिने गए।

ज्यूँ ही कि गैबी अक्स दिमाग़ी ख़ानों में नक्श होकर हाथ की रेखा के दरियाओं के पानी में ज़ाहिर हुआ, दुनिया के पहाड़ों का लम्बा सिलसिला हथेली के बुर्जो में बुलंदी से दिखाई देने लगा और बच्चे के सांस की हवा ने भी रुख़ बदला, जिस पर पहाड़ों से घिरी हुई हथेली का बर्रेआज़म और चारों उंगलियों के वसीह मैदानों के 12 कोने जन्म कुण्डली में हूबहू वैसे के तैसे ही पाए गये, अगर जुदा रहा तो सिर्फ़ अंगूठा (अंगुश्त नर) ही बेरुख पाया गया, जो उन तमाम का मेहवर (अंगूठे की कीली) और दुनियादारों के पुन्य-पाप का पैमाना मुकर्रर हुआ। दूसरे लफ्जों में हथेली की लकीरों या 12 ख़ानो और उंगुलियों की 12 ही गांठो से जो गैबी अक्स ज़ाहिर हुआ वह हूबहू कुण्डली के 12 ख़ानों में 9 ग्रहों की मुख्तलिफ अवस्था से ही पाया गया। (सफा 15 खत्म)

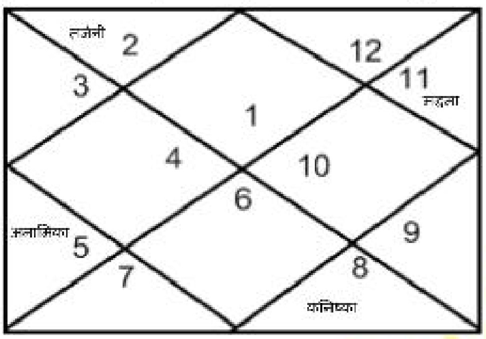
फ़रमान नम्बर- 3

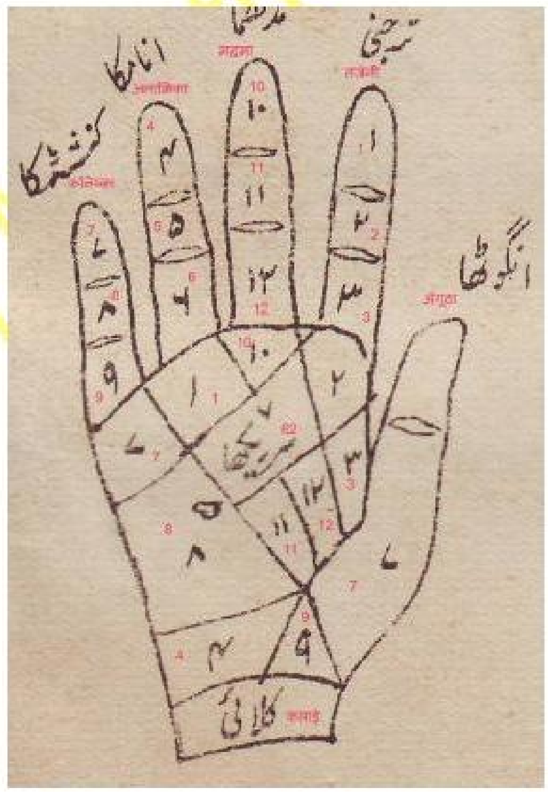
ऊंचे फलक का अक्स किधर है

हाथ दायां और कुण्डली जन्म को तदबीर मर्द का नाम हुआ
कुण्डली चंद्र या हाथ बायें से तकदीर बशर का काम हुआ
उलट हाथों से औरत माना ग्रहफल राशि आम हुआ
नेक हवा- जब चलने लगी तो जहाँ दोनों का नाम हुआ

गोया हाथ में कुण्डली और कुण्डली में उंगली के हवाई इशारे से ब्रह्मॉंड का मैदान एक ही दम में गूंज उठा।

हथेली का हिस्सा होगा जन्म कुण्डली का ख़ाना नम्बर





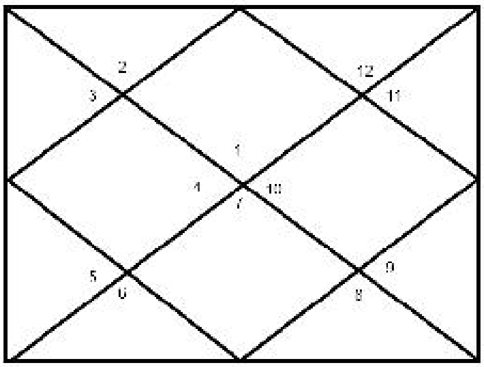
हथेली का हिस्सा होगा ---- जन्म कुँडली पर

मुट्ठी का अंदर ---------------- 1-7-4-10
तर्जनी उंगली. ----------------- 2
अनामिका -------------------- 5
कनिष्का --------------------- 8
मद्दमा ----------------------- 11
आसमान होगा --------------- 12
पाताल --------------------- 6
तीनों ज़माने ----------------- 3
कुण्डली का मरकज़ ----------- 9

सफा 16 खत्म

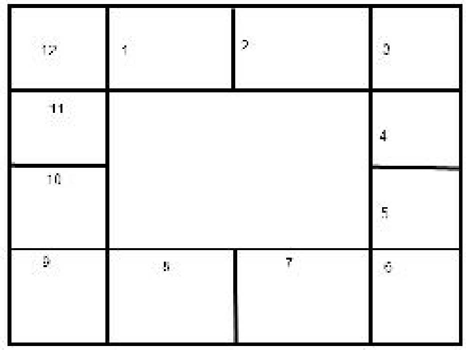
Anti clockwise

जन्म कुंडली इलाका पंजाब



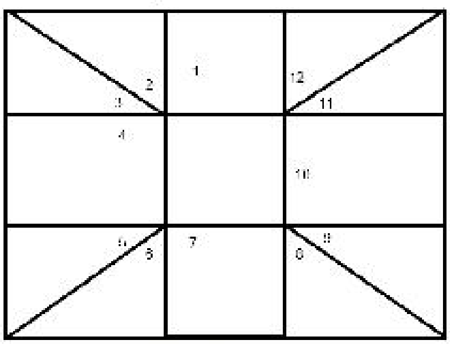
Clock wise

जन्म कुंडली इलाका मद्रास

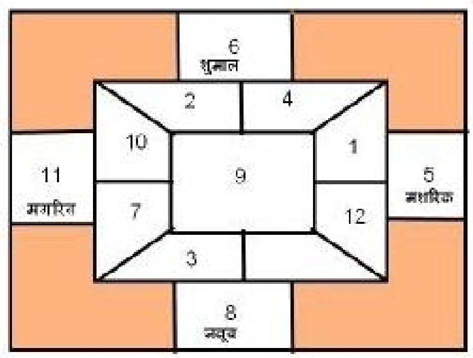


Anti clockwise

जन्म कुंडली इलाका बंगाल



मकान कुंडली



लालकिताब 1952 सफा 18,

फरमान नं० 4

आलम को इल्म के शक क्या है.

ज़न्म वक्त

समा करे नर क्या करे   समा बडा बलवान

असर ग्रह सब[1] ही पर होगा परिन्द, पशु इंसान.

बच्चा गैबी पर्दे से माता के पेट में आया। फिर बंद हवा से इस दुनियां में पहुँचा तो उसके साथ की दो जहानी हवा उसका सांस हुई, जिसके लेते ही जमाने की दोरंगी चालों के मैदान का लँबा-चौड़ा हिसाब किताब खुल गया। जिस पर हर बात के दो पहलू होने लगे या यूँ कहो कि:- जन्म का वक्त पता लग जाने से ज़िन्दगी के ख्वाब की ताबीर (नतीजा या हालात) मालूम करने का खाका (जन्म कुन्डली) इल्म ज्योतिष के मुताबिक तैयार होता हुआ माना गया। मगर शक हुआ कि एक बाप[2] के दो बेटे,

---

[1] जन्म वक्त को बुनियाद मान कर जिस तरह ये मज़मून इंसान के ताल्लुक में काम देता है, हूबहू उसी तरह ही इस इल्म का असर परिन्दों , मकान या दूसरे दुनियावी अहम (बहुत जरूरी वाक्यात) और कामों के ताल्लुक में पाया गया है. यानि अगर वक्त की पैदाइश के मुताबक किसी इंसान की जन्म कुँडली इसके हालात से खबर देगी,तो इस वक्त पर पैदा शुदा हैवान या बनाया हुआ मकान ग्रह चाल असर से खाली न होगा.

[2] एक बाप की एक ही औरत से दो जौंडे(जुड़वाँ) बच्चे या उस की दो मुखत्लिफ औरतों से एक ही वक्त में दो इकट्ठे पैदा शुदा बच्चे

एक घर के दोनों[3] भाई , एक शहर दो[4] निवासी, एक वतन दोनो[5] साथी, हम उम्र[6], एक जमान एक नसल खवाह बेगाना, सब ही का जन्म वक्त एक ही होने पर हालात की दुरुस्ती की बुनियाद क्या होगी. बर अक्स इस के भूँचाल, हादसा, दरियाओं, की तग्यानी , ज़ँग ए अज़ीम की गोलाबारी, या दीगर दबाई और जहरीले वाक्यात से हज़ारों लाखों का आखिरी वक्त(मौत) भी एक ही जैसा और एक ही होता हुआ देखा गया, तो फिर सब का सब निश्चय(निसचा)जाता ही मालूम होने लगा. इस पर ख्याल गुजरा कि हस्त रेखा और इल्म क्याफा के मुताबक जब हर एक की रेखा और लकीरें जुदा जुदा हैं हालात का नक्शा तसल्ली बख्श न होगा. मगर फिर भी वहम पैदा हुआ,कि जब 12 साला बच्चे की रेखा का कोई एतबार नहीं और 18 साला उमर से बडी रेखा में कोई तबदीली नहीं मानते(मगर शाखों का बदलना माना गया है) तो यकीन किस बात पर होगा.इस तरह दोनो इल्मों से कोई दिलजोई न हो सकी,क्यों कि एक तो जन्म वक्त(लगन) गलत होने की वजह से ही बे बुनियाद हो गया, और दूसरा सिर्फ एक अकेले ही की जिन्दगी का नेक बद (तबीयत की नरमी गर्मी) बता कर चुप हुआ. और किसी दूसरे साथी या ताल्लुकदार का कोई

[3] ताया चाचा जाव या खालू मामू के घरों एक ही वक्त मे इकट्ठे पैदा भाई

[4] ख्वाह आलीशान राजा, ख्वाह निर्धन दुखिया फकीर मगर दोनो एक ही शहर में इकट्ठे रहने वाले निवासियों के यहां एक ही वक्त में पैदा शुदा बच्चे

[5] एक कशमीरी - दूसरा मदरासी – तीसरा महाराष्ट्रि तो चौथा बंगाली,मगर सब इलाकों के वासियों के यहाँ एक ही वक्त में पैदा सहिदा बच्चे

[6] एक मुल्क से गए हुए, मगर एक लंका में दूसरा अमरीका में तीसरा इंग्लैंड तो चौथा जापान में . अगर वक्त की जमा तफरीक कर कराने के बाड़ा सबा के बच्चो का जन्म वक्त एक ही हो तो सब का जन्म लगन भी एक ही होगा . मगर ज़िंदगी के हालात अमूमन कभी एक ही न होंगे .

वास्ता न बता सका. तो आखिर पर हर अमलों को इकट्ठा किया गया.मगर फिर भी यही मालूम हुआ कि बुनियादी असूलों की वाकफियत के बगैर कोई मतलब हल न होगा. हज़ा शक को दूर करने के लिये या इस का फायदा उठाने के लिये इस इल्म में ग्रामर- फलादेश और योग बँधन वगैरह के अलह्दा अलह्दा हिस्से मुकरर हुए.।

ग्रारम्भर

फ़रमान नम्बर 5

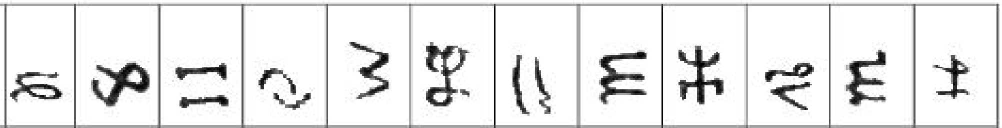
तकदीर पहले या तदबीर

बेटी आई - पहले दुनिया या कि पहले माता हो
जोड़े बच्चे पेट माता पहले जनमे छोटा हो

राशि

1 हाथ की उंगलियों की हर एक गांठ या 24 घंटे के दिन रात को 12 हिस्सों में तकसीम करने पर हर एक टुकड़ा (गो हर एक टुकड़ा ठीक पूरे दो घंटे का न होगा, मगर 12 टुकड़ो में से हर एक टुकड़ा) राशि कहलाता है।

2 राशियां तादाद में 12 हैं। जिनके नाम और नम्बर हमेशा के लिए एक ही मुकर्रर है। कुण्डली में बार बार हर राशि का नाम लिखने के बजाए, इसके लिए मुकर्रर किया हुआ हिंदसा नम्बर ही लिख दिया जाता है। प्रचलित (आजकल के जारी) ज्योतिष में राशियां कुण्डली के घरों में घूमती रहती है। मगर फलादेश देखने के लिए इस इल्म में उनकी जगह हमेशा के लिए पक्के तौर पर मुकर्रर कर दी गई है।

कियाफा में निशान												
मुकर्रिर नंबर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
राशि का नाम	मेष	बृष	मिथुन	कर्क	सिंघ	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन

मेख़[1] बृख[2] जब मिले मिथुन[3] से — तर्जनी ऊंगली गिनते हैं
कर्क[4], सिंघ[5] और कन्या[6] राशि — अनामिका ऊंगली लेते है
तुला[7] बृस्चक[8], धनु[9] तीनों की — छोटी कनिष्का होती है
मकर[10], कुंभ[11] और मीन[12] इकट्ठी — मद्धमा उगंली बनती है





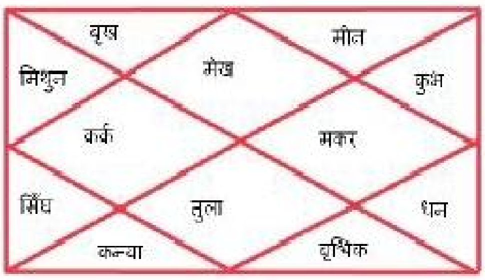
1 तर्जनी ऊंगली बृहस्पत या हुकूमत की ऊंगली होती है
अनामिका ऊंगली सूरज या ज़ाती(हिम्मत से)कमाई की ऊंगली होती है
कनिष्का ऊंगली बुध या इल्मो हुनर की ऊंगली होती है
मद्धमा ऊंगली सनीचर या उदासी या वैराग की ऊंगली होती है।

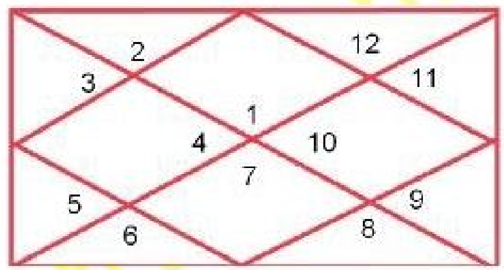
2 गिनती, चाल और जगह मुकर्रर करने के वक्त मद्धमा ऊंगली को सब ऊंगलियों के आख़ीर पर लेते है क्योंकि मद्धमा ऊंगली, उदासी, सन्यास, वैराग या दुनिया से अलाहदा गिनी है । जिसका ताल्लुक गृहस्त के बाद होगा। (सफा 23)





राशियों की कुण्डली में पक्की जगह





3. हर ग्रह की मुकर्रर रेखा भी कुण्डली का ख़ाना नम्बर हो जाती है। तर्जनी और मद्धमा के दरमियान ख़ाना नम्बर 11, अगूंठा नम्बर 2 होगा, दिल रेखा ख़ाना नम्बर 4 होगा, सिर रेखा ख़ाना नम्बर 7 होगा।

सनीचर का हैडकवार्टर जहां ख़ाना नम्बर 7 (तुला) ख़ाना नम्बर 4 (कर्क) ख़ाना नम्बर 8 (बृस्चक) ख़ाना नम्बर 9 (धनु) ख़ाना नम्बर बारह (मीन) और ख़ाना नम्बर 11 (कुंभ) सब के सब मिलकर बाहम काटते हैं। वह क्रासिंग प्वाइंट (*Crossing Point*) ख़ाना नम्बर 8 सनीचर के हैडकवार्टर की जगह होगा।

इस इल्म में जहां कहीं भी ख़ाना नम्बर का ज़िक्र होगा, तो मुराद होगी कि कुण्डली का ख़ाना नम्बर है, राशि नम्बर से मुराद न होगी, ख़ाना नम्बर 1 की लगन भी कहते हैं।

फ़रमान नम्बर-6

किस्मत की गांठों ही से ग्रह मण्डल बन गया

धरम दया ख्वाह कोसों ऊंची ख्वाह ही सख़ी लख दाता हो
उलटे वक्त खुद गांठ आ लगती लेख लिखता - था बिधाता जो।

ग्रह

दुनिया के आग़ाज़ और ब्रह्माँड के ख़ाली आकाश में (जो बुध का आकार है) सब से पहले अंधेरा (सनीचर का राज) मान कर इसमें रोशनी (सूरज की किरणों की चमक) का Pradesh ~~प्रवेश~~ ख़याल किया गया है। इस रोशनी (सूरज) और अंधेरे (सनीचर) दोनों के साथ साथ हवा (जो दोनों जहानों के मालिक बृहस्पत की राजधानी है) चल रही है। यानी हवा अंधेरे में भी होती है और रोशनी में भी हुआ करती है। मसलन शीशे का एक बाक्स हो तो उसके अंदर खाली जगह में भी हवा होगी और उस बाक्स के बाहर भी हवा महसूस होगी। गोया बुध का शीशा अंधेरे और रोशन दोनों को ही अंदर से बाहर और बाहर से अंदर .जाहिर होने की इजाज़त देगा। मगर वह (बुध या शीशा) हवा को बाहर से अंदर या अंदर से बाहर जाने न देगा। यही चक्कर में डाले रखने की दुश्मनी बृहस्पत से बुध को होगी या बुध के आकाश की ख़ाली जगह में किस्मत को ज़ाहिर करने वाला ग्रह चाली

बच्चा बुध की मदद से सूरज और सनीचर को जुदा जुदा रहने या इकट्ठे ही दम मारने की ताकत बख्श देगा। गोया बुध का शीशा ही बृहस्पत के दानों जहानों में गांठ लगा देगा और यह गांठ ही ग्रह है जिससे आकाश सब ही के लिए इकट्ठा गांठा हुआ मैदान है। या यूं कहो कि अक्ल (बुध) सब तरफ़ गांठे लगा रही है। मुख्तसरन अलहदा अलहदा चीज़ों के/को इकट्ठा होने/करने की हालत का नाम गांठ या ग्रह है। दूसरे लफजो में बृहस्पत (हवा) और बुध (आकाश) को इकट्ठा बांध देने वाली चीज़ की ताकत या बच्चा की किस्मत की उलझन पैदा करने वाली चीज़ ग्रह कहलाती है। किस्सा कोताह उंगलियों और हथेली को बाहम मिलाने वाली गांठ या हथेली की अपनी हर एक गांठ या बच्चे की अपनी माता के पेट के सफ़र की 9 मंजिलों की हर एक गांठ को ग्रह के नाम से याद करते हैं। गोया कुदरत की ताकत का असल नाम गांठ या ग्रह है, जिस की वजह से इल्म सामुद्रिक में भी हर बुर्ज की बुनियाद- उंगलियों की जड़ और हथेली की गांठ पर ही मानी गई है।

ग्रह तादाद में 9 है ओर वह कुण्डली के 12 ख़ानों में घूम जाने की ताकत के मालिक माने गये हैं। इँसान की तरह उनमें भी बाहमी दोस्ती – दुश्मनी, ऊंच या नीच हालत और उतम या मंदा असर देने का माद्दा माना गया है।

हर एक ग्रह अपना बुरा या भला असर ख़ास ख़ास मियादों पर दिया करता है।

नम्बर शुमार	ग्रहों के नाम					मस्नूई ग्रह (हर एक ग्रह के बराबर का)	निशान ग्रह
	नाम ग्रह	हिंदी में	फ़ारसी में	अंग्रेजी में	ग्रह का रंग		
1	बृहस्पत	गुरु बृहस्पत	मुश्तरी	Jupiter	ज़र्द	सूरज शुकर मुश्तरका ख़ाली हवाई	इद्रियां ॥। खड़े ख़त चक्कर संख्न सदफ़
2	सूरज	रवि	शमस	Sun	सुर्ख़ तांबा, ख़ाकी	बुध शुकर मुश्तरका	सितारा शाख़दार स.ात
3	चंद्र	चंद्रमां	कमर	Luna Moon	सफ़ेद (दूध)	सूरज, बृहस्पत मुश्तरका	आधा टेड़ा ख़त
4	शुकर	भृगु	ज़ोहरा	Venus	सफ़ेद (दही)	राहु केतु मुश्तरका	लेटे ख़त
5	मंगल नेक	भौम	मरीख़	Mars[A]	ख़ूनी सुर्ख़.	सूरज बुध मुश्तरका मंगल नेक	चोकौर मुसल्लस
	मंगल बद					सूरज सनीचर मंगल बद	
6	बुध	बुध	एतारद	Mercury	सब्ज़	बृहस्पत राहु मुश्तरका	दायरा
7	सनीचर	शनि	ज़ोहल	Saturn	स्याह	शुकर बृहसपत मुश्तरका केतु सुभाओं मंगल बुध मुश्तरका राहु सुभाओं	नरेग़म त्रिशूल विसर्ग
8	राहु	राह	रास	Rahoo	नीला	मंगल सनीचर मुश्तरका (ऊंच) हालत व सूरज सनीचर मुश्तरका (नीच) हालत	जाल साया सिर पदम
9	केतु	केत	जुनूब	Ketoo	चितकबरा स्याह सफेद मुश्तरका	शुकर सनीचर मुश्तरका (ऊंच) हालत चंद्र सनीचर मुश्तरका (नीच) हालत	साया धड़ का[B]

1 - Mars Positive मंगल नेक – Mars Negative- मंगल बद

2 यह ज़रुरी नही कि हर एक ग्रह अपने हाशिया की लकीरों से बने, हाथ पर रेशों से भी वही मुराद होगी, मिसाल-□ चारों तरफ की लकीरों से मिलकर मंगल बना। यही शक्ल ▥ अगर बारीक रेशों से हाथ के बाकी रेशों से जुदा हो जावे तो भी मंगल नेक होगा(सफा 27 खत्म)

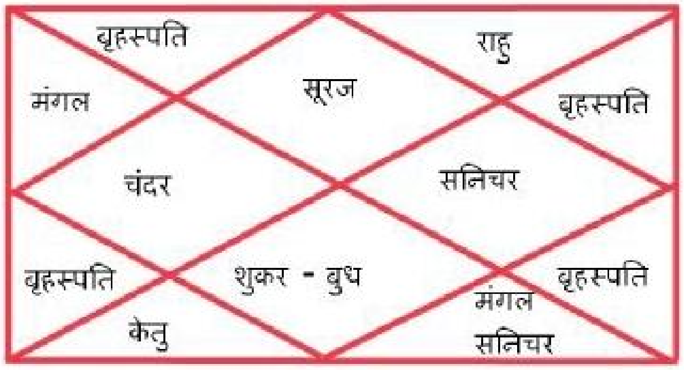
1) ग्रहों के मुफ़स्सिल तौर पर दिये हुए बयानों में देखने से मालूम होगा कि ब्रह्मॉंड की मुख्तलिफ चीज़ों को ख़ास ख़ास हिस्सों में मुकर्रर करके हर एक हिस्से का नाम हमेशा के लिए एक ही मुकर्रर कर दिया है और उन तमाम चीज़ो को लिखने पढ़ने में बार बार दोहराने की बजाय उनके लिए मुकर्रर किया हुआ एक नाम का ज़िक्र कर देते हैं, मसलनः स्त्री गाय लक्ष्मी, मिट्टी वग़ैरह वग़ैरह के लिए सिर्फ एक लफ़ज शुकर मुकर्रर है, जहाँ कहीं भी शुकर कर ज़िक्र होगा तो स्त्री, गाय, लक्ष्मी, मिटटी वग़ैरह वग़ैरह से मुराद होगी।

2) राशियों की तरह ग्रहों के लिए कोई पकका हिँदसा मुकर्रर नही है। मगर उनकी मुंदरजा ज़ैल ख़ास ख़ास किस्में ज़रुर मुकर्रर हैः-

गुरु, रवि, और मंगल तीनों नर ग्रह भी कहलाते हैं।
शनि, राहु और केतु तीनों पापी ग्रह बन जाते हैं।
शुकर , लक्ष्मी, चंद्र माता दोनों स्त्री होते हैं।
बुध मुखन्नस चक्कर सभी का जिसमें सब ये घूम ते हैं।

मंगल नेक मंगल बद
नेकी-बदी दो मंगल भाई शहद .जहर दो मिलते हैं।
बद, लालच, गर मारे दुनिया नेक, दान को गिनते हैं।

राहु और केतु सिर्फ़ दोनों को पाप के नाम से याद करते है। जब सनीचर को राहु या केतु किसी तरह से भी आ मिलते हों तो सनीचर पापी होगा और वैसे भी राहु, केतु, सनीचर तीनों का इकट्का नाम पापी है।



कुण्डली पक्के घर

शुकर से बुध को लंबी लकीर खाना नं: 5 है

हथेली पर ग्रहों के पक्के घर



हथेली पर बुर्ज के पक्के घर



बुर्ज[1] हथेली पर ऊपर को उठी हुई जगह का नाम बुर्ज (Mount) कहलाता है और हर एक बुर्ज की जगह हूबहू वही है जो कि इस ख़ाका में हर ग्रह की दिखाई गई है। इस तरह पर बुर्ज तादाद में 7 तो अलाहदा अलाहदा हैं और बाकि दो ग्रहों की पक्की जगह या बुर्ज दूसरे ग्रहों के साथ ही मुकर्रर है।

1- सूरज बृहस्पत मंगल नेक या बद चंद्र बुध शुकर सनीचर

(सफा 29 खत्म)

राहू और केतु को हथेली पर कोई पक्की जगह अलाहदा तौर पर नही दी गई। लहरों के मालिक है। एक ने इँसान को सिर से पकड़ा, और दूसरे ने पांव से, तो ख़ुद बख़ुद उनको जगह मिल गई और वह बुध (के साथ केतु जो नेकी का मालिक है, ख़ाना नम्बर 6 पाताल में) और बृहस्पत (के साथ राहु जो बदी का हाकिम है ख़ाना नम्बर 12 आसमान में) के साथ तमाम आकाश ब्रह्मॉड (जो बृहस्पत बुध दोनों मुश्तरका का नतीजा है) में हो बैठे और दुनिया और इस इल्म में पाप के नाम से मशहूर हुए।

ग्रह की मुख्तलिफ हालतें

पक्का ग्रह	दिन में [1]	हफ्ता में
बृहस्पत	पहला हिस्सा	वीरवार, गुरुवार
सूरज	दूसरा हिस्सा	इतवार रविवार
चंद्र	चांदनी रात	सोमवार
शुकर	काली रात	शुकर वार
मंगल नेक मंगल बद	पक्की दोपहर	मंगलवार
बुध नेक - बुध बद	4 बजे शाम	बुधवार
सनीचर	तमाम (सारी) रात अंधेरा दिन	सनीचरवार, शनिवार
राहु	पक्की शाम	वीरवार की शाम
केतु नेक केतु बद	सुबह सादिक	इतवार की सुबह

1-अगर एक दिन औसतन 12 घंटे पहले का अर्सा हो तो: केतु दिन चढ़ने से 2 घंटे पहले का बृहस्पति दिन निकलने के बाद8 बजे तक का अर्सा

सूरज 9 से 10 बजे का अर्सा, चंद्र 10 बजे से 11 बजे तक अर्सा

शुकर 1 बजे से 3 बजे तक अर्सा मंगल दिन के 11 बजे से 1 बजे तक बुध 4 बजे से 6 बजे तक सनीचर दिन डुबने के बाद जब एक भी सितारा निकल पड़े वह अर्सा।

राहु दिन छुप गया मगर सितारे अभी नहीं निकले वह अर्सा)

ग्रह की बाहमी दोस्ती व दुश्मनी

नम्बर शुमार	नाम ग्रह	उसके बराबर का ग्रह	उसका दोस्त ग्रह	उसका दुश्मन ग्रह
1	बृहस्पत	राहु, केतु, सनीचर	सूरज, मंगल, चंद्र	शुकर, बुध
2	सूरज	बुध जो सूरज के साथ चुप होगा	बृहस्पत, मंगल, चंद्र	शुकर, सनीचर, राहु से ग्रहण केतु से मद्धम
3	चंद्र	शुकर , सनीचर, मंगल, बृहस्पत	सूरज, बूध	केतु से ग्रहण, राहु से मद्धम
4	शुकर	मंगल, बृहस्पत	सनीचर, बुध, केतु	सूरज, चंद्र, राहु
5	मंगल	शुकर, सनीचर, राहु अब मंगल के साथ चुप होगा	सूरज,चंद्र,बृहस्पत	बुध, केतु
6	बुध	सनीचर, केतु, मंगल, बृहसपत	सूरज, शुकर, राहु	चंद्र
7	सनीचर	केतु, बृहस्पत	बुध, शुकर, राहु	सूरज, चंद्र, मंगल
8	राहु	बृहस्पत, चंद्र उसके साथ मद्धम होगा	बुध, सनीचर ,केतु	सूरज, शुकर. मंगल
9	केतु	बृहस्पत, सनीचर, बुध सूरज इसके साथ मद्धम होगा	शुकर, राहु	चंद्र, मंगल

चंदर और शुकर बराबर है, मगर चंद्र दुश्मनी करता है शुकर से।
बृहस्पत और शुकर बराबर है मगर शुकर दुश्मनी करता है बृहस्पत से।
मंगल और सनीचर बराबर है मगर मंगल दुश्मनी करता है सनीचर से।
चंद्र और बुध दोस्त है, मगर चंद्र दुश्मनी करता है बुध से।
राहु के साथ बृहस्पत चुप होगा, मगर गुम न होगा।
मगर ख़ाना नम्बर 2 में राहु या बृहस्पत हो तो राहु बृहस्पत के मातहत होगा।

बुध गो बृहस्पत का दुश्मन है	मगर ख़ाना नम्बर 2- 4 में बैठा हुआ बुध या चंद्र (ख्वाह बुध बृहस्पत या चंद्र बुध मुश्तरका) दुश्मनी के बजाए पूरी मदद करेगा- माली मदद के लिए
चंदर गो बुध का दुश्मन है)	

जिस्म व ग्रह का ताल्लुक

दुश्मन पार्टीः सनीचर का दुश्मन सूरज का शुकर का बृहस्पत का बुध का चंद्र का केतु का मंगल बद का दुश्मन	**है राहु**

और

दोस्त पार्टीः सूरज का दोस्त चंद्र का बृहस्पत का मंगल नेक का राहु का बुध का सनीचर का शुकर का दोस्त	**है केतु**

गोया

ग्रहों में मुंदरजा बाला दुश्मन/दोस्त पार्टी के ग्रह बालतरतीब एक दूसरे के दुश्मन/दोस्त है। जिनका रहनुमा राहू (बाहम दुश्मन पार्टी का)/ केतु(बाहम दोस्त पार्टी का) है। यानी राहु तो सिर की रहनुमाई और केतु पांव चक्कर का मालिक है।

इंसानी जिस्म में: जिगर (मंगल), दिल (चंद्र)- धड़ (केतु) के सलाहकार हैं.

दिमाग व .ज़ुबान (बुध) देखना भालना (सनीचर) - सिर (राहु) के सलाहकार हैं सिर (राहु) धड़ (केतु) दोनों को मिलाने वाली गर्दन के सांस का मालिक बृहस्पत है। लिहाजा बृहस्पत ब-हालत एक अकेला इंसानी जिस्म (ब-हालत एक इँसान तमाम दुनिया) यानी लोक परलोक (ग़ैबी दुनिया तमाम ग्रहों की मुश्तरका ताकत) का मालिक है। सिर्फ़ इसी सिफ़त पर यह ग्रह किसी से दुश्मनी नही करता।

ग्रहों की मियादें

नम्बर शुमार	नाम ग्रह	कितने दिन	आम साल	उम्र के साल	महा दशा	आम दौरा के साल	असर का वक्त	असर की रफतार मानिंद
1	बृहस्पत	32	16	75	16	6	दरमियान	शेर बब्बर
2	सूरज	22	22	100	6	2	शुरु	रथ
3	चंद्र	24	24	85	10	1	आख़ीर पर	घोड़ा
4	शुकर	50	25	85	20	3	दरमियान	बैल
5	मंगल नेक	24	13	90	3	2	शुरु	चीता
	मंगल बद	32	15 =28		4 = 7	4 = 6	शुरु	हिरण
6	बुध	68	34	80	17	2	हमेशा यङ्कसां	मेढ़ा
7	सनीचर	72	36	90	19	6	हमेशा यकसां	मच्छली
8	राहु	40	42 2	90	18	6	आख़ीर पर	हाथी
9	केतु नेक	43	48	80	7	3	आख़ीर पर	सुअर, कुत्ता
एक दिन में हर ग्रह का पक्के तौर पर मुकर्ररा वक्त की युनिट के लिए फ़ी युनिट का वक्त 40 मिनट लेंगे।								
	मौज़ान	364/367			120	35		

मैदानी इलाकें में मृग से मुराद हिरण होता है और पहाड़ी इलाकें में चीते को मृग बोलते है। मगर ग्रह चाली हालात में हिरण (ख्वाह मामूली ख्वाह बारह सिगां) को मंगल बद गिनते ओर चीता (दरिंदा इंसानी को फ़ाड डालने वाला जानवर है) मंगल नेक लेंगे।

1 हर ग्रह अपनी मियाद के निस्फ या चौथाई हिस्सा मियाद में भी अपना असर ज़ाहिर कर दिया करता है।

2 राहु की 42 तो केतु की 48 मगर दोनों की मुश्तरका मियाद 45 होगी।

3 ग्रहण के वक्त (सुरत राहु मुश्तरका - सूरज ग्रहण) (चंद्र केतु मुश्तरका- चंद्र ग्रहण)- उम्र 3 साल कम होगी

4 सनीचर उम्र के 10-19-37वें साल अमूनन नेक असर देगा और 9 (दूसरी तरफ़ धन दौलत)

18 (पिता) 27 (माल मकान मवेशी) पर मंदा असर देगा। 36 ता 39 साला उम्र में साधारण असर देगा।

5 जैसा कि टेवे के मुताबिक, उस वक्त हो किस्मत उदय के लिए बुध 23, मंगल 31 साला उम्र में बाकि हर ग्रह अपनी अपनी मियाद पर असर देंगे।

एक साल के अर्से को 3 पर तकसीम करके हर टुकड़ा चार माह का होगा जिसमें दरमियानी ग्रह का असर मिल रहा होगा। मसलन बृहस्पत बमूजिब बर्षफल अगर ख़ाना नम्बर 5 में आया हो तो उस साल के पहले चार महीनों में ख़ाना नम्बर पर केतु का असर जैसा कि वह (केतु) उस वक्त बमूजिब बर्ष फल हो। दूसरे चार माह में ख़ुद बृहस्पत का अपना असर जैसा कि वह बमूजिब बर्ष हो और आख़री चार माह में सूरज का असर जैसा कि वह (सूरज) बमूजिब बर्ष फल हो मिलता होगा। इसी तरह ही हर एक ग्रह में उसके सामने दिए हुए दरमियानी ग्रहों का असर मिलता होगा।

दरमियान ग्रह			
पक्का ग्रह	शुरु	दरमियान	आख़ीर पर
बृहस्पत	केतु	बृहस्पत	सूरज
सूरज	सूरज	चंद्र	मंगल
चंद्र	बृहस्पत	सूरज	चंद्र
शुकर	मंगल	शुकर	बुध
मंगल	मंगल	सनीचर	शुकर
बुध	चंद्र	मंगल	बृहस्पत
सनीचर	राहु	बुध	सनीचर
राहु	मंगल	केतु	राहु
केतु	सनीचर	राहु	केतु

ग्रह की उम्र का असर

1 जब कोई ग्रह हर तरह से कायम यानी अपने वजूद में ख़ुद अपनी ही मुकम्मल ताकत का ख्वाह ऊंच हालत ख्वाह नीच हालत (ख्वाह घर का मालिक हो और किसी दूसरे का उस पर या उसमें कोई असर न मिल रहा हो) तो वह अपनी कुल उम्र तक असर देता रहेगा या उसकी उम्र होगी, बृहस्पत 16 साल, सूरज सफा 34 ख़त्म

22 साल, चद्र 24 साल बग़ैरह

(2) कुल ग्रहों की 120 साला मजमूआ से अपना अपना हिस्सा **(3)** ग्रह के असर का आम अर्सा अपनी हालत से बाहर जब कोई ग्रह ऊपर कि शर्त (ग्रह की उम्र का अर्सा) से बाहर दोस्तों से या दुश्मनों के बरताओं में हो जावे तो उसके लिए बृहस्पत 6 साल सूरज 2 साल और चंद्र 1 साल वग़ैरह लेंगे (4) अपनी मियाद के शुरु दरमियान या आख़ीर पर हर ग्रह असर करता है। इसलिए हर ग्रह के साथ दरमियानी ग्रह का असर (जैसा कि दरमियानी ग्रहों की फ़ेहरिस्त में जुदी जगह दिया है) शामिल होगा।

नाम ग्रह	**किस ग्रह के साथ हो तो**	**उमर होगी जितने साल**
बृहस्पत	किसी भी ग्रह के साथ होगा	16
सूरज	किसी भी ग्रह के साथ	22
	सिवाए राहु के साथ	सिफ़र
	सिवाए केतु के साथ	11
चंद्र	किसी भी ग्रह के साथ	24
	सिवाय बृहस्पत शुकर ,बुध, राहु	12
	मगर सनीचर के साथ	8
शुकर	किसी भी ग्रह के साथ	25
	सिवाए बृहस्पत के साथ	60 वास्ते दौलत
	सिवाए सूरज के साथ	34
	सिवाए मंगल ने के साथ	8
मंगल नेक	किसी भी ग्रह के साथ	13 कुल
मंगल बद	किसी भी ग्रह के साथ	15 28
बुध	किसी भी ग्रह के साथ	34
	सिवाए सूरज या मंगल	17
सनीचर	किसी भी ग्रह के साथ	36
	सिवाए बृहस्पत के साथ	18 वालिद की उम्र
	" " "	27 धन दौलत
	सिवाए सूरज के साथ	24
	सिवाए मंगल या शुकर के साथ	12
	सिवाए बुध के साथ	45
राहु	किसी भी ग्रह के साथ सिवाए	42
	मंगल नेक के साथ	सिफ़र
	सिवाए केतु के साथ	45
केतु	किसी भी ग्रह के साथ	48
	सिवाए बृहस्पत के साथ	40
	सिवाए सूरज या सनीचर या मंगल नेक के साथ	24
	सिवाए राहु के साथ	45

रियायती चालीस दिनः न मंदे ग्रहों का असर उनके मुर्करा वक्त से पहले आ सकता है और न ही भले ग्रहों की मदद दिए हुए वक्त के बाद तक रह सकती है। अगर हो सकता है तो यह सिर्फ ये कि एक जगह का असर खत्म और दूसरे के शुरू के दरमियान 40 दिन फालतू होंगे, यानी बुरे ग्रह की मियाद के 40 दिन बाद तक उसका असर बुरा हो सकता है, और शुरू हाने वाले अमूमन नेक बौर मददगार ग्रह का अपनी मियाद से चालीस दिन पहले ही असर हो जाना माना है। इकट्ठे असर के सिर्फ. चालीस[40] दिन ही होंगे, मगर दोनों ग्रहों के जुदा जुदा चालीस[40] चालीस[40] दिन न होंगे। यह रियायती चालीस दिन कहलाते है। इसी उसूल पर बच्चे के जन्म से लेकर 40 दिन का छिला और मर जाने के बाद चालीस दिन का मातम या चालीसा मनाया जाता है।

(2) चूँकि गिनती के लम्बे हिसाब को इस इल्म में उड़ाने के लिए 28 नच्छत्तर और 12 राशि को बाद मे छोड़ ही दिया जाता है। इसलिए दोनों की जमा (28+12) = 40 दिन कम अज़ कम या ज़्यादा से ज़्यादा 43 दिन रियायती तक उपाओ का असर पूरा होगा। जिसकी निशानी वक्त से पहले ही नेक ग्रह का असर हो जानें के वक्त दोस्त ग्रह की चीज़ों की कुदरती निशानियां और बुरे ग्रह की मियाद 40 दिन बाद तक रहने वाली हालात में पापी ग्रहों की निशानियां हुआ करती है। मिसाल के तौर पर किसी का बर्ष 31 मार्च को खत्म हो रहा है, अगला साल यकम अप्रैल से शुरू होगा। यह साल जो गुजर रहा है, निहायत मंदा था। अगले साल में ग्रह चाल की बुनियाद पर उमदा ज़माना आने की उम्मीद हो रही है। इँसान किस ख्याल में है और मालिक को फैसला पता नहीं क्या होगा। गर्जेकि देखने से मालूम हुआ की इसका चंद्र नम्बर 2 में आ जाएगा या बृहस्पत नम्बर 4 में हो बैठेगा जो अमूमन नेक असर ही दिया करते हैं उसी तरह ही राहु नम्बर 8 या 11 और बुध नम्बर 8 या नम्बर 3 में अक्सर मंदा असर दिया करते हैं। अब अगर मौजूदा साल में मंदे ग्रह चल रहे थे, तो

(सफा 37 शुरु) चलता हुआ मंदा हाल अगर 31 मार्च के बाद तक ही चलता है तो पापी ग्रहों (राहू केतू सनीचर) की निशानियां मसलन चोरी, अय्यारी, गबन, धोखा धही झूठे मुकदमे, हादसा या नाहक बदनामियां (बज़रिया राहु) रास्ते या मुसाफ़री में नुकसान, केतु की मुतअल्लिका अश्या की गुमराहियां (बुज़रिया केतु) मशीनरी मकान (बज़रिया सनीचर) के मंदे असर होने लग जाएंगे और वह मार्च के महीने में ही मंदी निशारियां देंगे। तो समझ लेंगे कि आने वाला साल 31 मार्च के 40 दिन बाद तक वही मंदा असर देगा जो कि पहले चल रहा था। इसके बरखिलाफ़ चंद्र अच्छा या बृहस्पत हो जाने का सबूत उन के मुत्तलका दोस्त और मददगार ग्रहों की चीजों से जाहिर होने लग जायेगा, यानि चंद्र के दोस्त ग्रह मसलन सूरज, बृहस्पत, मंगल की मुतअल्लिका अश्या (हर ग्रह की जुदा जुदा चीज़े एक अलाहदा फेहरिस्त में लिखी है।) के ज़रिए ज़ाहिर होने लगे तो समझ लेंगे की आने वाला साल का अच्छा असर चालीस 40 दिन पहले ही हाने लग जाएगा। वह कब:- 31 मार्च के बाद दूसरा साल शुरू होना है, उस तारीख से पहले चालीस 40 दिन यानी पूरा महीना तो मार्च का और नौ दिन और भी पहले फरवरी में गोया 20 फरवरी से शुरू करके चंद्र यो बृहस्पत के ग्रहों के दोस्त ग्राहें की मुतअल्लिका अश्या अपना नेक असर देने लग जावें तो समझ लेंगे की अगला साल अपना अच्छा असर ज़रूर देगा। और वह चालीस दिन और भी पहले की उत्तम हो जाएगा कइ दफ़ा दौरान उपाओ 40 दिन की निस्फ़ या चौथाई मियाद में भी निस्फ़ या चौथाई असर मालूम होने लग जाया करता हैं। जो ज़रूरी नहीं कि निस्फ़ यो चौथाई हिस्सा ही असर होवे। पूरा पूरा असर हो जाना भी मना है।

तमाम ग्रह बलिहाज़ ताकतः- .सूरज-चंद्र-शुकर-बृहस्पत-मंगल-बुध-सनीचर-राहु-केत बातरतीब बाहमी मुकाबला की ताकत में एक दूसरे से कम हैं।

टकराओ या बरताओ पर पैमाना ताकतः जब दौरा या तख्त का मालिक ग्रह व कोई और दूसरा ग्रह

बाहम टकराओ पर हो जावें (टकराओ दुश्मनी ही हालत में होता है मिलाओ या बरताओ दोस्ती की हालत में) तो सूरज 9/9 चंद्र 8/9 शुकर 7/9 बृहस्पत 6/9 मंगल 5/9 बुध 4/9 सनीचर 3/9 राहु 2/9 केतु 1/9 ताकत का होगा दौरा के वक्त ग्रहों के बाहमी टकरावों में उनके बाहमी असर में कमी बेशी होने के अलावा किसी ग्रह के उपाओ के लिए दूसरे ग्रह का उपाओ करते वक्त भी यह ताकत का पैमाना मददगार होगा।

ग्रहों की दूसरी अवस्था

यानी

(इस्तलात वग़ैरह)

ग्रह फल व राशि फलः जब कोई ग्रह अपनी मुकर्रर राशि (यानि वह राशि जिसके घर का मालिक वह गिना जाता है) या ऊंच नीच फल के लिए ठहराई हुई राशि या अपने पक्के घर की बजाए किसी और गैर राशि में जा बैठे यो किसी दूसरे ग्रह का साथी ग्रह (जड़ अदली बदली करने वाला वग़रैह) बन जावे। तो वह ग्रह ऐसी हालत में राशि फल या शक्की हालत का ग्रह होगा जिसके बुरे असर से बचने के लिए शक का फायदा उठाया जा सकता है। इसके बरखिलाफ़ यानी ऊपर कही हुई हालत के उलट हाल पर जबकि वह न ऊंच नीच न घर का और न ही पक्के घर का साबित हो तो वह ग्रह "ग्रह फल" या पक्की हालत का ग्रह होगा जिसका असर हमेशा के लिए मुकर्ररा है और उसके बुरे असर की तब्दील करने की कोशिश करने बेमायनी बल्कि इंसानी ताकत से बाहर होगा। सिर्फ़ खास खास ख़ुदा रसीदा और महदूद हस्तियां ही रेख में मेख़ (रेखा में मेख़ा सूरज मेख राशि खाना नंबर एक में कैद) लगा सकती है। मगर वह आख़ीर तबादला ही होगा यानी एक जानदार या दुनियावी चीज़ या ताकत को उसकी हस्ती से मिटाकर उसके एवज़ में (सफा 38 ख्त्म)

दूसरा जानदार दुनियावी चीज़ या ताकत पैदा कर देगी। (बाबर हुमायूं के किस्से) मगर नया ही दूसरा हिंदसा फिर भी पैदा न होगा। सिवाय उस वक्त के जबकि ऐसी हस्तियां खुद अपनी ताकत या अपना ही आप तबाह कर लेती हैं, एवज़ में किसी दूसरे तक नौबत नहीं आने देतीं। यह हालत भी उनकी खुदाइ शरीक होने की होगी कोई न कोई तबादला दिया ही गया। ग्रहफल फिर भी न टला, ग्रहफल को अगर राजा कहें तो राशिफल उसका साथी वज़ीर होगा।

ग्रहफल का मंदी हालत के वक्त कौन सी चीज़ बतौर राशिफल मददगार् हो सकती हैं।

(ग्रह के उपाओ के हाल में देखें)

35 साला चक्कर:

<table>
<tr><td rowspan="10">(1) 35 साल के बाद सब ग्रह अपना चक्कर पूरा कर जाते हैं और जो ग्रह पहले चक्कर में बुरा असर करते हैं वह अपने दूसरे चक्कर यानी 35 साल के बाद दूसरी चाल में बुरा असर न देंगे। यह शर्त नहीं कि भला असर ज़रूर दें। ग्रहों की 35 साला मियाद 35 साला चक्कर कहलाता है। ग्रहों का 35 साला चक्कर और इँसान कि उम्र का 35 साला चक्कर दो जुदा जुदा बातें है। फ़र्ज़न एक शख्स के जन्म दिन से ही बृहस्पत का दौरा शुरू हुआ बाकि ग्रह एक के बाद एक यानी बृहस्पत(6 साल) सूरज (2 साल) चंद्र (1 साल) शुकर (3 साल) मंगल (6 साल) बुध (2 साल) सनीचर (6 साल) राहु (6 साल) केतु (3 साल) कुल 35 साल का दौरा तमाम ग्रहों ने उसकी 35 साल उम्र तक ही पूरा कर दिया।</td><td>बृहस्पति</td><td>6</td></tr>
<tr><td>सूरज</td><td>2</td></tr>
<tr><td>चंदर</td><td>1</td></tr>
<tr><td>शुकर</td><td>3</td></tr>
<tr><td>मंगल</td><td>6</td></tr>
<tr><td>बुध</td><td>2</td></tr>
<tr><td>सनिचर</td><td>6</td></tr>
<tr><td>राहु</td><td>6</td></tr>
<tr><td>केतु</td><td>3</td></tr>
<tr><td>कुल</td><td>35 साल</td></tr>
</table>

लेकिन हो सकता है कि उसका पहला ग्रह बृहस्पत के बजाए सनीचर शुरू हो वे और जन्म दिन की बजाए 7 वें साल से शुरू हो। अब तमाम ग्रह तो 35 साल में ही दौरा पूरा कर लेंगे, जब आखिरी ग्रह की आखरी दिन

होगा। इस वक्त इँसान की उम्र 35 साला ग्रहों का दौरा जमा 6 साल, जब अभी सनीचर या उम्र का पहला ग्रह शुरू भी न हुआ था, यानी कुल उम्र 61 साल हो चुकी होगी जो 35 साल के हिसाब के इँसान की उम्र का दूसरा 35 साला दौरा होगा। अब जिस दिन से ग्रहों का दूसरा दौरा शुरू हुआ यानि जिस दिन से जन्म दिन से शुरू होने वाला ग्रह दूसरी दफ़ा शुरू हुआ, उस दिन से जिन ग्रहों ने पहले बुरा असर दिया था वह अब अपनी दूसरी चाल में बुरा असर न देंगे। ये ज़रूरी नहीं कि वह बुरा फल देने वाला ग्रह अच्छा फल ही देवे। मगर अब वह बुरा फल न देगा, और अमूमन अच्छा फल ही हुआ करता है।

(2) ऐसे 35 साला चक्कर एक प्रानी की तामाम 120 साला औसत उम्र में ज्यादा से ज्यादा तीन दफ़ा आ सकते है।

(3) अगर दाये तरफ़ (हाथ की रेखाओं, दिमागी खानों या कुण्डली के पहले घरों के ग्रहों) का असर उम्र के पहले हिस्सा (शुरू की तरफ़ से चलकर) में हो गया तो बायें तरफ का असर बाद में होगा।

(4) 35 साल चक्कर के सबब बाप बेटे की उम्र का बाहमी ताल्लूक 70 साल में खत्म माना गयो है।

(5) इस 35 साला चक्कर का पूरा पूरा इस्तेमाल बर्ष फल के हाल में दर्ज है।

(6) 35 साला चक्कर में हर ग्रह कि मियादों में दरमियानी ग्रहों की मियाद

दौरा होवे	**6 बृहस्पत का**	**2 सूरज का**	**1 चंद्र का**	**3 शुकर का**	**6 मंगल का**	**2 बुध का**	**6 सनीचर का**	**6 राहू का**	**3 केतु का**
शुरू	केतु 2 साल	सूरज 8 माह	बृहस्पत 4 माह	मंगल 1 साल	मंगल 2 साल	चंद्र 8 माह	राहु 2 साल	मंगल 2 साल	सनीचर 1 साल
दरमियानी	ब्रहस्पत 2 साल	चंद्र 8 माह	सूरज 4 माह	शुकर 1 साल	सनीचर 2 साल	मंगल 8 माह	बुध 2 साल	केतु 2 साल	राहु 1 साल
आख़री हिस्सा	सूरज 2 साल	मंगल 8 माह	चंद्र 4 माह	बुध 1 साल	शुकर 2 साल	ब्रहस्पत 8 माह	सनीचर 2 साल	राहू 2 साल	केतु 1 साल

सफा 40 खत्म

जन्म दिन का ग्रह और जन्म वक्त का ग्रहः

1- जिस दिन पैदाइश हो उस दिन का मुतअल्लिका ग्रह जन्म दिन का ग्रह होगा।

जिस वक्त पैदाइश हो उस वक्त का मुतअल्लिका ग्रह जन्म वक्त का ग्रह होगा।

हफ्ते के दिनों की तरह ग्रहों के नाम मसलन इतवार (सूरज) सोमवार (चंद्र) मंगल, बुध, वीरवार, (बृहस्पत)

शुकर और सनीचर सात ही हैं। हर एक शाम के वक्त को आठवां राहु और सुबह के तड़के को नौवां केतू होगा। अंग्रजी हिसाब में रात के 12 बजे के बाद दूसरा दिन शुरू होता है, मगर इल्म सामुद्रिक में सूरज निकलने से नया दिन शुरू होता है, यानी रात के गुज़रे हुए दिन का हिस्सा लेकर नए सूरज से दूसरा दिन शुरू गिनेंगे।

एक दिन में ग्रह का वक्तः

सूरज निकलने के बाद दिन का पहला हिस्सा बृहस्पत का वक्त कहलाता है। दिन के पहले हिस्से के बाद पक्की दोपहर से पहले सूरज का वक्त होगा। तमाम चांदनी रात को चंदर का वक्त कहेंगे।

अंधेरा पक्ष और चानन पक्ष की दरमियानी या अमावस की रात शुकर का वक्त होगा।

पूरी दोपहर का वक्त (दिन का ऐन दरमियान) मंगल का वक्त लेंगे।

दोपहर के बाद मगर पूरी शाम से पहले का वक्त बुध का वक्त होगा।

काली रात या घनघोर काले बादल का दिन सनीचर का वक्त कहेंगे।

पूरी पक्की शाम मगर रात से पहले का वक्त राहू का वक्त लेंगें।

सुबहे सादिक मगर सूरज निकलने से पहले का वक्त केतू का होगा।

2- जन्म दिन और जन्म वक्त के ग्रहों का बाहमी ताल्लूक.

पैदाइश के दिन और वक्त के मुताबिक.-

अ) - जन्म दिन के ग्रह को गिनते है, किस्मत के ग्रह को जगाने वाले ग्रह का पक्का घर या राशिफल का यानी जिसका उपाओ हो सके।

ब)- जनम वक्त के ग्रह को गिनते हैं। किस्मत का ग्रह और ग्रहफल का यानी जिसका दिया हुआ फल (अच्छा या बुरा) अटल हो और कोई उपाओ न हो सके। मसलन पैदाइश हो - सोमवार बवक्त पक्की शाम की तो दिन का मुतअल्लिका ग्रह होगा चंद्र और वक्त का मुतअल्लिका ग्रह लेंगे राहु।

अब जन्म वक्त के ग्रह को जन्म दिन के मुतअल्लिका ग्रह के पक्के घर का गिनेंगे। यानी अब राहू (जो जन्म वक्त का ग्रह है) चंद्र (जो जन्म दिन का ग्रह है) के पक्के घर (बमूजिब फ़ेहरिस्त[1]) ख़ाना नम्बर 4 में होगा। चुंकि जन्म दिन का मुतअल्लिका ग्रह राशि फल या काबिल उपाओ होना माना है। इसलिए नम्बर 4 का राहू ख़ाना नम्बर 4 के मुतअल्लिका अश्या रिश्तेदार या कारोबार मुतअल्लिका नम्बर 4 पर कभी बुरा असर न देगा और अगर कभी बुरा असर देवे भी तो चंद्र के उपाओ से नेक असर हो जावेगा।

ग्रह	बृहस्पति	सूरज	चंद्र	शुकर	मंगल दोनों	बुध	सनीचर	राहू	केतु
दिन	वीरवार	इतवार	सोमवार	शुकर वार	मंगलवार	बुधवार	सनीचरवार	वीरवार की शाम पक्की	इतवार की सूबह सादिक
[1]खाना नंबर	9	1	4	7	3	7	10	12	6

पापी ग्रहः हमेशा राहु केतु और सनीचर तीनों ही से मुराद होगी।

पापः सिर्फ राहू और केतु दोनों मुश्तर्का पाप के नाम से याद किए जाते है।

1- खाना नम्बर 2 -धरम अस्थान, खाना नम्बर 5- आइंदा औलाद, खाना नम्बर 8- मारग अस्थान, खाना नम्बर 11 - धरम दरबार मुकर्रर होने की वजह से जुदा रहेंगे।

मंगल के दो हिस्से नेक व बद	सूरज बुध मुश्तरका (नेक मंगल) केतु सुभाओ
	और सूरज सनीचत (बद मंगल) राहू सुभाओ होगा।

बुधः- सूरज, सनीचर (रात दिन इकट्ठे हैं) खाली बुध होते हैं। अगर बुरी ख़ासियत या ऐसे घरों में हों जहां सूरज या सनीचर दोनों में से काई भी मंदा हो, तो न सिर्फ़ सूरज 22 साला उम्र और सनीचर 36 साला उम्र तक नीच होगा, बल्कि मंगल भी मंगल बद और राहू मंदा होगा। ख्वाह राहू और मंगल किसी भी घर में और कैसे ही ऊंचे उम्दा और नेक हालत में बैठे हों।

अंधे ग्रहः

अगर खाना नम्बर 10 बाहम दुश्मन या नीच हैसियत वगैरह रद्दी ग्रहों से खराब हो रहा हो, तो वह टेवा अंधे ग्रहों का होगा और तमाम ही ग्रह मय सनीचर खुद भी ख्वाह ऊंच घरों के हो अंधे की तरह अपना फल देंगे। मुफस्मिल देखो सनीचर ख़ाना नम्बर 10 में।

नहोराता के ग्रहः

ऐसे ग्रह जो ऐसे ही इँसान की तरह हों जो दिन को देख सके मगर रात को अंधा हो मसलन चौथे सूरज और सातवें सनीचर हो तो ऐसा टेवा नहोराता वाला या आधा अंधा होता है।

धर्मी ग्रहः-

पापी ग्रह सनीचर राहु केतु तीनों ही हैं। राहू और केतु खाना नम्बर 4 में पाप छोड़ने को चंदर के सामने हल्फ़ उठाते हैं। सनीचर ख़ाना नम्बर 11 में बृहस्पत गुरू को हाज़िर नाज़िर समझकर राहु केतू के पैदा किए गए पापों का फैसला करता है, यानी अगर राहू केतु खाना नम्बर 4 या चंद्र के साथ किसी भी घर हों और (2) सनीचर ख़ाना नम्बर 11 या बृहस्पत के साथ किसी

भी घर में हो, तो ऐसे टेवे में पाप या पापी दोनों का ही बुरा असर न होगा और सब ग्रह धर्मी होंगे यह शर्त नहीं कि पापी ग्रह ऐसी हालत में बैठे हुए उत्तम फल ज़रूर ही देंगे। हल्फ़ सिर्फ. इतना है कि पाप नहीं करेंगे।

साथी ग्रहः-

1- जब कोई ग्रह आपस में अपनी अपनी मुकर्रा राशि ऊंच नीच घर की राशि या अपने अपने पक्के घरों में अदलबदल कर बैठ जावें या अपनी जड़ों के लिहाज़ से इकट्ठे हो जावें तो साथी ग्रह कहलाते है। मसलन सूरज का पक्का घर ख़ाना नम्बर 5 है, और सनिचर का पक्का घर ख़ाना नम्बर 10 है। अब अगर सनीचर हो ख़ाना नम्बर 5 में और सूरज हो ख़ाना नम्बर 10 में दोनो बाहम साथी ग्रह होंगे।

2- कुण्डली के हर ख़ाना की मुश्तरका लकीर या दीवार हमसाया ग्रहों (सिर्फ दोस्तों) को मिलाया करती है। मगर दुश्मनों की अलाहदा रखती है यानी कुण्डली के किसी दो घरों में बैठे हुए ग्रह जो बाहम दोस्त हों और कुण्डली के घर जिनमें वह बैठे है सिर्फ एक लकीर से जुदा जुदा हो रहे हों तो इकट्ठे या साथी ग्रह कहलाते हैं। जो एक दूसरे का भी बुरा न करेंगे मगर दो दुश्मन गिने हुए ग्रहों की हालत में दो खानों की दर्मियानी लकीरे (खत) उन दो ग्रहों को जुदा जुदा ही रखेगी।

कियाफ़ाः एक रेखा के साथ साथ ही दूसरी रेखा मसलन ॥ या // एक ही किस्म की रेखा होगी। बशर्ते कि दोनो एक ही बुर्ज पर वाकय हों। ऐसी शाखों से मुराद होगी कि कोई अपना ही भाई बहन साथ चल रहा होगा, या वह दूसरी शाख अपने ही खून का ताल्लूकदार बताएगी।

बिलमुकाबिल के ग्रहः जो ग्रह आपस में तो दोस्त हों, मगर ऐसी हालत में बैठे

हों कि खुद तो वह दोस्त(सफा 44 खत्म)

ग्रह ही रहें, मगर उनमें से हर एक या किसी एक की जड़ पर आगे दुश्मन ग्रह हो जावे ख्वाह वह खुद दोस्त ही हैं। लफ़्ज बिलमुकाबिल से याद होंगे, क्यों कि अब उनमें किसी न किसी तरह से दुश्मनी भाव हो गया है।

दुश्मनों से मारे हुए मंदा असर होने के वक्त

ग्रहों की कुर्बानी को बकरे

यानी असली ग्रह की अपनी जगह कि बजाए किसी दूसरे ग्रह की हालत खराब हो जाए हो जावे।

सनीचरः

दुश्मन ग्रहों से बचाओ के लिए सनीचर ने अपनी जान बचाने के लिए अपने पास राहकेतु दो ऐसे ग्रह एजेंरट बनाए हुए हैं कि वह सनीचर कि जगह फ़ौरन किसी दूसरे की कुर्बानी दिला देते हैं। राहू केतु मुश्तरका मस्नूई शङ्ककर माना है। इसलिए जब सनीचर को सूरज का टकराओ तंग करे तो वह खुद अपनी जगह शुकर औरत को मरवा देता है, या सूरजसनीचर के झगड़े में औरत मारी जावेगी या ऐसी कुण्डली वाले की औरत पर अन दोनों ग्रहों की दुश्मनी का असर जा पहुंचेगा, न सूरज खुद बरबाद होगा न सनीचर क्यों कि वह बाहम बापबेटा हैं। मसलन, सूरज खाना नम्बर 6, सनीचर खाना नम्बर 12, हो तो औरत पर औरत मरती जावे।

बुधः

बुध ने भी बचाओ के लिए शुकर से दोस्ती रखी है। वह भी अपने दोस्त शुकर को ही अपनी बलाएं डाला करता है, या डाल देगा।(सफा 45 खत्म)

मंगलः

मंगल बद (भाई) अपनी बला केतु (लड़का) पर डालता है। शेर कुत्ते को मरवा देगा। मसलन सूरज खाना नम्बर 6 मंगल नं. 10 लड़के (केतू) मरवा जावे (भाइ भतीजे को मरवाए।

शुकरः

शुकर (औरत) शैतान सुभाओ खुद अपनी बला चंद्र यानी कुण्डली बाले की माता पर जा धकेलेगी। मसलन चंद्र शुकर बिलमुक.बिल तो माता अ्धी हो जावे।

बृहस्पत :

बृहस्पत ने अपना साथी केतु ही कुर्बानी के लिए रखा है। मसलन बृहस्पत खाना नम्बर5 और केतू किसी और घर में अब अगर बृहस्पत की महांदशा आ जावे तो केतू को खाना नम्बर 6 का फल रद्दी होगा औलाद का नहीं जो खाना नम्बर 5 की चीज़ है मामूं को केतु की महांदशा सात साल तकलीफ़ होगी।

सूरज :

अपनी मुसीबत के वक्त केतू पर नज़ला (मंदा असर) डाल देगा।

च्रद्रः अपने दोस्त ग्रहों (बृहस्पत सूरज मंगल) पर अपनी बला टाल देगा।

राहु - केतुः

खुद ही अपना आप निभाएंगे और अपनी ही मुतअल्लिका अश्या कारोबार या रिश्तेदार मुतअल्लिका राहू या केतु पर मुसीबत का भूचाल पैदा करेंगे।

धरम अस्थानः

धरम पालन पूजा पाठ या इष्ट सिद्धि के ऐिल पवित्र जगह से मुराद होगी मुसलमान के लिए मस्जिद, सिख के लिए गुरूद्वारा, ईसाइयों के लिए गिरजाघर और हिंदुओं के लिए धरम मस्जिद ग़जेर्.कि जिस धरम और जगह में किसी प्रानी का एतिकाद हो वही जगह उसके लिए धरम अस्थान होगी। ख्वाह वहां रहने वाला कोई भी कयों ही न हो। जिस किसी को कोइ धरम अस्थान न हो या जिसेकिसी ऐसी दुनियावी जगह पर एतिक.ाद न हो उसके लिए चलता हुआ दरिया, नदी या सनीचर का चौरास्ता . धरम अस्थान का काम देगा।

नोटः

सूरज मंगल और बृहस्पत इ्साफ के मालिक होते हुए दूसरे की तो मदद करेंगें और एक को दूसरे पर नाजायज़ ज्यादती करते नहीं देख सकते, मगर जब खुद ही मुसीबत में हों, तो ग़रीब केतू को मरवाते हैं।

कायम ग्रहः

जो ग्रह हर तरफ से दुरूस्त और अपना असर बग़ैर किसी दुश्मन ग्रह के असर की मिलावट के साफ़साफ और कायम रख रहा हो यानि की मालकि.यत ऊंच नीच या पक्के घर या दृष्टि वग़ैरह किसी तरह से भी इसमें दुश्मन का असर न मिल रहा हो, और न ही व किसी दुश्मन ग्रह का साथी ग्रह बन रहा हो, तो वह कायम ग्रह कहलाएगा।

ग्रह का घर :

ग्रह कि अपनी मुकर्ररा राशि (बमूजिब फेहरिस्त दोस्ती-दूश्मनी-बराबर का/उंच-नीच, धर का) उस ग्रह का घर कहलाएगा मसलन खाना नम्बर 3 व 6 बुध के लिए।

घर का ग्रहः

ग्रह का पकका घर (बमुजिब फेहरिस्त दोस्ती-दुश्मनी-बराबर का/ऊंच-नीच, घर का) उस ग्रह का ऊंची नीच धर का घर कहलाएगा। मसलन खाना नम्बर 7 बुध के लिए।

दोस्त ग्रह- दुश्मन ग्रहः

(बमूजिब फेहरिस्त दोस्ती-दुश्मनी-बराबर का) किसी ग्रह के सामने खाना दोस्त ऊंची नीच घर का दुश्मन में लिखे हुए ग्रह इस ग्रह के दोस्त ग्रह कहलाएगें किसी दुसरे की मार्फत न लेंगे । दोस्ती दुश्मनी उसी हिसाब से लेंगे जो मुतअल्लिका फेहरिस्त में दर्ज है।

ऊंच ग्रह नीच ग्रह-बराबर के ग्रहः

हर ग्रह की ऊंचनीच घर कापक्के घर दोस्तदुश्मन बराबर कावगै.रह की फेहरिस्त जुदी जगह दर्ज है ।

ऊंच ग्रह से मुराद होगी, पूरी 100 फीसदी मुकम्मल असर की ताकत का मालिक नीच ग्रह से मूराद होगी, पूरी 100 फ़ीसदी मनफ़ी या ना मुकम्मल असर की ताकत बराबर का ग्रह से मुराद होगी मुसावी एक जैसा असर

बालिग़ नाबालिग़ ग्रहः

कियाफ़ा: बच्चे की रेखा का बारह साला इम्र तक कोई ऐतबार नहीं । 21 साल से रेखा में कोई तब्दीली नही मानते, नाबालिग़ बच्चा (12 साल उम्र तक) की रेखा का गो ऐतबार नहीं होता मगर मुम्किन है कि ऐसी उम्र तक वह पक्के असर की रेखा होवे या तब्दील हो जाने वाली हों । बच्चे कि क्रद मुटठी या कुण्डली के खाना नम्बर 1-7-4-10 खाली हों या उन खानो में सिर्फ़ पापी ग्रह या बुध अकेला (पापी ग्रह दोनो में से सिर्फ. एक)(सफा 48 खत्म)

हो तो वह टेवा नाबालिग़ ग्रहों का होगा । ऐसे प्रानी की किस्मत का हाल बारह साला उम्र तक शक्की होगा ऐसी हालत में नाबालिग़ ग्रहों वाले बच्चे की किस्मत का मालिक ग्रह मुंदरजा जै.ल होगाः
उम्र के हिसाब से असर का खाना नम्बर जावें । अगर कुण्डली में कोई खाना नम्बर खाली ही आ जावेतो इस खाली खाना नम्बर के मालिक ग्रह (घर का मालिक) लिस खाने में हो वह खाना लेवे, बालिग़ ग्रहों की हालत में आम दिये हुए उसुल कारआमद होगें ।

नाबालिग ग्रहों के टेवे होने वाले बच्चे की उम्र का साल	**किस्मत के ताल्लुक में किस खाने के ग्रहों का असर मददगार लेंगे**	**घर का मालिक ग्रह**
1	7	शुकर
2	4	चंद्र
3	9	बृहस्पत
4	10	सनीचर
5	11	सनीचर
6	3	बुध
7	2	शुक्कर
8	5	सूरज
9	6	बुध केतु
10	2	बृहस्पत राहु
11	1	मंगल
12	8	मंगल

फ़रमान नम्बर- 7

बुत से रूह ने आना घर क्यों पूछ लिया

राशि मालिक है लेख की होती   या कि ग्रहण मण्डल हो
मिल के कटेगी उम्र दोनों की   कुण्डली जन्म ख्वाह चंद्र हो
घर पहले की उम्र सौ साला   तीन 90(10) बारह है
85 उम्र 7 चौथे की लेते   80 होती घर 6 की है
पौन सदी या साल 75   गुरू म्रिदर घर (2) की है
घर और ग्रह की उम्र जुदा पर   गुजरती दो इकट्ठी है
गुरू जगत की उम्र 75   बुध केतु 80 होती है
शुकर चंद्र की उम्र 85   शानिमंगलराहु 90 है
स्त्री ग्रह जब मिले नरों से   उम्र 96 होती है
साथ मिले जब बुध पापी का   वही 85 होती है
रवि मालिक है पूरी सदी का   उम्र लम्बी उस होती है।
ग्रहण लगे जब चंद्र रवि को   साल 3 त्रै कम होती है ।

1   इस जगह लिखी हुई उम्रें ग्रह और राशि की अपनीअपनी हैं मगर इन उम्रों से इंसानी उम्र की कोई हदबंदी नहीं होती । फर्ज़न खा.ना नम्बर 1 जिसकी उम्र है 100 साल वहां (खाना नम्बर1 में) बैठा हो बृहस्पत जिसकी उम्र 75 साल गिनी है । तो मतलब यह होगा कि ऐसे टेवे वाले को बृहस्पत ज्यादा से ज्यादा अपनी (बृहस्पत की) उम्र तक यानी 75 साल तक अपना बुरा या भला असर (जैसा की टेवे के मुताबिक हो दे सकता है इसी तरह ही खाना नम्बर 6 में लिसकी उम्र 80 साल है अगर सूरज बैठा हो जिसकी उम्र 100 साल मानते हैं तो मुराद यह होगी कि ऐसे टेवे वाले को सूरज नम्बर 6 का ग्रह ज्यादा से ज्यादा 80 साल तक अपना असर जैसा भी टेवे के मुताबिक हो दे सकता है ।

2   बवक्त जन्म कुण्डली में के साथ केतु हो चंद्र ग्रहण और सूरज के साथ राहु हो, तो सूरज ग्रहण कहेंगे

ग्रह व राशि का बाहमी ताल्लुक.

मेख बृच्छक मालिक मंगल, तुला बृख शुकर की है ।
क्रयां मिथुन का बुध है मालिक, कुंभ मकर दो शनि की है ।
गुरू मालिक है धनु मीन का, कर्क चंद्र की होती है ।
सिंह अकेला गरजे दुनिया, राशि जो सूरज की है ।
केतु बैठे गर क्रया राशि, राहु निवासी मीन का है ।
पाप चढ़ा आसमान के ऊपर, जड़ जिसकी पाताल में है ।

राशि नम्बर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
नाम राशी	मेख	बृख	मिथुन	कर्क	सिंह	क्रया	तुला	बृस्चक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
मालिक ग्रह	मंगल	शुकर	बुध	चंद्र	सुरज	बुध केतु	शुकर	मंगल	बृहस्पत	सनीचर	सनीचर	बृहस्पत राहु
ऊंचा ग्रह	सुरज	चंद	राहु	बृहस्पत		बुध राहु	सनीचर		केतु	मंगल		शुकर राहु
नीच ग्रह	सनीचर		केतु	मंगल		शुकर केतु	सूरज	चंद्र	राहु	बृहस्पत		बुध राहु
पक्का ग्रह	सुरज	बृहस्पत	मंगल	चंद्र	बृहस्पत	केतु	शुकर बुध	मंगल सनीचर	बृहस्पत	सनीचर	बृहस्पत	राहु
किस्मत के जगाने वाला	मंगल	चंद्र	बुध	चंद्र	सुरज	राहु	शुकर	चंद्र	बृहस्पत	सनीचर	बृहस्पत	केतु
ग्रह फल का	मंगल	राहु केतु	सनीचर	चंद्र	गुरू सूरज	बुध केतु	शुकर	मंगल	बृहस्पत	सनीचर	गुरू सनीचर	राहु
राशि फल का	राहु		सनीचर बराए दौलत	मंगल शुकर केतु		नर ग्रह सनीचर	सुरज गुरू राहु		सनीचर	केतु बुध		बुध

1- ऊंच ग्रह से मुराद पूरी ताकत। आखरी और उत्तम दर्जे की हदबंदी नेक मायनों में

2- नीच ग्रह से मुराद सबसे नीच या मंदी हालत आखरी कम दर्जे की हदबंदी मंदे मायनों में ।

3- घर का मालिक ग्रह से मुराद औसत दर्जे नेक मायनों में ।

1 हर राशि के सातवें नम्बर पर वही ग्रह ऊंच होगा, जो पहले उसी नम्बर पर नीच था। मसलन खाना नम्बर 1 में अगर सूरज ऊंच है तो वह नम्बर 7 में नीच होगा ।

खाना नम्बर 8 में चंद्र नीच है, वह नम्बर 2 में ऊंच होगा ।

नम्बर 1 में सनीचर नीच है । वह नम्बर 7 में ऊंच होगा ।

सात ग्रह और 12 राशि या 12 साते 84 चौरासी की जूनी का जंजाल या रात दिन में । चौरासी लाख सांस का मसला अजीब पैदा हो चुका है । हर सातवें के बाद फिर वही ग्रह असर करते हैं या हर आठवें साल वहीं हालत हो जाती है । इसी उसूल पर ग्रह व राशि का असर मुश्तरका लेते हैं । खाना नम्बर 2 का नीच नहीं होता और यह खाना राहु व केतु (सिर्फ़ दोनों) की मुश्तरका बैठक है जिसके लिए राशिफल का ग्रह नहीं हैं । यानी इस खाना के ग्रह अपना अपना या अपने अपने कर्मो (पुण्य पाप का बाजाते खुद अपनी जान से मुतअल्लिका) के करने कराने के खुद अखतियारी हैं । खाना नम्बर 5 का ऊंच नीच दोनों ही हिस्से नहीं होते । इस घर में बैठने वाला ग्रह अपनी खुद जाती कमाई की किस्मत का ग्रह होता है खाना नम्बर 11 का ऊंच नीच दोनों ही औलाद खुद हिस्से नहीं होते यह आम दुनिया मुतअल्लिका से किस्मत का लेन देने है । खाना नम्बर 8 का ऊंच नहीं होताकोई मौत का मार नहीं सकता सिवाय चंद्र के जो दिल की शानित व गैबी मदद वग़ैरह है (दुनिया को माता गिना तो इँसान को बच्चा माता के पेट में बच्चे की तरह रहने वाला)। गौर से देखें तो मालूम होगा कि राहु खाना नम्बर 12 में घर का मालिक ग्रह भी लिखा है । और खाना नम्बर 12 में यह नीच भी लिखा है इसी तरह केतू खाना नम्बर 6 में घर का मालिक ग्रह भी लिखा है और उसकी नीच फल की राशि भी खाना नम्बर 6 ही लिखी है, मतलब यह है किः

राहुः

जब बृहस्पत का घर खाना नम्बर सिर्फ 12 हो तो नीच होगा । हालांकि बृहस्पत और राहु बाहम दुश्मन नहीं, बराबर के हैं राहु के वक्त (या जब राहु बृहस्पत

इकट्ठे हों) बृहस्पत चुप ही हो जाता है । राहु को आसमान (खाना नम्बर 12 नीला रंग माना है । बृहस्पत की हवा को जब आसमान का साथ मिले या ज्यूं ज्यूं हवा आसमान की तरफ़ ऊंची होती जावेगी, हलकी होती जावेगी, और दुनियादारों के सांस लेने के ताल्लुक में निकम्मी होती जावेगी, लेकिन जब वही बृहस्पत की हवा नीचे की तरफ़ होती आएगी, तो केतु का साथ होता जाएगा (खाना नम्बर 6) तो हर एक की मददगार होगी । इसी उसूल पर राहु के साथ बृहस्पत हो तो न सिर्फ बृहस्पत का असर चुपचाप बँद हालत का होगा बल्कि राहु का अपना असर बुरा होगा, या दम (सांस- बृहस्पत की ताकत) घुटने पर या दम घुट जाने पर नतीज़ा मंदा होगा । उसके खिलाफ़ अगर राहु को बुध के खाली आकाश में खुला ही मैदान मिलता जावे, मगर वह खाना नम्बर 12 के माने हुए आसमान की बजाए बुध के खाली आकाश में ही हो तो राहु का फल ज़रूर ही अच्छा बल्कि उम्दा असर देगा या राहु का बुध का घर खाना नम्बर 6 या बुध के साथ मिले तो नेक असर देगा । राहु है भी बुध का दोस्त, इसलिए दोनों के बाहम साथ से दोनों का फल उम्दा होगा। या दोनों ही खाना नम्बर 6 ऊंच फल के और दोनों में से हर एक या दोनों ही खाना नम्बर 12 में मंदे फल के होंगे । राहु को फ़र्जी तौर पर अगर आसमान माने तो यह फ़र्जी दीवार बृहस्पत को साफ़ कह देगी की ऐ बृहस्पत तू मेरे ऊपर गैबी जगह (दूसरी दुनिया) या मेरे नीचे इस इंसानी दुनिया में से एक तरफ ही रहो, गोया राहु ने बृहस्पत को दो जहां में से सिर्फ़ एक ही तरफ़ कर दिया या राहु के साथ पर बृहस्पत दोनों जहानों में से सिर्फ़ एक ही तरफ के जहां का मालिक रह जाता है या दो में से एक तरफ के लिए वह (बृहस्पत) चुप ही गिना जाता। इसी तरह हीः

केतूः

जब बुध के साथ हो तो या जब बुध के घर खाना नम्बर 6 में हो तो नीच होगा । लेकिन जब केतू को बृहस्पत का साथ मिल जावे

तो केतु ऊंच फल का होगा । केतु बृहस्पत बराबर का फल देगें । राहु-केतु, चूंकि अपने से सातवें देखने के उसूल पर के ग्रह हैं इसलिए राहु अगर 3-6 बुध के घर में ऊंच हुआ तो केतु वहां (खाना नम्बर 3-6 में) नीच होगा । यही हाल है केतु का यानी अगर केतु खाना नम्बर 9-12 (बृहस्पत के घर) में ऊंच होगा तो राहु इन घरों में नीच होगा। ग़र्जेकि राहु केतु को अपने दायरा में चलाने वालाः

बुधः

(1) जब बुध होवे राहु के घर खाना नम्बर 12 में तो नीच होगा, क्योंकि खाना नम्बर 12 उसके दुश्मन ग्रह बृहस्पत का है और जब बुध हो केतु के घर खाना नम्बर 6 में तो ऊंच होगा क्योंकि यह राशि नम्बर 6 बुध की अपनी ही राशि है, और बुध व केतू दोनों ही आपस में बराबबर के ग्रह हैं और दोनों ही शुकर के दोस्त होते हैं, बुध पर कोई असर न होगा। मगर केतु शुकर दोनों ही खाना नम्बर 6 में नीच होगें । बुहस्पत के साथ या बृहस्पत के घरों में राहु, हाथी का तेंदुआ होगा या **बृहस्पत के साथ या बृहस्पत के घरों में राहु बुरा फल देगा और नीच होगा** । बुध के साथ या घरों में केतु, कुत्ते का सिर पागल या दीवाना नीच फल का होगा, क्योंकि राहु केतु मुश्तरका के लिए खाना नम्बर 6 और 12 भी बुध बृहस्पत के हैं जहां कि उन्हें जगह मिली यानीः-

(2) (अ) खाना नम्बर 6 (बाहैसियत मालिक ग्रह) में बुध केतु मुश्तरका माने गए हैं । जब नम्बर 6 खाली हो और बुध नम्बर 3 में बैठा हो, तो खाली खाना नम्बर 6 का मालिक ग्रह केतु लेंगे। लेकिन जब बुध खाना नम्बर 3 में न हो तो खाली खाना नम्बर 6 के लिए बुध और केतु में से वह (बहैसियत मालिक ग्रह) लेंगे जो कि टेवे में दोनों से उम्दा हो।

(ब) खाना नम्बर 12 (बहैसियत मालिक ग्रह) में बृहस्पत, राहु मुश्तरका माने गए हैं ।

जब नम्बर 12 खाली हो, और बृहस्पत नम्बर 9 में बैठा हो तो खाली नम्बर 12 का मालिक ग्रह राहु लेगें। लेकिन बृहस्पत नम्बर 9 में न हो तो, खाली नम्बर 12 के लिए बृहस्पत, राहु मुश्तरका (दोनों का मस्नुई ग्रह बुध खाली आकाश) लेंगे।

(ज)- केतू खाना नम्बर 6 में और राहु नम्बर 12 में दोनों ही नीच भी हैं और घर के मालिक भी। उनकी शक्की हालत के लिए **जब राहु को बुध की मदद और केतु को बृहस्पत की मदद मिले यानी राहु खाना नम्बर 3-6 में (बुध के घर में) और केतु हो खाना नम्बर 9-12 में (जो बृहस्पत के घर हैं)** तो दोनों ही ऊंच हालत वरना नीच हालत के होगें, यानी 'राहु नम्बर 9-12 में नीच'/'केतु नंबर 3-6' में नीच होगा । खुलासतनः

1. जैसा बुध टेवे में हो, वैसा ही राहु नम्बर 12 का असर होगा ।
2. जैसा बृहस्पत टेवे में हो वैसा ही केतु नम्बर 6 का असर होगा ।

ग्रह बुर्ज व राशियों की ग़लतफ़हमीः

राशि से मुराद मकान की तह जमीन और उसके ग्रह से मुराद उस पर बने हुए मकान की इमारत होगा ।

कियाफाः बुर्जो को पक्के तौर पर जगह बे जगह मुकर्रर कर दिया गया है । इसी तरह से ही राशियों के लिए हमेशा के वास्ते जगह मुकर्रर कर दी गई है। ग्रहों के लिए रहने की जगह को बुर्ज या ग्रह का घर कहेंगे । और राशि के लिये मुकरर्र की उंगली की पोरी को राशी का घर कहेंगे। हर बुर्ज या ग्रह का निशान मुकर्रर है । इस तरफ से हर राशि का निशान भी मुकर्रर है। ग्रह के निशान से ग्रह का जिस्म ताकत या असर लेंगे । मगर उसके लिए जो जगह हथेली पर हमेशा के लिए मुकर्रर है, वह मुकाम उस का घर होगा ख्वाह ग्रह खुद किसी दूसरे ग्रह के घर जा बैठा हो । इसी तरह से ही राशियों का हाल है। यानी राशि की जो जगह उंगली को पोरी पर मुकर्रर है वह राशि का घर है ।

और जो निशान राशि का है, वह राशि का दिया हुआ असर या जिस्म या वजूद होगा। इस तरह पर जब किसी बुर्ज का निशान किसी दूसरे ग्रह के घर में पाया जावे, तो कहेंगे कि वह ग्रह दूसरे ग्रह के घर में चला गया है । मिसाल के तौर पर अगर सूरज का सितारा चंदर के बुर्ज पर वाकै हो, तो चंद्र के घर में सूरज आया हुआ गिना जायेगा या अगर यही सूरज का सितारा शुकर के बुर्ज पर हो तो सूरज को शुकर के घर के घर मेहमान कहेंगे। अब सूरज और शुकर का या सूरज और चंद्र का जो आपस में ताल्लुक है वही असर होगा। इसी तरह से हर राशि के निशान का असर लेंगे।

यह ज़रूरी नहीं है कि हर एक राशि का निशान उंगली की उसी पोरी पर वाकै हो जहां कि उस राशि का मुकाम मुकर्रर है । लेकिन अगर निशान अपनी मुकर्ररा जगह पर ही होवे तो वह आदमी उसी राशि का होगा, और अगर कोई भी निशान राशि का न पाया जावे तो हैरानी की बात नहीं ग्रहों या बुर्जो से पता चल जाएगा।

फ़रमान नम्बर-8

12 पक्के घर

प्राचीन ज्योतिष के मुताबिक जन्म कुण्डली बन चुकी । उसमें दिए हुए तमाम के तमाम हिंदसे मिटा दिए। मगर ग्रह जहां जहां उसमें लिखे थे वहां वहां ही लिखे हुए रहने दिये और फिर लगन के घर को हिँदसा नम्बर 1 दिया गया और 12 ही घरों में तरतीबवार 1 से लेकर 12 तक हिंदसे लिख दिए| अब यह घर लगन को 1 गिनकर फलादेश देखने के लिए हमेशा लिए ही मुकर्रर नम्बर के हो गए और इस इल्म मे 12 पक्के घर कहलाए ।

लगन का घर या कुण्डली का पक्का घर खाना नम्बर - 1

शाह सलामत का तख्ते बादशाही या हुज़ूर की कदम मुबारक

घर पहला है तख्त हज़ारी — ग्रह फल राजा कुण्डली का
ज्योतिष में इसे लगन भी कहते — झगड़ा जहान रूह-माया का
ऊंच बैठे ग्रह उत्तम कितने — दस्ती लिखा ख्वाह धाता हो
खाली पड़ा घर 7 जब टेवे — शक्की असर कुल ग्रह का हो
लगन बैठा ग्रह तख्त नशीनी — राज शाही जब करता हो
आंख गिना घर आठ है उसकी — 11 से हर दम चलता हो
अकेला तख्त पर बहुत हों 7 वें — राज[उम्दा बहुत] वज़ीरी होती है
उलट मगर जब टेवे बैठें — जड़ सातवें(7) की कटती[1] है
ऊंच-नीच[2] जो गिने घरों के — वह नहींएक(1)-सात(7)लड़ते हैं
बाकि ग्रह सब झगड़ा करते — उम्र से भी चंद मरते हैं[2]

1 खाना नम्बर में 1 सूरज ऊंच होगा, सनीचर नीच होगा और मंगल घर का ग्रह होगा और खाना नम्बर 7 में सनीचर ऊंच होगा, सूरज नीच होगा और शुकर घर का ग्रह होगा ।

2 मसलन खाना नम्बर 1 में बृहस्पात चंद्र-बुध राहु (चार ग्रह) और खाना नम्बर 7 में अकेला केतु हो तो 34 साला उम्र (बुध की मियाद) तक नर औलाद केतु नदारद या पैदा होकर मरती जावे और 48 साला उम्र(केतु की मियाद) तक एक ही लड़का कायम हो। **अगर 48 साला उम्र से दूसरा लड़का कायम हो जाए तो बुध लड़की बेघर बेइज़्ज़ती या दीगर मंदे नतीजों में बरबाद होगी। टेवे वाला अगर चार और जानो (कुत्ता घोड़ा गाय तोता कोई भी चार जानदार) को रोटी का हिस्सा देवे तो नर औलाद कायम होगी और औलाद पैदा होने के दिन से चंद्र, राहु, बृहस्पत, बुध मुश्तरका राज योग होंगे वरना चंद्र राहु, बुध, बृहस्पत के उम्दा असर की बजाए खाक की बोरी या हर तरह लानत नसीब होगी।**

और **जिस वक्त टेवे में असल मंगल के अलावा मस्नूई मंगल नेक (सूरज-बुध) या मस्नूई मंगल बद (सूरज सनीचर) दोनों ही मौजूद हों तो नम्बर 1 देखेगा नम्बर 11 को**

अ)- जब नम्बर 11 खाली हो तो नम्बर 1 का ग्रह अपना असर करने के ताल्लुक. में मेंढे या बुध की चाल पर जैसा कि वह उस वक्त टेवे में हो चलेगा । इसी तरह यही जब नम्बर 8 खाली हो, तो नम्बर 1 वाले ग्रह की आंखों को रोकने के लिए कोई रूकावट न होगी और वह ख़ुद ही अपनी आखों से देख भाल करता होगा ।

ब) जब खाना नम्बर 1 में ज्यादा ग्रह हों तो खाना नम्बर 1 का मुनसिफ़ शुकर होगा जैसा कि इस वक्त वह टेवे (ख्वाह नम्बर 1-ही) में हो।

2- तख्त पर बैठे हुए ग्रह चाली हुक्मरान राजा के अहद में उसके लिए ख़ाना नम्बर 1 (Lens) लैंस नम्बर 8(Focussing Glass); फोकसिंग गलास और नम्बर 11 (Regulator) रेगूलेटर होगा।

हर एक ग्रह की अपनी हुकूमत यानी खाना नम्बर 1 में आने के वक्त दूसरे ग्रहों की उसके मुकाबले में ताकत का पैमाना

खाना नम्बर 1 को कुण्डली का तख्त कहते हैं, इसलिए नम्बर 1 में बैठा हुआ ग्रह तख्त का मालिक या हुक्मरान राजा कहलाता है ।

बृहस्पत के वक्त ये ग्रह किसी से दुश्मनी नहीं करता । चंद्र ½ शुकर 3¾ गुना, सनीचर ¾, केतु 5/6 होगा । **बृहस्पत ख़ुद सूरज-राहु के वक्त चुप होगा । मगर बुरे ग्रहों के साथ अपना निस्फ़ अर्सा यानी 8 साल हमेशा नेक होगा** । दुश्मनी का असर 8 साल के बाद हो सकेगा।

सूरज के वक्तः

यह ग्रह ख़ुद कभी नीच न होगा, शुकर साथ हो तो शुकर नीच होगा मगर दोनों के मिलाप से बुध पैदा होगा, यानी फूल होंगे, मगर फल न होगा केतु 1/2 बुध 1/2 सनीचर ख़ुद अपने लिए बराए दौलत 2/3 और वालिद के लिए 1/2 जायदाद के लिए 1/3

चंद्र के वक्त कोई दुश्मनी नही करताः

यह ग्रह ख़ुद अपना नेक असर किसी के साथ होने पर घटा लेता है, राहु ½ होगा।

शुकर के वक्तः यह किसी को नीच नहीं करता दूसरे ख्वाह इसको नीच करते हैं, चंद्र ½, सनीचर 1/3

सनीचर के वक्तः चंद्र 1/3 केतु 1/2 होगा ।

बुध के वक्तः सनीचर 1¼ केतु 1/4 चंद्र 1/2 होगा ।

मंगल नेक के वक्तः शुकर सनीचर मंगल बद तीनों ही 1/3 हर एक, केतु व बुध दोनों 1/2 हर एक, राहु सिफ़र

राहु के वक्तः सूरज सिफ़र, चंद्र 1/2 होगा ।

केतु के वक्तः चंद्र सिफ़र, सूरज 1/2 होगा ।

कुँडली का पक्का घर खाना न: 2- धर्म स्थान, उमर, बुढापा

घर चल कर जो आवे दूजा — ग्रह किस्मत बन जाता हो
खाली पड़ा घर 10 जब टेवे — सोया हुआ कहलाता हो
बुनियाद समुंदर ग्रह[1] 9 होते — पहाड़ ऊँचा घर 2 का हो
चाल असर ग्रह दूजे बैठे — जेर असर गुरु[बृहस्पति] साया[2] हो
हवा, बारिश जो 9 से चलती — टक्कर दूजे[2] पर खाती हो
आठ पड़ा घर जब तक खाली[2] — असर भला ही देती हो
शुरु उमर में असर दूजे का — घर 6वें पर पड़ता हो
जाती असर हो नेक जो अपना — वक्त बुढापे बढता हो
बुनियाद मंदिर[2] घर[1] चौथा गिनते — आठ छटे[2] से मिलता जो
खाली[3] होते गुरु मंदिर[2] टेवे — असर रुहानी उमदा हो

1.- खाना न: 2 हमेशा 9 ही ग्रहों या खाना न: 9 जो बतौर एक समुंदर गिना जायेगा, की बुनियाद होगा. मगर खुद नंबर 2 की बुनियाद खाना नंबर 4 होगा.

2.- जैसा भी बृहस्पति टेवे में हो, वैसे ही हवा के झोंके साथ होंगे.

3.- खाना न: 8 देखता है नंबर 2 को और खाना नंबर 2 देखता है नंबर 4 को, इस तरह पर खाना नंबर 2 में खाना नंबर 8 और नंबर 6 का बाहम ताल्लुक हो जाता है. खाना नंबर 8 खाली हो तो नंबर 2 उमदा होगा. मगर जब खाना नंबर 2 खाली तो अब कुछ ही उमदा होगा. बृहस्पति नंबर 2 और खाना नंबर 8 खाली के वक्त पर बृहस्पति मंदा ही होगा, या बृहस्पति की हवा मंदी आंधी होगी. जो हर तरह का नुकसान करेगी. अगर नंबर 9 बरसाती मौनसून हवा के उठने का समुंदर हो तो खाना नंबर 2 उस बारिश से लदी हुई हवा से टकरा कर बरसा लेने वाला कोहसार(पहाड़ों का सिलसिला) होगा.

गुरु जहां दो- मंदिर[2] कच्चा पाप[राहू-केतु] बैठक खुद साथी हो
मारग घर से गुरु भी डरता आठ द्रिष्टी खाली जो
ग्रह मुशतर्का बुरा नहीं करते बंद मुट्ठी[3] के खानों में
फल 2-11 अपनो अपने धर्म मंदिर[नंबर 2] गुरुद्वार[11] में
ज्ञान समंदर घर 9वें का या फल उमर हो पहली का
सफेद झंडा कोहसार पे झूले उमर बुढापा घर 2 का
पाप की बैठक घर 2 गुरु के गृहस्ति शुकर भी बनता जो
लेख जगत का मस्तक गिनते मौत जन्म जहान मिलता दो.

इस घर में मंगल[1] के जुजवी(मसनुई) ग्रह और पापी[2] ग्रह खुद टेवे वाले पर मँदा असर न देंगे. बल्कि इस घर में बैठा हुआ राहु भी बृहस्पति के मातहत होगा.

सब ग्रह अपना तमाम फल जो उन मे से हर एक के लिये खाना न: 9 मेय़ लिखा हुआ है, टेवे वाले की उमर के आखिरी हिस्सा में देंगे. मसलन खाना न: 9 में सनिचर 60 साला लिखा है, जो टेवे वाले की उमर के शुरु होने की तरफ से गिन कर 60 साल बुढापे की तरफ होगा. लेकिन जब सनिचर खाना न: 2 में हो, तो सनिचर का वही असर मौत के दिन की तरफ से पीछे की तरफ को गिन कर 60 साल होगा. इस तरह ही सब ग्रह असर देवेंगे.

2. इस घर के ग्रह आखिरी उमर (बुढापा) मे हमेशा नेक फल देंगें. ख्वाह वह किसी दूसरे असूलों की गिनती या चाल वगैरह से कितने ही मंदे क्यों न हो.

1. मंगल बद – सूरज सनिचर मुश्तर्का

2- पापी = राहु, केतु, सनिचर तीनों ही मुश्तर्का के लिये एक नाम है.

धरम स्थान या पेशानी का दरवाज़ाः-

दोनों भवों का दरमियानी मरकज जो नाक का आख़री हिस्सा है या पेशानी पर तिलक लगाने की जगह खाना नम्बर 2 की असली जगह है । इस तिलक लगाने के निशान की जगह को छोड़कर माथे की बाकि जगह पेशानी कहलाएगी । जिसका ज़िक्र ख़ाना नम्बर 11 में है । जब ख़ाना नम्बर 2 हर तरह और हर तरफ़ (ख़ाना नम्बर 8 की दृष्टि वग़ैरह) से ख़ाली हो, तो ख़ाना नम्बर 2 को तिलक की जगह गिनते हैं, इस ख़ाना नम्बर 2 को हवाई ख़याल की तमाम ताकतों में राहु केतु मुश्तरका की बैठक या मस्नूई शुकर की जगह मानते हैं । ख़ाना नम्बर 8 का असर जाता है । ख़ाना नम्बर 2 में और ख़ाना नम्बर 2 देखता है ख़ाना नम्बर 6 को, इसलिए 2 फैसला 2-6-8 को साथ मिला कर होगा । दूसरे लफ़ज़ो में ख़ाना नम्बर 8 को अगर राहु केतु की सनीचर के साथ होने की बैठक मानें, तो इस बैठक या मौत के दीवानख़ाना का दरवाज़ा ख़ाना नम्बर 2 सिर्फ़ राहु-केतु की अपनी नेकी बदी का मैदान गुरूद्वारा मस्जिद मंदिर होगा । इस **धरम अस्थान का दरवाज़ा** दोनों भवों की ऐन दरमियानी जगह होगी जिसका मालिक बृहस्पत है जो दोनों जहानों का मालिक है, जिस के रास्ते की लम्बाई के दोनों सिरों पर सूरज और सनीचर (दिनरात) गिनते है यानी दुनिया से बाहर ख़ाना नम्बर 8 और दुनिया का अंदर ख़ाना नम्बर 11 के साथ बृहस्पत की दूसरी ताकत, ख़ाना नम्बर 5 मुस्तकबिल और ख़ाना नम्बर 9 माज़ी का दरमियान ज़माना हाल ख़ाना नम्बर 1 (या बँद मुट्ठी के ख़ाने 1-7-4-10) होगा । थोड़े लफ्ज़ों में जिस तरह ख़ाना नम्बर 4 ने अपनी नेकी न छोड़ी थी, उसी तरह ही ख़ाना नम्बर 2 ने कुल दुनिया से ताल्लुक न छोड़ा । अगर नाभि तमाम जिस्म का दरमियान था और बँद मुट्ठी के ख़ानो में ख़ाना नम्बर 4 बच्चा के साथ लाए हुए ख़ाज़ाने का भेद था तो चेहरें पर तिलक की जगह या दुनिया में बच्चें के लिए बाकि सब तरफ़ से मिलने मिलाने वाले ख़ाजाने का

भेदी ख़ाना नम्बर 2 हुआ । इन दो ख़ानो यानी नम्बर 4 और नम्बर 2 का मुश्तरका असर किस्मत का करिश्मा हुआ, जो ग्रहफल ख़ाना नम्बर 2 व राशिफल ख़ाना नम्बर 4 दोनों का 'लब्बे लुबाब' भी कहा जा सकता है । ख़ाना नम्बर 4 बढ़ाता है चंद्र को, ख़ाना नम्बर 2 बढ़ाता है बृहस्पत को, दोनो मिले मिलाए (मातापिता) वाल्दैन या अकेला बृहस्पत जो दोनो जहानों का मालिक है होगा, जो बच्चे को मदद देने के लिए खाना नम्बर 5 में सूरज के साथ और खाना नम्बर 11 में सनीचर के साथ जा मिलता है, बृहस्पत की इस लम्बाई को सबकी लम्बाई गिनते हैं ख्वाह चेहरे की (खाना नम्बर 6 में देखें) हो, ख्वाह पेशानी की, (मुफ़स्सिल खाना नम्बर 11 देखों)

ख़ुलासतन तिलक की ख़ास जगह बृहस्पत का खाना नम्बर 2 राहु-केतु मुश्तरका की बैठक की जगह (मस्नूई शुकर की राशि भी है) का दरवाज़ा है, ख़ाना नम्बर 2 में ग्रहों का असर मय खाना नम्बर 8 के, पेशानी पर तिलक लगाने की जगह तिकोन ▽ या केतु का निशान ⍊ यानी ख़ाना नम्बर 2 में हर तरह से अकेला केतु हो तो हुक्मरान आसूदा होगा ।

अंगूठा

ख्वाह हाथ का ख्वाह पांव का

जिस तरह सिर ढांचे का मालिक बुध और उसके अंदर दिमाग़ी खानों में हवाई ख़याल की लहरें पैदा करने की ताकत का मालिक राहू है, इसी तरह ही इंसानी दिल का मालिक चंद्र है, जिसके अंदर लहरों को उछालने या गिराने की ताकत का बानी ग्रह चाली पाप (राहु और केतु दोनों मुश्तरका) है । इस पाप की बैठक ख़ाना नम्बर 2 (जिसमें सनीचर का ताल्लुक नही मानते) इंसानी अंगूठे पर मानी गई है ।



अंगूठा जिस कद्र लम्बा होगा	उसी कद्र ही ज्यादा शहवत पर काबू पा सकने वाला होगा ।
अंगूठा जिस कद्र मोटा होगा	उसी कद्र ही ज्यादा मुफलिस होगा ।
अंगूठा जिस कद्र छोटा होगा	उसी कद्र ही ज्यादा वहशी व हैवानी ताकत ज्यादा होगी, तंग हौसला, जिद्दी होगी ।
अंगूठा अगर सीधा रहता हुआ मालूम हो और अंगूठे की नाख़ून वाली पोरी पीठ की तरफ़ झुकी रहे	उसका धन दौलत दूसरों दुनियावी साथियों, के काम बहुत लगे. ख़ुद नरम दिल होगा ।

पोरी का हिस्सा	**उसकी हालत**	**उम्र का हिस्सा व तासीर व ताकत मुतअल्लिका**
नाख़ून वाली पोरी कुण्डली का ख़ाना नम्बर 6 - मन मर्जी Well केतु से मुतअल्लिका	जिस कद्र हथेली की तरफ झुकती जावे उसी कद्र ज्यादा उसका धन दौलत दूसरों के काम लगे, और वह ख़ुद नरम दिल होगा। उलट हालत में उलट नतीजा लेंगे ।	बचपन फैलना रुहानी ताकत
दरमियानी पोरी कुण्डली का ख़ाना नम्बर 12 दलील मंतक सोच विचार की ताकत राहु से मुतअल्लिका	जिस कद्र ज्यादा लम्बी हो उसी कद्र ही ज्यादा बा दलील और होनहार प्रानी होगा।	जवानी, सिकुड़ना, ज़िस्मानी ताकत
निचली पोरी कुण्डली का ख़ाना नम्बर 2 - इश्क Love शुकर से मुतअल्लिका	जिस कद्र ज्यादा छोटी हो उसी कद्र ही ज्यादा जादू मंतर की ख्वाहिश और जिनमुरीदी में गर्क रहने वाला होगा ।	बुढापा,इंसानी नफ्सानी ताकत

लगन से कुण्डली का पक्का घर खाना नम्बर 3- इस दुनिया से कूच के वक्त राहे रवानगी(बीमारी वगैरह)

इस घर का जो रंग है ख़ूनी   असर होता भी ख़ूनी है
होता जभी ग्रह इस घर जुल्मी   देता असर वह कष्टी है
पापी अगर हों उम्दा टेवे   कष्ट सभी ग्रह कटता हो
तीन मंदा[कानें] पग 12[उम्दा] उसके   असर खाना 8 करता हो
ग्रह मंदे घर तीसरे बैठे   बुरा मालिक नहीं करते हैं
ख़ून द्रिष्टि जुल्म से अपने   ज़हर बाहर ही भरते हैं
उम्र पहली हो ग्यारह[11] शक्की   ग्रह तीजे जब मंदा हो
मौत रुकेगी आठ से उठती   बैठा तीजा ख्वाह कैसा हो
ग्रह जब तक कोई तीसरे बैठा   मौत[1] टेवा न पाता हो
भेद गूरू से बेशक खुलता   फैसला बुध से होता हो
माया दौलत जो 11 आती   भाग तीजे से जाती हो
तासीर मंगल हो टेवे जैसी   हालत वही कर पाती हो

1- जब नम्बर 3 में पापी बैठे हों, और नम्बर 8 व 6 भी मंदे हों रहे हों तो अगर मौत नहीं तो बहाना मौत जरूर खड़ा कर देंगे, लेकिन खाना नम्बर 12 का ग्रह ख्वाह नम्बर 3 वाले का दुश्मन ही हो, नम्बर 3 को मदद देगा। मसलन मंगल नम्बर 12 केतु नम्बर 3 तो मच्छ रेखा वास्ते धन हालांकि मंगल और केतु बाहम दुश्मन हैं, **इसी तरह ही जब बुध नम्बर 12 और सनीचर या बृहस्पत नम्बर 3 हो तो अमृत कुण्ड हर तरह से बरकत का ज़माना होगा**, इसी तरह अगर नम्बर 12 में शुकर राहु इकट्ठे हों तो जाहिरा तौर पर 21 या 25 साला उम्र में बेवापन ज़ाहिर होगा लेकिन अगर उसी वक्त ही खाना नम्बर 3 में शनि बैठा हो तो राहु का शुकर पर कोई बुरा असर न होगा, क्योंकि शनि शुकर को हर तरह मदद देगा । लेकिन जब नम्बर 3 में मुश्तरका ग्रह हों तो 12 व 3 के ग्रह हों कि (हर एक की अकेला अकेला गिनकर) बाहमी दोस्ती दुश्मनी बहाल होगी ।

लगन से कुण्डली का पक्का घर खाना नम्बर 4 - माता की गोद व पेट का ज़माना

ग्रह चौथे के[1] रात को जागे — या जागे वह मुसीबत में
मदद कोई न हो जब करता — आ तारे वह बुढापे में
ग्रह चौथे हो जो कोई बैठा — तासीर चंद्र वह होता हो
असर मगर हो उस घर जाता — शनि जहां टेवे बैठा हो
ख़ाली होते घर चौथा मंदिर[2] — आख़ीर उम्र तक उन्नति हो
चंद्र का फल, घर दे चंद्र — बैठा चंद्र ख्वाह नष्टी हो
पाप बैठा घर चंद्र माता[3] — बुध शनि दो उम्दा हो
आठ, तीजा, 6 टेवे मंदा — मौत बहाना चौथा हो

(बाकि अगले सफ़.हः पर)

1 ग्रह मुतअल्लिका के कारोबार बावक़्त रात फ़ायदामंद होंगे

2 मानिंद नम्बर 2 या ख़ुद चंद्र नम्बर 2 जो कि ऊंच उत्तम फल देता है ।

3 इस घर में सनीचर ज़हरीला सांप और मंगल जला हुआ मंगल बद हो सकता है, मगर राहु केतु धर्मात्मा ही रहेंगे या यूं कहो कि राहु और केतु सिर्फ इस घर में बैठे हुए चुप होंगे, मगर किसी भी और दूसरी जगह मंदे काम छोड़ने का वादा नहीं करते क्योंकि ये तो उनके ख़ून की ही बुनियाद है, बल्कि हो सकता है कि उनके चुप रहने से कई दफ़ा नफ़ा की बजाए नुकसान हो, जैसा की दण्ड देने के अख्तियार का मालिक अगर शरारती को न डांटे तो अत्याचार और भी बढ़ जाता है ।

तख्त पावे[1] जब चौथा टेवे — राहु मंदा ख़ुद होता हो
मुट्ठी चंद्र[2] 8-11 बैठे — अकेला[3] चौथे न मंदा हो
4 समंदर ग्रह 9 नाभि[4] — मुर्दा कोई नहीं रखता हो
तीनों[मित्र] ग्रह नर -शरण माता की — पेट अंदर कुल पलता हो

1 चंद्र का मुट्ठी (ख़ाना नम्बर 1-7-4-10) से बाहर और खाना नम्बर 4 खाली हो तो चंद्र का सब ग्रहों मय ख़ुद चंद्र पर नेक असर होगा । ख्वाह चंद्र ख़ुद रददी, निकम्मा या मंदा ही हो रहा हो

2 खाना नम्बर 4 में कोई भी अकेला ग्रह हो, और चंद्र इस वक्त बँद मुट्ठी (खाना 1-7-4-10) से बाहर कहीं भी खराब हो रहा हो (मसलन खाना नम्बर 8 में चंद्र नीच या नम्बर में चंद्र सिफ़र निरपक्ष या मंदा) तो वह नम्बर 4 वाला ग्रह नेक असर ही देगा ख्वाह वह चंद्र का दोस्त हो या दुश्मन ।

कियाफ़ा :

1 हाथ की सब से आखरी जगह गैबी हालत, दिल की अंदरूनी चाल या रात का ज़माना (चंद्र का बुर्ज) बताती है ।

1 4-16-28-40-52-64-76-88-100-114 साला उम्र

2 खाना नम्बर 1-7-4-10

3 मंगल बद या मंगल नेक या कोई भी अकेला बैठा हुआ ग्रह ।

4 नर ग्रह सूरज मंगल बृहस्पत मित्र (चंद्र का दोस्त सूरज बुध) तो पेट में पालना करे. शत्रु (लेकिन जब चंद्र का दुश्मन राहु केतु) तो समंदर मुर्दा को भी बाहर कर देगा. जब वह दुश्मनी करें यानि जब तक राहु केतु (मुतलका आसियां) जिन्दा होंगे, नेक फल देंगे. वर्ना वह खुद बर्बाद हो जायेंगे. (सफा 67 खत्म)

लगन से कुण्डली का पक्का घर खाना नम्बर- 5 - औलाद मुस्तकबिल का ज़माना

गुरू टेवे में जब तक उम्दा औलाद दुखी न होती हो
पांच[1] पापी- गुरू मंदा टेवे बिजली चमक आ देती हो
शनि[2] शुकर या दो कोई मंदा बिजली कड़कती मंदी हो
चंद्र भला तो चमक हो उम्दा असर हालत दो जल्दी[3] हो
(बाकि अगले सफा पर)

1 नम्बर 6-10 की ज़हर से बचाओ के लिए नम्बर 5 के दुश्मन ग्रह की चीज़ पाताल (नम्बर 6) या जद्दी बुजुर्गी मकान (नम्बर 10) में कायम करें, जब तक नम्बर 8 मंदा न हो। लेकिन अगर नम्बर 8 मंदा हो तो नम्बर 5 के दुश्मन ग्रह की चीज़ सिर्फ़ पाताल (नम्बर 6) में तह ज़मीन के नीचे दबाने से मदद होगी, क्योंकि नम्बर 10 दो गुना रफ्तार से चला करता है और **जब नम्बर 8 मंदा हो तो नम्बर 10 दो गुना मंदा हो जाएगा** । मुफ़स्सिल पक्का घर नम्बर 10 देखें ।

2 फ़र्ज़न बृहस्पत नम्बर 10-शुकर नम्बर 11- केतु नम्बर 8- सनीचर-राहु नम्बर 5 - औरत (शुकर) को जुलाब (केतु) की बीमारी के बाद लड़के (केतु) पर मंदा असर, **उपाओ - लड़के के वज़न के बराबर 25 (शुकर) ता 48 (केतु) दिन तक आटे की रोटियां कुत्तों को तकसीम करें ।**

3 सनीचर या शुकर या दोनों जब कभी मंदे हों तो दोनों की हालत के मुताबिक. फ़ौरन मंदा असर होगा । लेकिन अगर चंद्र इस वक्त भला हो, तो मंदी हालत फ़ौरन ही बदल कर उत्तम असर हो जाएगा । जन्म कुण्डली के खाना नम्बर 5 में अगर 'सुरज शुकर' / 'सूरज या बृहस्पत' हो तो जब शुकर या कोई पापी नम्बर 1 में आवे अपनी सेहत के ताल्लुक. में मंदा वक्त होगा, लेकिन अगर नम्बर 5 में शुकर बुध या कोई पापी हो तो सूरज या बृहस्पत के खुद नम्बर 1 में आने के वक्त सेहत के ताल्लुक. में मंदा ज़माना होगा । बृहस्पत की वजह से पैदा शुदा (जब बृहस्पत नम्बर 5 में हो) बीमारी नयी औलाद के पैदा हो चुकने के बाद खत्म होगी ।

वजह चमक घर तीसरे होगी — कड़क निशानी गयारह हो
तीन ख़ाली घर आठ से पड़ती — उलट हालत पड़े आठ पे हो
घर 3-4 या 9 हो मंदा — बुरा असर 5 देता हो
6-10 वें ख्वाह दोस्त उसका — शत्रु ज़हरी आ होता हो
अपना लिखा अहवाल आईंदा — गुरू- रवि से चलता हो
केतु भला तो सब कुछ उम्दा — राहु मंदे सब उलटा हो

लगन से कुण्डली का पक्का घर खाना नम्बर 6- दुनियावी जड़ पाताल की दुनिया, रहम का ख़ज़ाना, ख़ुफिया मदद

पाताल ख़ाली[1] घर जब तक रहता — नेक असर कुल देता हो
दूज़े बैठे की पहली अवस्था[2] — असर छटे पर होता हो

(बाकि अगले सफ्हः पर)

1 ख़ाना नम्बर 6 ख़ाली हो तो नम्बर 2 और ख़ाना नम्बर 12 के ग्रह दोनों ही तरफ़ के सोवाय हुए होंगे इसलिए अगर खाना नम्बर 2 में अच्छे ग्रह हों और 12 में भी उत्तम ग्रह बैठे हों तो **नम्बर 6 को जगा लेना मददगार होगा । यानी टेवे वाला अगर अपने मामूं खानदान या अपनी लड़कियों के बच्चों की सेवा करता रहे तो मुनासिब उत्तम फल होगा** । या नम्बर 6 के ग्रह नम्बर 2 व 12 के लिए बिजली की मशीनों को चलने वाला बटन होगा या फ़ौरन असर शुरु करवा देगा ।

2- नम्बर 2 का नेक असर ज़रुर और हमेशा साथ मिलेंगा ।

उम्र मंदी ग्रह ख़ुद वह[1] होगा घर 6वें आ बैठे जो
लाख उपाओ- करे न टलता ग्रह फल लिखा[2] जिसको हो
अकेला बैठा या हों मुश्तरका बँद[3] मुट्ठी के खानों में
9 ही ग्रह पाताल में बैठे देखा[4] करें उन तरफ़ों में
10-5 वें का दुश्मन ज़हरी हुक्म राहु का पाता हो
साथ मगर 2-आठ द्रिष्टि फ़ैसला छः का होता हो

1- बैठे हुए ग्रह कि अपनी ग्रह चाली उम्र और ख़ुद ग्रह मुतअल्लिका की ज़ाती अश्या का असर ।

2- **सिवाए सूरज-बृहस्पत और चंद्र बाकि सब ग्रह इस घर में ग्रहफल के होंगे, और बुध व केतु इस घर(नम्बर 6) या नम्बर 8 में बैठे हुए ग्रह की मियाद तक मंदे होंगे, या नम्बर 6 के ग्रह का असर बुध केतु या शुक्र बैठा होने वाले घर में भी जा सकता है** ।

3- नम्बर 6 में बैठा हुआ सनीचर उलटा नम्बर 2 को देखा करता है । नम्बर 6 में सूरज या चंद्र होने के वक्त मंगल नम्बर 4 का मंगल अब मंगल बद न होगा ।

4- नम्बर 6 में ऊंच माने हुए ग्रह (बुध-राहु) कभी मंदे न होंगे और न ही बँद मुट्ठी के घरों या नम्बर 2 पर मंदा असर देंगे ।

कियाफ़ा:-

1 चेहरा :-

चेहरे की चौड़ाई कुल चेहरे की लम्बाई का 2/3 (दो बटा तीन-अगर कुल के 3 हिस्से करें तो तीन हिस्सों से दो हिस्से) नेक होती है। यह चौड़ाई जिस कद्र इस मिकदार से घटे। उसी कद्र नेक असर ज्यादा बढ़े और मुबारक होवे। **चौड़ाई- केतु की ताकत, लम्बाई-बृहस्पत की ताकत (सूरज सनीचर दोनों का मालिक गुरू) गोलाई, बाहर को उभार, बुलंदी- बुध की ताकत। पस्ती, गहराई, नीचे अंदर को दबना - राहु की ताकत,** ऊपर की ताकतों का घटना बढ़ना, ग्रहों की द्रिष्टी के दर्जे की ताकत के घटने या बढ़ने से मुराद होगी ।

चेहरे की चौड़ाई- ख़ाना नम्बर 6 के केतु से बज़रिया दृष्टि या खाना नम्बर 6 या नम्बर 6 के ग्रह से जिस कद्र बृहस्पत का साथ होवे, उसी कद्र चेहरा लम्बा होगा । जिस कद्र कम असर या ताल्लुक. बृहस्पत का खाना नम्बर 6 से होवे, उसी कद्र चेहरा चौड़ा होगा। जिस कद्र चेहरा की लम्बाई ज्यादा उसी कद्र नेक असर ज्यादा होवे । साथ लाई हुए जाती किस्मत का, चौड़े चेहरे में बृहस्पत की बजाए राहु के साथ, सनीचर की ख़ुद ग़र्ज़ाना ताकतें होंगी । लम्बा चेहरा बृहस्पत के साथ व ताल्लुक से केतु में सनीचर की हमदर्दाना ताकतें होंगी । ज़हानत कम होगी और जिस कद्र चेहरा चौड़ाई से लंबाई वाला होता जावे, उसी कद्र यह ख़ुदगर्ज़ाना ताकतें कम होती जावेंगी और ज़हानत बढेगी या लम्बे चेहरे वाला हमर्दद होता चला जाएगा ।

मर्द का चेहरा व मुंह दोनों ही लम्बे हों तो नेक बख्त होगा।
मर्द का चेहरा व मुह दोनों ही चौड़े हों तो ख़ुदग़र्ज़ होगा।
औरत का चेहरा लम्बा व मुंह लम्बा, बदबख्त होगी।
औरत का चेहरा चौड़ा व मुंह चौड़ा नेक नसीब होगी।

पाओं पर ख़ास निशान :

दाएं पांव के पब पर कनिष्का के नीचे बुध पर या शुकर के बुर्ज या अंगूठे की जड़ पर अगर

(I) संख, सदफ़ हो तो वही असर जो हाथ पर होता है, (II) चक्कर हो तो आसूदा हाल साहब इकबाल होगा (III) त्रिशूल, अंकस- आला अफ़सर मुनसिफ़ मिज़ाज होगा।

(iv) अ- चश्म फील- हाथी की आंख का निशान - साहिबे तख्त होगा । बे-चश्म फील अगर बाएं पांव पर हो तो राहज़न चोर डाकू होवे फिर भी तंग बहुत मंदा हाल (v) **औरत के पांव में (दोनों पांव इकट्ठे गिन कर) जिस कद्र गहरे चक्कर या पद्म या सदफ़ पब या पाओं की हथेली पर हों उसी कद्र लड़के होंगे और जिस कद्र चक्कर या पदम नरम व बारीक लकीर के हों उसी कद्र लड़कियां होंगी।**

लगन से कुण्डली का पक्का घर खाना नम्बर 7- गृहस्ती चक्की

आकाश[बुध] ज़मीन[शुकर] दो पत्थर 7 वें हो — रिज़क[शुकर] अक्ल[बुध] की चक्की

दोनों घुमावें[1] कीली लोहे की — घर आठवें जो होती हो

घर पहले के ख़ाली होते — 7 वां फ़ौरन सोया

पांच साला[2] हो सूरज निकल — 8 जब दूजे होया

दोस्त[3] शुकर हों घूमते पत्थर — शत्रु[4] पत्थर गढ़े माना है

बुध बराबर[5] चक धूमारान[6] — साथी[7] हत्थे को जाना है

(बाकि अगले सफ्हः पर)

1. जब खाना 8 के ग्रह (बमूजिब वर्षफल) खाना नम्बर 8 में या खाना नम्बर 1 में आवे तो बाहमी दोस्ती दुश्मनी के उसूलों पर असर करेंगे ।

2. 5 साला उम्र से किस्मत का सूरज उदय होगा ।

3. बुध सनीचर केतु - अपना अपना नम्बर 7 का दिया हुआ फल, घूमते पत्थर यानी वास्ते रिज़क व फालतू धन राशि फल (काबिल उपाओ) ।

4. सूरज चंद्र राहु- जैसा शुकर वैसा ही फल गढ़े पत्थर यानी वास्ते रिज़क व फालतू धन ग्रह फल (अटल फैसला)

5,6. दो पत्थरों कि बजाए कुम्हार के चक की तरह एक ही पत्थर जो दो का काम देवे मंगल या बृहस्पत वास्ते परिवार ।

7. **जहां शुकर हो उस घर का ग्रह (बहैसियत मालकियत या पक्का घर) चक्की व चक का रहनुमाए होगा ।**

जैसा शुकर हो वैसे ही सब फल निचले पत्थर से होते हैं
बाकि असर ग्रह अपनो अपना साथी को प्रबल गिनते हैं
दो से ज्यादा घर सातवें में स्त्री ग्रह नर[2] होते हैं
असूल मिलावट[3] बेशक अपने असर मर्द पर करते हैं

1.- स्त्री ग्रह से मुराद शुकर और चंदर
2.- नर ग्रह से मुराद बृहस्पत सूरज मंगल
3.- असूल मिलावट से मुराद दर्जा दृष्टी या बाहम देखना

अमूमन स्त्री ग्रह स्त्रियों (मादनियों) पर असर करते हैं, और नर ग्रह मर्दों पर, मगर जब खाना नंबर 7 में दो से ज्यादा ग्रह वाकय हों तो स्त्री ग्रहों को नर ग्रह ही समझ कर असर गिनना चाहिये. मसलन चंदर नंबर 7 में किसी और ग्रहों के साथ बैठा हो, तो मिलावट या दृष्टी की जोर से जो भी असर खाना नंबर 1 या 7 में बैठे हुये ग्रहों का चंदर पर हो सकता है वही असर नर ग्रह यानि बृहस्पत पर लेंगे. या यूँ कहो कि अगर कोई असर चंदर या माता पर होता हुआ मालूम होवे तो वह असर चंदर के साथ कोई और ग्रह(जब सब को चला कर दो से ज्यादा हो जावे) होने पर बृहस्पत या पिता पर होगा. इसी तरह शुकर नंबर 7 के साथ कोई दो और या दो से ज्यादा ग्रह होने पर स्त्री(शुकर) की बजाय नर ग्रह(मर्द) पर असर लेंगे. यानि ऐसी हालत में खुद टेवे वाले की स्त्री की बजाय वही असर खुद टेवे वाले के अपने जिस्म पर होगा. और वह बृहस्पत- मंगल-सूरज तीनों ग्रहों से मुत्तलका हो सकता है.

लगन से कुण्डली का पक्का घर खाना नम्बर 8- मुकाम फ़ानी मौत[1]-अदल

मौत शनि हों मंगल चंद्र[2] बुध- मंगल नहीं मंदे हैं
बैठा कोई ग्रह जब तक तीजे मौत टली ही गिनते हैं

(बाकि अगले सफ़.हः पर)

1 अदल से मुराद यह है कि इस घर के ग्रह इंसाफ (जिस में रहम और अक्ल दोनों शामिल होते हैं) कि बजाए "अदले का बदला" के उसूल पर अपना असर करेंगे। मसलन किसी ने दूसरे का लड़का कत्ल कर दिया तो सजा के ताल्लुक में इसका भी लड़का ही कत्ल किया जावे । बेशक पहले शख्स के पांच लड़कों से एक मारा गया ओर दूसरे प्रानी के यहां सिर्फ एक ही लड़का हो जिसके कत्ल के हुक्म पर इसका खानदान ही नष्ट हो जावे । इसी तरह ही इस घर के ग्रह अपना असर करेंगे, और किसी को मुआफ करने के लिए रहम या अक्ल का दखल होने न देंगे ।

2 अगर खाना नम्बर 8 में सुरज-बृहस्पत या चंद्र में से कोई भी अकेला अकेला या कोई दो या तीनों ही मुश्तरका बैठे जावें, तो खाना नम्बर 8 न आगे को खाना नम्बर 12 को और न ही पीछे को खाना 2 को देखेगा। बल्कि खाना नम्बर 8 का ऐसा असर सिर्फ़ खाना नम्बर 8 में ही बँद हुआ हुआ गिना जाएगा (गोया मौत) के घर को (सूरज-बृहस्पत चंद्र मुश्तरका) योगी जंगी जीत लेगा ।

सनीचर मंगल या चंद्र अकेले अकेले इस घर में हमेशा उम्दा मगर जब कोई दो या तीनों इकट्ठे तो सनीचर मौतों का भण्डारी चंद्र दौलत व सेहत के बरबाद करने वाला और मंगल में नम्बर 2-6 का मंदा असर शामिल या वह मंगल बद हर तरह की लानत का देवता जलता ही होगा, बुध नम्बर 8 हमेशा मंदा, मंगल नम्बर 8 अमूमन बुरा मगर मंगल बुध दोनों मुश्तरका नम्बर 8 में उत्तम होंगे जब तक नम्बर 2 में सनीचर न हो वरना मंगल बद ही होगा, जो मैदाने जंग में मौत का बहाना खड़ा करेगा ।

घर 8वां जब बदी पे आवे
2-6[1] भी आ मिलते हैं
बैठा 12 ख्वाह दुश्मन होवे
फ़ैसला[2] उसका लेते हैं
मंगल बद गो सब से मंदा
बुध पापी नहीं अच्छे हैं
ग्रह 11 घर चीज़ जो आवे[3]
छत गिरी ही लेते हैं

1.- 8-6 कोई मंदा तो दोनों मंदे।

2.- आख़री अपील चंद्र पर होगी।

3.- 1: **खाना नम्बर गयारह का ग्रह बमूजिब बर्ष फल खाना नम्बर 8 या 11 में ही आ जावे तो खाना नम्बर 11 में बैठे हुए ग्रह की मुतअल्लिका चीज नई खरीद कर घर लाने पर सेहत व दौलत दोनों बरबाद होंगे, नम्बर 8 की मंदी हालत की जड़ खाना नम्बर 4 मार्फ़त नम्बर 2 होगा, जब तक नम्बर 2 खाली तो मंदी हालत नम्बर 8 तक महदूद होगी, नम्बर 11 में अगर नम्बर 8 का दुश्मन हो, तो नम्बर 8 का बुरा असर नम्बर 2 में न जायेगा।**

2: **जब नम्बर 8 दुश्मन हो नम्बर 2-11 का तो नम्बर 8 का ग्रह बमूजिब दृष्टि जब कभी भी उसे मौका मिले 2-11 पर मार कर ही देगा ।**

लगन से कुण्डली का पक्का घर खाना नम्बर-9 आग़ाज़ किस्मत

जड़ बुनियाद ग्रह 9 होता	किस्मत का आग़ाज़[1] भी हो
घर दूजे पे बारिश[2] करता	समंदर घिरा ब्रह्मण्ड भी हो
घर तीजे का असर हो पहले[3]	बाद मिला घर पांच का हो
कुण्डली मकान मरकज़ गिनते	हाकिम गिना ग्रह सबका हो
उम्र ग्रह जो अपनी जागा[4]	असर गिना उस उम्र का हो
ऋण पितृ जब टेवे बैठा	रेत समंदर जलता हो

(बाकि अगले सफ्.हः पर)

1 किस्मत का असल आगाज ख़ाना नम्बर 9 का ग्रह होगा।

2 **नम्बर 9 जब 3-5 ख़ाली तो नम्बर 2 की मार्फ़त जाग पडेगा।**

3 **जब नम्बर 3 सोया हुआ हो तो 3 साला उम्र के बाद इसका असर होगा।**

4 जन्मकुण्डली का सोया हुआ ग्रह जब कभी बमुजिब बर्षफल नम्बर 9 में आने पर जाग पडे, तो वह ग्रह अपनी उम्र से अपनी उम्र के ज़माने तक नेक असर देगा मसलन सूरज नम्बर 8 में हो तो 22 साला उम्र से 22 साल तक यानी 44 साला उम्र तक नेक असर देगा । यही असर जन्म कुण्डली के नम्बर 9 वाले बाकि ग्रहों का नम्बर 9 में आने से होगा, मंगल नम्बर 2 का 28 से 28, बृहस्पत नमबर 2 का 16 से 16 साला, सूरज नम्बर 8 का 22 से 22 साल, चंद्र नम्बर 10 का 24 से 24 साल, सनीचर नम्बर 8 का 36 से 36 साल, केतु नम्बर 8 का 48 से 48 साल, राहु नम्बर 4 का 42 से 42 साल सबके सब उत्तम सिवायः

1: **शुकर नम्बर 12 का जो सिर्फ़ 25 वें साल मंदा होगा, जब नम्बर 3 या 5 की दृष्टि से मंदा हो रहा हो वरना नेक असर देगा।**

2: बुध नम्बर 3 का 17 से 17 मंदा जब बाकि उसूलों से बुध मंदा हो, वरना नेक असर देगा ।

पांच दृष्टि 9 पे करता
रवि चंद्र कोई 9 जब बैठा[1]
ज्ञान समंदर घर 9वें का
सफ़ेद झण्डा कोहसार पे झूले

निकास औलाद की गिनती जो
नजर दृष्टि उलटी हो
या फल उम्र हो पहली का
उम्र बुढापा घर 2 का

1 ऐसी हालात में नम्बर 5 बैठे हुए पापियों का औलाद पर कोई बुरा असर न होगा। मगर बाकि सब बातों में वही असर लेंगे जो सूरज, चंद्र से पापियों के ताल्लुक. पर हो सकता है ।

नम्बर 9 के ग्रह की मुतअल्लिका अश्या तिलक की जगह लगाने से नम्बर 9 का असर पैदा होगा।

लगन से कुंडली का पक्का घर खाना नम्बर-10- किस्मत की बुनियाद का मैदान

ग्रह मण्डल 9 ही से टेवे	घर 10वें जब बैठा हो
छः 5वें ख्वाह दोस्त उसके	दुगनी ज़हर का होता हो
ग्रह 10वें का घर 10 शक्की[1]	दुगनी ताकत का होता हो
आंख गया(गिना) है घर दो जिसकी	ख्बाब 12 में लेता हो
घर दूजे के खाली होते	10वां फ़ौरन सोया ।
दिन उसी ही ग्रह 10 जागे	शनि दूजे जब होया ।

1. इस घर बमुजिब बर्षफल आया हुआ ग्रह धोके का ग्रह होगा। जो अच्छा, बुरा दोनों ही तरफ़ हो सकता है, अगर नम्बर 8 मंदा हो, तो दोगुना मंदा और अगर नम्बर 2 नेक तो दो गुना उम्दा होगा, अगर दोनों तरफ़ बराबर तो अच्छा असर पहले और बुरा बाद में होगा । अगर नम्बर 8 व 2 दोनों ही ख़ाली हों, तो नम्बर 3-5-11 के ग्रह मददगार होंगे। अगर वह भी ख़ाली हो, तो फ़ैसला सनीचर की हालत पर होगा । (2) जब नम्बर 10 में बाहम लडने वाले कोई भी ग्रह बैठे हों तो वह टेवा अंधे ग्रहों का होगा यानी वह ग्रह हूबहू ऐसे ही ढंग पर असर देगें जिस तरह की दुनिया में एक अंधा प्रानी चलता फिरता है **। ऐसी हालत मैं फैसला चंद की हालत पर होगा**, यानी अगर चंद्र उम्दा तो असर उम्दा वरना मंदा फल लेंगे । (3) अगर खाना नम्बर 10 ख़ाली ही हो तो खाना नम्बर 4 के ग्रहों का कोई नेक फल न हो सकेगा । ख्वाह उस घर में रिज़क के चश्मे को उभारने के लिए ग्रह लाख दर्जे ही उम्दा क्यों न हो, **अपने माता पिता को मिलते रहना मदद देगा । (दस)10 अंधे मर्दों को इकटठा ही मुफ्त (बतौर खैरात) ख़ुराक तकसीम करना (नकद रुपया पैसा हर्गिज़ नहीं)** खाना नम्बर 10 के ग्रहों (मंदे या बाहम लड़ने वाले) की जहर धो सकेगा. राहू-केतु-बुध तीनो ही इस घर में हमेशा शक्की होंगे, जो सनिचर की हालत पर चला करते हैं यानी अगर सनीचर उम्दा तो 2 गुना उम्दा और अगर सनीचर मंदा तो 2 गुना मंदा असर देंगे ।

लगन से कुण्डली का पक्का घर खाना नम्बर 11 -गुरू अस्थान जाये इंसाफ़

(इंसाफ़ करने कराने की जगह या मुकाम मगर ख़ुद इंसाफ़ नहीं) या इंसानी किस्मत की बुनियाद

पाप अकेला असर अकेला — तीन-पांच 9 ग्यारां[11]
शनि वली का साथ मिले तो — असर बढ़े गुना ग्यारां[11]
ग्रह 11 जो मंदा होवे — असर में सबसे उम्दा हो
घर ग्यारह[11] से चलकर अपने — बैठा तख्त[1] पर जिस दिन हो
किस्मत का ग्रह घर उस तीजे — मदद न पांच से होती हो
ख़ाली तख्त[1] 3-11[3] सोवे — लिखत शनि पर चलती हो
उम्र पहली में 11 शक्की[2] — घर तीजा जब मंदा हो
ख़ुद तीजा हो बेशक रद्दी — मौत आई 8 रोकता हो

(बाकि अगले सफ़.हः पर)

1 11-23-36-48-57-72-84-94-105-119 साला उम्र ।

2 नम्बर 3 में बृहस्पत के दोस्त (सूरज, चंद्र व मंगल) तो नम्बर 11 हमेशा नेक असर देगा ।

4 खाना नम्बर 8 के ग्रह मुतअल्लिका की या से आई हुई मौत

नम्बर 3 में केतु के दोस्त(शुक्र-राहु) तो नम्बर 11 हमेशा नेक असर देगा।

3 खाना नम्बर 11 को खाना नम्बर 3 देखा करता लेकिन खाना नम्बर 11 का असर उसी वक्त ही मुकम्मल जागता हुआ माना जाएगा, जबकि ख़ाना नम्बर 3-1 दोनों ही घरों में कोई न काई ग्रह ज़रूर हो।

ख़ुद बेड़ी को पापी चलावें — डूब डुबाते वह नहीं हैं
ग्रह 11 घर चीज़ जो लावें — मौत[1] खड़ी ही करते हैं
घर 11- में ग्रह जो आवे — तासीर शनि वह होता हो
असर मगर उस घर में जावें[2] — गुरू जहां टेवे बैठा हो

इँसान का ज़ाती हाल (आमदन-कमाई- जन्म वक्त) या इँसान (टेवे वाले) का कुल दुनिया से ताल्लुक, और सबकी मुश्तरका किस्मत का मैदान या पेशानी हर शख्स अपने साथ लिये फिरता है ।

इस घर में केतु होने पर चंद्र बरबाद और चंद्र होने पर केतु बरबाद इसी तरह ही इस घर में बृहस्पत होने पर राहु बरबाद और राहु होने पर बृहस्पत बरबाद होगा ।

1 **जब बमूजिब जन्म कुण्डली या बर्षफल खाना नम्बर 8 और ग्यारह बाहम दुश्मन हों तो नम्बर 11 के ग्रह की मुतअल्लिका चीज़ टेवे वाले के किसी काम न आएगी, बल्कि ऐसे सदमें या मंदी सेहत की निशानी होगी कि जिससे कि जिससे पीठ टूटी हुई या घर के मकान की छत गिरी हुई की तरह मातम का ज़माना होगा, ऐसी हालत मैं खाना नम्बर ग्यारह के ग्रह कि मुतअल्लिका चीज़ के साथ ही उस ग्रह (खाना नम्बर 11 वाले) के दोस्त ग्रह या ऐसे ग्रह की मुतअल्लिका चीज़ भी साथ ही ले आवे, जो ग्रह के मंदे असर को नेक कर लेवे** मसलन सनीचर नम्बर 11 हो तो सनीचर की अश्या के साथ ही केतु की मुतअल्लिका अश्या ले आना मुबारक होगा। यानी अगर मकान बनाओ तो कुत्ता साथ ही ले लाओ (रख लो) । मशीनें- खरीदो तो बच्चों की खेलों का सामान खिलोने वगैरह जरूर साथ ही खरीद लाओ. इस तरह पर सनीचर बुरे असर की बजाए और भी भला असर देगा ।

2 मसलन बुध 11 सनीचर 12 बृहस्पत शुकर *7* उम्दा ग्रहस्त सूरज 11 सनीचर 3 बृहस्पत 2 कर्ज़ाई ।

खाना नंबर 11 के ग्रह सिवाय पापी ग्रहों के बेएतबारी हालत के होंगे। अगर खाना नंबर 3 खाली, हो तो अमूमन नेक फल तख्त में आने के दिन से शुरू करेंगे। और खाना नंबर 8[1] में आने के वक्त मंदा असर देंगे । मंदी हालत में ग्रह मुतअल्लिका की कुल मुकर्ररा उमर की मियाद के बाद नम्बर 11 में बैठे हुए या उसके दोस्त ग्रह की मुत्तल्लका चीज का उपाओं मददगार होगा। बशर्ते कि पापी ग्रह से कोई उस वक्त वर्षफल के हिसाब से खाना नम्बर 1 में न हो। अगर कोई पापी नम्बर 1 में ही हो तो खाना नम्बर 9 में आये हुएअ ग्रहों की मुतअल्लिका चीज़ के उपाओ से नेक असर होगा। अगर खाना नम्बर 9 खाली ही होवे तो बृहस्पत का उपाओं मददगार होगा।

1. खाना नंबर के ग्रह किस साल खाना नम्बर 8 में आएंगे- 7-20-34-45-53-67-79-92-97-113

खाना नम्बर 11 के ग्रहों की बेएतबारी की हालत

खाना नम्बर 11 में बैठे हुए ग्रह का असर

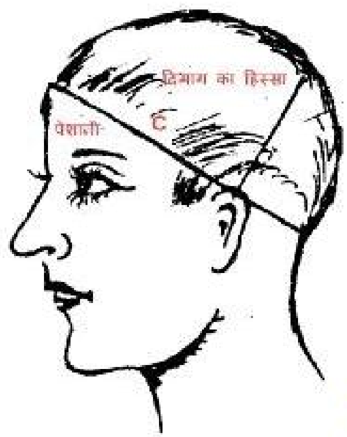
खाना नम्बर 11 में ग्रह बैठा हो	नेक हालत में	बुरी हालत में
बृहस्पत नम्बर 11	जब तक टेवे वाला खानदान में मुश्तरका रहे और पिता जिंदा हो तो सांप भी सज्दा करे	जब पिता से अलाहदा और चाल चलन का ढीला या जन्म कुण्डली के हिसाब से मंदे ग्रहों के कारोबार या रिश्तेदार का हद से ज़्यादा ताल्लुकदार हो तो मच्छर का मुकाबला न कर सके और कफ़न तक पराया हो
सूरज नम्बर 11	जिस कद्र धर्मात्मा और सफ़ा (सोफ़ी की) खुराक और पोशाक का मालिक रहे उसी कद्र उत्तम जिंदगी और साहिब परिवार हो	जब सनीचर की खुराक (गोश्त शराब) खाता हो तो बिधाता ख़ुद अपनी कलम से लावल्दी का हुक्म लिख देगा
चंद्र नम्बर 11	अगर टेवे में बृहस्पत और केतु उम्दा तो माया और औलाद की माता के बैठे तक भी कोई कमी न होगी।	माता के जिंदा होते हुए नर औलाद शायद ही माता को तो देखनी नसीब होगी।

खाना नम्बर 11 में कौन ग्रह बैठा हो	नेक हालत में	बुरी हालत में
शुकर नम्बर 11	दौलत का भण्डारी जब जक औरत के भाई मौजूद या मंगल उम्दा हो (जन्म कुण्डली में)	वरना बुद्धु, बुज़दिल और हिजड़ा और धन दौलत से दुखिया ही होगा।
मंगल नम्बर 11	बृहस्पत की पीछे पीछे कदम पर कदम रखने वाला बहादुर चीते की तरह ज़माने की अंधेरी रातों को भी अबूर करके अपना शिकार या दिली ख्वाहिश पा लेगा ।	वरना दुम को आग लगी हुई हालत में लंका से भागते हुए हनुमान जी की तरह समंदर के पानी (अपना रिजक. और आमदन) की तलाश में भागता होगा।
बुध नम्बर 11	चंद्र-बृहस्पत और सनीचर से मारे हुए यानी माता पिता के यहां जन्म लेने के दिन और दुनिया के गैबी अंधेरे से निकलकर आंखों के देखने के वक्त से दुखिया होने वाले को अपने वक्त में हर तरह और हर हालत से डूबे होने पर भी जिंदा करके तार देगा।	ऐसी खोटी अक्ल का मालिक जो पौधे को जड़ से उखाड़ देवे और खुद भी गिरने वाले दरख्त के नीचे आकर दब मरे।
सनीचर नम्बर 11	बिधाता की तरफ़ से लावल्दी के	वरना भरी बेड़ी को मंझदार

खाना नम्बर 11 में कौन ग्रह बैठा हो	नेक हालत में	बुरी हालत में
	लिखे हुए हुक्म को भी दूर करके बच्चे को पैदाइश का हुक्म देगा और तमाम दुनिया की ज़हरों और हर तरह के मुखालफ़ीन के बरखिलाफ अकेला ही हर तरह से पूरी हिफ़ाजत करेगा और धरम ईमान में सच्चे होने का पूरा सबूत देगा ।	(ऐन समंदर के दरमियान) पहुंच कर बेड़ी का चप्पू सिर सिरहाने रखकर अचानक सो जायेगा और अपनी आल औलाद को ऐसी अधूरी हालत में छोड़कर मरेगा कि उनकी आहों को सुनने वाला शायद ही कोई गृहस्ती मददगार होगा या हो सकेगा।
राहु नम्बर 11	इतने मुतकब्बिर और अपनी कमाई पर काबिज कि अपने मांबाप से भी कौड़ी पाई तक न लेंगे ताकि इस पर कोई एहसान न हो जावे। खुद कमाएंगे और सोना बनाएंगे मगर अपने जन्म से पहले के मिले हुए सोने की खाक कर दिखाएंगें। न बृहस्पत (पिता) का लिहाज़ न राहु (ससुराल) के जेलखाने का फिक्र मगर खुद ख्वाबी दुनिया में कोहेतूर/कोहेनूर पर बैठे खुदा की ज़ियारत कर रहे होगे।	जन्म लेते ही अपनी मियाद से पहले अगर सब के सांस और जिस्म के ख़ून (खास कर बाप या बाबे के) को संखिया और अफ़ीम से ज़हरीला बरबाद और बँद न कर दिया तो ऐसे टेवे वाले के जन्म लेने का किसी को पता ही क्या लगेगा। यानी अगर अफीम से मरे या संखिया से चल बसे या हीरा चाट गए - कोयला से राख हुए जो कुछ कहो सच मगर वह तमाशा देखने के लिए हर वक्त हाज़िर नाज़िर (जिंदा) होगा।

खाना नम्बर 11 में कौन ग्रह बैठा हो	नेक हालत में	बुरी हालत में
केतु नम्बर 11	आल औलाद की ख्वाहिश और केतु की अश्या रिश्तादार या दीगर कारोबार मुतअल्लिका केतु का फल 11 गुना नेक (उम्दा) होगा, जब खाना नम्बर 5 में चंद्र या बृहस्पत न हो।	खुद अपना केतू यानी आल औलाद, और शनि और चंद्र का फल हद से ज्यादा निकम्मा होगा।

खाना नम्बर 11



कियाफ़ा पेशानीः

दिमाग़ का खाना नम्बर 35, कुण्डली का खाना नम्बर 11 परेशानी से मौसूम किया गया है। अब्रू से ऊपर और दिमाग़ की हद से नीचे कान के सुराख से 90 दर्जा पर खींचा हुआ खत दिमाग़ के हिस्सा को सिर और अब्रू से अलाहदा कर देता है, तो पेशानी होगी। इँसान का ज़ाती हाल इँसान का कुल दुनिया से ताल्लुक और सबकी मुश्तरका किस्मत का मैदान या पेशानी हर शख्स अपने साथ लिये फिरता है। गोया पेशानी पर सब की मुश्तर्का किस्मत लिखी है. यह हिस्सा हमेशा ज़माने कि हवा से टकराता और इंसानी किस्मत पर बृहस्पत का असर डालता है। दिमाग़ी खानों में खाना नम्बर 35 (पेशानी) के पीछे खाना नम्बर 20(सूरज) और खाना नम्बर 21(चंद्र) चमक रहे हैं। जिन दोनों के ऊपर खाना नम्बर 31 सनीचर का घर है।

पेशानी की चौड़ाई कुल चेहरा की लम्बाई का 1/4 (एक बटा चार अगर चार हिस्से किए जावें, तो चार में से सिर्फ़ एक हिस्सा) नेक होती है। पेशानी की इस मिकदार से जिस कद्र चौड़ाई बढ़े उस कद्र नेक असर ज्यादा बढ़े और मुबारक होवे.

ग्रह चाल	पेशानी की क्या हालत हो बरूए कियाफ़ा	खाना नम्बर 11 का क्या असर होगा
1- खाना नम्बर 2 के बृहस्पत से या खाना नम्बर 2 से बज़रिया दृष्टि वगैरह जिस कद्र ज्यादा केतु का ताल्लुक होवे	उसी कद्र पेशानी चौड़ी होगी ।	उसी कद्र ही नेक असर ज्यादा होगा।
2- खाना नम्बर 8 का 2 की मार्फत खाना नम्बर 6 में असर जावे। केतु जब बृहस्पत के साथ या बृहस्पत के घरों (2-5-9-12) में हो।	कुशादा पेशानी होगा	अक्ल की बारीकी ज्यादा होगी।
3-जिस कद्र केतु का ताल्लुक. खाना नम्बर 2 के बृहस्पत या खाना नम्बर 2 से कम होवे ।	उसी कद्र पेशानी लम्बी होगी ।	उसी कद्र ही नेक असर कम होगा।

ग्रह चाल	पेशानी की क्या हालत हो बरूए कियाफ़ा	तो ख़ाना नम्बर 11 का क्या असर होगा ।
4- खाना नम्बर 2 का असर नम्बर 6 की मार्फ़त खाना नम्बर 12 में जावें।	पेशानी के ऊपर का हिस्सा बाहर को उभरा हुआ हो ।	कुव्वत दरियाफ्त और चाल चलन उम्दा होगा
5- खाना नम्बर 8 का असर खाना नम्बर 11 की मार्फत (जिस के लिए मुफ़स्सिल खाना नम्बर 8 में देखे) खाना नम्बर 2 में जावें	पेशानी के निचला का हिस्सा बाहर को उभरा हुआ हो ।	कुव्वते ख्याल नेक तरफ़ काम करने वाली होगी ।
6-खाना नम्बर 2 मे खाना नम्बर 8 के मंदे ग्रहों (मंगल बद बगैरह) का असर मिल रहा हो।	तिलक लगाने की जगह छोड़कर बाकी पेशानी पर निशानात का असर सिर्फ़ उम्र की कमी बेशी पर होगा, पेशानी पर त्रिकोन, तराजू, मछली, त्रिशुल, आंकस, पदम, पंखा, तलवार, या परिंद में से कोई भी ऐसा निशान हो	अज़ीजों व रिश्तेदारों का सुख न नसीब होवे ।
	पेशानी पर कौवे के पाव का निशान हो	कम उम्र और मंद भाग होगा
7- खाना नम्बर 2 में बृहस्पत के दुश्मन ग्रह(शुकर बुध)ग्रह या केतु के दुश्मन ग्रह चंद्र मंगल हो	पेशानी पर टूटी फूटी लकीरें बहुत हों तो उनका झुकाव नीचे की तरफ मानिंद ⌐ हो या ⁀ हो	अल्प आयु यानी कम उम्र और जिंदगी उम्र 8वें साल 8-16-24-32-40-48-56-64(8x8) खतरा में होगी ।

ग्रह चाल	पेशानी की क्या हालत हो बरूए कियाफ़ा	तो ख़ाना नम्बर 11 का क्या असर होगा
8- खाना नम्बर 2 में 7 मंदे ग्रह हो	पेशानी पर सात या ज्यादा लकीरें	कज़्ज़ाक डाकु उम्र 50 साल ।
9- नम्बर 2 में मंगल बुध या सूरज बुध	सूर्ख-रंग नाड़ें	कम उम्र होवें ।
10- राहु बृहस्पत मुश्तरका नम्बर 2 या अकेला बुध नम्बर 2 में	सब्ज रंग नाड़ें ख्वाह मर्द ख्वाह औरत।	मुबारक और खुश किस्मत होवे।

लगन से कुण्डली का पक्का घर ख़ाना नम्बर 12 - इंसाफ़ मगर इंसाफ़ करने कराने की जगह नहीं) आरामगाह, ख्वाब अवस्था ईंसान का सिर

घर 12 न ग्रह जो बोले — घर 2 में वह बोलता है
फल घर 2-12 का इकट्ठा — साधु समाधि होता है
एक जन्म से दूजा शुरू हो — 12 जहां 2 होता है
सुख दौलत और सांस आखरी — हुक्म विधाता होता है

1- कुण्डली के तमाम ग्रहों की अपील ख़ाना नम्बर 12 पर होगी। यानी ख़ाना नम्बर 12 का फैसला सबसे आख़री फैसला होगा। लेकिन अगर खाना नम्बर 12 के लिए ख़ुद अपनी अपील की ज़रूरत हो तो खाना नम्बर 2 पर होगी या ख़ाना नम्बर 12 के ज़ाती ताल्लुक में खाना नम्बर 2 का फैसला सबसे आखरी फैसला होगा। अमूमन नम्बर 11 का पहला दुनियावी हाकिम (बलिहाज़ मुलाज़मत वग़ैरह) नम्बर 1 कुंडली का राजा होता है. मगर नंबर 12 के लिये (बमूजब जन्म कुंडली) **नंबर 1 के ग्रह की उम्र (मसलन सूरज नम्बर 1 तो 22 साला) गुजरने के बाद नम्बर-2 अपील का काम देगा। जिसका आखरी मुंसिफ़ केतु होगा अगर बमूजिब जन्म कुण्डली नम्बर 1 ख़ाली हो या नम्बर 1 के ग्रह की उम्र (मसलन मंगल नम्बर 1 तो 28 साला)** के बाद नम्बर 1 ख़ाली हो जावे तो सबसे आख़री मुंसिफ़ चंद्र होगा। लेकिन नम्बर 1 की उम्र के अंदर अंदर आखरी हाकिम हमेशा नम्बर-1 का ग्रह ही होगा, वास्ते तमाम दीगर हालात। (2) **नम्बर 12 के ग्रह का मुतअल्लिका रिश्तेदार टेवे वाले के आराम पैदा करने के ताल्लुक. में ख़ुदाई ताकत का मालिक होगा। जिसके बाद उस ग्रह की मुतअल्लिका चीज़ कायम करने से सुख सागर होगा।** मसलन बृहस्पत नम्बर 12 हो तो पिता, बाबा, जिंदा होने के वक्त तक टेवे वाले की रात हमेशा आराम से गुज़रेगी। उनकी वफात के बाद बृहस्पत की अश्या बावक्त रात कायम रखना आराम देगा (3) नम्बर 8 मंदा और नम्बर 2 ख़ाली हो या जब नम्बर 12 और नम्बर 8 दोनों ही घर में ऐसे ग्रह हों जो इकट्ठे हो जाने पर मंदे हो जावें तो मंदिर मे पूजा पाठ यात्रा वग़ैरह के लिए जाने की बजाए मंदिर से दूरी बेहतर वरना खाना नम्बर 8-12 की मंदी टक्कर होगी। **मसलन बुध 8 सनीचर 12- लड़कियों की बीनाई बरबाद जब बाप मंदिर में जावे।**

12 ही पक्के घर मुश्तरका

धन की थैली 7 वें होवे — मर्द बोलते 6वें हैं
घर 8 वें से उम्र मिले तो — बने महल घर दूसरे हैं
घर 5वां औलाद का गिनते — 11 होता घर धरती है
अंग जिस्म घर पहले होते — साथ लगी 9 बुजुर्गी है
चश्मा दौलत घर चौथे निकले — मैदान रिज़क घर 10 का हो
आखीर वक्त घर तीसरे चलते — ख्वाब पाया घर 12 हो
ख़रबूज़ा देख ख़रबूज़ा पके — 9 पहले और सात ग्यारह
चोरां टोली एको बोली — बुध शनि और शुकर यारां

जिस्मानीः-

नम्बर 2-6-12 (तीनों ही) में कोई न कोई ग्रह ज़रूर हो तो कुव्वत दरियाफ्त व चाल चलन उम्दा होगा ।

इँसान की जिस्मानी ताकत से मुतअल्लिका होगा ख़ाली ख़ाना नम्बर 10 (उंगलियों का दरमियानी हिस्सा)

रूहानीः

नम्बर 2-8 (दोनों ही) में कोई न कोई ग्रह जरूर हो, और नम्बर 8 का असर नम्बर 2 में पहुंच रहा हो, यानी नम्बर 11 में नम्बर 8 का दुश्मन न हो, तो अक्ल की बारीकी व कुव्वते ख़याल उम्दा होगी, ख़ाली ख़ाना नम्बर 2 उंगलियों की नाख़ून वाली पोरी या टुकड़ा रूहानी ताकत से मुतअल्लिका होगा ।

ख़ाना नम्बर 1 ता 3 पहली अवस्था- 4 ता 6 दूसरी अवस्था 7 ता 9- तीसरी अवस्था 10 ता 12 चौथी अवस्था बतलाएगा, या दूसरे लफ्ज़ों में:-
पहली अवस्था 25- दूसरी 50, तीसरी 75, चौथी 100 साला उम्र तक।

नफ्सानी:-

ख़ाली ख़ाना नम्बर 12- उंगलियों का निचला हिस्सा, नफ्सानी ताकत से मुतअल्लिका होगा ।

ख़ाली ख़ानों के लिए:-

आमतौर पर खाली ख़ाने की हालत में ख़ाली नम्बर वाली राशि का मालिक ग्रह लेते हैं । ख़ाना नम्बर 6 व 12 में बुध व बृहस्पत के साथ केतु व राहु का निवास भी माना है इसलिए हर दो में से कौन सा एक होगा:-
बृहस्पत जब अपनी दूसरी राशि नम्बर 9 में हो तो ख़ाली नम्बर 12 का मालिक राहु होगा
बुध जब अपनी दूसरी राशि नम्बर 3 मे हो तो ख़ाली नम्बर 6 का मालिक केतु होगा
लेकिन अगर

1 बृहस्पत 9-12 में से किसी जगह भी न हो तो ख़ाना नम्बर 12 में बृहस्पत राहु दोनों ही मुश्तरका या मस्नूई बुध होगा ।

2- बुध 3-6 में से किसी जगह भी न हो तो खाली नम्बर 6 में बुध केतु दोनों ही मुश्तरका हो सकते हैं, लेकिन जहां बुध ज़बरदस्त होगा केतु वहां कमज़ोर होगा

। इसलिए ऐसी हालत में ख़ाली खाना नम्बर 6 का मालिक बुध या केतु में से कोई एक लेंगे। जो कि दोनों में से (प्रबल या जबरदस्त हो) उस कुण्डली में (जन्म कुण्डली के हिसाब से) उम्दा होवे क्योंकि खाली खाना नम्बर 6 हमेशा नेक मायनों में होता है । इस लिए दोनों में से कमजोर या मंदे को अब खाना नम्बर 6 का मालिक नही लेंगे । ख़ाली खाना न 9 का मालिक बृहस्पत और नम्बर 6 ख़ाली का मालिक बुध होगा । बाकि ख़ाली ख़ानों के लिए उस खाली राशि नम्बर का मालिक ग्रह (घर का) लेवें।

कियाफ़ाः-

(हमसाये ग्रह) हथेली की बेहरूनी हुदूद का असर

1. अंगूठे और तर्जनी की जड़ का दरमियानी फ़ासला (जिसमें मंगल नेक और बृहस्पत है) हौसला और अंदरूनी दिली ताकत की मज़बूती से मुतअल्लिका है ।

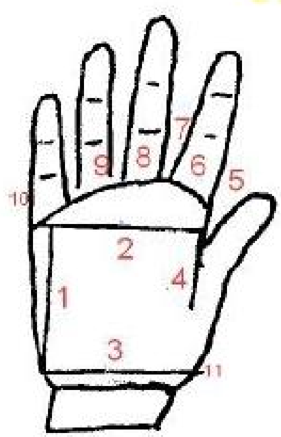
2. तर्जनी और मध्यमा की जड़ों का दरमियानी फ़ासला (बृहस्पत और सनीचर का दरमियान) कुव्वते ख्याल सोच विचार की ताकत से मुतअल्लिका है ।

3. मद्धमा और अनामिका की जड़ों का दरमियानी फ़ासला (सनीचर व सूरज का दरमियान) खयालात की आज़ादी ज़ाहिर करता है। मौका के मुताबिक लट्टू की तरह फ़ौरन पहलू बदल लेने वाला होगा।

4 अनामिका और कनिष्का की जड़ों का दरमियानी फ़ासला (सूरज और बुध का दरमियान) ख़ुद काम करने की ताकत व आदत ज्यादा, दूसरो की कमाई की तरफ़ उम्मीदें रखने की बजाए ख़ुद अपनी कमाई बरकत पर शुक्र व सब करने वाला होगा।

5. कनिष्का की जड़ और बुध का हिस्सा हथेली से बाहर को निकाला हुआ, सिर्फ बुध के बुर्ज की हद, बोलने की ताकत से लोगो में रसूख पैदा करने की ताकत ज्यादा।

6. शुकर की जड़ से चंद्र से चंद्र की जड़ का हिस्सा जो बाजू की चौड़ाई या कलाई की चौड़ाई होगी । दिली मुहब्बत और लगन, शुकर या औरत की लगन कुव्वते नफ्सानी (इश्क व मुहब्बत) माता की मुहब्बत पितरों या बुज़र्गो की सेवा की ताकत से मुतअल्लिका होगी।



हथेली की चारों तरफें:

1 बुध से चंद्र की तरफ़ की लम्बाई वाला हिस्सा जिस कद्र ज्यादा लम्बाई उसी कद्र जुबान की ताकत ज्यादा और जिस कद्र कनिष्का की जड़ से बाहर को

उभरी हूई या निकली हुई

उसी कद्र रसूख पैदा करने की ताकत और रसूख पैदा किया हुआ ज्यादा होगा।

2. बृहस्पत से बुध की तरफ़ उंगलियों की जड़ वाला हिस्सा, जिस कद्र लम्बाई ज्यादा उसी कद्र ज़हनी और दिमाग़ी ताकत ज्यादा होगी, और उसी कद्र बुध के बुर्ज की पाएदारी होगी।

3. शुकर से चंद्र वाला हिस्सा जिस कद्र लम्बाई, उसी कद्र ख्वाहिशाते नफ्सानी या शुकर की ताकत ज्यादा या शुकर का असर ज्यादा होगा।

4. शुकर की जड़ से बृहस्पत के आख़ीर तर्जनी की जड़ तक का हिस्सा, जिस कद्र यह लम्बाई ज्यादा उसी कद्र ज़ाती हौसले में ज्यादा या अंगूठे की ताकत ज्यादा या मंगल नेक का नेक असर ज्यादा होगा।

नम्बर 1:

हथेली भारी या मोटी लालची होगा। मामुली दर्जा की ज़िंदगी वाला, क्यों कि इस हालत में तर्जनी हासिद, मद्धमा बे बुनियाद ख़यालात, अनामिका मशूहरी पसंद कनिष्का बेवफ़ा, ज़ाहिर करती है।





नम्बर 2:

हथेली लाग़र या पतली और कमज़ोर सी गरीबाना हालत व ग़रीबाना रोज़गार वाला होगा।

नंबर 3:-

हथेली लम्बी- जुबान में ज़ाहिरदारी या ज़ाहिर करने की ताकत ज्यादा हो, जिस कद्र लम्बाई ज्यादा होवे, उसी कद्र यह ताकत ज्यादा होवे।



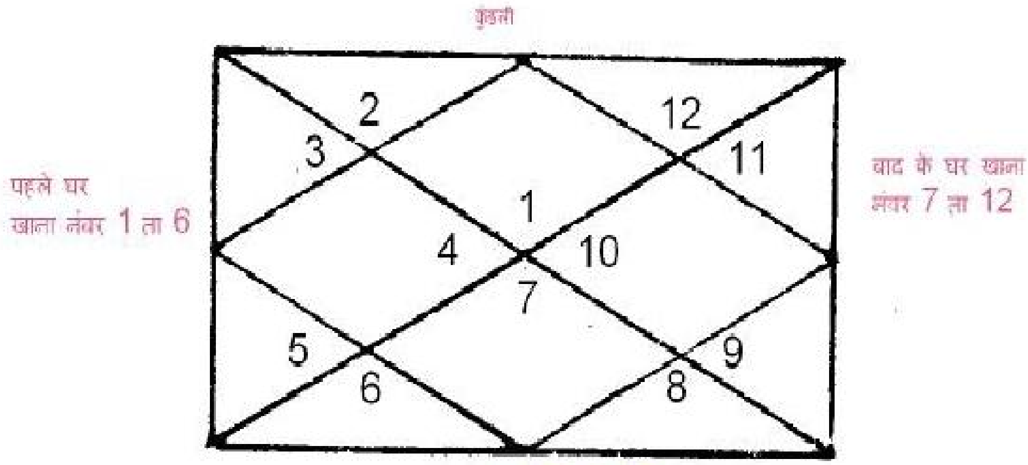


नम्बर 4:

लम्बी व गोल हथेली वाला- हुक्मरान, खुश गुजरान आसूदा हाल होवे।

सोए हुए पक्के घर या पक्के घरों में बैठे मगर सोए हुए ग्रह

ग्रह सोए हुए या सोए हुए घर से मुराद यह है कि वह ग्रह या घर सब कुछ होते हुए भी अपना कोई नेक असर न देगा।



एक अकेले न कोई दुश्मन — न ही दोस्ती होती है
रियाया बिना न राजा कोई — न ही वज़ीरी होती है
एक से 6 तक तरफ़ जो पहली — हिस्सा दायां कहलाती है
बाद के घर 7वें से 12 — तरफ़ बाई हो जाती है
तरफ़ पहली न ग्रह हो कोई — बाद के ग्रह सोए होते है
घर जब बाद का ख़ाली होवे — तरफ़ सोई पहली गिनते हैं
जिस घर में ग्रह हो कोई बैठा — जागता घर वह लेते हैं
जागे घर न ही असर ग्रह का — जब तलक ख़ाली होते हैं

(बाकि अगले सफ्हः पर)

ऊंच दृष्टि कितना ही होवे निर्बल प्रबल किसी भी घर
घर दृष्टि का जब तक ख़ाली असर जावे न दुसरे घर
घर 9-11 गुरू से जागे चंद्र से 2-4-8 घर
रवि जगाता घर 5वां तो शुकर जगावे सातवां घर
शनि से 10वां राहु 6 को बुध जगाता है तीसरा घर
मंगल से घर पहला जागे केतु जगावे बारहवां घर

सोया हुआ घर:

जिस घर में कोई ग्रह न हो, या जिस घर पर किसी ग्रह की दृष्टि न पड़ती हो वह घर सोया हुआ होगा।

सोया हुआ ग्रह:

जिस ग्रह की दृष्टि में मुकाबला पर कोई ग्रह न हो, वह ग्रह ख़ुद ही जो कि पहले घरों का है सोया हुआ होगा ।

1. कुण्डली के ख़ाना नम्बर 1 ता 6 पहली तरफ़ और लगन से नम्बर 7 ता 12 बाद की तरफ़ मानी गई है। अगर पहली तरफ़ कोई ग्रह न हो, तो बाद के ग्रह सोए हुए माने जाएंगे लेकिन जब बाद का घर ख़ाली हो तो पहली तरफ़ सोई हुई होगी, हर हालत में सोये हुए ग्रह का असर बाद के घर में नहीं जा सकता। **ग्रह बैठा होने वाला घर हमेशा जागता होगा,** और **पक्के घर का मालिक ग्रह (मसलन शुकर खाना नम्बर 7 या मंगल ख़ाना नम्बर 3 में) हर हालत में जागता हुआ गिना जाएगा।**

जब पहले घरों में कोई ग्रह न हो तो बाद के घरों के ग्रह सोये हुए माने जाते हैं। ऐसी हालत में किस्मत के ग्रह को जगाने वाले ग्रह

की तलाश की ज़रूरत होगी और अगर बाद के घर खाली हों, तो ख़ाना नम्बर को जगाने वाले ग्रह के उपाओ की ज़रूरत होगी, जो कि ख़ाली है, (ग्रह का जागना और ख़ाना नम्बर का जागना दो जुदी जुदी बातें है ।

बग़ैर जगाए सोया हुआ ग्रह अगर ख़ुद ब ख़ुद जाग उठे, यानी अपना फल देना शुरू कर दे तो ऐसे जागे हुए ग्रह की आम उम्र (मसलन शुकर 3 मंगल 6 केतु 3 साल वग़ैरह) के आखरी साल फ़र्जन शुकर शादी के **तीसरे साल पर सब ही ग्रह का मंदा फल कर देगा**, ख्वाह वह ग्रह ख़ुद ब ख़ुद जागे हुए ग्रह के दोस्त हों या दुश्मन

कौन ग्रह जगाएगा	मंगल	चंद्र	बुध	चंद्र	सुरज	राहू	शुकर	चंद	बृहस्पत	सनीचर	बृहस्पत	केतु
सोया घर नम्बर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

2 **सोए हुए ग्रह को जगाने वाले घर - (बहैसियत पक्का घर) के मुतअल्लिका ग्रह का रिश्तेदार कायम होते हुए कोई मंदा असर न होगा** । मसलन शुकर नम्बर 11 व नम्बर 3 ख़ाली, अब अगर औरत के भाई (शादी होने या औरत बनने से पहले) कायम हों ख्वाह 3 ख्वाह एक तो ख़ुद ब ख़ुद जागे हुए शुकर का बुरा असर न होगा ।

4.- ख़ाना नम्बर 10 में कोई भी ग्रह न हो तो ख़ाना नम्बर 2 के ग्रह सोए हुए होंगे।
ख़ाना नम्बर 2 में कोई भी ग्रह न हो तो खाना नम्बर 10 के ग्रह सोये हुए होगे।
ख़ाना नम्बर 2 में कोई भी ग्रह न हो तो खाना नम्बर 9 के ग्रह सोये हुए होंगे।

सोया ग्रह कब ख़ुद ब ख़ुद जाग पड़ेगा

ग्रह	कब जाग पड़ेगा	किस उम्र में	कब मंदा असर देगा ।
बृहस्पत	आम कारोबार शुरू होने पर	16 साला उम्र के बाद	6 वें या 22 वें साल
सूरज	सरकारी मुलाज़मत या ताल्लुक.	22 साला उम्र के बाद	दूसरे या 24 वें साल
चंद	तालीम ताल्लुक	24 साला उम्र के बाद	पहले या 25 वें साल
शुकर	शादी करने	25 साला उम्र के बाद	तीसरे या 28 वें साल
मंगल	औरत ताल्लुक	28 साला उम्र के बाद	6 वें या 34 वें साल
बुध	ब्योपार, बहन या लडकी की शादी	34 साला उम्र के बाद	दूसरे या 36 वें साल
सनीचर	मकान ताल्लुक	36 साला उम्र के बाद	6 वें या 42 वें साल
राहू	ससुराल ताल्लुक	42 साला उम्र के बाद	दूसरे(?) या 48 वें साल
केतु	पैदाइश औलाद	48 साला उम्र के बाद	तीसरे(?) या 51 वें साल

ग्रामर

ग्रह द्रिष्टी

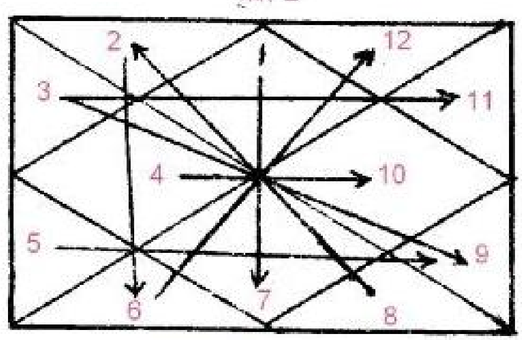
1.- कुंडली के 12 ही घरों में से किसी घर में बैठे हुए ग्रहों मुकर्रा राशियों के जरिये बाहमी असर मिलाने की ताकत या नजर ग्रह द्रिष्टी (देखना) कहलाती है. जो उंगली टेढ़ी हो जावे वह अपनी ताकत छोड़ देती है. और जिस उंगली की त्रफ झुक जावे उसी उंगली का असर पैदा होगा. **उंगली के झुकाव से मुराद ये है कि उंगली की बनावट में टेढ़ापन होवे न कि जाहिरा झुकाव हो.**

क्याफा:-

2- बृहस्पत रेखा में रेखा की शाखों या रेखा के उतार झुकाव को इलम ज्योतिश में ग्रह दिष्टी गिनते हैं. रेखा का उपर को झुकाव और उठाव तरक्की या नेक असर और नीचे को झुकाव बुरा असर बताता है. यही हाल शाखों के ऊपर को या नीचे को निक्ल जाने से गिना है. रेखा का ऊपर को उठाव या झुकाव से मुराद होगी कि इस में उस ग्रह का असर आ कर मिल रहा है, जिस ग्रह के बुर्ज की तरफ को रेखा उठ रही है. दूसरे लफजों में खतम होने से पहले ही दूसरी रेखा का शुरु हो जाना — रेखा का टूटा हुआ नहीं मानते बल्कि तबदीली हालात जाहिर करता है. ख्वाह वह तबदीली बुरी तरफ होवे ख्वाह भली तरफ को जाने लगे. अगर ऐसी तब्दीली बुरी तरफ को जाती हुई मालूम होवे तो दान से **रहाई** और नेक असर होगा.

आम हालत नम्बर (1)

एक सात घर चौथे 10वें[1] पूर्ण दृष्टि होती है
पांच 9वें और तीन 11 आधी नज़र ही रहती है
आठ छटे 2 बैठे 12 नज़र चौथाई करते है
केत राहु और बुध की नाली लेखा जुदा ही रखते है



देखने से मालूम होगा कि इस शक्ल में दिये हुए तीरों के निशान किसी ख़ास

1 लगन को एक गिनकर पहला, सातवां, चौथा, दसवां वग़ैरह

2 शुरू होने वोले तीर के तीर खतम होने वोले घर मुंदरजा ज़ैल	तीर खतम होने वोले घर मुंदरजा ज़ैल है
1	7
3	9-11
4	10
5	9
6	12
8	2

खास घरों से शुरु हो कर कैसी खास खास घरों में जाकर खत्म होते हैं. तीर से मिले हुए घरों का मतलब ये है कि जिस घर से तीर शुरु होता है, वहाँ बैठे हुए, ख्वाह बमूजब जन्म कुंडली, ख्वाह बमूजब वर्षफल ग्रह का असर उस घर में बैठे हुए ग्रह के असर में मिल सकता है, जहाँ पहुँच कर वह तीर खत्म है. मसलन खाना नंबर 3 से एक तीर तो खाना नबर 11 में और दूसरा खाना नंबर 9 में जाकर खत्म होता है, जिस का मतलब यह है हुआ कि खाना नंबर 3 में बैठे हुये ग्रह का असर खाना नं 11 और खाना नं 9 में बैठे हुए दोनो ही घरों के ग्रहों के असरों में जाकर मिला करता है. अगर तीर शुरु[1] होने वाले घर में कोई ऐसा ग्रह बैठा हो, जो कि इस ग्रह का दोस्त[2] हो जहाँ जाकर वह तीर खत्म हुआ हो, तो तीरे खत्म होने वाले घर में बैठे हुए ग्रह का असर और भी उमदा हो जायेगा. लेकिन अगर तीरे शुरु होने वाले घर क ग्रह तीर खत्म होने वाले घर के ग्रह का दुश्मन होता तो तीरे खत्म होनी वाले घर के ग्रह का असर खराब हो जाता। याद रहे कि तीर शुरु होने वाले घर का ग्रह तीर खत्म होने वाले घर के ग्रह के असर को अच्छा या बुरा कर देता है. मगर तीर खत्म होने वाले घर के ग्रह का तीर शुरू होने वाले घर के ग्रह के असर में कोई दखल नहीं हुआ करता.

कुंडली में हर ग्रह व खाना नंबर की मुत्तलका चीजों का असर देखने के लिये उन की बाहम द्रिष्टी का ताल्लुक हर ग्रह अपने से सातवें(दरम्यान में 5 छोड़ कर) 100 फी सदी नजर से देखते हैं। खाना नंबर 1 और 7 व खाना नंबर 4-10 , 100 फीसदी नजर रखते हैं. खाना नंबर 5-9 व खाना नंबर 3-11 50 फीसदी नजर, खाना नंबर 2-6 व खाना नंबर 8-12

1.- हर एक ग्रह के कौन कौन से ग्रह व दोस्त हैं, और कौन कौन ग्रह इस के दुश्मन हैं ये एक जुदी फहरिस्त में दर्ज कर दिया ग्या है.

2.- तीर शुरु होनी वाले घर खाना नंबर 1-3-4-5-6-8 हैं

3.- तीर खत्म होने वाले घर खाना नंबर 7-9-11-9-12-2 हैं

पनफर- राशि का ऊंच ग्रह अपनी राशि में उत्तम फल देगा-25% तिकोन- 100 फीसदी दृष्टि की हालत में दो ग्रह एक दूसरे के ज्यादा नज़दीक या एक ही हो जाते या मिल जाते। 50 फीसदी पर इनका दरमियानी फ़ासला निस्फ रह जाता है या दोनों की ताकतें आधी आधी बाहम मिल जाती है। 25 फ़ीसदी पर सिर्फ एक चौथाई मिलते है। यानी तीन चौथाई वह एक दूसरे से दूर रह जाते है। बुध की खास नाली, राहु-केतु सिर्फ दोनों की बाहम दृष्टि और खाना नम्बर 2 और 9 में इन तीनों का ताल्लुक जुदा होगा।

उलटे घर

(आम हालत नम्बर (2))

घर उलटा 8 दूजे देखें न देखें 5-11 घर
बुध 12-6-9-3 मारे शनि[1] छटे से दूसरा घर

ग्रहों की बाहम दृष्टि व राशियों (कुण्डली के खानों) से ताल्लुक

बात को समझने के लिए राशि को स्त्री, और ग्रह को मर्द कहिए। दोनों के मिलाप ग्रह व राशि या मर्द औरत का जोड़ा मिथुन राशि बुध के खाली आकाश में शुकर की गृहस्ती

1.- सनीचर नम्बर 6 की उलटी दृष्टि हुआ करती है जो सनीचर नम्बर 6 में मुफ़स्सिल लिखीं हैं।

मुहब्बत (हकीकी व गैर हकीकी में मुकम्मिल सृष्टी दुनिया) की त्रिलोकी(तीनों जमाने या खाना न: 3 में मँगल के पक्के घर भाई बन्दी से चल रहा है. इस जोड़े की नीत तीन हिस्सों में बटी हुई समझें :-

1.- घर की मालकियत या साधारण जैसी मर्द औरत की गिनी जा सकती है.

2.- ऊँच हालत की यानि जो हर एक या बाहम एक के लिये दूसरे की नेक हो सकती है.

3.- नीच या मंदी और दुश्मनी भरी बुरी या एक के हाथों दूसरे का बुरा करने वाली हुई.

हर एक राशी के असर के लिये उसके घर का मालिक ग्रह साधारण या आम हाल्त का (भला या बुरा) ऊँच फल की राशी से मुराद नेक फल देने का ताल्लुक ख्वाह राशी को ग्रह के लिये या ग्रह को राशी के लिये और नीच फल की राशी का ग्रह बुरे असर से मुत्तलका होगा. या जिसकी(ख्वाह राशी की इस मुत्तलका ग्रह के लिये कहो ख्वाह ग्रह के लिए इस राशी के ताल्लुक से समझें) नीयत बद गिनी गई जायेगी। हर एक राशी किसी खस ग्रह के लिये खास खास ताल्लुक(बुरा या भला) की और हर एक ग्रह किसी खास खास राशी के लिये खास खास ताल्लुक का मुकर्रर किया गया है. इस तरह पर मुकर्रर किये हुये जोड़े में से जब कोई ग्रह अपनी मुकर्ररा राशी की बजाय किसी और ग्रह की ताल्लुकदार राशी में जा बैठे तो वह ग्रह जो चल कर दूसरी जगा जा बैठा है, **कुंडली वाले की किस्मत** पर वैसा ही असर देगा जैसा वह दूसरी जगह जाकर हो गया है.

4.- कुंडली के बारह खानों को एक बड़े मकान की बारह कोठड़ियां फर्ज करें. हर एक खाना की लकीर को इस कोठडी की दीवार समझें. तो ख्याल आयेगा कि कुंडली के अंदर के चार खाने चार चार दीवारों वाले चार खाने हैं. जिस में साथ लाया हुआ खजाना गिना ग्या है. बाकि आठ खाने सिर्फ तीन तीन दीवारों से बने हुए आधे आधे मकानों की तरह के आठ मशलशें हैं, जिन में कुंडली वाले के आधे आधे हिस्से गिन कर कुल आठों से आधा चार पूरे घर और है। गोया बच्चे के कुल आठ घर हो गये. पहला घर अपना जन्म का जिस्म व आठवाँ खाना नं 8 मौत है. ग्रहों को लैंप मानते मानें, सब कोठड़ियों के दरम्यानो के दर्वाजे किसी न किसी तर्फ खुले हुये माने गये हैं. या एक घर

में चमकते या जलते हुए लैम्प की रोशनी उसके दरवाज़े से दूसरे के अंदर जाती हुई मानी गई है। रोशनी के उस तरह दूसरे घर में पहुंच जाने के ढ़ंग को ग्रह की दृष्टि (देखना) कहते हैं । 'लाल किताब' में हर ग्रह अपने से सातवें (यानी फलाने घर के ग्रह फलाने घर को 100 फीसदी 50 फीसदी या 25 फीसदी की नज़र से) देखता है, से मुराद है कि वह अपने उस घर से अपने से बाद के घर को देखता है या उस का अपने बैठे हुए घर का असर वह अपने बाद वाले घर में भी पहुंच रहा है, मगर या मतलब नहीं है, कि वह अपने से बाद वाले सातवें घर के ग्रह के असर को अपनी तरफ़ अपने बैठे हुए खाना नम्बर में खेंचकर ला रहा है। खाना नम्बर 8 मौत का घर उलटा देखता है यानी वह अपना असर खाना नम्बर 2 की तरफ़ भेजता है । यह खाना नम्बर 2 गो सब के लिए राहु केतु की मुश्तरका बैठक के असर (पाप पुण्य का मुकाम) का मुकर्रर है, मगर उस नम्बर 2 में खाना नम्बर 8 से आने वाले असर में तमाम पापी ग्रहों (राहु केतु) के अलावा सनीचर का जुज़ भी शामिल है।

अपने से सातवें घर को देखने वाले खानों के ग्रह यानी खाना नम्बर 3-6 के ग्रह (तीसरा 9वें को देखता है मगर 9वां तीसरे को नहीं देखता । उसी तरह छठा बारहवें को देखता है मगर बारहवां छठे में अपना असर नहीं डाल सकता सिवाय खाना नम्बर 12 के बुध के क्योंकिं बुध को आकाश माना है और खाना नम्बर 6 पाताल और खाना नम्बर 12 **आसमान में भी खाली आकाश होता है)** हर सातवें साल तब्दीली हालात कर सकते है। **खाना नम्बर 8 मौत पीछे को देखने वाले घर के ग्रह हर आठवें साल तब्दीली हालत दे सकते है।** अपने से बाद के सातवें को देखने वाले घर यह हैं :-

देखता है खाना नम्बर 3-9 को देखता है खाना नम्बर 6-12 को देखता है खाना नम्बर 8-2 को	बुध के ग्रह की अलाहदा की कहानी है जो जुदी लिखी है। खुलास्तन नम्बर 3 से नम्बर 9

को देखता हुआ बुध या नंबर 9 में बैठा हुआ बुध नंबर 12 से नंबर 6 को देखता हुआ बुध सब ही ग्रह का फल बेमायनी कर देता है. ख्वाह वह तमाम एक तरफ और बुध अकेला ही मुकाबला पर ख्वाह वह उस के दोस्त हों या दुश्मन ख्वाह वह इस के साथ ही हों या उस से अलहदा मुकाबला पर। खाना नंबर 8 पीछे को देखता. इसी उसूल पर नंबर 8 ने नंबर 2 को देखा, और नंबर 2 ने नंबर 6 को तो नंबर 8 का असर नंबर 6 में 25 फीसदी होगा. और नंबर 6 ने नंबर 12 को देखा, तो नंबर 8 का असर नंबर 12 में चला गया। या नंबर 8 अपना असर नंबर 12 में 25 फीसदी डालता है. अब नंबर 2 में 100 फीसदी नंबर 8 का असर मिला है. और नंबर 12 में 2-6 की मारफ्त 25 फीसदी नंबर 8 का असर मिला है. गोया नंबर 2 देखता है 25 फीसदी नंबर 12 को.

100 फीसदी और अपने से बाद के सातवें को देखने का फर्क

100 फीसदी वाला खाना अपने से बाद के खाना में दूध में खांड की तरह अपना असर ऐसे का वैसा ही मिला देता है, मगर अपने से सातवें वाला अपने से बाद के घर के असर को उल्टा कर देता है। गोया दूध का बरतन ही जहरीला कर देता है. दोनो हालतों में द्रिष्टी का असर तो 100 फीसदी होता है. फर्क थोड़ा सा ये है कि:-

1.- 100 फीसदी के असर के खाने बंद मुट्ठी के अंदर के मुकर्रर हैं (यानि 1-7,4-10) मगर अपने से बाद के खाने बाहर की तिकोणों के घरों से मुकर्रर हैं. मुट्ठी के अंदर अपने से सातवें का असूल न होगा, और न ही बाहर वालों पर **100 फीसदी (नेक कर देने)** का असूल चल सकेगा.

2.- जब कोई ग्रह अपने से बाद के घर को 100 फीसदी नजर से देखता है, तो देखने वाल अपने बाद के घरों के ग्रह (बाद के घरों में नही) अपना असर ऐसा मिला देता है कि पहले का असर दूसरे में मिला हुआ मालूम ही न होगा, जैसे दूध में खांड (ऐसी मिलावट को बुध की मिलावट कहते हैं, और इस पहले घर वाले ग्रह का ही असर रहेगा.

जैसा कि वह पहले घर में था। मगर जब कोई ग्रह अपने से बाद के सातवें को देखे तो न सिर्फ देखने वाले ग्रह का असर उस घर में (ग्रह में नहीं) ऐसा मिला हुआ होगा जैसे एक टांग कटे आदमी को दूसरी टांग लगा दी गई (दो चीजों का इकट्ठें हो कर काम करना मगर अपने अपने वजूद को न छोड़ना यह मिलावट मंगल की कहलाती है) बल्कि उस पहले घर वाले ग्रह का असर बाद वाले के लिए बिल्कुल उलट होगा, यानी अगर पहले घर वाले का पहले घर में नेक असर था तो बाद के घर में मिलने के वक्त वह असर जो नेक था बाद वाले के लिए बुरा ही होगा मगर पहले का खुद अपने लिए जैसा कि वह होवे वैसा ही रहेगा।

ग्रह का असरग्रह में और ग्रह का असर दूसरे ग्रह के घर में और उनका फ़र्क

1- पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर के ग्रह मे मिल जाने से मतलब यह होगा कि पहले घर के व बाद के घर के ग्रहों का असर एक ही हो गया या बाद के घर के ग्रह में पहले घर के ग्रहों का असर ऐसा मिला कि जुदा न गिना गया लेकिन उस मिलावट ने बाद के घर में यानी बाद के खाना नम्बर में अपना कोई असर न डाला, हो सकता है की उस बाद के घर में कई ही ग्रह हों, पहले घर के ग्रह का असर बाद के घर के सब ग्रहों (जितने भी हों) में जब मिला तो हो सकता है कि अगर वह पहले सब के सब जो बाद के घर में थे दोस्त हों, तो जबः-

अ.- उन में पहले घर के ग्रह की ज़हर मिली तो वह सब के सब या उनमें से चंद बाहम या चंद दूसरों के दुश्मन हो जावें ।

ब.- उनसे दोस्ती पैदा कर देने की ताकत का असर मिल जावे तो जो पहले दुश्मनी भाव के थे, अब बाहम या चंद दूसरों से दोस्ती का ताल्लुक कर लेवें,

2.- पहले घर के ग्रह का असर बाद में घर में मिल जाने(ग्रह में नहीं) से मुराद होगी

कि बाद के घर के ग्रह अलहदा अलहदा ही लेंगे. मगर वह मंगल की बनाई हुई मिलावट की तरह अलग अलग होते हुए भी उस आ मिलने वाले ग्रह के असर का सबूत देंगे, क्योंकि इस घर का ही असर आ मिलने वाले ग्रह ने सब के लिये बदल दिया. या बाद के घर के ग्रहों के लिये वह खाना नंबर ही किसी और असर का हो गया. यानि उम ग्रहों ने अपना अपना पहला असर इस घर की तमाम चीजों पर बदल कर दिया. जब ग्रह से ग्रह मिला था तो अमली तौर पर ये फर्क हुआ था कि पहले घर के ग्रह ने भी बाद के घर के ग्रह के असर को भी बदला था, यानि बाद के घर का असर जिस में कि वह ग्रह (जिस का असर को गया) बैठा था, सिर्फ अपना ही बदला हुआ असर इस खाना की सिर्फ उन चीजों पर किया जो चीजें कि उस असर बदला जाने वाला ग्रह की और उस घर की जिस में बैठा हुआ कि वह असर में बदला जाने वाले ग्रह था/थे. अगर बहुत ग्रह हों तो उन ग्रहों ने जिन का असर बदला गया, अपने बदले हुए असर का सबूत सिर्फ उन ही चीजों पर दिया जो चीजें कि उस खाना की उन ग्रहों से मुत्तलका हों. मसलन बुध व शुकर दोनो का ही पक्का घर खाना नंबर 7 है. जिस में उपर से खाना नंबर 1 का असर मिल सकता है। फर्ज करें कि खाना नंबर 1 में है – सूरज और नंबर 7 में हों शुकर-बुध. अब सूरज का असर दोनों मिलता यानि शुकर व बुध दोनो ही सूरज की तरह चमकने लगे और सूरज का असर नंबर 7 वालों के लिये अपना पहले घर में ऊँच हालत का होने की बजाय उलट बुरा न होगा. और वह असर दोनो ग्रहों में दूध में खाँड की तरह मिल जायेगा. ये है हाल्त 100 फीसदी की। दूसरी मिसाल – फरजन शुकर हो खाना नं 6 में और मंगल होवे खाना नंबर 12 में, द्रिष्टी में 6-12 अपने से सातवें हैं, यानि शुकर नंबर 6 का जो असर है खाना नं 6 में इस का उलट होगा. खाना नंबर 12 में उस ग्रह के लिये जो खाना नंबर 12 में है वह है मंगल. गोया अब मंगल के लिये वह खाना नंबर 12 सब ही चीजों के असर के लिये जो खाना नंबर 12 की तमाम चीजों मंगल के लिये ऊँच फल की होंगी. मगर ये ऊँच फल किस के लिये होगा, मँगल के लिये जो खाना नंबर 12

का है यानी कुण्डली वाले के भाई (मंगल) का गृहस्त का सुख उस भाई के लिए उम्दा होगा । मगर कुण्डली वाले के शुकर (औरत) का फल वैसे का वैसा ही मंदा और नीच होगा। खुलास्तन 100 फीसदी की मिलावट की हालत में कुण्डली वाले को ज़ाती अच्छा बुरा असर मिलेगा मगर अपने से सातवें की दृष्टि असर करेगी बाद के घर पर जिसकी वजह से उस घर का जो ग्रह इस कुण्डली वाले का जैसा भी ताल्लुकदार होवे उस पर असर असर देगी । मगर कुण्डली वाले पर सीधा असर न होगा। मसलन बाद के घर में सातवें मिलावट की हालत में शुकर है, तो असर होगा, बाद के घर का शुकर पर उलट कर दिया। औरत ज़ात के ताल्लुकदार या कुण्डली वाले के ससुराल वग़ैरह पर अपने असर का उलट असर होता होगा। अगर पहले घर का कुण्डली वाले को मंदा फल मिल रहा है तो उस मंदे फल का उलटा अच्छा फल मिलता जाएगा। कुण्डली वाले के उस ग्रह के मुतअल्लिका रिश्तेदार को जो बाद के घर के ग्रह से कुण्डली वाले के साथ संबंध रखता हो। यानी मंगल हो तो भाई बुध हो तो बहन वग़ैरह।

सेहत बीमारी शादी औलाद मकान वगैरह खास खास चीज़ो के लिए दृष्टि

घर अपने से 5 वें दोस्त — 7 वें उलटे होते हैं
8 वें घर पर टक्कर खाते — बुनियाद 9 वें पर होते हैं
तीसरे घर के जुदा जुदा तो — बुध से वह आ मिलते हैं
घर 10 पर बाहम दुश्मन — धोका देते या चक्कर हैं
नर ग्रह बोलते जुफ्त के घर में — स्त्री बोलते ताक में हैं
बुध है बोलता 3-6 में तो — पापी नहीं बोलते 2 में हैं

1.- स्त्री ग्रह-शुकर चंद्र

दो घरों दरम्यान जब घर होवें-3(5वां) दोनों खानों के ग्रह बाहम मददगार होंगे. ख्वाह दोस्त हों ख्वाह दुश्मन। 5-(7वां) देखने वाले घर के ग्रह देखा जाने वाले घर पर अपना बैठा होने वाले घर के असर का उल्ट असर देंगे, बंद मुट्ठी की शर्तें जुदा होंगी। 6(8वां) दोनो घरों के ग्रह बाहम टकराव पर होंगे, सिवाय खाना नंबर 9 के जिन में कोहसार व समुंदर की तरह का टकराव बारिश बरसाने का फायदा टकराव होगा. बाकि सब टकराव के घरों में मंदा असर होगा। 7(9वां) – दोनो घरों के ग्रह बाहम साधारण दोस्ती दुश्मनी जो भी होवे। 8(10वां) – दोनों घरों के ग्रह बाहम दुश्मनी पर होंगे. मसलन खाना नंबर 9 से नंबर 6 तक दरम्यानी खाने होंगे- (10 ता 12 =3, 1 ता 5=5) 8 और फर्जन नंबर 9 में सनिचर है जो नंबर 9 में निहायत मुबारक और 60 साला असर का है और नंबर 6 में बुध है. जो बदनाम खुद नंबर 6 में ऊँच या राजयोग है. **लेकिन अब खाना नंबर 6 वाले यानि टेवे वाले के मामूँ वगैरह सिर्फ बुध के मुत्तलका कारोबार ही करें, तो वह काम करने के लिये राजयोग होंगे**. लेकिन अगर वही मामूँ वगैरह सनिचर के मुत्तलका कारोबार करें तो वह बरबाद होंगे। बजात खुद नंबर 9 वालों के लिये यानि इस के बजुर्गों के लिये सनिचर का फल उत्तम होगा और नंबर 6 वालों(मामूँ वगैरह) के लिये बुध के काम मुबारक होंगे **इस दुश्मनी का टेवे वाले पर कोई बुरा असर न होगा**, अगर कोई होगा तो सनिचर का नंबर 6 के घर के ताल्लुक वालों पर मंदा होगा. मिसाल खाना नंबर 10 से नंबर 5 तक के दरम्यान घर होंगे 11-12-1 ता 4 यानि कुल 6 घर मगर खाना नंबर 5 से नंबर 10 तक के दरम्यान घर होंगे- 6 ता 9 या कुल 4 घर यानि खाना नंबर 10 देख सकेगा नंबर 5 को मगर नंबर 5 नहीं देख सकता नंबर 10 को सिवाय नंबर 5 के चंदर के जो नंबर 10 के लिये जहर होगा. आम तौर पर पहले घरों के ग्रह दूसरे घर वालों को देखा करते हैं, (सिवाय खाना नंबर 8) लेकिन खाली खानों की हालत में सोये हुये घर या सोये ग्रह देखने के लिये उपर की शर्त आगे पीछे दोनो ही तरफ चला कर देखी जायेगी.

योग द्रिष्टी बावक्त सेहत बीमारी

नर ग्रह बोलते जुफ्त के घर में स्त्री बोलते ताक में है

बुध है बोलता 3-6 में तो पापी नहीं बोलते 2 में है

ख़ाना	द्रिष्टी	बाहम मदद	आम हालत	टकराओ	बुनियादी	धोखा	मुश्तरका दीवार		अचानक चांट			निशान
1	A	5	7	8	9	10	2	10	3	7	11	D
	B	9	7	6	5	4	12					
2	A	6	8	9	10	11	3		4			E
	B	10	8	7	6	5	1					
3	A	7	9	10	11	12	4		1			F
	B	11	9	8	7	6	2					
4	A	8	10	11	12	1	5	1	10	6		H
	B	12	10	9	8	7	3					
5	A	9	11	12	1	2	6		7			G
	B	1	11	10	9	8	4					
6	A	10	12	1	2	3	7		4			K
	B	2	12	11	10	9	5					
7	A	11	1	2	3	4	8	10	1	5	9	L
	B	3	1	12	11	10	6	6				
8	A	12	2	3	4	5	9	2	10			M
	B	4	2	1	12	11	7					
9	A	1	3	4	5	6	10		7			N
	B	5	3	2	1	12	8					
10	A	2	4	5	6	7	11	11	4	8	12	P
	B	6	4	3	2	1	9	9				
11	A	3	5	6	7	8	12		1			Q
	B	7	5	4	3	2	10					
12	A	4	6	7	8	9	1		10			R
	B	8	6	5	4	3	11					

1.- देख सकता है खाना नंबर को

2.- देखा जा सकता है खाना नम्बर से

ग्रहों की बाहम द्रिष्टी के वक्त उनके मुश्तर्का असर की मिकदार

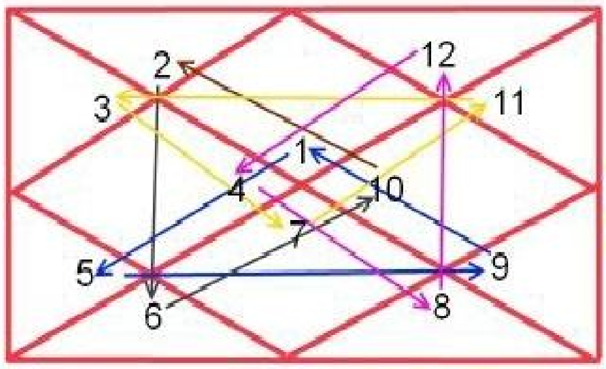
कायम हो या देखता होवे	हर देखा जाने वाले या दूसरे हमसाया (मुशतर्का होने वाले) ग्रह की ताक़त होगी								
	बृहस्पति	सूरज	चँदर	शुकर	मंगल	बुध	सनिचर	राहू	केतू
बृहस्पति		2	1/2	3 ¾	2/1	2/1	3/1	2/1	5/4
सूरज	2/3		3/4	3/4	2/1	1/2	दौलत 2/3 वालिद 1/2 सुख 1/3	ग्रहण	1/2
चँदर	2/1	2/1		2/1	2/2	2/1	1/3	1/2	ग्रहण
शुकर	1/2	3/4	1/2		4/3	2/2	1/3	2/1	2/1
मंगल	2/1	2	2/1	1/3	मंगल बद 1/3	2/1	4/3	0/1	1/2
बुध	1/2	2/1	1/2	2/2	2/2		5/4	2/1	1/4
सनिचर	5/4	दौलत 2/3 वालिद 1/2 सुख 1/3	1/3	4/3	1/3	4/5		2/1	1/2
राहू	0/1	ग्रहण	1/2	1/3	2/2	2/1	2/1		2/2
केतू	2/1	2/3	ग्रहण	2/1	1/2	3/4	2/1	2/2	

दोस्ती दुश्मनी का भाव नेक व बुरे हिस्से की मिकदार होगी
औसत तनासब के हिंदसों में रकम का ऊपर का जुज देखा जाने वाले ग्रह के असर की मिक्दार और नीचे का जुज देखने वाले ग्रह का असर की मिकदार होगी। सिर्फ़ एक ही जुज से पूरा पूरा हिन्द्सा देखा जाने वाले ग्रह की ताकत से मुराद होगी।

योग दृष्टि

बाहमी मदद

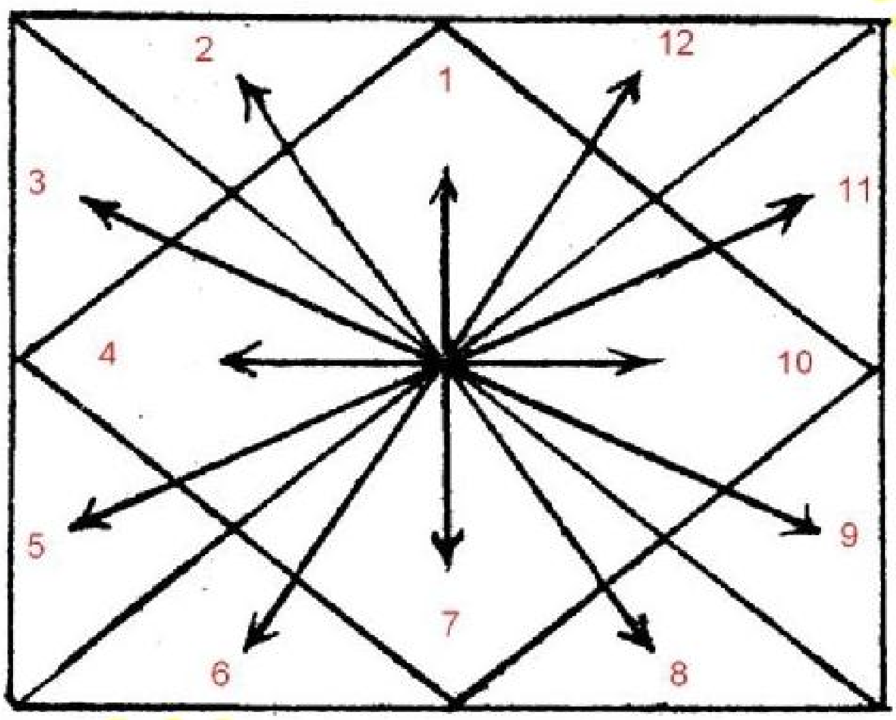
ख्वाह दो घरों के ग्रह बाहम दोस्त हों तो दुश्मन मगर करेंगे एक दूसरे की मदद ही।



योग दृष्टि की फ़ेहरिस्त के खाना एनिशान में D के खाना नम्बर 1 के सामने दृष्टि के खाना में लफ्ज A और B लिखने में और खाना नम्बर 'बाहमी मदद' के नीचे लफ्ज A के सामने हिँदसा नम्बर 5 लिखा है और लफ्ज B के सामने हिँदसा नम्बर 9 लिखा है। यह भी योग दृष्टि में लिखा हुआ है कि लफ्ज A से मुराद होती है कि देख सकता है खाना नम्बर को यानी खाना निशान D के सामने खाना नम्बर 1 लिखा है जिसका मतलब है हो जाएगा कि खाना नम्बर 1 देख सकता है खाना नम्बर 5 को बाहमी मदद के लिये उसी तरह ही वही नम्बर 1 देखा जा सकता है खाना नंबर 9 से यानी खाना नम्बर 9 मदद दे सकता है खाना नम्बर 1 को, दूसरे लफ्जों में तख्त पर बैठे हुए राजा को खाना नम्बर 9 के ग्रह मदद दे सकते है। ख्वाह वह (9 व खाना नम्बर 1 वाले) बाहम दोस्त हों या दुश्मन और खुद खाना नंबर 1 का ग्रह मदद देगा खाना नंबर 5 को ख्वाह बाहम दोस्त हों या दुश्मन ।

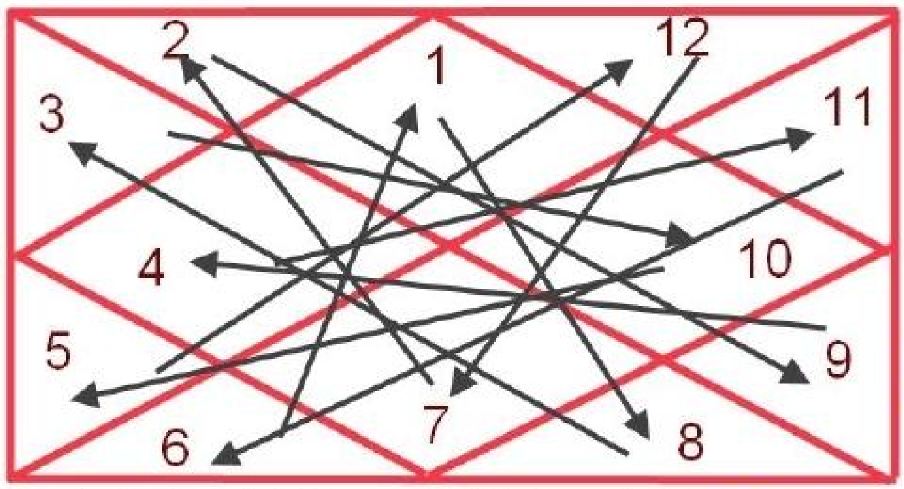
आम हालत

इस हालत में बैठे हुये ग्रहों की वही द्रिष्टी वगैरह की हालत होगी जो कि आम हालत में हुआ करती है. यानि 1-7-4-10 या 5-9-3-11 वगैरह अब बाहमी द्रिष्टी का असूल कायम रहेगा.



टकराव

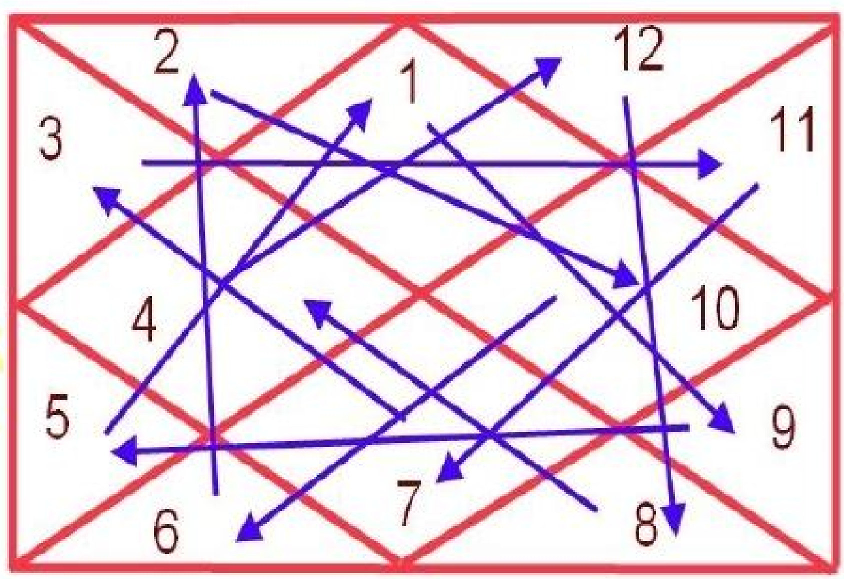
दो मुख्तलिफ घरों के ग्रह ख्वाह बाहम दोस्त हो ख्वाह दुश्मन, मगर ऐसी हाल्त में आ बैठे कि वक्त जरूर आपस में टकराव पैदा करेंगे, यानि लड़ाई झगड़े या एक ग्रह दूसरे का बुरा ही करेगा, बेशक आम असूलों पर वह



बाहम कितने ही दोस्त हों ऐसी टक्कर मारेंगे कि दूसरे की जड़ तक काट देंगे ।

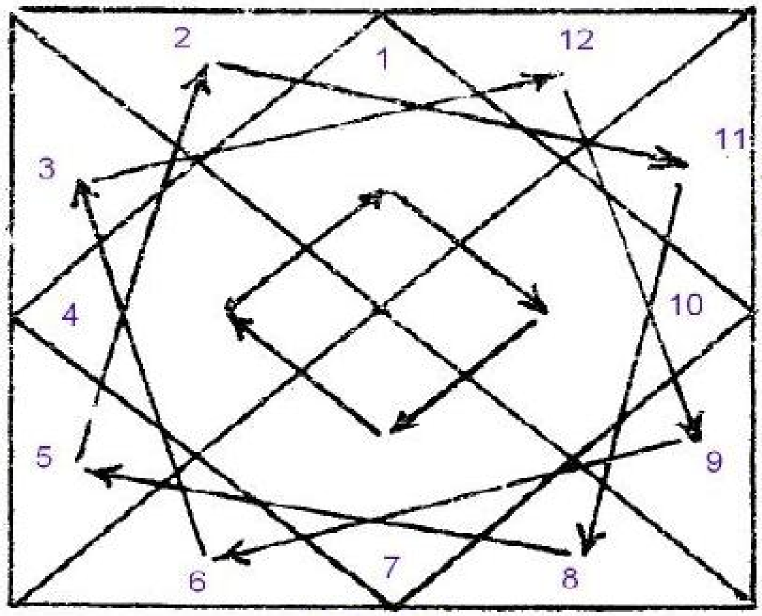
बुनियादी

ख्वाह बाहम दोस्त हो या न हों मगर एक दूसरे को पूरी और पक्की बुनियाद की तरह मदद ही देंगे या एक के उसूल की वही बुनियाद होगी जोकि दूसरे की हो या दोनों घरों के ग्रह आपस में एक दूसरे को बाहम बुनियाद बन कर चलते चलाते और मदद देते रहेंगे ।



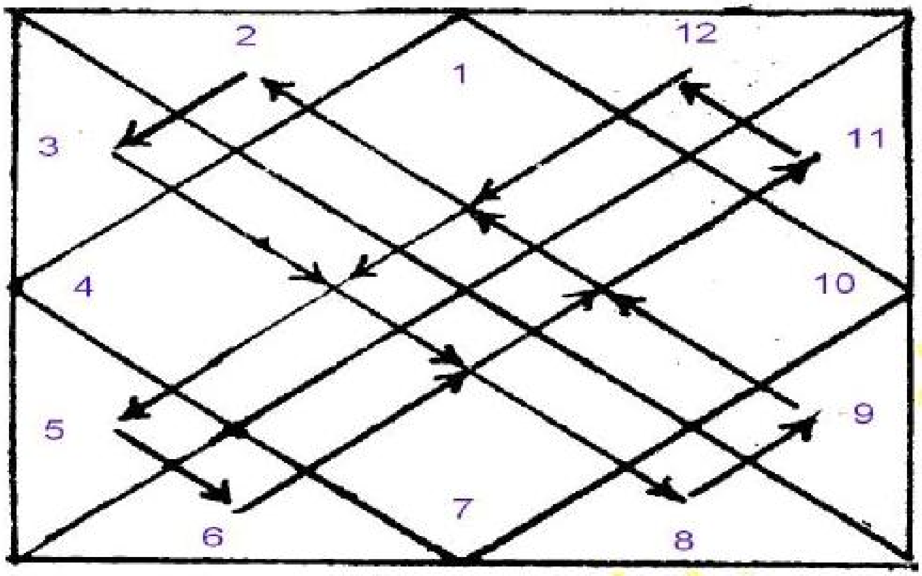
धोखा

अब ये ग्रह दो गुणा मंदी ताकत के होंगे. अच्छे या बुरे बात का फैसला पक्के घर नंबर 10 में धोखा के ग्रह के मुत्तलका दिये असूलों पर होगा.



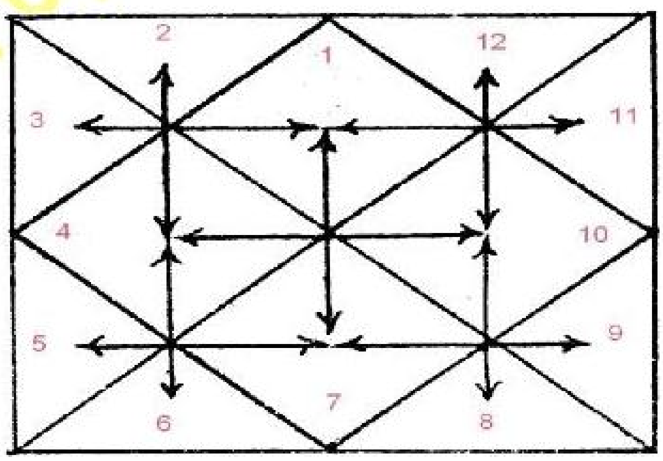
मुश्तरका दीवार

दो घरों में जुदा जुदा बैठे हुये दो दोस्त ग्रह आपस में मिले हुए ही गिने जाते हैं. मगर दो दुश्मन हमेशा जुदा जुदा हे गिने जायेंगे. या दो दोस्त ग्रहों के बैठे हुए घरों के दरम्यान की दीवार नहीं गिना करते. मगर दुश्मन दीवार की वजह से बाहम इकट्ठे हो कर लड़ाई नहीं बढ़ा सकते। ये असूल तो है सिर्फ एक साथ ही लगते हुए दूसरे घर की हालत में, मगर



योग दृष्टि के वक्त दूर दूर घरों के ग्रह भी हूबहू ऐसे ही गिने जाऐगें। जिस तरह कि आपस में साथ साथ के घरों में बैठे हों मगर मुख्तसरन बाहम दोस्त तो मिले हुए और बाहम दुश्मन तो जुदा जुदा ही रहेगें।

अचानक चोट



बाहम दोस्त हो या दुश्मन जब कभी भी मौका मिले अचानक ही ऐसी चोट मार देंगे कि चोट खाने वाला सोच ही न सके कि किस ने चोट मारी थी और यह चोट कोई हर रोज़ या हर साल न होगी मगर होगी अचानक फ़ौरन और झटपट दम के दम और नुकसान कर देगी माल और जान दोनों ही का इस हद तक जिसका किसी को ख्याल भी न हो सकता हो।

कुंडली में पहले या बाद के घरों के ग्रह

1. द्रिष्टी और एक दो तीन हद बारह की तरतीब से जो घर या खाने पहले आ जावे उन में बैठे हुए ग्रह पहले घरों के ग्रह होंगे. यानि जो ग्रह दूसरे ग्रहों को देखते हों और हों भी गिनती की तरतीब में पहले नंबरों के तो वह पह्ले घरों के कहलायेंगे. मिसाल के तौर पर अगर ग्रह वाक्य हों :-



तो सूरज खाना नंबर 1 वाले को कहेंगे कि वह सनिचर खाना नंबर 7 वाले से पहले घरों का है। बृहस्पत खाना नंबर 4 वाले को मँगल खाना नंबर 10 वाले से पहले घरों का कहेंगे। अब मँगल से सूरज बृहस्पति सनिचर हर एक या तीनों ही गिनती में तो जरूर पहले नंबर पर हैं, मगर मँगल से पहले घरों के ग्रह से मुराद सिर्फ बृहस्पत से होगी या मँगल अब बृहस्पत के बाद के घरों का ग्रह है. क्यों कि खाना नंबर 1 का सूरज और खाना नंबर 7 का सनिचर द्रिष्टी के असूल पर खाना नंबर 10 के मंगल को नही देख सकते. एक ही घर का ग्रह जब दो और घरों को देखे, मसलन खाना नंबर 3 देखता है खाना नंबर 9 और खाना नंबर 11 को. अब खाना नंबर 9-11 दोनो ही घरों के ग्रह खाना नं 3 में बैठे हुए ग्रह से बाद के घरों के ग्रह से बाद के घरों के ग्रह होंगे.

इसी तरह ही जब कहें कि चंद्र दुश्मनी करता है शुकर से तो मुराद होगी कि चंद्र है पहले घरों में शुकर से।

2.- कुण्डली में पहले घरों के ग्रह अपने से बाद के घरों में अपना असर मिलाया करते है सिवाए खाना नम्बर 8 जिसके ग्रह पीछे को देखते या अपने से पहले घरों में अपना असर मिला देते हैं ऐसी हालत में जब तक पीछे से बाद के घरों में किसी ग्रह का बुरा असर आना बँद न हो जावे या पहले घरों के बुरे ग्रह की मियाद तक बाद के घरों के ग्रहों का असर नेक न होगा यही उसूल खाना नम्बर 8 के ग्रहों का नम्बर 2 के ग्रहों के लिए होगा।

दोस्ती दुश्मनी करता है, देखता है

दृष्टि के वक्त कुण्डली के खानों में एक दो तीन वगैरह की तरतीब से पहले घरों का ग्रह अपने बाद के घरों से/को "दोस्ती-दुश्मनी करता"/"देखता हुआ" कहलाता है। सिवाए खाना नम्बर 8 के जो खाना नम्बर 2 को (पीछे की तरफ़) देखता है।

उलझन के

ग्रह

जिनकी शाज़ोनादिर ही ज़रूरत पड़ेगी या ऐसी ग्रह चाल जिसके देखे वग़ैर ही काम चल सकेगा। क्योंकि ऐसे टेवे वाले प्राणी पुश्त दर पुश्त मंदी हालत में होते चले आने के सबब दुनिया में रह ही कहां सकते है। दुनिया में एक ऐसा प्रानी जो जन्म से या किसी एक खास दिन से सालों ही सालों लगातार मंदे पे मंदा ज़माना देखता चला आवे वह कहां तक जमाने का मुकाबला करके अपनी जिंदगी कायम रखता चला आ रहा होगा।

पितृ ऋण का ग्रह

1. पितृ ऋण से मुराद (कुंडली वाले पर इस के अपने बज़ुर्गों के पाप का) खुफिया असर होता है यानि गुनाह तो कोई करे मगर सजा उसकी कोई और भुगते , मगर भुगतेगा इस गुनाह करने वाले का असल करीबी ताल्लुकदार ही।

घर 9वें हो ग्रह कोई बैठा	बुध बैठा जड़ साथी जो
ऋण पितृ उस घर से होगा	असर ग्रह सब निष्फ़ल हो
साथी ग्रह जब जड़ कोई काटे	द्रिष्टी मगर वो छुपता हो
5-12-2-9 कोई मंदे	ऋण पितृ बन जाता हो

"बुध की नाली की द्रिष्टी बा-वक़्त ऋण पितृ"

असर ग्रह घर तीसरा पहले	बुध नाली जब मिलता हो
बुध ग्रह घर दोनो रद्दी	शत्रु मित्र ख्वाह बैठा हो
हाल मंदा न तीन का होगा	मिला असर ख्वाह तीसरा हो
बुध मिले खुद टेवे ऐसा	बदल[7] असर सब देवे वो

खुलास्तनः जन्म कुंदली में जिस ग्रह को जड़ (उसकी अपनी राशि) में इसका दुश्मन ग्रह बैठ कर

[7] मुफ़्सिल बुध के हाल में देखें

उसका फल रद्दी कर रहा हो और साथ ही वह ग्रह खुद भी मन्दा हो रहा हो तो ऋण पितृ होगा, जिसकी आम निशानी यह होगी बाबे, बाप, बेटे, भाई, वगैरह सब के सब या कई एक की जन्म कुंडलियों में मंदा ग्रह एक ही या किसी दूसरे घर में जहां कि वो ग्रह पूरा मंदा गिना जा रह हो , जाहिर होता चला आ रहा होगा । मसलन राहु खाना नं० 11 या सनिचर खाना नं० 4/6, बुध खाना नं० 2 या 3,8/11-12, उस खानदान में कई एक ही जन्म कुंडलियों में जाहिर होता चला आ रहा होगा।

दरअसल ये हालत खाना नं0 9 के ग्रहों से मुराद होती है, जब इस घर में या इस घर के मालिक ग्रह यानि बृहस्पति के किसी दूसरे घर में कोई और ग्रह (एक या एक से ज्यादा) बैठे हुए वाहम दुश्मनी पर हों, या वो बाहम या हर एक बृहस्पति की ताकत को खराब करते या बृहस्पति के असर में जहर मिलाते हों तो पितृ ऋण होगा । राहू को बृहस्पति के चुप करवाने वाला गिना है, वो अगर बृहस्पति को मुंह बन्द करके खुद मन्दी हालत का असर बृहस्पति के ताल्लुक से (यानि या तो वह बृहस्पति के घरों में हो या बृहस्पति के पक्के घर मे) देवें तो पितृ ऋण को बोझ होगा । इसी तरह ही और ग्रह भी चन्द्र की खराबी में माता तरफ के मातृ ऋण वगैरह का बहाना हो सकते हैं । ऐसे शख्स के (कुण्डली वाले के) अपने ग्रह लाख राज योग ही क्यों न हों, बुरा असर दो ग्रहों का होगा और उपाय भी दो ग्रहों का करना होगा. फ़र्ज़न : कुंडली वाले के बाप ने बिलावजह कुत्ते मारे या मरवाए तो कुंडली वाले पर बृहस्पति व केतू दो ही ग्रहों का पितृ ऋण होगा, जो कुण्डली वाले पर उसकी 16 ता 24 साला उम्र तक या कुंडली वाले की बालिग होने की उम्र से 16 ता 24 साल तक रह सकता है

इसी तरह ही सब ग्रहों का उपाय होगा- यानि एक तो उस ग्रह का उपाओ करेंगे जो खुद निकम्मा हो गया और दूसरे उस ग्रह का उपाओ करेंगे जो उस की जड़ की राशी (यानि वह राशी जो उसके लिये बाहैसियत माल्कियत ग्रह मुकरर हो) में बैठ कर उस को निकम्मा कर रहा हो।

मसलनः बृहस्पति नः 9 में बैठा हो और राहू नः 9 या 11 में बठ जावे, तो एक उपाओ तो राहू नः 2 या 11 में राहू कि मंदी हालत के वक्त करने को लिखा है वह करेंगे और दूसरा उपाओ वह होगा जो बृहस्पति नः9 में बर्बाद होने के वक्त पर मददगार होगा, लिखा है।मियाद उपाओ के लिये 'ग्रह के उपाओ' के हाल में देखें, यानि 40/43 दिनों की बजाय 40/43 हफ़्ते लगातार होगा,जब तमाम के तमाम खानदान की बेहतरी के लिये करना हो। ख्याल रहे कि एक वक्त में दो उपाओ ज़ारी कर देने वाज़िब न होंगे। क्योंकि ऐसा करने से किसी उपाओ का भी फ़ल प्राप्त न होगा। इस लिये पहले एक उपाओ 40/43 दिन/हफ़्ते करें, फ़िर कुछ दिन/ हफ़्ते खाली छोड़ दें और फ़िर उस के बाद दूसरे उपाओ 40/43 दिन/हफ़्ते लगातार करें।

2. **राहू केतु के बज़ात खुद मंदी हालत नीच हालत (राहू 12- केतु 6) या 3-8 में कोई उत्तम या मददगार ग्रह न हो तो ऋण पितृ की हालत में सिर्फ़ दुनियावी बिना पर बोझ (मंदा असर) होगा। बाकि किसी तरफ़ भी मंदा असर न होगा।**

3. **ऋण पितृ के वक्त खुद उसी ग्रह का , जो मंदा हो गया हो, और जिस ग्रह ने जड़ राशी से बर्बाद किया हो दोनो ही ग्रहों का उपाओ और दोनो ही कि मियाद तक्र करना मददगार होगा।**

कुंडली वाले के रिश्तेदार के ताल्लुक़ और पाप की किस्म से ऋण पितृ का नाम मुकरर होगा- जो कि अगले सफ़ा पर दरज़ हैः-

ऋणों की किस्में–जैसी करनी वैसी भरनी नही की तूने तो कर के देख

नः शुमार	नाम ग्रह	किस खाना नः में	कौन दुश्मन ग्रह बैठा हो	ऋण की किस्म होगी	वजह पाप	आम निशानी बतौर क्याफ़ा
1	बृहस्पति	2-5-9-12	शुकर, बुध , राहू	ऋण पितृ	बजुर्गों का पाप खानदानी कुल पुरोहित बदला गया होगा, ख्वाह वजह लावल्दी खानदान कुल कुल पुरोहित ख्वाह वजह दीगर खानदान कुदरती	हमसाया धर्म मन्दिर या बृहस्पति की मुत्तल्लका अश्शियाँ (पीपल वगैरह को तबाह बरबाद ही कर चुके या करते होंगे.
2	सूरज	5	शुकर या पापी ग्रह	ज़ाति ऋण	आकबत (अँत) खराब, नास्तक पन , पुराने रस्मात पर पेशाब की धार मारने के क़ौल का आदमी होना	इस घर में ज़मीन दरोज़ अग्नि कुँड आम होंगे या आसमान की तरफ से छत में से रोशनी के रास्ते आम होंगे.
3.	चँदर	4	केतु	मातृ ऋण	माता- नीयत बद, अपनी औलाद पैदा होने के बाद अपनी माता को दरबदर अलह्दा या दुखिया करना या इस का खुद बखुद ही दुखिया हो जाने पर लापरवाही करना.	हमसाया कूआँ दरया, नदि नाला पूजने की बजाय घर का गँदा मादा बहाने या जमा करने का ज़रिया बनाया जा रहा होगा.

4.	शुकर	2-7	सूरज राहू, चँदर	स्त्री ऋण	कुटुम्बी पेट मार, औरत को बच्चा जनने की हालत में किसी लालच से जान से खत्म कर देना.	इस घर में दाँतों वाले जांनवरों का पालना खास कर गाय को पालना या अपने घर में रखने से खनदानी नफरत का असूल चलता होगा.
5.	मँगल	1-8	बुध, केतु	रिश्तेदारी का ऋण	मित्र मार, ज़हर के वाक़यात करना या किसी की पकी पकाई खेती को आग लगा देना. या किसी की भैंस आखिर बच्चा देने को आई,इस को मरवा देना या मार देना, मकान बनाने पर आग लगा देना वगैरह.	रिश्तेदारों के मिलने बरतने के असूल से नफरत या बच्चों की पैदाईश और गृहस्थी दिन त्यौहार के वक्त खुशी मनाने से गुरेज़ (दूर रहना या नफरत करना) होगा.
6.	बुध	3-6	चँदर	धी, बहन का ऋण	ज़ुबानी धोखा, किसी की धी बहन की हत्या (हद से ज्यादा ज़ुल्म) करना.	मासूम,कम उमर, या गुमराह बच्चों को फरोख्त करना (ख्वाह लडका या लडकी) या उनका लालच में तबादला ज़ायज़ कर लेना, ऐसे ढँग पर जिसका आम दुनियादारों को भेद न खुल सके.

7.	सनिचर	10-11	सूरज चँदर मँगल	ज़ालिमाना ऋण	जीव हत्या, मकान (शनि की मुतल्लका अश्शईयाँ) धोखे से ले लेना, मगर इस की कीमत किसी तरह भी अदा न करना.	घर के मकानों का बडा रास्ता अमूमन दक्खन में होगा. लावल्दों से जगह ले कर मकान बनाया होगा. या रास्ता या कुआँ छत कर महल बनाए होंगे.
8.	राहू	12	शुकर, सूरज, मँगल	अन जन्मे का ऋण , (पैदा ही नहीं हुए)	ससुराल, या बाहमी दुनियावी, ताल्लुकदारों से धोखा या दगा के वाक्यात ऐसे ढँग पर किये हों कि दूसरे की कुल गर्क हो जावे।	घर से बाहर निकलते हुए दरवाज़े की दहलीज़ के नीचे से घर का गंदा पानी बाहर निकालने के लिए नाली चलती होगी या दक्षिण की दीवार के साथ उजाड़ वीरान कब्रिस्तान या भड़भूजे की भट्ठी होगी।
9.	केतू	6	चँदर, मँगल	दरगाही ऋण (कुदरती)	कुत्ता, फकीर बदचलनी, बदफहली, मगर ऐसे ढंग पर कि दूसरे की गरीब कुत्ते की तरह हद से ज्यादा दुर्दशा या तबाही ही हो जावे और ऐसी कारवाईयों में नीयत बद की बुनियाद हो।	दूसरों की नर औलाद किसी न किसी खुफिया या गुमनाम बहाने से ज़ाया करवाना, कुत्तों का बिलावजह गोली से मरवाना या केतु की दूसरी मुतल्लका अश्शईयाँ या रिश्तेदारों को अपने लालच की वज़ह से कुल नष्ट करना या करवा देना हर हालत में नीयत बद बुनियाद गिनते हैं.

ऋण पितृ की पहली हालत

(जब बुध जड़ में बैठा हो)

बृहस्पति	हो खाना नः	9	में और	बुध	हो खाना नः	12	में
सूरज	" "	" "	" "	" "	" "	5	" "
चँदर	" "	" "	" "	" "	" "	4	" "
शुकर	" "	" "	" "	" "	" "	2-7	" "
मँगल	" "	" "	" "	" "	" "	1-8	" "
सनिचर	" "	" "	" "	" "	" "	11-10	" "
राहू	" "	" "	" "	" "	" "	12	" "
केतू	" "	" "	" "	" "	" "	6	" "

ऋण पितृ की दूसरी हालत

(जब ग्रह मुतल्लका की जड़ में इस का दुश्मन ग्रह बैठा हो)

बृहस्पति खाना नः 2-3-5-6-9-12 से बाहर कहीं भी हो	और नः 2 में सनिचर बाहैसियत पापी ग्रह या नः 5 – शुकर या नः 9 – बुध या नः 12 – राहू या नः 3-6, बुध,शुकर, या सनिचर बाहैसियत पापी ग्रह

सूरज खाना नः 1-11 से बाहर	और नः 5 में शुकर या पापी
चँदर खाना नः 4 से बाहर	और नः 4 में शुकर बुध सनिचर
शुकर खाना नः 1-8 से बाहर	और नः 2-7 में सूरज-चँदर-राहू में से कोई एक या ज्यादा
मँगल खाना नः 7 से बाहर	और नः 1-8 में बुध केतू
बुध खाना नः 2-12 से बाहर	और नः 3-6 में चँदर
सनिचर खाना नः 3-4 से बाहर	और नः 10-11 में सूरज-चँदर-मँगल
राहू खाना नः 6 से बाहर	और नः 12 में सूरज-शुक्कर-मँगल
केतू खाना नः 2 से बाहर	और नः 6 में - चँदर - मँगल

जन्म कुँडली के मुताबिक ऊपर ज़िकर की हुई हर दो हालतों में खाना नः 2-5-9-12 की मँदी हालत भी जरूर साथ हो तो ऋण पितृ होगा वर्ना कोई या किसी भी क़िस्म का ऋण पितृ या मातृ या कोई और ऋण होगा. ख्याल रहे कि ऋण पितृ हमेशा जन्म कुँडली से देखा जाएगा, वर्षफल वाली कुँडली का इस में कोई ताल्लुक़ न होगा.

ऋण पितृ का उपाओ

ऋण के मायने कर्ज़ा: पितृ मायने बज़ुर्गों से मुत्तल्लक़ा- या ऐसा पाप या गुनाह जो किया तो था बज़ुर्गों ने, मगर इस का एवज़ भरना पड़ा मौजूदा पुश्तों को. ग्रह की मुत्तल्लका अश्शइयाँ या रिश्तेदार या कारोबार का उस हद तक नुक्सान कर देना कि मुखाल्फ का बेड़ा ही गर्क हो जाने की नौबत आ जावे. ऐसे वक्त में दुखिया के दिल का ध्वाल पितृ ऋण का बहाना होगा. इस लिये ऐसे उपाअ के वक्त तमाम के तमाम खानदान या जहान कहीं भी उन के खून का कोई ताल्लुकदार यानि लड़की, पोती, बहू, बहन, दोहता, पोता, बाबा, परदादा, गर्जेकि जहाँ तक खून का ताल्लुक हुआ, या हो रहा हो, सब के सब को इस उपाओ में हिस्सा डालना मददगार बल्कि जरूरी होगा. औरत के माता पिता (टेवे वाले के ससुर)

की तरफ के रिश्तेदारों के लिये पितृ ऋण के उपाओ में बतौर हिस्सादार शामिल होने की कोई शर्त नहीं. मगर टेवे वाले की लड़की , बहन, भूआ, या उन की औलाद की औलाद (ख्वाह नर ख्वाह मादा), दोहता, दोहती, भांजा, भांजी, वगैरह का बतौर हिस्सा शामल होना या करना ज़ायज़ बल्कि ज़रूरी माना है. लिकिन किसी वजह से ऐसा न ही हो सके तो कोई बहम की बात नहीं लेकिन बेहतर होगा गर हिस्सेदार कर ही लिये जावें. लेकिन अगर किसी वजह से कोई रिश्तेदार बतौर का ज़रिया किसी जाति वजह से शामल न हो सके या हो सके तो उसको ये अर्ज़ कर देना ज़रूरी होगा कि ऐसे पितृ ऋण या खानदानी कोढ़ का गँदा बोझा ऐसे बाहर रह जाने वाले प्राणी के खानदान या जिस्म में बाकि चलता रहेगा. लेकिन बहैसियत खानदानी मेम्बरान ऐसा उपाओ करने वाले का फर्ज़ होगा कि वह ऐसे बाहर रह जाने वाले प्राणियों के लिये भी अपनी खुद मर्जी और हिम्मत से ऐसे गुमराह का हिस्सा ऐसे उपाओ मे दाखिल कर लेवे. मगर किसी दूसरे के लिये डाला हुआ हिस्सा आम हिस्से से दस गुणा किया जाएगा, यानि अगर आम हिस्सा एक एक पैसा का हुआ तो ऐसे गुमराह के हिस्से का खर्चा दस पैसे तसौब होगा.

जिस तरह आम टेवे टिपड़ों मे ऊपर कहे हुए ढँग की ग्रह चालों से ज़ाहिर हो जाएगा, कि उस खानदान में कौन सा ग्रह बतौर ऋण पितृ चला आ रहा है.और उसी तरह ही हूबहू हर ग्रह की मुतल्लका कारवाइओं और नीचे दिये हुए मँदों असरों से निश्चय होगा कि दरअसल ऋण पितृ का ग्रह खुफिया तौर पर खानदानी खून में जड़ को खोखला करने के लिये कभी कभी धोखा लगा कर यानि भूँचाल या स्याह मिट्टी की आँधी की तरह ज़ाहिर होता रहेगा.

नाम ग्रह	किस असर से ऋण पितृ का ज़ाहिर होगा
बृहस्पति	उस खानदान में जिस वक्त भी कोई आदमी या श्रीमती अपने सिर के बालों के ताल्लुक में स्याही से सफेदी में आने लगे, इसकी किस्मत

	का सोना दुनियां की ज़र्द रँग मिट्टी में बदलता मालूम होने लगेगा, वक्त आता नज़र आएगा कि बाल सफेद हुए, सफेदी से ज़रदी में आ पहुँचे तो हूबहु ऐसी तबदीलीयों के साथ साथ घर का सोना पीतल हुआ और पीतल से स्याह लोहा वो भी जंगार से मारा हुआ यानि बालों कि स्याही तक़ किस्मत की खान ज़खीरा ज़र्द रँग सोना रहा, सर के बालों की स्याही घटी तो किस्मत के मैदान की मँदी स्याही सोने का लोहा(मँदी हालत में)आ हुआ. दुनियावी इज़्ज़त बिलावजह बेइज़्ज़ती का बहाना होने लगी.जो काम खुदबखुद होटल चले आ रहे थे या हो जाया करते थे अब दम टूट कर ज़ोर लगाने से भी कोई नेक फल न पैदा करेंगे. सुख की साँस की जगह दुख की काली खाँसी की आम शिकायत होगी. माथा खुश और हँसता हुआ मालूम होने की जगह दुनिया की गँदी कुदरतों और मुसीबतों का मारा हुआ दर्द करता होगा.
सूरज	जो भी जवान हुआ या जहाँ भी जवानी ने सर उठाया उस का जिस्म सर और पाँव राजदरबारी हवाओं के मन्दे झोंकों से तँग आने लगे गोया उठती जवानी के लिये दुख और गरीबी खुद ब खुद उठकर आ मिलने लगे. बचपन की उमीदें धूपा के असर से काफूर की तरह खुद ब खुद खत्म हुई. मुकद्दमा, किसी का कर्ज़ा, किसी की डिग्री किसी और के नाम, मगर वसूली डण्डे से बेचारे ऐसे प्राणी से होने तक की नौबत आ पहुँची. किसी ने न देखा कि दरअसल कसूर किस का है, सब को यहीं मालूम होता गया कि इस के बाज़ू में दर्द हो रहा है, वह उस के ज़िगर की खराबी का बहाना है, इस लिये दिल और जिगर का ऑप्रेशन होना चाहिये. या आँखें तकलीफ में हैं मगर राजदरबारी डाक्टर ने अपनी दलीलबाज़ी को हर तरह से साबुत करते हुए उस प्राणी के सब ही दाँत निकलवा कर क़र्ज़ा का हलवा खाने के लिये मज़बूर कर दिया, गर्ज़ेकि लियाक़त की कीमत और दिल की खवाहिश तमन्नाओं की आहें उठती जवानी से बुढापे के शुरु तक यानि अमूमन 48 साला

	उमर तक जिस्म के अँदर दबी हुई या कफन में लिपटी हुई या अपनी ही हरकत में चलती हुई देखी गई और ज्यों-ज्यों अज़ा कमज़ोर हुए सिर हिलने लगा, शांति की कुछ ठँडी हवा (मददगार) के झोंके साथ देने लगेगी वह भी इस वक्त जब कोई बच्चा बल्कि पोता 11 महीने या 11 साल की मियाद में आ पहुँचा.
चँदर	जब भी ऐसा प्राणी तालीम से ताल्लुक़ करे या दूध के जानवर उससे मुतल्लका हो जावें या ऐसी श्रीमति दूध पिलाने लगे (बच्चे वाली हो कर) चाँदी का पैसा, घड़े का पानी, दिल की शान्ति, रात का आराम, आमदन का फव्वारा, घर का दूध, दुनियावी यार दोस्तों या ताल्लुकदारों की गैबी मदद, रेशम के सफेद रंग की बजाय दीवारों पर रंग बदलने के लिए मिट्टी की सफेदी में तबदील होने लगी. हर चँद कोशिश की जिस किसी ने भी हिम्मत की ताल्लुकदारों का जवाब निकम्मा ही रहा. रुपय्या जमा किया तो वह किसी मुर्दे के कफनों , रिश्तेदारों की बीमारियों या दूसरे नाहक खर्चे व जुर्मानों में ही खर्च होता देखा गया और कभी ऐसा वक्त न पाया गया जब दिल ने खुद ब खुद खुश हो पीने के लिये दूध माँगा हो या किसी दूसरे साथी को बगैर माँगे बिलामतलब खुद ब खुद अपनी खुशी से दूध पिलाया हो, अगर कहीं हुआ होगा तो दूसरे की पगड़ी या दोस्त के जूते को मुफ्त उड़ाने की ख्वाहिश ही पैदा हुई होगी।
शुकर	शादी हुई या होने के लिये बाजे बजने लगे, जिस्म को धोया,बनाया, जिल्द चमकने लगी, खूबसूरती ने साथ दिया.औरत या खावँद बना बैठे मगर वसल की रात शादी का फल (औलाद नरेना) और दुनियावी ज़ाहिरदारी का नतीज़ा कभी भला न पाया गया. कही ज़िल्द मे बर्स(कोढ़,फुलबहरी वगैरह) खुशी के वक्त मातम का साथ, यानि इधर शादी हो उधर उसी वक्त ही या इस के लगभग इन्ही का कोई मुर्दा जल रहा या जलाने के लिये तैयार होगा. अगर कोई फतह होती होगी तो किसी न किसी का कफन ख़्रीद गया होगा. बहरहाल खुशी के

	फल मे गमी का बीज मिल रहा होगा. मगर पता न चला कि शादी शुदा औरत या मरद मेम से असल भागवान कौन था जिसमें के ऐसे शुभ काम होते ही घर में बँदर कीला(एक खेल) आ जमा और जमी हुई मिट्टी उड़ कर सिर पर पड़ने लगी,और गाऊ और माता दोनो ही रात को बिलकने लगी. एक चूड़ी टूटी, दूसरी के टूटने की कोशिश्स की गई या किसी एक थमते थमते ही खुद ब खुद टूट गई, मगर भेद न खुला कि वह मर्द था या औरत जिसमें की खूबसूरती को देखते ही हर एक ने ऐसे आँसू बहाएअ जो ज़ाहिर न हुए कि वह बे हद खुशी के थे या मातम मे जले हुए दिल की भाप का पानी जो दिल से उछल कर बाहर कतरे कतरे हो बहने लगा
मँगल	जिस्म में खून पैदा हुआ और मुंह पर मूछें निकलने लगी या माहवारी आयाम (हेज़)शुरू हुआ, बच्चा बनाने की धुन(लगन या मुहब्बत) पैदा हुई, हर नये काम जिसमें भी हाथ डाला, का नतीजा खुद ब खुद नेक होता हुआ मसौम होने लगा जो नहीं भी जानता था कोसों दूर से ऐसे प्राणी को शौक से मिलने मिलाने का ख्वाहशमँद हुआ. दुश्मन छुपने और दोस्त आशा रखने लगा.जो भी दांतों में आया खुद ब खुद ही चक्की में अनाज के साथ घुण (कीड़ा) की तरह ही पिसा चला ग्या. मैदानी जँग, राजसभा,यार दोस्त , स्त्री दरबार या माता के परीवार गर्जेकि हर जगह उसकी तलवार का डंका बजने लगा मगर अचानक दम के दम में ये क्या हुआ कि तमाम आग भड़क उठी, छत पर पहुँचने से अभी थोड़ा ही नीचा था कि मकँद टूट गई. छाती की हड्डियाँ आ टूटीं.खून गर्दिश में हुआ, किसी यार दोस्त ने मदद न की. और मिट्टी की डली के इल्ज़ाम में ही उसका खून बहा दिया गया. रहम ने साथ छोड़ा, मुंसिफ ने नज़र फेरी और ज़िन्दा ही कब्र में गाड़ दिया गया. वह अपने धर्म ईमान पर चलता रहा. हर एक पर भरोसा रखा ज़ाहिरदारी दुनिया की खांड ने शीशे के बारीक टुकड़ों के रेत का

	सबूत दिया। एक नहीं जो भी खानदान में होनहार सब से अच्छा उम्दा हैसियत का फल या एक कारामद प्राणी साबुत होता हुआ मालूम होने लगा, अचानक मौत का शिकार या किसी न किसी वजह से नाहक बर्बाद या तबाह शुदा देखा गया. उमर के आम अर्सा 28 साला उमर और 36 के दरमियान का अरसा इस ज़ालिम चक्की के चलने का ज़माना पाया गया. मगर किसी हकीम या डाक्टर ने तशफीस न की कि इस के खून में इस क़दर ताक़त और अच्छी हालत होटल हुए इस में अचानक और दम के दम में जहर आ बनने की वजह क्या थी. एक नहीं दो नहीं वाक्यात तो बहुत हुए मगर तमाम हमदर्दों ने सिर्फ अफसोस के आँसू बहाए मगर बे मौक़ा ज़ालम तलवार के चलाने वाले का सुराग ना पाया गया. मुँह पर मूँछे क्या निकली, मौत की आमद की किरणें साबुत हुई.
बुध	लड़की पैदा हुई। बहन का साथी भाई आ पहुँचा, दोनो मिल कर बैठने लगे, हाँ हाँ हूँ हाँ तूँ ताँ होने लगी, दाँतों की चक्की चलते ही आवाज आ निकली कि कोई लटक गया, लटक गया. कपड़ा आ फंसा, चक्की को हल्का करो. किसी समझदार को आवाज़ दो. जो करँट औफ करे(बिजली की ताकत को हटाओ) जल्दी करुं वह पलता चला जा रहा है. चक्की ताकत घटाने पर और भी उलटी तेज़ होती जा रही है. अक्ल मारी गई. दायें की जगह हाथ बायें पर लग गया. जुबान का एक ज़रा सा लफज तलवार से ज्यादा नुक्सान कर बैठा, लड़का पैदा हुआ, घर वालों ने शुकर मनाया मगर बाप को पता नहीं कि क्या आ चढ़ा कि उस का धन दौलत सब रेत आ हुआ. नाड़ें खिँचने लगीं. दाँत हिलने लगेगी और ऐन जवानी की चलती हुई चक्की की मरकजी कीली निकल बैठी. पिता की उमर शक्की हुई या माता अपनी ही जान से हाथ धो बैठी या उस खान्दान में जब तक कोई बाप (बेटा

	क़ा) न बना या माता न हुई खुशहाल और तंदरुस्त रहे मगर ज्यों ही कि नूरचश्म खानदान के चिराग या लड़के पैदा हुए, वह प्राणी जो अब बाप बना अपने ही दिल में अपनी हालत को देख कर रात के वक्त आँसू बहा कर सोने लगा. मगर बरतन मे इस गुमनाम सुराख का भेद छुपता ही चला आया. अगर कोई माता बनने पर जिन्दा रही तो वह आखिर बुढापे तक अपनी मँदी हालत को देख कर हर रात सिसकती और बिलखती (रोती) ही देखी गयी और जो बाप बना था वह हर चँद अपने खर्चे और कारोबार को थमथमा कर चलता चलाता गया मगर ना पहचान सका कि उस की जाती और जद्दी जायदाद बर्बाद करने वाला कीड़ा किस जगह लगा हुआ है. और उस की खुशी के बाजे से मातम की आवाज़ क्यों आ रही है. साल भर अगर कही मेहनत से दो रुपये जमा कर ही लिये तो आखिर पर नया साल शुरू हुए पहले पहले दो आने का खर्चा यानी 1½ आना मनफी का जवाब ही मिलता रहा. मगर बचत सिर्फ यही रही कि अगर रुपये ने हार दी तो जानो ने साथ नहीं छोड़ा. लेकिन उस नमकहराम लौंडी (बुध) ने कई खानदानों को तो ऐसा तबाह करके छोड़ा कि उन के नाम लेवा तो एक तरफ रहे बल्कि अपने शरीक भाईचारा आमदन के मददगार खानदानी पालने वाले बज़ुर्ग माता खानदान के रिश्तेदार या आइन्दा आने वाले मासूम बच्चे दोनो हाथों से सिर पीटते बल्कि कई दफा तो ये सब के सब मेहरबान गुमनाम ग ढों में गिर कर दम के दम में खत्म होते देखे गये. सिर्फ वही भला मालूम हुआ जिसमें की जुबान न थी या जो अपनी तकलीफ को जाहिर न कर सका . जहाँ कुछ भी न था उस कोढ़ी का फँदा मौजूद था, मगर उस फंदा लगाने वाले शिकारी का साया किसी को मालूम न हुआ. दाँत आए चले गये ससुराल खत्म हो गयी या पिस चुके. मामू दरबदर हुए या चल गये

	मगर उस छुपे लड़की के भेद में जालम कसाई के चक्कर का राज़ खुलने न पाया. उमर 34 से 48 हुई या बोलना सीखने के वक्त से दाँत निकल जाने तक तमाम जिस्म की नाड़ियों ने कोशिश करके देखा कि भेद क्या है तो यही मालूम हुआ कि " हज़ारों भटकते हैं लाखों दाना करोड़ों स्याने, जो खूब करके देखा आखिर खुदा की बातें खुदा ही जाने" जिसमें ने कुछ काम न किया उस का नाम बदनाम हुआ लेकिअन जिसमें ने कुछ काम किया वह गुमनाम हुआ मगर दोनो के दायरे की हदबंदी का निशान कोई मुकरर न हुआ.
शनि	नींद से उठे आँखे खोली तो मकान के दरवाजे पर दस्तक की आवाज आई कि वह किधर गए जो शाम को मशीनों का सौदा कर रहे थे कुछ नया न भी दे गए थे, कारखाना की दीवारों तक का खर्चा पेशगी जमा करवा गए, मगर बात अभी तै न होने पाई थी कि उनकी आँखों में अचानक मिट्टी का ज़र्रा उछल कर पड़ गया, सिरदर्दी शुरु हुई और सब कहानी जहाँ की तहाँ रह गई,सब इंतज़ार में हैं, बारिश ज़ोर कर रही है, सामान मकान बर्बाद हो रहा है. चलें पता करें कि वह साहब कहाँ हैं.इतने में भागती हुई लौंडीया आई कि मकान के उस कोने में जहाँ के तेल नारियल और लकड़ी का बारदाना(गोदाम) जमा था आग से खाक हो गया है. आग को बुझाने वाले पानी के नल की चाबी का जमादार चौकीदार कहीं बाहर गया हुआ है, इस नागहानी आग में एक दो रिश्तेदार भी टाँगों से जख्मी हो गये हैं. और उन को हस्पताल पहुंचाने का इंतज़ाम नज़र नहीं आता, ये तकरार हो ही रही ठीक कि कोने से एक साँप सरकता हुआ नज़र आया. सबका दम खिचने लगा और ये सब राम कहानी ख्वाबी हवा मालूम होने लगी.

	बारिश के ज़ोर से बगैर छत के खड़ी हुई दीवारें खटाखट गिरने लगी और नींद से उठते ही ये पहला नज़ारा दरपेश हुआ. ससुराल और बच्चों की दरसगाहों से पैगाम आये कि पोलीस और मुक़ामी अफसरों महकमा तालीम की ज़िम्मादार हस्तियों से नाहक़ झगड़े फसाद खड़े हो गये. लड़का निहायत लायक और मकानों, इंजनों, पहाड़ों, इमकानों व मअदनीत और डाक्टरी के इल्म से पूरा वाकफ था मगर वजह ना मालूम हुई कि मुकाबले पर ममतहन ने क्यों सिफर नंबर दे कर निकाल दिया. लड़का जिसमें क़दर ज्यादा समझदार और होशियार था, बाजार मे उसी कद्र ही उस की बेकदरी पाई गई, मकान देखने में आलीशान और भारी लागतें खर्च कर के बनाए गए, मगर ज्यों ही इन में रहने का मौक़ा आया, किसी ने उन मे आराम न पाया. अगर कोई बना बनाया ही मकान खरीदा किया तो उस की सीढ़ीयाँ दरमियान से टूटी हुई या तोड़ कर दोबारा ही बनती रही,बल्कि कई दफा तो मालिक ने (जिस ने मकान बनवाया) इस नये मकान में एक रात भी सो कर न देखा. अगर कहीं भूल कर सो ही गया तो सुबह दोबारा उठता (जागता) न देखा गया. कोशिश तो बहुत की मगर पता न लगा कि उस खानदान में मकानों या मकान के सामानों का आराम क्यों नहीं मिलता और वहाँ साँपों हत्थियारोंया नाहक ज़हर के वाक्यातों से खानदान क्यों घटता चला गया.
राहू	शाम हुई नींद का दौरा जारी हुआ कुछ कुछ खवाब की लहरें लगने लगीं. हर तरह का आराम और दुश्मनों से बचाओ का सामान मुहत्या हो चुका कि अचानक बिजली की लहर फट निकली (लीक कर गई) सजा सजाया मकान जल उठा, जवाब भूला नीदं उचट गई और जान के लाले पड़ गये. देर नहीं गुज़री कि करोड़ों अरबों के मालिक नीलम के ब्योपारी दम के दम में खाक हो गये . सोना गिम हुआ, जगह जगह चोरी, राहजनी, गबन, धोखादही और फरेब के वाकयात से

	धनहानी होने लगी. जो भी कोई ससुराल का ताल्लुकदार हुआ या 16 से 21 साला उमर में पहुँचा सिर से ज़ख्मी, ख्यालात का आलूदह(गँदा) और ज़िस्म में बेढब, बेडौल, बिमारियों से मारा हुआ,नौजवानी की बजाय बचपन में ही बूढा आज़ुर्दा और निकम्मा साबुत होने लगा. जिसमें क़दर ज्यादा समझ,सूरज और अक्ल से काम करता गया-उसी कद्र ही बेकार निर्धन और बे मददगार पाया गया. शाम को सोचा ख्वाब में सोचा, तन्हाई में सोचा मगर पता न चला कि सोना खुआमख्वाह जंगारी पीतल, जर्द-झिलबिल रंग से क्यों नीले रंग में बदलता गया. खान्दानी मेंबर बाल बच्चे और नौजवान लड़के देखने में खूबसूरत क़दावर मगर साँस में क्यों रुकने लगे. दमा,मिरगी,काली खाँसी और साँस की तरह तरह की तकलीफें, बेगुनह को जेलखाने और बेमौका और अचानक मौतों की तायदाद बढ़ने लगी. जहाँ तक भी खानदान के खून का असर पहुँचा, काली मिट्टी की आँधी का ज़ोर और ज़माने का तकरार बढ़ता गया. खुद ख्वाह कितने ही शरीफ गरीब तबीयत और डर कर चलने वाले हुए, मगर मुँसिफ ने मुक़दमे के फैसले पर कुछ न कुछ जुर्माना,जेलखाना या तावान डाल ही दिया. क़सूर ख्वाह था या न था मगर बताया न गया कि वजह क्या थी. जो किया सब कुछ ऐसा उलट पलट होता गया. ज़मीन की तह से छत तक नज़र दौड़ाई,नीले समँदर और आसमान दोनो तक की छानबीन कर ली. सुबह से पक्की शाम तक गौर ओ खोज़ किया मगर ज्वाब वही रहा कि ये सिर्फ वहम है फर्जी ख्याल है या किसी हद तक दीवानगी का मियार (पैमाना) है जो ये गुमनाम सजा में आफतें और दिलदर्दी की बुनियाद खड़ा कर रहा है.
केतु	बच्चे खेल रहे थे इधर-उधर भागने लगे और कुत्तों के बच्चे भी साथ आ शामिल हुए. अचानक कोई मुसाफिर आया इसका पाँव फिसला और कुत्ते के मुंह पर लगा। वह अपनी जान बचाने के लिए दूसरे मासूम बच्चे पर झपटा जो दौड़ कर भागता हुआ सड़क पर मोटर के नीचे आ गया। माताजी जो छोटे बच्चे को दुमँजिले मकान पर नहला रही थी वाक्या को

	देखकर इस बच्चे को वहीं छोड़कर नीचे का रुख किया. मर गए हुए बच्चे का भाई तीसरी मंजल पर धूप सेक रहा था,शूरशराबे से बछे को देखने पर तह जमीन पर आ गिरा. माता का छोड़ा हुआ बच्चा पानी के बरतन में लेट कर डूब गया. छत से गिरा हुआ लड़का गिर्ते ही दम बहक़ हुआ और गर्दिश की घिरी हुई माता जब मोटर के नीचे आई हुई लाश और छत से गिरे कर मरे हुए होनहार को जब उठा कर ऊपर पहुँची तो देखा कि सब से छोटा भाई तो पानी में ही अपनी नींद से करवट लम्बी कर चुका है. माता की टाँगे फूल गई. किसी की सलाह मशवरा काम नहीं देता. कान आवाज़ नहीं सुनते. और उस बेचारी की रीढ़ की हड्डी बगैर किसी के मारे खुद ब खुद टूट रही है, अभी तीन थे अभी एक भी नहीं रहा. किस को कहे कि किसने मार दिये और क्यों और कब मार दिये. खानदान में किसी के तो नर औलाद हुई ही नहीं किसी के हो कर मरती गई और किसी की जब चलने फिरने के वक्त पर पहुँचे तो टाँगों से नकारा होती गई. अगर फिर भी किसी ने जवानी देखी तो कानों से बहरा, पेशाब की बीमारियों से दुःखीया अधरंग फालिज़ का मरीज ही होता गया. अगर अपना खानदान बचा तो मामू खानदान की मिट्टी उड़ गयी. अगर घर में दो पैसे जमा किए तो मुसाफिरी में हजारों का नुकसान जा देखा. अव्वल तो कोई नेक सलाहकार मिला ही नहीं था लेकिन अगर किसी पर एतबार किया तो उसने गुमराह कर के कोई न कोई तूफान ही खड़ा कर दिखाया. मगर उस अचानक धोखे जंजाल और दुनिया की दोरंगी के मँदे नतीजे या हर दोरंगी में मँदगी के ही पहलू की बुनियाद का सुराग न चला

नाम ग्रह	उपाओ
बृहस्पति	कुल खानदान के हर एक मेंबर जहाँ तक कि खून का असर हो हर एक से एक एक पैसा वसूल करके धर्म मन्दिर में एक ही दिन देना. या उन के खानदानी घर से बाहर निकलने के लिये दरवाजे पर अटक जाएँ मुँह बाहर को और पीठ मकान के अँदर को है. अब जिधर नजर जारही है या जिधर बायाँ हाथ है दोनो तरफ़ों में सोलह कदम के अंदर बृहस्पति की अश्शइआँ धर्म मँदिर या पीपल का दरखत मौजूद होगा,इस की पालना करें
सूरज	कुल खानदान के हर एक मेंबर जहाँ तक कि खून का असर हो,उन सब का बराबर और मुश्तर्का हिस्सा ले कर यग करना.
चँदर	कुल खानदान के हर एक मेंबर जहाँ तक कि खून का असर हो- उन सब से बराबर बराबर हिस्सा की चाँदी ले कर दरया में एक ही दिन बहा दी जावें.
शुकर	100 गऊओं को जो कि अंगहीन न हों- कुल खानदान के बराबर बराबर और मुश्तरका खर्च पर एक ही दिन में लज़ीज़ भोजन वगैरह खिलाया जावे .
मंगल	बाहर से गांव में दाखिल होने पर दरम्यानी दुकान के मालिक जो सनिचर के कारोबार से पैवस्ता मसलनः कोई करीगर पेशा हकीम हाजक या नालबंद वगैरह हो तमाम खानदान के ताल्लुकदारों से एक-एक पैसा इकट्ठा करके उपर ज़िकर कर्दा शनि के मुत्तल्लका कारोबार करने वाले शख्स को उस काम को कु हिस्सा मुफ्त करने के लिए देना। ऐसे शख्स की निशानी : गांव में मशरक की तरफ से दाखिल हुए, एक चौक आया, पीठ अभी गांव से बाहर को तरफ को ही है. और मुंह गांव के अन्दर की तरफ को, ऐसी हालत में चौक में ठहर गये. सामने ऐसे शख्स की दुकान होगी. दाएँ हाथ की तरफ उस

	चौक से रास्ता जा रहा है और दुकान का एक दरवाज़ा भी उसी हाथ पर पर है. बाएँ हाथ की तरफ जो दुकानें हैं, उन का मालिक उन्हें बेच गया , जिसने खरीदी , उसका लड़का मर गया , जिसने उन दुकानों में कारोबार किया बर्बाद् हो गया. ऐसे शख्स के अव्वल तो नर औलाद हुई ही न होगी अगर हो गई तो वह बेचारा ऐसी औलाद की जवानी का जमान न देख सके और अगर कारकज़ा लड़के जवान हो भी गये तो वह बच्चे उस शख्स की अमूमन दुर्दशा ही करते रहे वजह सिर्फयही हुई कि वह शख्स शनि खाना नं० 4 का मारा हुआ था यानि हकीम होते हुए सांप का तेल बेचता रहा। कारीगर होते हुए धोखदही से पक्के की जगह कच्चा सामान देता गया या दूसरों की शनि की मुत्तल्लका अश्शइआँ को ऐसे धोखे से बरबाद करता गया , जिस को कि सिर्फ गैबी ताकत का मालिक ही पहचान सका.
बुध	कुल खानदान के हर एक मेंबर (जहाँ तक कि खून का असर हो) से ज़र्द कौड़ी एक एक ले कर एक ही दिन इकट्ठी करके जला कर इस की राख को उसी दिन दरया में बहा दें.
सनिचर	100 मुख्खलफ जगह की मछिलयों को एक ही दिन में कुल खानदान के बराबर बराबर और मुश्तर्का खर्च से खिलाना वगैरह देवें.
राहू	कुल खानदान के हर एक मेंबर जहाँ तक कि खून का असर हो से एक एक नारियल ले कर एक जगह ही इकट्ठे करके एक ही दिन में दरया में बहा देवें.
केतू	100 कुत्तों को एक ही दिन में कुल खानदान के बराबर बराबर और मुश्तरका खर्च से लज़ीज़ खाना वगैरह देवें . या उन के खानदानी घर में अंदर दाखिल होने कि लिये बाहर दरवाजे पर ठहर गए पीठ बाहर को है और मुँह इस मकान को देख रहा है, उन के घर के साथ लगते हुए बायें हाथ के मकान में एक बेवा होगी जो अपनी छोटी उमर से ही दुखिया हो चुकी होगी. इस की आशीर्वाद लेना.

महादशा का ग्रह

("मर्ज़ बढ़ता गया ज्यूँ ज्यूँ दवा की" और डरते डरते आख़ीर एक दिन मौत का ख्वाब अजल का फरिश्ता ही बन बैठा)

खास[1] ग्रह बवक्त महादशा

मंगल देखता 8 चौथे को
गुरु देखे 5-9वें घर
शनि देखे घर 10 तीजे को
दृष्टि होवे कुल पूरन घर
एक अकेला या मुश्तरका
बँद मुट्ठी के ख़ानों में
9 ही ग्रह घर 6वें बैठे
देखा करें उन तरफ़ों में

1. किसी ग्रह का लगातार ही मंदी हालत का जमाना महादशा का अर्सा होगा और उम्र के एक 35 साला चक्कर में सिर्फ़ एक ग्रह ही महादशा में हो सकता है और एक किस्मत के ताल्लुक में "ग्रहण" या इँसान की तमाम उम्र में ऐसा जमाना ज्यादा से ज्यादा 39 साल हो सकता है। एक महादशा के बाद अगर फ़ौरन दूसरी महादशा शुरु हो जावे तो दोनों महादशाओं के दरमियान का अर्सा (एक का ख़तम ओर दूसरी का शुरु) महादशा के मंदे असर का न होगा।

1.- जहां कहीं भी बैठे हों उस बैठा होने वाले घर को एक नम्बर (यानी पहला घर) गिनकर चौथा या आंठवा वग़ैरह महादशा के वक्त ग्रहों कि मियाद मंदरजाजैल होगी।

बृहस्पत 16, सूरज 6, चंद्र 10, शुकर 20, मंगल 7, बुध 17, सनीचर 19, राहु 18, केतु 7 कुल 120 साल।

2. (i)किस्मत का ग्रह (ii) राशि फल का ग्रह (iii) ऊंच या .कायम और (iv) नेक ग्रह कभी महादशा में न होगा।

3. **जब बँद मुट्ठी के ख़ानों (1-7-4-10) में कोई भी ग्रह बैठा हो और साथ ही मूट्ठी के बाहर के घरों में कोई ऊंच ग्रह न हो यानी नम्बर 9 में चंद्र नम्बर 3 में राहु नम्बर 6 में बुध राहु, नम्बर 9 में केतु और नम्बर 12 में शुकर या केतु बैठा हो या नम्बर 4 या ख़ुद चंद्र अच्छे हों तो महादशा हरगिज न होगी।**

4.- महादशा के वक्त "धोके का ग्रह" तब्दीली हालात पैदा करेगा हर सातवें साल बज़रिया राहु और हर आठवें साल बज़रिया ग्रह नम्बर 8

5.- महादशा में हो चुके ग्रह का दूसरों पर कोई बुरा असर न होगा ।

6.- महादशा के वक्त हर ग्रह का जो महादशा में हो गया हो मुंदरजा जैल सालों में अपनी जाती असर (बमुजिब वर्षफल) बहाल होगा।

ग्रह	**कौन से साल अपना असली फल बहाल होगा**
बृहस्पत	10वें या दसवां साल बृहस्पत की गुरु पदवी और रियायती साल के अलावा होगा।
सूरज	ताक (उम्र के वह साल जो 2 के हिंदसा पर तकसीम न होवे यानी 1-2-5 वग़ैरह)
चंद्र	जुफ्त (उम्र के वो साल जो 2 के हिंदसा पर तकसीम हो जावे यानी 2-4-6 वग़ैरह।)
शुकर मंगल	11 वें ,चौथे - इस ग्रह का आम दौरा के 3 साला अर्सा का पहला साल शुकर में मंगल के ग्रह का असर प्रबल होने का होता है।
बुध	5 वें
सनीचर	6 वें
राहू	7 वें
केतु	तीसरे बृहस्पत की आम मियाद 16 साला हुआ करती है मगर बृहस्पत की हालत में ही

महादशा नौवें से शुरु होगी और यह ग्रह अपनी महादशा के वक्त का पहला दूसरा आठवां दसवां और 14वां जाती असर का रख लेगा और गुरु होने की हैसियत से अपने उम्र के निस्फ अर्सा यानी 8 साल तक कभी बुरा असर न देगा और महादशा 9वें साल से ही शुरु होगी। टेबे वाले का महादशा के जमाने का हाल और उसकी औरत का हाल चंद्र कुण्डली से देखा जाएगा जिसके लिए बर्षफल भी उसी कुण्डली से बनाएंगे।

चंद्र कुण्डलीः जिस घर में ज्यातिष वालों ने लफ्त चंद्र का ग्रह लिखा हो उस घर को जन्म लगन वाली राशि का नम्बर लगाकर तमाम ख़ानों में 12 हिंदसे पूरे कर देंगे। इस तरह से जहां भी एक का हिँदसा आवे वह घर सामुद्रिक में पहला ख़ाना होगा। चंद्र कुण्डली के देखने के लिए अब सामुद्रिक के हिसाब से एक कुण्डली तो जन्म कुण्डली नम्बर अव्वल कहलाई दूसरी महादशा के लिए चंद्र कुण्डली नंबर 4 वाली। दोनों का फर्क यह होगा कि जन्म लगन में चंद्र का ग्रह ख़ाना नम्बर 10 पर आ गया और चंद्र कुण्डली में वही चंद्र ख़ाना नम्बर 10 पर हो गया। क्यों कि जन्म राशि दोनों हालतों में सिंह राशि नम्बर 5 फ़र्ज. कर लिया था। अब दोनों कुण्डलियों का जुदा जुदा हाल लाल किताब के हिसाब सें जुदा जुदा देखा गया। फर्क हालात में यह होगा कि चंद्र कुण्डली का असर अचानक और सहवन ओर भूले भुलाए कभी कभी जाहिर होगा और वह भी महादशा के ख़ाली रखे हुए सालों में और धोके के ग्रह के सालों में जो होगा, पक्का भेद जिसे राशिफल कह कर शक का फायदा उठाएंगे। (राशिफल व ग्रहफल का फ़र्क वग़ैरह जुदी जगह लिखा गया है)

पैदाईश 2 चेत सम्वत 1922 सनीचर वार बामुकाम लाहौर छावनी ख़ास 5 बजे सुबह मुताबिक. 19 3/36 हो तो उस दिन होगा:-

(कुण्डलियां अगले सफ्हः पर मलाहिजा हों)

जन्म कुंडली)कुंभ लगन (1



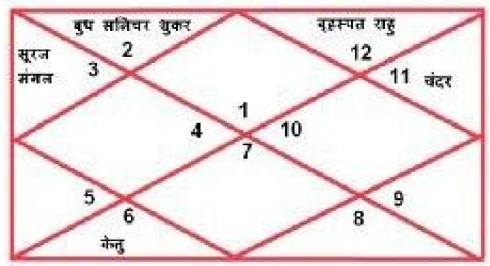
चंदर कुंडली (2)



नंबर 3



नंबर 4



अब 'लाल किताब' के लिए पैदाइश के दिन वाली चंद्र कुण्डली में चंद्र को जन्म लगन की राशि यानी हिँदसा नम्बर 11 दिया तो वही चंद्र कुण्डली आम हालत के लिए हस्बे जैल (नंबर 3) होगी।

या हिंदसा नम्बर 1 को अपनी ऊपर की जगह किया तो लाल किताब के मुताबिक लाल किताब की चंद्र कुण्डली होगी (नंबर 3), वास्ते महादशा।

7.- (i) जब किसी ग्रह के बराबर के ग्रह नीच और रद्दी हों, मगर वह ख़ुद नीच और रद्दी ना हो, तो ऐसा ग्रह तख्त पर आने के बाद (बमुजिब बर्षफल) जिस महीने ख़ुद ही नीच और रद्दी हो जावे, उस दिन से महादशा में हो गया माना जाएगा। लेकिन (ii) जब वह ग्रह ख़ुद भी नीच और रद्दी होवे और उसके बराबर के ग्रह भी नीच और रद्दी हों तो तख्त पर आने के दिन (बमूजिब बर्षफल) या जन्म दिन (जब बमूजिब जन्म कुण्डली सब तरफ रद्दी हालत हो) से ही महादशा में हो गया होगा। महादशा के वक्त दोस्त ग्रहों की कोई मदद न होगी। मगर दुश्मन ग्रह जख्म पर नमक छिड़कने की तरह मंदा असर देते होंगे)

(नक्शा अगले सफ्ह पर मुलाहिजा हो)

महा दशा के साल	महादशा में हो चुके हुए ग्रह की तरह मंगल सनिचर और बृहस्पत की दृष्टि की नज़र जुदी होगी।	ग्रह खाना नंबर में		बराबर के ग्रह जिन घरों में बैठे हो	जन्म कुंडली में ही ये ग्रह चाल हो तो उमर का सा मंदा होगा	वर्षफल जिस साल बमूजब वर्षफल खाना नंबर अलिफ इस की ग्रह चाल कायम हो तो इस साल को पहला साल कहेंगे फिर इस के आगे ....
16		बृहस्पत	10	राहु 9-12, केतु 3-6,सनिचर 1	20,21,22वां साल	11,12,13वां साल
6		सूरज	7	बुध नंबर 12 में हो	उमर का 12वां साल	महांदशा का 6वां साल
10		चंदर	8	शुकर 6 सनिचर 1, मंगल 4, बृहस्पत 10	उमर का 17वां साल	महादशा का 10वां साल
20		शुकर	6	मंगल 4, बृहस्पत 10	9-11-12-13-17-18-20-25-27	1-3-4-5-9-10-12-17-19
7		मंगल	4	शुकर 6, सनिचर 1, राहु 9-12	4-5-6-9	1-2-3-4
17		बुध	12	सनिचर 1, केतु 3-6, मंगल 4, गुरु 10	11-14-15-17-22-24-28	1-3-4-6-11-13-17
19		सनिचर	1	केतु 3-6, बृहस्पत 10	1-2-11-13	1-2-11-13
18		राहु	9	बृहस्पत 10, चंदर 8	6-8-9-10-14-15-16-17-18-20-22	1-3-5-9-10-11-12-13-15-17
7		केतु	12	-----------	12,14,16,17,20,22 23,24,26,28,29	1-2-3
			3	बृहस्पत 10 सनिचर 1, बुध 12 सूरज 7	3,4,6	1,3,5,6,9,11, 12,13,15.17,18
			6		9-12-13	1-4-5
		अलिफ	बे	जे	दाल	सीन

महा दशा के जमाने के कितने मोटे साल होंगे	बृहस्पत	सूरज	चंदर	शुकर	मंगल	बुध	सनिचर	राहु	केतु	
	16 में से 3 मोटे	6 में से 1 मोटे	10 में से 1 मोटे	20 में से 8 मोटे	7 में से 4 मोटे	17 में से 7 मोटे	19 में से 4 मोटे	18 में से 11 मोटे	7 में से 3 मोटे	120 - - - 42

किस ग्रह की चाल के वक्त महांदशा होगी

किस ग्रह की महादशा होगी	किस किस खाना में कौन कौन ग्रह महादशा में हो जाने वाले ग्रह के बराबर मगर नीच हालत में बैठा हो (नोट) बराबर के ग्रह मंदे होनेपर भी जो किसी तरह मंदे हो सकते हैं ख्वाह किसी जगह महादशा क जमाना होगा											
	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	दी हुई ग्रह चाल के वक्त
बृहस्पत	सनिचर		केतु			केतु			राहु	बृहस्पत		राहु	अगर उसी वक्त ही ख़ाना
सूरज							सूरज					बुध	में ग्रह बैठा हो नम्बर 2
चंदर	सनिचर			मंगल		शुकर		चंदर		बृहस्पत			मे चंद्र या
शुकर				मंगल		शुकर				बृहस्पत			3 में राहु
मंगल	सनिचर			मंगल		शुकर			राहु			राहु	6 में बुध या राहु या
बुध	सनिचर		केतु	मंगल		केतु				बृहस्पत		बुध	दोनों ही नम्बर 9 में
सनिचर	सनिचर		केतु			केतु				बृहस्पत			केतु नम्बर 12 में केतु
राहु								चंदर	राहु	बृहस्पत		राहु	या शुकर या दोनों ही
केतु	सनिचर		केतु			केतु	सूरज			बृहस्पत		बुध	या ख़ाना नम्बर 4 में अच्छे ग्रह हों या ख़ुद चंद्र किसी भी घर में अच्छे असर का हो तो कभी महादशा न होगी।

महादशा के वक्त अगर मंगल बैठा हो ख़ाना नम्बर 4 में तो वह देखता होगा ख़ाना नम्बर 7 और ख़ाना नम्बर 11 के ग्रह को
बृहस्पत बैठा हो ख़ाना नम्बर 10 में तो वह देखता होगा ख़ाना नम्बर 2 और ख़ाना नम्बर 6 के ग्रह को
सनीचर बैठा हो ख़ाना नम्बर 1 में तो वह देखता होगा ख़ाना नम्बर 3 और ख़ाना नम्बर 10 के ग्रह को

1. महादशा के असर के वक्त महादशा वाले ग्रह का कुण्डली के सिर्फ़ उस ख़ाना नम्बर का जिसमें कि वह बैठा हो और उन्हीं चीज़े पर जो चीज़े कि उस ग्रह (महादशा में हो जाने वाले) की उस बैठे हुए ख़ाना की मुतअल्लिका हों पर मंदा असर होता है।

2. महादशा में हो जाने वाले ग्रह का दूसरे ग्रहों पर (बरूए दोस्ती, दुश्मनी या दृष्टि) वही असर होगा जैसा कि उस वक्त होना था अगर वह महादशा में न होता।

3. महादशा के वक्त ख्वाह किसी भी ग्रह की हो, ज्यादा से ज्यादा एक से 40 तक हिंदसे मुंदरजा जैल ढ़ंग पर 12 ख़ानों की फ़ेहरिस्त में लिख लें और पेशानी के ख़ाना नम्बर 1 (हिँदसा नम्बर 1-13-25-37 वाला ख़ाना) में इस ग्रह का नाम लिख दें जो कि महादशा में हो गया हो। फर्जन वह शुकर है तो शुकर को नम्बर 1 के ऊपर लिख दिया और बाकि ग्रहों को भी दी हुई तरतीब से लिख देवे।

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
शुकर	नंबर 12 के लिये	सूरज	चंदर	केतु	मंगल	बुध	सनिचर	राहु	नंबर 8 के लिये	नंबर 9 के लिये	बृहस्पति
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	25	25	25	25	25	25	25	25	25	25	25
37	38	39	40	41							

जिस हिँदसा नम्बर की पेशानी पर जो कोई ग्रह भी लिखा हुआ हो, वह साल उस ग्रह की मारफ्त उस महादशा के जमाना में तबदीली हालात पैदा करने वाला होगा। ऊपर की फ़ेहरिस्त में ख़ाना नम्बर 1 से मुराद महादशा का पहला साल और नम्बर 2 से मुराद दूसरा साल वगैरह वगैरह होगी, ख्वाह वह उम्र के किसी भी साल शुरु हुई हो

धोके का ग्रह

देखते जाओ कि वह कहीं धोका ही न कर जाए

(1) दुगना अच्छा होगा या दुगना मंदा मगर चलेगा जरूर दुगनी रफ्तार से (2) धोके का ग्रह अच्छा फल देगा।

या बुरा। इस बात के .फैसले के लिए मुफ़स्सिल पक्का घर नम्बर 10 देखें।
(3) औसत उम्र 120 साल को 12x10 ख़ानों की फेहरिस्त में लिखकर पेशानी ख़ाली छोड़ दें, और सूज बमुजिव जन्म कुण्डली जिस ख़ाना नम्बर में बैठा होवे, उसी नम्बर वाले हिंदसा के ख़ानों की पेशानी पर सूरज लिख देवें सिवाय ख़ाना नम्बर 6 के सूरज को नम्बर 9 की लाईन (सतर) की पेशानी पर

नम्बर 9 के सूरज को नम्बर 6 की लाईन (सतर) की पेशानी पर

नम्बर 7 के सूरज को नम्बर 5 की लाईन (सतर) की पेशानी पर

सिर्फ़ उस वक्त जब नम्बर 1 ख़ाली हो वरना नम्बर 7 को 7 के ऊपर।
बाकि ग्रहों को उसी तरतीब से लिख दें जिस तरतीब से कि वह नीचे लिखे है, मसलन किसी का सूरज जन्म कुण्डली नम्बर 3 का है तो 12 ख़ानों के ख़ाका में सूरज को नम्बर 3 वाले ख़ाना के ऊपर लिख कर ख़ाना नम्बर 4 के ऊपर चंद्र नम्बर 5 वाले ख़ाना के ऊपर केतु वगैरह लिख दें। जिस हिंदसा के नम्बर के ख़ाना के ऊपर जो ग्रह आवे वह ग्रह उम्र के उस साल धोका का ग्रह होगा, जिसके बुरे या भले असर के लिए मुफस्सिल ख़ाना नम्बर 10 में देखे।

सूरज नम्बर 12 वाली कुण्डली

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
चंद्र	केतु	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	केतु	चंद्र बृहस्पत	बृहस्पत	शुकर	सूरज	सूरज
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	70	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96

धोका के ग्रह की तलाश

सूरज नम्बर 11 वाली कुण्डली

केतु	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	चंद्र बृहस्पत	बृहस्पत	बृहस्पत	शुकर	बुध	सूरज	चंद्र
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36
37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48
49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60
61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	70	72
73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84
85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96

यादाश्त जन्म कुण्डली के ग्रहों का कोई ख़याल न करेंगे सिर्फ सूरज को हम जन्म कुण्डली से देखे लेंगे और जन्म कुण्डली के बाकि किसी भी ग्रह का कोई ख़याल न करेंगे।

पेशानी में ग्रहों की तरतीब

जन्म कुण्डली के ख़ाना नम्बर 10 का ग्रह जब बर्षफल के मुताबिक दोबारा ख़ाना नम्बर 10 में ही आ जावे, तो वह धोका (अच्छा या बुरा) का ग्रह होगा। अब अगर नीचे दी हुई फेहरिस्त के मुताबिक भी वह नम्बर 10 में आया हुआ ग्रह धोके का ग्रह साबित होवे तो ऐसा ग्रह ज़रूर ही धोका देगा, अच्छा या बुरा जिसके फैसले के लिए ख़ाना नम्बर 10 मे मुफ़स्सिल लिखा है।

सूरज	चंद्र	केतु	मंगल	बुध	सनीचर	राहु	*ख़ाना नं. 8 के ग्रह	*ख़ाना नं 9 के ग्रह	बृहस्पत	शुकर	*ख़ाना नं 12 के ग्रह
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

*अगर बमूजिब जन्म कुण्डली ख़ाना नम्बर 8-9-12 ख़ाली ही हों, तो नम्बर 8 के लिए मंगल सनीचर 9-12 के लिए बृहस्पत (**कोई ग्रह दो दफ़ा लिखा जाने का वहम न करें।**)

एक के बाद दूसरी दो लगातार महादशा के वक्त दोनो का दरमियानी साल बुरा असर न देगा। मसलन शुकर पहले का 20 वां साल मंदा असर न देगा। जब शुकर की लगातार दो महादशा शुरू हो जावे।

फरमान नंबर 9

मददगार उपाय

अ)   रुह बुत के झगड़े की तरह ग्रह को रूह और राशी को बुत मानें , तो ग्रह फल के उपाय की इस इलम में गुँजाइश नहीं मानी गई,राशी या ग्रह या राशी/ग्रह फल के शक का इलाज और ग्रहों से धोके के ग्रह के धक्के से बच कर चलना इँसानी ताकत में माना गया है. बुध के ग्रह का हीरा (बहुत कीमती पत्थर) सब को काटता और मारता है मगर वह खुद उसी बुध की दूसरी निहायत नरम चीज कलई (टाँके लगाने वाली धात) उस हीरे में सूराख डाल देती है. इसी तरह ही पापी ग्रह सब ग्रहों पर अपना धक्का लगाते हैं, मगर उन को (पापी ग्रहों को) मारने के लिये खुद अपना ही पाप (लफज पाप से मुराद राहु-केतु हैं, पापी से मुराद सनिचर, राहु केतु तीनों ही हैं,यानि राहु के मँदे असर को केतु का उपाय दरुस्त कर देगा और केतु के मँदे असर को राहू का उपाय नेक कर देगा) महाँबली होगा. और पाप की बेड़ी भर कर डूबेगी। मुख्तसर तौर पर पापी ग्रहों का उपाय या उन ग्रहों की मुत्तलका चीजों की पालना करनी होगी. या उन की मुत्तलका चीजों से उन की आशीर्वाद या मुआफी ले लेना कारामद होगा. मसलन **शुकर की मुतलका चीज गाय और आम इंसानी खुराक या सब अनाज मिले मिलाये** मुकरर हैं. शुकर की मदद् के लिये गाय को अपनी खुराक का हिस्सा देवें. काग रेखा धन दौलत की हानि -सनिचर की मँदी निशानी की बकुवत कौवे को रोटी का हिस्सा देवें या औलाद के लिये दुनिया के दर्वेश कुत्ते को अपनी खुराक का टुकड़ा बख्शें.

ब) हर ग्रह की मसनुई हालत में दो ग्रह होते हैं. जब कोई ग्रह मंदा हो जावे तो इस की मसनुई हालत में दिये हुए दो ग्रहों में से उस एक ग्रह को हटाने के लिये जिस के हट जाने से नतीजे नेक हो जावे. कोई और ग्रह कायम करें जो बुरे फल के हिस्से के देने वाले ग्रह को गुम ही या नेक कर देवें. मसलन सनिचर मँदा होवे तो इस के मसनूई हालत के ग्रह "शुक्कर बृहस्पति" में से बृहस्पति के हटाने के लिये अगर बुध कायम करें, तो शुकर बाकी रह जाएगा. अब शुकर के साथ बुध मिलने पर सनिचर नेक होगा. (II) उपाय के इलावा हर एक पक्के ग्रह का उपाय तो लाल किताब के मुताबक ही लेंगे (III) हर एक ग्रह की मसनुई हालत में दो ग्रह इकट्ठे माने गये हैं, पक्के ग्रह की जिस चीज का असर या जो असर मँदा होवे उस असर के देने वाले ग्रह को इस की मसनूई जुज से हटाने की कोशिश करें, मसलन शुकर जब खराब करे या खराब होवे तो शुकर के मसनुई जुज राहू केतु में से राहू को हटावें तो बाकि केतु होगा, यानि शुकर के नेक करने को राहू को नेक कर लेना मदद देगा. बुध बृहस्पति दोनो को ही कायम रख कर चलाने के लिये (सफा 152)

बुध की सब्ज रँग अश्या (सोने क जेवर सब्ज कागज में रखने की तरह मददगार होंगी. और बुध शुकर सनिचर की मुश्तर्का चीज गऊ ग्रास अपनी खुराक से तीन टुकड़े रोटी के गाँ(गाय) काँ (कौआ) और कुत्ते को देना मुबारक फल देगा -वास्ते इज्जत , मान धन दौलत और औलाद के नेक और उमदा होने के वगैरह वगैरह.

मतलब यह कि मँदे फल वाले ग्रह के लिये मँदे करने वाली चीज को दूर करें. मंगल बद के बुरे असर से मृगशाला बचाएगी.

मँगल बद का इलाज:- मँगल बुध = मँगल बद - सनिचर के साँप की ज़हर या मँगल बुध सनिचर मुश्तर्का को मृगशाला (हिरन की खाल उपाय)पहाड़ी जुबान मे मृग को चीता कहते हैं- चीते की खाल नही माना है) जिस पर जहरीला साँप न आएगा यानि मँगल बद का दोस्त सनिचर मुर्दा हिरन की खाल , मृग शाला पर जहरीला साँप हरगिज न चढ़ेगा. इस लिये साधू ने मृगशाला पसँद की है. (I) शुतर बेमुहार के कीन्हे के नुक्स उस के दिल की बात उस के नाखुनो से जाहिर कर देंगे,क्यों कि इस का दिल या चँदर नहीं होता या ऊँट को उस के पाँव के नाखुन केतू (कीन्हा) सजा दिलाते हैं, या वह केतू के बुरे असर को बर्बाद करने के इलाज से काबू होगा. या चँदर की उपासना (पूजना) मदद देगी, यानि चँदर जिस घर का कुंडली के मुताबिक होवे वही इलाज होगा.(II) चँदर उमर का मालिक और हर एक पर मेहरबान होगा. मँगल बद सब के लिये मौत का फँदा लिये फिरता है या जहाँ चँदर होगा, वहाँ मँगल बद न होगा, जहाँ मँगल बद होगा वहाँ चँदर न होगा. इसी असूल पर मँगल बद का इलाज चँदर की पूजना या मदद ढूडना मुबारक होगा- तँदूर में मीठी रोटी लगा कर खैरात में देने से भी मँगल बद का असर दूर होगा. राहू का मँदा असर जौ (अनाज) को किसी बँद जगह में बोझ तले दबाया जावे या दूध से धोकर चलते पानी में में डाला जावे. अगर तपदिक वगैरह या लम्बा बुखार तँग करे तो जौ को गऊ पेशाब में धो कर लाल(सुर्ख) कपड़े में बँद करें और गऊ पेशाब से ही दाँत सफा करें. जो ग्रह ऊँच होवे , इस की मुत्तलका चीजों की मदद से मंदे ग्रह का असर दूर हो जाता है. अपनी मुकरर जगह की बजाय जब मच्छ रेखा काग रेखा वगैरह किसी और जगह वाकय हों तो जिस ग्रह

(सफा 153)की राशी या पक्के घर में बालिहाज बुर्ज व रेखा - वाकय होवे - उस ग्रह की पूजना से नेक फल होगा. मसलन मच्छ् रेखा बुध की सिर रेखा पर वाकय हो तो सनिचर व बुध की चीजों की पालना यानि स्याह परिँदो कौए की पालना करना मुबारक अगर शुकर पर हो तो स्याह गाय वगैरह की पूजना पालना मुबारक फल पैदा करेगा.

धोके के ग्रह का छुपा छुपाया होता है.इलाज भी देख लेना जरूरी होगा.अगर लड़का लड़की बाप के लिये दोनो ही मँदे फल वाले पैदा हों जावें तो सूरज लड़का बुध लड़की या लड़के के गले में ताँबे का टुकड़ा मुबारक होगा.जो बुध को दबाएगा. पापी ग्रहों के साथ जब वह अकेले की बजाय कोई दो इकट्ठे हों तो मँगल को क़ायम करना मुबारक होगा बशर्ते कि उस कुँडली वाले का अपनी कुँडली के हिसाब से मँगल राशी फल का हो यानि अगर मँगल खाना ण; 1 य 3 या 8 में होवे तो मँगल का उपाय न होगा, बुध काम देगा. इसी तरह ही स्त्री ग्रहों (चँदर शुकर) में बुध की ताकत मदद देगी बशर्ते कि बुध खाना न: 3-6,7 या 9 का न हो,ऐसी हालत में मँगल काम देगा.खुलास्तन उपाय के वक्त देख लें कि जिस ग्रह के ज़रिये मदद लेने को हैं वह खुद कहीं ग्रह फल का ही तो नहीं है. खाना न: 9 के ग्रहों का उपाय रँग के ज़रिये फर्श मकान से होगा,यानि जो ग्रह मँदा हो और खाना न: 9 मे मसलन शुकर या बुध या मँगल बद वगैरह तो उन के दोस्त गहों की पाल्ना करें या कम अज कम उस नेक ग्रह के रँग की चीजें पाँव तले फर्श पर ना लगावें जो रँग कि खाना न: 9 के ग्रह से मुत्तलका है. जब आम उपाय काम न देवे तो घँटों के अँदर अँदर ही फैसला करने के लिये मुँदर्जा जैल उपाय मददगार होंगे:-

(1) मँगल बद- रेवड़ियाँ पानी में बहा देवें.

(2)बृहस्पति- केसर नाभी या धुन्नी या जुबान पर लगा देवे या खाने को देवें. (3) सूरज- पानी में गुड़ बहा देवें (4) चँदर- दूध या पानी का बर्तन सिरहाने रख कर कीकर के दरखत को डालें (5) सनिचर - तेल का छाया दान करें (6) शुकर- गऊ दान या चरी -जवार दान करें (7) मँगल नेक- मिठाई मीठा भोजन दान करें या पतासा दरया मे डालें. (8) बुध- ताँबे के पैसे ने सुराख कर के दरिया मे बहावें (9) राहु- मूली

(सफा 154) दान करें या कोयले दरिया मे डालें (10) केतू-कुत्ते को रोटियाँ डालें वगैरह मियाद उपाय - हर एक उपाय की मियाद कम अज कम 40 और जयादा से ज्यादा 43 दिन होगी. खान्दानी उपाय (कुल ही खान्दान की बेहतरी के लिये) पितृ ऋण मातृ ऋण वगैरह या कुल मुतलका की मदद के लिये उपाय की मियाद होगी तो 80 ह्द 43 मगर हर रोज की बजाय हफतावार लगातार होगी. यानि हर आठवें दिन जो 40-43 हफते होंगे. उपाय के वक्त ख्वाह आखिरी दिन 39वें 40वें दिन ही भूल जावें या बँद कर बैठें तो सब किया कराया निश्फल होगा. और नये सिरे से फिर दोबारा शुरु करके पूरी मियाद तक करने के बाद फल देगा. अगर किसी वजह से उपाय बँद ही करना दरकार हो मगर पहला असर भी कायम रखना मँजूर हो तो चावल दूध से धो कर पास रखे जावें

जन्म दिन और जन्म वक्त के हिसाब से मददगार उपाय

मसलन पैदाइश हो सोमवार बौवक्त पक्की शाम तो दिन का ग्रह होगा चँदर ववक्त का ग्रह होगा राहू. जन्म वक्त के ग्रह को जन्म दिन के मुतलका ग्रह के पक्के घर मे लिखेंगे.इस तरह पर अब राहू (जो जन्म वक्त का ग्रह है) चँदर(जो जन्म दिन का ग्रह है) के पक्के घर (बमूजब फहरिस्त जुदी जगह) खाना न: 4 में होगा.चूँकि जन्म दिन का ग्रह राशि फल (काबिल उपाय) और जन्म वक्त का ग्रह- ग्रह फल -बुरा या भला अटल जिसका कोई उपाय होता नहीं इसलिये कुंडली वाले के लिये जब कभी और जो भी खाना न: 4 का असर होगा राशी फल का होगा,जिस का चँदर के उपाय से नेक असर होगा. या राहू इस शख्स केलिये खाना न: 4 की चीजों पर बुरा असर करने के वक्त राशि फल का होगा. ख्वाह वह ग्रह फल का (जन्म वक्त का) राशी फल का न भी हो. लेकिन अगर जन्म वक्त का ग्रह (पैदाइश के हिसाब से जो भी होवे) उपर के मिसाल के मुताबिक हर ग्रह के खास खास घर राशी फल वालों में आ जावे तो दिया हुआ उपाय मददगार होगा. जिस के लिये बदला जाने वाला या उपाय के काबिल जन्म दिन का ग्रह लेंगे. जन्म वक्त का नहीं.मसलन केसी की मँगलवार और सुबह के बाद दिन का पहला हिस्सा (बौवक्त बृहसपति)पैदाइश है. अब जन्म वक्त बृहस्पत का ग्रह मँगल के पक्के घर खाना न: 3 में

होगा.फर्ज़न अब बृहस्सि का ग्रह खाना न: 3 का होता हुआ बीमारी ही बीमारी खड़ा करता जावे तो मँगल का ग्रह राशी फल का होगा. जो जन्म दिन का गिना था. मगर मँगल सिर्फ खाना न: 4 और 6 में राशी फल का लिखा है. मगर फिर भी ऐसी हालत में मँगल ही का आम उपाय मददगार और बृहस्पत का उपाय फायदामँद न होगा.

ग्रह राशि का निशान

(1) अगर किसी राशि का निशान अपनी मुकर्रर जगह की बजाए किसी दूसरी जगह हथेली या अंगुली पर पाया जावे तो उस निशान का मुतअल्लिका राशि नम्बर कुंडली के इस पक्के घर में लिख देंगे, जिस नम्बर पर कि वह निशान हथेली या उंगली पर पाया गया हो। मसलन मिथुन राशि का निशान (जोडा II जो राशियों की गिनती में नम्बर 3 पर है) किसी के हाथ के ख़ाना नम्बर 12 में पाया गया तो कुण्डली के पक्के घर नम्बर 12 में हिंदसा नम्बर 3 में लिख दिया और गिनती की तरतीब से कुण्डली के 12 के 12 ही ख़ाने पूर कर दिए। इस तरह पर जो हिंदसा नम्बर लगन में आवे, वह उस शख्स की जन्म राशि होगी। जिसका मालिक ग्रह (बहैसियत घर की मालकियत) कुण्डली वाले के लिए हमेशा राशिफल का होगा।

(2) इसी तरह राशि के निशान के बजाए अगर ग्रह का निशान पाया जावे तो जिस ख़ाना नम्बर में वह निशान हो, कुंडली के पक्के घरों के हिसाब से उसी नम्बर पर उस ग्रह को लिख दें। मसलन चंद्र का निशान हाथ पर ख़ाना नम्बर 5 पर वाकय हो तो चंद्र के ख़ाना नम्बर 5 में लिखेंगे, इस तरह पर चंद्र टेवे वाले के लिए ख़ाना नम्बर 5 के ताल्लुक में(ख़ाना नम्बर 5 की अश्या का कारोबार या रिश्तेदार मुतअल्लिका ख़ाना नम्बर 5) हमेशा ग्रह फल का होगा।

ग़्रह का उपाय

1.(I) ग्रह फल का उपाय नहीं मानते राशी फा हर वक्त काबिल उपाय होगा.

2.उपाय का वक्त सूरज निकलने से सूरज छुपने तक दिन का अरसा है. रात को सनिचर का राज माना है, जिस में उपाय करना कई दफा खतरनाक भी हो सकता है इस लिये बेह्तर यही होगा कि रात के

वक्त कोई उपाय न किया जावे.

3. मियाद उपाय कम अज कम 40 दिन और ज्यादा से ज्यादा 43 दिन होगा. शुरु करने के लिये किसी खास सोमवार या मँगलवार वगैरह के दिन की शर्त न होगी. दिन से मुराद सूरज के वक्त का जमाना होगा कोई सोम, मँगल वगैरह न होगा.

4. दौरान उपाय मे नागा हो जाने पर ख्वाह 39वें दिन ही भूल जावें सब कुछ किया कराया निष्फल होगा और दोबारा नये सिरे से उपाय करना मददगार होगा.

5. अपने खून हकीकी का कोई भी तालुकदार उपाय कर सकता है जो ज़ायज और फलदायक होगा.

ब) मरने से पहले बतौर आखिरी याद किसी ग्रह की चीज रह जाने वालों को दे जाना मुबारक होगा.

6. नष्ट हो चुके ग्रह या बहालत पितृ ऋण व औलाद वगैरह के लिये मुँदरजा ज़ैल उपाय होगा

1	2	3	4	5	6	7
गैबी ताकत में	किस्म ग्रह	नँबर ग्रह	नाम ग्रह	रँग ग्रह	उपाय वास्ते औलाद व दीगर वजुहात	उपाय आम चीजें
ब्रह्मा जी	नर ग्रह	1	बृहस्पति	ज़र्द	हरि पूजन	दाल चना, सोना
विष्णु भगवान	नर ग्रह	2	सूरज	गँदमी	कथा हरिबँस	गँदम, सुर्ख ताँब
शिव भोले जी	स्त्रि ग्रह	3	चँदर	दूध का	आराध्य पूजन	चावल, दूध, चाँद
लक्ष्मी जी	स्त्रि ग्रह	4	शुकर	दही का	लोगों की पालना	घी दही काफूर मोती सफेद
हनुमान जी	नर ग्रह	5	मँगल	सुर्ख	गायत्री पाठ	दाल मसूर लाल , लाअल
दुर्गा जी	मुखन्नस	6	बुध	सब्ज	दुर्गा पाठ	मूँग सालम, ज़मुर्द
भैरों जी	"	7	सनिचर	स्याह	राजा की उपासना	माश सालम, लोहार
सरस्वती जी	"	8	राहू	नीला	कन्या दान	सरसों, नीलम
श्री गणेश जी	"	9	केतु	चितकबरा	दान कपिला गाय	तिल

जो ग्रह नीच फल देवे इस ग्रह के बचाव के लिये इस जगह दिया हुआ दान करें.

7. बौवक्त शादी (हिंदू धर्म के मुताबिक फेरे) मंदे ग्रह का उपाय बहुत ही कारगर होता है, ख्वाह मँदा ग्रह औरत के टेवे का हो ख्वाह मर्द के टेवे का मगर मर्द के टेवे के मँदे ग्रहों का उपाय जरूर कर लें क्योंकि शादी की रस्म पूरा होते ही अमूमन औरत के टेवे के ग्रहों पर

मर्द के टेवे के ग्रह हावी(प्रबल) हो जाते हैं
तफ्सील के तौर पर अगर बमूजब जन्म कुँडली

1. बृहस्पत मँदा हो

लड़की का सँकल्प (बौवक्त रसम ओ रिवाज शादी) करने के ठीक उसी वक्त बाद में खालिस सोने के दो टुकड़े (वजन की कोई शर्त नहीं) मगर दोनो टुकड़े ख्वाह किसी भी वजन के हों मगर हों हमवज़न या बराबर बराबर वज़न के) ठीक इसी तरह ही दान किये जावें जिस तरह कि लड़की का दान किया गया ,फिर इन दो टुकड़ों में से एक को चलते पानी (दरया नदी नाला) में बहा दें और दूसरा लड़की को (जो अब औरत बनी) दे देवें, हिदायत सिर्फ इअतनी होगीको वह लड़की इस सोने के टुकड़े को बेच कर इस की कीमत न खा लेवे .जब तक ये टुकड़ा उस के पास रहेगा बृहस्पति के मँदे असर से बचाव ही होता होगा. ऐसा टुकड़ा अमूमन चोर भी नहीं चुराया करते या नहीं चुरा सका करते और न ही गुम हुआ करता है,लेकिन अगर किसी वजह से गुम या चोरी हो ही जावे तो कोई वहम की बात न होगी. गये हुए टुकड़े के एवज़ में एक और नया टुकड़ा कायम करलें और वह भी वही नेक असर देगा जो पहले टुकड़े से गिना गया है. ऐसा टुकड़ा दोबारा कायम करते वक्त दूसरा और टुकड़ा नदी नाला में बहने की जरूरत नहीं.अगर किसी वजह से सोने के टुकड़े दस्त्याब न हो सकें तो केसर की दो पड़ियाँ या हलदी की दो गठियाँ ऊपर के ढँग पर कायम की गई असर में वैसी ही होंगी जैसा कि खालस सोना हो सकता है.लेकिन बेहतर यही होगा कि खालस सोना ही किसी तरह मुहइया कर लिया जावे.

2. सूरज रद्दी हो - ऊपर दिये हुए मँदे बृहस्पत के हाल में लफज सोने की जगह सुर्ख ताँबा(खालस) गिनलें.

3. चँदर रद्दी हो " " " " " सुच्चा मोती(दूध रँग) गिन लें और न मिलने की हालत में चाँदी चावल और प्राणी के वजन के बराबर दरिया नदी नाले का पानी शादी के वक्त घर में कायम कर लिया जावे.

4. शुकर रद्दी हो - उपर दिये हुए मँदे बृहस्पति के हाल में लफ्ज़ सोने की जगह मोती सुफेद

(दही रँग) गिन लें.

5. **मँगल रद्दी हो**- और उपर दिये हुए मँदे बृहस्पति के हाल में लाल(कीमती पत्थर जो रँग मे सुर्ख हो मगर चमकीला लाल रँग न हो) गिन लें .

6. **बुध रद्दी हो**- उपर दिये हुए मँदे बृहस्पति के हाल मे हीरा गिन लें न मिलने की हालत में सीप लें.

7. **शनी रद्दी हो**- ऊपर दिये हुए मँदे बृहस्पति के हाल में लोहा या फौलाद गिअन लें न मिलने की हालत में स्याह नमक या स्याह सुरमा लें

8. **राहू रद्दी हो** - वही उपाय जो चँदर में लिखा है, ख्याल रहे कि मँदे राहू के वक्त कभी नीलम की अँगूठी नहीं दिया करें वर्ना दुल्हा दुलहन के जबरदस्त हाथी पुरानी खँदकों में गिर कर च्योंटियों से मरते होंगे.

9. **केतु रद्दी हो**- उपर दिये हुए मँदे बृहस्पति के हाल मे लफ्ज सोने की जगह दोरँगा पत्थर गिन लें.

(अ) शुकर न: 6 के वक्त वाल्देन की तरफ से शादी के वक्त लड़की के लिये उस के सिर पर कायम रखने के लिये खालस सोना बतौर दान लड़की को देना जिसे वह गाहे बगाहे इस्तेमाल मे लाती रहे, शुकर न: 6 की मँदी हालत से बचाव(बचाना/बचाता) होगा.

(ब) थोड़ा सा सोना खालस लड़की को शादी के जहेज़ में दे छोड़ना, जब तक लड़की उसे खुद न बेचे, उमदा बृहस्पति के असर को उत्तम करता होगा.-

मर्द या औरत के टेवे में जब मुँदर्जा जैल ग्रह चाल हो यानि:

(ज) (I) शुकर के साथ या शुकर के घर खाना 2-7 में उस के दुशमन हों (मसलन राहू-शुकर, सूरज-शुकर,चँदर-शुकर) खवाह किसी भी घर में

या(2) शुकर अकेला या मुशतर्का न: 4 या

(3) राहू अकेला न: 1-7-5 या

(4) सनिचर न: 5-9 या केतु न: 8 अकेला

या(5) केतु के साथ इस के दुशमन मसलन मँगल केतु मुश्तर्का, चँदर केतु, सूरज केतु,बुध केतु, ख्वाह किसी भी घर में हों तो औरत के वाल्देन के घर से ही खालस चाँदी या मँदे केतु का इलाज धर्म स्थान में दोरँगा कँबल देना या केतू जब पितृ ऋण से मँदा हो तो 100 कुत्तों को बरात की तरह एक ही दिन में खुराक देना यानि खुराक साथ लेकर कुत्तों को तकसीम करते जावें और सूरज गरोब होने से पहले पह्ले 100 की तायदाद पूरी कर लें-

(ब) पहली औरत से पहला ही मर्द दो दफा कुछ वक्फा दे कर शादी की रसम अदा कर ले , तो शुकर न; 4 की दो औरतेंज़िन्दा क़ायम होने की शर्त दूर होगी. बुध न: 12 शादी के वक्त लोहे का छल्ला जिसमें जोड़ न लगा हो टेवे वाले के हाथ लगवा कर दरिया में बहा देवें और दूसरा छल्ला वैसा ही लोहे का टेवे वाला हमेशा खुद पहनता रहे तो बुध 12 हमेशा ही मददगार साबुत होगा.

मुँदरजा जैल ग्रह का मँदा असर नेक करने के लिये ग्रह का उपाय दरकार है:

नाम ग्रह जो मँदा हो	किस ग्रह का उपाय मददगार रहेगा	
राहू	केतु का उपाय मददगार होगा, केतु की नब्ज़ अमूमन खाना न: 10 में होगी	पापी ग्रहों का उपाय
केतु	राहू का उपाय मददगार होगा. यानि केतु मँदे का इलाज आम तौर पर खाना न: 10 के ग्रहों की मुआरफत आसानी से हो सकेगा.	उन ग्रहों की मुतल्का
सनिचर	धन दौलत मन्दे के वक्त कौए को रोटी डालें औलाद की मँदी हालत के वक्त कुते को रोटी डालें.	चीजों की पालना करनी होगा
शुकर	गाय को अपनी खुराक का हिस्सा देवें	
मँगल बद	मृग शाला (हिरन की खाल) मददगार तँदूर में मीठी रोटी लगा कर कुत्ते को देवें या खैरात करें. जौं(अनाज) को दूध से धो कर चलते पानी में बहा दें गऊ पेशाव से जौं को धो कर लाल रँग के कपड़े में बाँधें-(वास्ते बुखार) और गऊ पेशाब से दाँत सफा करें रेवड़ियाँ पानी में बहावें,केसर नाभी (धुन्नी पर) लागावें पानी में गुड़ बहावें	

नाम ग्रह जो मंदा हो मंगल बद जारी	रेवड़ियां पानी में बहावे केसर नाभि (धुन्नी पर लगा दे पानी में गुड़ बहावें)
(1) मर्द की जन्म कुण्डली खुद मर्द के लिए मर्द पर असर ग्रह फल	मर्द की चंद्र कुण्डली खुद मर्द के लिए मर्द पर राशि फल का करिश्मा यानी महादशा की हालत के उलट नेक और अचानक चमकारा।
(2) मर्द की चंद्र कुण्डली इसकी औरत पर ग्रहफल का नेक नजारा यानी महादशा के अर्सा में खाली साल रखे हुओ में किस्मत का नेक और अचानक असर देगी।	मर्द की जन्म कुण्डली इसकी औरत पर राशि फल (आम साधारण) का असर देगी।
(3) औरत जन्म कुण्डली औरत के लिए औरत पर ग्रह फल का असर देगी।	मर्द की जन्म कुण्डली इसकी औरत पर राशि फल (आम साधारण) का असर देगी।
(4) औरत की चंद्र कुण्डली उसके ख़ाविंद के लिए ग्रह फल का नेक नजारा (महादशा के खाली सालों में किस्मत की अचानक व नेक चमक होगी।	औरत की जन्म कुण्डली इसके ख़ाविंद के लिए आम हालत की राशिफल का असर देगी। औरत की चंद्र कुण्डली औरत के लिए औरत पर राशिफल।
(5) मर्द का दायां हाथ मर्द के ख़ुद अपने लिए ग्रहफल का	मर्द का बायां हाथ मर्द के खुद अपने लिए राशिफल का।
(6) औरत का बायां हाथ औरत के अपने लिए ग्रहफल का	औरत का दायां हाथ औरत के अपने लिए राशिफल का।
(7) मर्द का बायां हाथ उसकी औरत के लिए ग्रहफल का नेक नजारा देने वाला।	मर्द का दायां हाथ इसकी औरत के लिए राशिफल का।
(8) औरत का बायां हाथ उसके ख़ाविंद के लिए ग्रह फल का नेक नजारा देने वाला।	औरत का दायां हाथ उसके ख़ाविंद के लिए राशिफल का।
बच्चा दोनों के लिए राशिफल के देने वाला हुआ करता है।	

हर ग्रह अपने बैठा होने वाले घर का फल (अच्छा या बुरा) न देगा , जब तक कि उस घर के मुत्तलका तरफ या जगह में उस ग्रह के मुत्तलका चीज न हो. अगर किसी पितृ ऋण (खानदानी पाप जिस का जुदा जिकर है)महाँदशा या दूसरे सबब से कोई ग्रह सो जावे, नष्ट बर्बाद या गुम ही हो जावे तो सब से पहले खाली खानों के घर के मालिक ग्रह का उपाय करें, बशर्ते कि वह ऐसे ग्रह के के बराबर का ग्रह होवे या दोस्त होवे. इस के बाद महाँदशा के वक्त में काम देने वाले ग्रह लेवें, बाद अज़ाँ दुशमन ग्रहों की दुश्मनी हटावें या राशी फल की हालत का फायदा उठावें अगर ये भी काम न दे सके तो सूरज को कायम करें,अगर ये भी मदद न देवे तो पापी ग्रहों और सब से आखिर पर बुध मा उपाय करें.

फरमान न: 10

ग्रह का असर

इल्म सामुद्रिक में ग्रहों को राशि के घरों में रोशनी के जलते हुए लैम्प माना गया है। इस तरह पर एक लैम्प के साथ ही दूसरे लैम्प की रोशनी का शुरु हो जाना उन दोनों लैम्पों के नज़ारा में तब्दीली कर देता है मसलन सूरज का लैम्प जिसका रंग गंदुमी भूरा है उस के साथ ही दूसरा लैम्प बृहस्पत का शुरु हो जावे जिसका रंग ज़र्द है तो दोनों लैम्पों की मिली हुई रोशनी का जो रंग होगा हुबहु वही रंग इंसानी किस्मत के लिहाज़ से जिंदगी में जाहिर होगा।

लैम्प बुझ गया (ग्रह का असर ख़तम हुआ) या जलने लगा (ग्रह का असर शुरु हुआ) या एक घर में दूसरा और ग्रह (लैम्प) जलने लगा। इस अदली बदली से किस्मत के मेदान में रंग बिरंगियां तो ज़रूर होगी मगर ग्रहों की अपने अपने घरों की मुकर्ररा मालकीयत में काई फ़र्क न होगा। मतलब यह की हर ग्रह के लिए उस का घर बाहैसियत मालकियत, पक्का घर, ऊंच हालत, नीच हालत वगैरह हमेशा के लिए मुकर्रर है ख्वाह वह ग्रह किसी भी और ग्रह के धर मेहमान बनकर चला जाए।

मियाद ग्रह से मुराद लैम्प कितने अर्सा तक जल सकता है।

ग्रह की ताकत - लैम्प की कैंडल पावर (बत्ती की ताकत)

ग्रह दृष्टि -एक घर या ख़ाना नम्बर से दूसरे ख़ाना नम्बर में असर जाने का दर्जा यानी 25 फ़ीसदी एक चौथाई 50 फीसदी निस्फ व निस्फ़ 100 फीसदी कुल की कुल।

बाहमी दोस्ती दुश्मनी - लैम्पों की रोशनी के मुख्तलिफ रंग वगैरह।

लैम्प की जगह - हर ख़ाना नम्बर की मुतअल्लिका अश्या मसलन ख़ाना नम्बर 1 - अपना राज दरबारी लैम्प, ख़ाना नम्बर 2- इज्जत दौलत धरम अस्थान,

ख़ाना नम्बर 3- भाई बँद जंगल की जगह

(1) हर ग्रह अपनी मुत्तलका राशी में नेक फल देगा, बेशक उसकी वह राशी किसी दूसरे ग्रह का पक्का घर मुकर्रर हो चुकी है.

राशी नँबर	किस ग्रह की राशी है	किस ग्रह का पक्का घर मुकरर हो चुकी है	इस राशी नंबर में किस ग्रह का नेक असर होगा
2	शुकर	बृहस्पति	शुकर का नेक असर होगा

राशी नँबर	किस ग्रह की राशी है	किस ग्रह का पक्का घर मुकरर हो चुकी है	इस राशी नंबर में किस ग्रह का नेक असर होगा
3	बुध	मंगल	बुध का नेक असर होगा बशर्ते कि मंगल नेक होवे
5	सूरज	बृहस्पति सूरज मुश्तर्का	सूरज का नेक असर होगा
6	बुध केतु	केतु	बुध का उत्तम, केतु का खुद केतु की चीजों पर मँदा मगर दूसरों पर अच्छा. अगर दोनो मुश्तर्का हों तो बुध का और बुध की चीजो पर अच्छा मगर केतु व दूसरों का मंदा होगा
7	शुकर	शुकर- बुध	शुकर का नेक, बुध बाकियों को भी मदद देवे
8	मंगल	मँगल सनिचर, चँदर (उमर)	अगर तीनों में से हर एक अकेला अकेला होवे तो अच्छा वर्ना मंदा फल होगा.
11	सनिचर	बृहस्पति	सनिचर का नेक , बाकि ग्रह बेरी(सनिचर का दरख्त) के गला घोटने वाले बेर, जाहिरा उमदा मगर झाग के बताशे (यानि धोका का और अमूमन मँदा असर)

(ब) ग्रह बैठा होने वाले घर में ग्रह मुत्तलका चीज [8]कायम होनी से उस ग्रह का असर पायदार[9] होगा

मसलन केतु न: 9 हो तो जद्दी मकान में केतू की अशियाँ कुत्ता दोहता वगैरह कायम करें

2. जन्म कुँडली मे कोई भी ग्रह जिस हैसियत से बैठा होवे वह ग्रह अपनी इस हैसियत का असर (अच्छा या बुरा, मँदा , ऊँच, नीच वगैरह) सिर्फ इस साल देगा जिस साल कि वह वर्षफल के हिसाब इस बैठा होने वाले हैसियत के लिये मुकरर की हुई राशी या पक्के घर में आ जावे. मसलन बृहस्पति ऊँच है खाना न: 4 में सो बृहस्पति का ऊँच दर्जा का असर सिर्फ उसी साल होगा जिस साल को वह वर्षफल

8 फहरिस्त खानावार अश्या और हर ग्रह की खाना न:की चीजों की फहरिस्त में देखें

9 हर ग्रह के लिये उसके घर माल्कियत या ऊँच होने के घर में जो असर दिया गया है वह उसकी नेक हालत पर होने का असर होगा इसी तरह बी ग्रह के मँदा होने के वक्त का वह असर होगा जो इस घर में लिखा है जहाँ कि वह नीच गिना है.

के हिसाब से अपने नेक होने के खाने नँबर 2-4 वगैरह में आ जावे. जन्म से ऊँच तो है मगर असल ऊँचपन सिर्फ साल मुकरर और राशी या खाना न: पक्का घर मुकरर मे आने पर ही ज़ाहिर होगा. इसी तरह सब ग्रहों का और सब तरह का होगा. न हमेशा अच्छा और न हमेशा ही मँदा गिना जावेगा. यही हाल धोका के ग्रह है,यानि धोका के ग्रह (बमूजब फहरिस्त धोका) जिसा साल खाना न: 10 धोका के घर में आ जावे धोका पूरा देगा और मँदा धोका होगा या धोके का ग्रह जब खाना न: 2 किस्मत के ग्रह का घर खाना न: 11 किस्मत को जगाने वाले ग्रह के घर में आ जावे तो धोका देगा नेक मायनों में.मँदा ग्रह असल मंदा उसी वक्त होगा जिस वक्त वह खाना न: 8 में आ जावे. इसी तरह ही वर्षफल के हिसाब से हर घर मे आने पर असर की हालत होगी. यानि खाना न: 6 में राहू का ताल्लुक और खाना न: 8 में मँदे बुध और खाना न: 12 मे ऊँच केतू के ताल्लुक का असर हो जाएगा,वगैरह वगैरह नेक ग्रह का मँदा असर हर ग्रह अपने खानावार हाल में दिया हुआ असर किया करता है.लेकिन अगर खुदजाति कोशिश से कोई नया वाक्या खड़ा करे, जो कि इस ग्रह की मुत्तलका चीज या असर के खिलाफ होवे तो असर में तबदीली हो जावेगी, मसलन राहू नँबर 4 में पाप न करने का हल्फ लिये हुए होता है, अगर उस वक्त जब कि या जैस साल वर्षफल वगैरह के हिसाब से राहू नंबर 4 में आया हुआ होवे और शख्स मुत्तलका राहू की चीजें खड़ी करे.मसलन गर्की बनाना, कोयले की बोरियाँ द्स बोरियाँ अँबार जमा करना,लावल्दों या काले आदमियों का हिस्सादार बना लेना या टट्टी या पाखाने की नई जगह बनवाना या मकानों की सिर्फ छत ही उतरवा कर नई बदलना या टट्टी या पाखाने ही की छत बदलवा देना वगैरह, करे तो राहू शरारत झगड़े फसाद पैदा करदेगा. इसी तरह ही बृहस्पति ऊँच(ख्वाह जन्म कुँडली ख्वाह वर्षफल में) वाला अगर बृहस्पति की मुत्तलका चीज पीपल के दरखत कटवाना. साधु सन्यासियों को सताना या बर्बाद करना वगैरह करे, तो बृहस्पति का सोना मिट्टी हो जावे. अगर केतु न: 12 में हो और कुँडली वाला न ही कुत्ते की सेवा करे और न ही खुद अपने घर में रखे बल्कि कुत्ते मारना शुरु करदेवे तो केतु का फल मँदा होगा वगैरह वगैरह. द्रिष्टी के खानों मे टकराव के ग्रहों का फल भी हूबहू यही असूल होगा

(ब) हर ग्रह की अपना जाहिर करने की निशानी के लिये ग्रह मुत्तलका की खानावार अश्या होंगी. नर ग्रह (बृहस्पति, सूरज , मँगल) का राज या असर कर्ने का वक्त दिन होगा, स्त्रि ग्रहों (चँदर या शुकर) का राज रात का वक्त और मुखान्नस ग्रहों (बुध मय पापी) ग्रहों का राज दिन रात दोनो के मिलने का वक्त या सुबह और शाम होगा.

(3)वर्षफल में सूरज के हिसाब से माहवारी चक्कर पर जब ग्रह मतलूबा वर्षफल वाले घर आवे, तो अपना असर देगा जो कि उस ग्रह का इस घर के लिये मुकरर है (अच्छा हो या बुरा)

(II) 12 घँटे का दिन 12 घँटे की रात,12 महीने का साल, 12 राशियों का असर और 12 साला मासूम बच्चे और 12 साल के बाद अच्छे दिनो की उम्मीद सब के सब 35 के चक्कर में शामिल हैं और जमाने की हवा या बृहस्पति की तलाश की फिकर में ज़र्द रँग हो रहा है.तमाम ग्रहों के रँगों का असर दुनिया की सब चीजों पर असर करता है. हाथ के रँगदार नकशे में हर ग्रह का जो रँग भी दिया गया, जब कभी इस ग्रह के असर का वक्त होगा वह ग्रह उस रँग की मुत्तलका चीज़ों पर या उस रँग की चीज़ों के ज़रिये अपना असर जाहिर करेगा.

(III) वर्षफल के मुताबिक कुँडली के लगन के घर या खाना नंबर 1 में आया हुआ ग्रह अपनी हकूमत के दौरा के वक्त सब से पहले उस घर पर अपना असर (अच्छा या बुरा) ज़ाहिर करेगा जहाँ कि वह जन्म कुडँली में बैठा हो. इस के बाद अपने दुशमन ग्रहों पर ख्वाह वह दुश्मन ग्रह उस घर में हों जहाँ कि वह खुद बैठा था) बाद अज़ाँ दोस्तों पर और फिर अपने बराबर के ग्रहों पर.अगर किसी घर में एक से ज्यादा ग्रह बैठे हों तो हकूमत का मालिक खाना न: 1 का ग्रह हर एक से ऊपर की तरतीब से बारी बारी दुश्मनों से टकराएगा और दोस्तों से दोस्ताना बरताव करेगा. अगर एक घर में दौरा वाले ग्रह के कई दोस्त ही या कई दुश्मन ग्रह ही बैठे हों तो ग्रह चाल की तरतीब से (बृहस्पति के बाद सूरज के बाद चँदर वगैरह) असर करेगा.अगर कुँडली के खानों में दोस्त ग्रह अलहदा और दुशमन ग्रह अलहदा घरो6 मे ही होवें तो खानो6 की तरतीब से (नंबर एक के बाद न: 2 के बाद न: 3 वगैरह) बर्ताव करेगा.

क्याफा : खूब जोर से मलने पर रेखा किस तरफ से ज्यादा सुर्ख (लाल रँग)हो जावे

वही तरफ उस रेखा या शाख के शुरु होने की तरफ होगी.

4.खाना न: 4 के ग्रह बमूजब वर्षफल तख्त पर आने के दिन से गो उमदा होंगे मगर अपनी उमर (सूरज 22 सनिचर 36 वगैरह) के बाद अमूमन नाकारह हो जाया करते हैं. खास कर जब वह जन्मकुँडली में सोये हुए ही हो6. खाना न: 2 के ग्रह हमेशा नेक फल देंगे जब तक खाना न: 8 खाली हो.

(ब) खाना न: 2 के ग्रह टेवे वाले के बुढापे में अपना असर (नेक) करते हैं.

क्याफा: दाँये हाथ की हथेली के दाँये हिस्से में जिस ग्रह का निशान हो वह ग्रह अपना फल हमेशा ही नेक देगा.

5.मँदे ग्रह के बैठा होने वाले घर की मुत्तलका अश्या का हाल मँदा न होगा, बल्कि वह अश्या मददगार होंगी. मसलन सूरज न: 6 का राज दरबार लड़के (केतु का पक्का घर 6) के जन्मदिन से उत्तम हो जायेगा.

6.हर ग्रह के खानावार अश्या की फहरिस्त में जो चीज़ें लिखी हैं जब वह पैदा होंगी तो इस खान में दिया हुआ असर शुरु होगा. मसलन शुकर न: 1-9 में सफेद गाय आने या शादी 25वें साल होनी से मँदा फल शुरु होगा.

हर ग्रह जहाँ कि वह बहैसियत मालकियत मुकरर है, बैठे होने के वक्त अपना बैठा होने वाले घर की मुत्तलका अश्या पर नेक असर देगा. मसलन सूरज न: 5 , अपना राजदरबार (अज सूरज) और औलाद (अज खाना न: 5) हर दो उम्दा और नेक असर देगा.

(ब) ऊँच ग्रह अगर किसी दुशमन की वजह से बर्बाद भी हो जावे तो भले असर की बजाए बुरा असर कभी न देगा.

(ज) हर ग्रह अपनी राशी (बहैसियत मालिक) में हमेशा नेक फल देगा.

(ह) जब कोई ग्रह किसी ऐसे घर में बैठा हो जहाँ कि वह ऊँच फल का माना गया है तो वह (ऊँच ग्रह) अपने साथ बैठे हुए दुश्मन ग्रह या किसी ऐसे घर में बैठे हुए दुश्मन ग्रह पर जहाँ को वह (ऊँच ग्रह) बरूए द्रिष्टी वगैरह किसी तरह से भी अपना असर भेज सके, कभी बुरा असर न देगा, भला असर ख्वाह देवे या न देवे. गर्जेकि ऊँच घर के ग्रह अपना नेक फल देंगे.

और नेकी ना छोड़ेंगे. दुश्मन ग्रह के साथ भी वह नेकी छोड़ दे तो मुमकिन मगर वह बदी न करेंगे. मसलन:-

नाम ग्रह	मसलन्
बृहस्पत	बैठा हो खाना न: 4 में और इस के दुश्मन ग्रह शुक्कर बुध हो न: 10 में
सूरज	बैठा हो खाना न: 1 में और इस के दुश्मन ग्रह शुक्कर- पापी हो न: 7 में {औरत की मँदी सेहत(तपदिक वगैरह) के सिवाय सूरज अब न: 7 वालों पर कोई बुरा असर न देगा}
चँदर	बैठा हो खाना न: 2 में और इस के दुश्मन ग्रह बुध-शुक्कर- पापी हो न: 6-12 में
शुकर	बैठा हो खाना न: 12 में और इस के दुश्मन ग्रह सूरज चँदर राहू हो न: 2 में
मँगल	बैठा हो खाना न: 10 में और इस के दुश्मन ग्रह बुध केतू हो न: 2 में
बुध	बैठा हो खाना न: 6 में और इस के दुश्मन ग्रह चँदर हो न: 12 में
सनिचर	बैठा हो खाना न: 7 में और इस के दुश्मन ग्रह चँदर सूरज मँगल हो न: 7 में
राहू	बैठा हो खाना न: 3-6 में और इस के दुश्मन ग्रह शुकर सूरज मँगल हो न: 12 में
केतू	बैठा हो खाना न: 9-12 में और इस के दुश्मन ग्रह चँदर मँगल हो न: 2 में

7. जिन ग्रहों ने अपने पहले 35 साला चक्कर में बुरा फल दिया हो वह अपने दूसरे 35 साला चक्कर में (वाक्याती वर्षफल से पता चलेगा) कभी बुरा असर न देंगे, भले की ख्वाह उन में हिम्मत हो ख्वाह न होवे.

इसी तरह ही 100 साला चक्कर के बाद खान्दानी हालात जरूर तबदीली पर होंगे, ख्वाह भली तरफ ख्वाह बुरी तरफ.

(ब) अगर बमूजब जन्म कुँडली टेवे में सब ही ग्रह मँदे हों तो एक ही आदमी लाखों का मुकाबला करने की हिम्मत का मालिक होगा और हर तरह से उत्तम फल होगा.

8.मसनूई बनावट के ग्रहों का असर खास खास बातों का होगा , मसलन

पक्का ग्रह	बृहस्पत	सूरज	चँदर	शुकर	मँगल	बुध	सनिचर	राहू	केतू
मसनूई ग्रह	सूरज शुकर खाली हवाई	बुध शुकर	सूरज बृहस्पत	राहू केतू	सूरज बुध- मँगल नेक, सूरज सनिचर मँगल बद	बृहस्पति राहू	शुकर बृहस्पति केतु स्वभाव, मँगल बुध राहू स्वभाव	मँगल सनिचर- (ऊँच), सूरज सनिचर (नीच)	शुकर सनिचर (ऊँच) , चँदर सनिचर (नीच)
मसनूई बनावट के ग्रह का असर	औलाद की पैदाएश का मालिक है	सेहत का मालिक है	वाल्देनी खून (नुतफा) का ताल्लुक	दुनिया वी सुख (बजुज औलाद)	औलाद ज़िन्दा रखने मालिक (बेल सब्ज़ी का मालिक है)	इज्जत शौहरत्	सेहत बीमारी	झगड़े फसाद	ऐश का मालिक है.

टीका: सनिचर नर ग्रहों के साथ राहू बनाता है तथा स्त्री ग्रहों के साथ केतू बनाता है.

(2) नर ग्रह सूरज के मसनूई ग्रहों के साथ सनिचर बनाते हैं

(3) सूरज मुखन्नस ग्रहों (बुध सनिचर) के साथ मँगल बनाता है.

मुँदरजा ज़ैल मुश्तर्का ग्रहों से उन के सामने दिये हुए खाना न: का असर पैदा होगा. दूसरे लफज़ों उन के सामने दिये हुए खाना न: का असर ज़रूर बहाल रहेगा. ख्वाह वह किसी ही घर में इकट्ठे क्यों न होंवे.यानि सूरज मँगल के लिये खाना न: 1 में जो असर लिखा है या बगैर किसी ग्रह के ताल्लुक से खाना न: 1 की जो आम तासीर मुकर्रर की गई है वह सूरज मँगल मुश्तर्का के असर में जरूर खान्दानी खून की तरह बहाल लेंगे,खुआह वह दोनो मुश्तर्का ग्रह किसी भी घर में और किसी भी तरह कितने ही मंदे क्यों न हों:-

ग्रह मुश्तर्का	खाना न: जिसका असर मँदा होगा और बहाल रहेगा	ग्रह मुश्तर्का	खाना न: जिसका असर मँदा होगा और बहाल रहेगा
सूरज चँदर	1	शुकर बुध	7
शुकर बृहस्पत	2	मँगल सनिचर चँदर	8
बुध मँगल	3	बुध सनिचर दोनो का जाति सुभाओ	9
मँगल शुकर	4	सनिचर	10
सूरज बृहस्पति	5	बृहसपति सनिचर	11
बुध केतू	6	बृहस्पति राहू	12

मसनूई हालत की बनावट के ग्रह की हालत में उस के हर दो ग्रहों का असर जुदा जुदा कर लेना मुमकिन होगा या दोनो का असर मुश्तर्का कर लेना हो सकेगा दूसरे लफज़ों में ऐसा असर राशी फल का होगा.

क़याफा: किस्मत की हेराफेरी- पक्का ग्रह- बड़ी रेखा शायद ही कभी बदला करती है. मसनूई ग्रह यानि शाखों का बदलना मुमकिन है वह भी उमर के हर सातवें साल (7-12) मगर 21 साल की उमर से रेखा में कोई तबदीली होनी नहीं मानते. ये बालग होने का ज़माना है. उमर के हर सातवें साल तबदीली

हालत (ख्वाह बुरी तरफ होवे ख्वाह भली तरफ) मानते हैं. (छोटी उमर जिस का ज़िकर उमर रेखा में होगा) वालों को उमर के आठवें साल (8-16-24-32-40-48-56 और 64) ज़िँदगी खतरे मे गिनते हैं.

ग्रह चाल में चीज़ों पर रँग का असर: - तमाम चीज़ें किसी न किसी ग्रह की मुत्तलका मुकरर हो चुकी हैं. मगर चँद एक चीज़ों में कुछ फर्क है. मसलन दो रँगा कुत्ता अगर सिर्फ स्याह सफेद दो ही रँग का चोतकबरा कुत्ता हो तो केतू होगा .लेकिन अगर दोरँगा तो हो मगर लाल रँग का साथ हो तो बेशक वह कुत्ता केतू की चीज है मगर वह अपने असर में बुध गिना जायेगा. इसी तरह भैंस सनिचर की मुत्तलका चीज है अगर वह स्याह रँग हो तो सनिचर गिनी जायेगी लेकिन अगर लाल रँग (भूरी) हो तो सूरज का ताल्लुक या सूरज के असर की गिनेंगे,इसी तरह स्याह भैंस और सिर्फ माथा सफेद हो तो सनिचर के साथ चँदर का असर शामिल लेंगे. घोड़ा चँदर की चीज है अगर ज़र्द रँग हो तो चँदर को बृहस्पति की मदद और साथ होगा. लेकिन अगर स्याह घोड़ा हो तो सनिचर का असर प्रबल लेंगे जो चंदर के असर को दबाता होगा. हर शख्स टेवे में जो ग्रह भी जिस असर का हो उसे उसी ग्रह की मुत्तलका चीज और रँग का ताल्लुक वही असर देगा जैसा कि इस चीज और रँग का ग्रह इस शख्स को अपने टेवे के मुताबिक अच्छा या बुरा साबुत हो रहा हो.

क़्याफा: सीधे खत _________ मर्द और  शाखी से मुराद औरत होगी. (नर ग्रह नरों पर असर करेंगे) स्त्री ग्रह (मादनियों पर असर करेंगे)

नाम ग्रह	किन पर असर देंगे	नाम ग्रह	किन पर असर देंगे
बृहस्पति	रूह के ताल्लुक दारों पर	चँदर	माता की हैसियत वाली पर असर देगा
सूरज	जिस्म --- "" ----	शुकर	औरत के दर्जा वालियों पर " "
मँगल	खून """"""		बुध शुकर का शादी के हाल में जुदा दर्ज है.

मुखनंस ग्रह - सनिचर -धाती जमावात पर , बुध - बनातात पर , राहू हरकात दिमागी पर, केतू हरकात पाँव पर असर करेगा.

क़्याफा: हस्त रेखा मे 21 साला उमर से रेखा बालिग और 12 साल उमर तक़ नाबालग गिनते हैं .

सफा 171 - मगर कुँडली में वर्षफल के हिसाब से उमर में जिस दिन से (सब से पहली दफा) सूरज का राज या दौरा चुरू हो जावे , उस दिन से तमाम ग्रह बालिग गिने जाते हैं.ख्वाह उमर 21 साल से कितनी ही कम या ज्यादा होवे. दौरा से मुराद ग्रह का वर्षफल के हिसाब से खाना न: 1 मे आने से है.

2.सूरज अगर कुँडली के खाना न: 1-5-11 (जन्म लगन को खाना न: एक मान कर) में ख्वाह अकेला ख्वाह और ग्रहों के साथ होवे तो जन्म दिन से ही तमाम ग्रह बालग गिने जाएँगे.

3.सूरज का दौरा शुरू होने से पहले इँसान पर इस के अपने पिछले कर्मों का फैसला(अमूमन 7 या 8 साल उमर या हर सातवें या आठवें साल) असर किया करता है, जो तबदीली का जमाना हुआ करता है.

क़्याफा: **बगैर रेखा वाला हाथ** : डाकू, सँगदिल होगा. सब ही ग्रह नीच फल की राशी के होंगे.

बहुत ज्यादा रेखा वाला हाथ: मँद भाग और वहमी होगा. एक ही घर में बहुत ज्यादा मगर नाकस या नीच ग्रह हों.

ज्यादा चौड़ी रेखा: बहुत कम नेक असर देंगी, कई तरफ की दिष्टी से ट्कराए हुए दुश्मन ग्रह .

किसी ताकत के ग्रह की पहचान बरूए क़्याफा :

इँसान जिस ग्रह का साबुत हो वह ग्रह उसे खाना न: 9 का काम देगा. बेशक वह ग्रह कुँडली में कहीं ही बैठा हो (इँसान किस ग्रह का है या मकान किस ग्रह का है ये जुदी कगह लिखा है.)

(2)जिस किसी शख्स में जिस ग्रह की ताक़त ज्यादा होगी वह श्ख्स ज्यादा ताकत वाले ग्रह की मुत्तलका चीज का ज्यादा इस्तेमाल करने का आदी न होगा. मसलन: सूरज को नमक (सफेद) माना है और मँगल को मीठा , अब सूरज जबरदस्त वाले की आम आदत होगी की वह ज्यादा नमक इस्तेमाल करने का आदी ना होगा और अपनी कमी पूरी करने के लिये (अगर मँगल उस का कमज़ोर हो) मीठा ज्यादा इस्तेमाल करनेका आदी होगा. इसी तरह मँगल कायम और जबर्दस्त वाला मीठा ज्यादा इस्तेमाल न करेगा. नमक ज्यादा इस्तेमाल करनेका आदी होगा या नमक ज्यादा मिकदार में खाने वाला होगा.

ग्रहों का दूसरी पुश्त या रिश्तेदारों पर असर: - जब किसी का बृहस्पत प्रबल मालूम हो तो जिस घर में बृहस्पति बैठा हो इस शख़्स के इस खाना न: के ताल्लुक वाले जिस में कि बृहस्पति की लिखी हुई सिफ्त के होंगे. अगर बृहस्पति हो ही अपने घरों में या घर का तो इस के बाबे या बाप की वही हालत होगी जो बृहस्पति की कही गई है. इसी तरह ही और ग्रह लेंगे.

(2)अगर किसी का सूरज प्रबल साबुत हो , मगर सूरज पड़ा हो कुँडली मे केतू के घर खाना न: 6 में तो इस शख़्स का लड़का (केतू) सूरज की लिखी सिफ्तों का मालिक होगा.

(3)अगर केतू पड़ा हो मँगल के पक्के घर न: 3 में तो इस के भाई में केतू की लिखी हुई सिफ्तें या तारीफें पाई जाँएगी.

मुश्तर्का ग्रहों का असर :

ग्रह मुश्तर्का बुरा नहीं करते **बँद मुठी** (1-2-4-10) **के खानो में**
फल 2-11 **अपने अपना** **धर्म मँदिर** (2) - **गुरुद्वारा** (11) **में**

(1) बृहस्पति - सूरज , बृहस्पति - बुध, बृहस्पति - सनिचर, सूरज बुध , सूरज- सनिचर, बुध सनिचर]- इकट्ठे के वक्त वाल्देनी सुख सागर और जायदाद जद्दी के सुख से कोई तालुक न होगा , बल्कि सिर्फ जाति गृहस्थी सुख से मुराद होगी. ख्वाह अकेले अकेले ये सब ग्रह टेवे में अपनी अपनी मुत्तलक्का अश्या कारोबार रिश्तेदार ग्रह मुत्तलका के तालुक मे कैसे ही क्यों न हों.

(2) स्त्री ग्रह (चँदर या शुकर या दोनो मय बुध) के साथ जब नर ग्रह हों नेक फल देंगे.

(3) जब दो या दो से ज्यादा ग्रह एक घर में इकट्ठे बैठे हों तो उन में से बाहमी दुश्मनी वाले ग्रह अपनी अपनी दुश्मनी छोड़ देंगे, मगर बाहमी दोस्ती न छोड़ेगे ख्वाह वो कितने ही दुशमनों के साथ एक ही घर में अपने दोस्तों से मिल कर बैठें हों.

(4) बुध अपने पक्के घर(खाना न: 7) में बैठा हुआ और नर ग्रहों (सूरज मंगल बृहस्पति) या सनिचर में से कोई भी बँद मुट्ठी के खानों (खाना न: 1-7-4-10) में आया हुआ या धर्ममँदिर (खाना न: 2) या गुरुद्वारा (खाना न: 11) के अँदर बैठा हुआ टेवे वाले की औरत जिस्मानी और उमर और आम मुत्तलका जानों(ख्वाह इंसानो ख्वाह हैवानों की) पर कभी बुरा असर मौत न देगा, बशर्ते कि उन घरों में बैठे होंने के वक्त सनिचर के साथ स्त्रि ग्रहों (चंदर या शुकर) का ताल्लुक या साथ न हो जावे . (सनिचर के साथ स्त्री ग्रहों के ताल्लुक हो जाने के वक्त के असर के लिये सनिचर के हाल में मुफसिल देखें.)

मुश्तर्का घरों (द्रिष्टी की शर्त नहीं मगर दोनो घरों के ग्रहों को इकट्ठे ही गिन कर) का असर देखने का ढँग

द्रिष्टी के हाल में द्रिष्टी का दर्जा मुकर्रर है. यानि एक घर में बैठे हुए ग्रह दूसरे घर में बैठे हुए ग्रहों को खास खास दर्जा नज़र से देख सकते जाने हैं. लेकिन अमली तौर पर उस दर्जा द्रिष्टी यानि 100 फी सदी, 50 फी सदी या 25 फीसदी का ख्याल रखने की कोई ज़रूरत महसूस नहीं , या सिर्फ इअतना रखना पड़ता है कि किस घर के ग्रह दूसरे कौनसे घर के ग्रह को देख सकते हैं.मसलन : खाना न: 1 के ग्रह अगर देख सकते हैं तो सिर्फ खाना न: 7 जे ग्रहों को देख सकते हैं. मगर खाना न: 7 के ग्रह कभी खाना न: 1 के ग्रहों को नहीं देख सकते. अमली तौर पर इस बात का मतलब ये हो जाता है कि खाना न: 1 में अगर कोई ऐसा ग्रह बैठा हो जो खाना न: 7 में बैठे हुए ग्रह का दुश्मन हो तो न: 1 वाला अपनी दुश्मनी की ज़हर खाना न: 7 वाले पर डाल सकता है मगर 7 वाले की ज़हर का (अगर कोई मँदा भाव या असर इस न: 7 वाले का न: 1 वाले के ग्रह के लिये) न: 1 वाले पर कोई बुरा असर न हो सकेगा. इस बात को मद नज़र रखते हुए नीचे दिये हुए घरों के ग्रहों को इक ठे मिला कर देखें तो उन के बाहमी मिले हुए असर से जो जो बातें ज़ाहिर होंगी वह मुँदर्जा ज़ैल होंगी:-

खाना न: 1-7-11-8 **मुश्तर्का असर**:

(**अल्फ**) . **राजा** , **वजीरी हालत** : अगर 11 खाली तो राजा बेलगाम , अगर 8 खाली तो वजीरी बे दलील होगी. इसी तरह ही अगर खाना न: 8 में ऐसा ग्रह बैठा हो जो तख्त यानि खाना न: 1 में बैठे हुए ग्रह का दुश्मन हो तो वह खाना न: 8 का ग्रह तख्त पर बैठे हुए राजा को इसी तरह चलाएगा जिस तरह कि किसी शख्स की आँखों में ज़हर डाल दी गई हो. जिसमें से कि वह रास्ता मे चलते वक्त देखने की बजाए दर्द के मारे अपना सिर पीट रहा हो. दूसरी तरफ अगर खाना न: 11 का ग्रह खाना न: 1 का दुश्मन हो तो वह तख्त पर बैठे हुए राजा को इसी तरह चलाएगा जिस तरह कि किसी प्राणी की टाँगों में ज़हर भर दी गई हो जिसमें के कारण तख्त पर बैठा हुआ राजा अगर किसी और शख्स का हाथ पकड़ कर (जिस राजा की आँखें खराब हो रहीं हों) चल भी पड़े तो अपनी टाँगों मे ज़हर भरी होने के सबब चलने की बजाय दर्द से दुखिया हो कर चिल्लाता और कराहता

होगा. **इस के बरखिलाफ अगर** 11-1-**और** 8 **बाहमी दोस्त हों तो तख्त न**: 1 **पर बैठा हुआ राजा अपनी टाँगें खाना न**: 11 **और आँखे खाना न**: 8 **की हमेशा मदद पाता रहेगा और इस की वज़ारत में मदद के लिये खाना न**: 7 **के ग्रह मददगार होंते होंगे**, **बशर्ते कि खाना न**: 1 **मे खाना न**: 7 **से ज्यादा ग्रह न हों सिर्फ तायदाद का ख्याल है**, **उन की बाहमी दोस्ती दुश्मनी का ख्याल् नही**. मसलन खाना न: 1 में दो या दो से ज्यादा ग्रह बैठे हों और खाना न: 7 में सिर्फ एक ही ग्रह बैठा हो तो वह खाना न: 7 वाला न: 1 वालों के बोझ के बोझ के तले आकर **अपनी जड़ कट्वा रहा होगा**. फर्ज़न खाना न: 1 में राहू के साथ कोई एक और या ज्यादा ग्रह हों और खाना न: 7 में अकेला केतू ही हो तो खाना न: 7 का केतू अकेला ही वजीर गिना जायेगा जिसे खाना न: 1 मे6 बैठे हुए तमाम राजाओं का एक ही वक्त में दिया हुआ हुकम एक ही व्क्त में पूरा करना पड़ेगा , इस का मतलब ये होजायेगा कि ऐसे वजीर की अपनी जड़ कटती होगी. अब ये ग्रह इस मिसाल में गिना है, केतु का ग्रह गोया अब केतु की मुत्तलका अश्या कारोबार या रिश्तेदार मुत्तलका केतु सब का फल मँदा होगा. या ऐसे टेवे वाले की औलाद नरिना का मँदा ही हाल होगा या वह प्राणी अपनी औलाद को तरसता ही होगा. या औलाद कम देर बाद या ना ही होगी. (ब) खाना न: 7 के ग्रहों को अगर वजीर माना तो खाना न: 8 का हुक्मनामा बतौर रहनुमाई इन वज़ीरों की दिमागी दलील बाज़ी होगी. मसलन खाना न: 7 में मम्गल बैठा हो तो कहेंगे कि ऐसे शख्स का सब कुछ उमदा धन दौलत परिवार सब ही उमदा होगा लेकिन अगर खाना न: 8 में (जब कि खाना न: 7 में मँगल बैठा हो) बुध आ जावे तो वही मँगल 7 का दिया हुआ उमदा फल सब का सब ही रद्दी निकम्मा बर्बाद ज़हरीला या नष्ट हो चुका गिना जायेगा. यानि ऐसे प्राणी का जिस के खाना न: 8 में बुध बैठा हो और खाना न: 7 में मँगल -धन दौलत और परिवार सब का स्ब ही नाश और दुख का कारण होगा. इसी तरह खाना न: 1 में बुध आ जावे और मंगल खाना न: 7 में ही गिने तो भी मँगल न: 7 का दिया हुआ फल निकम्मा होगा. बुध न: 8 या बुध न: 1 की जहर जब खाना न: 7 को मिली हुई मानी तो फर्क सिर्फ येहोगा को बुध न; एक के वक्त ऐसे प्राणी का धन दौलत और परिवार राजा खाना न: 1 की बेहद ज्यादितियों और ज़ुलिमाना कारवाईयों या शरारतों से बर्बाद होगा. मगर कुदरत कोई धोखा न देगी लेकिन बुध न: 8 के वक्त इसी मँगल न: 7 का फल यानि धन दौलत परिवार कुदरत

की तरफ से ही रद्दी या निकम्मा होता चला जाएगा बेशक वक्त का हाकम जमाने का राजा उसे कितनी ही मदद देता चला जावे नतीजा खाँड(मँगल) में रेत (बुध) और खून में आँतड़ियों का रास्ता बँद यानि सेहत और गृहस्त दोनो ही मँदे होटल चले जाएँगे.

खाना न: 2-8-12-6-11 **का मुश्तर्का असर**:

रात का आराम और साधु समाधी वगैरहजब नेक हालत हो, लेकिन मँदी हालत में नागहानि मौत मुसीबत, इँसान हैवात, चरिँद परिँद इस ग्रह की मुत्तलका होगी.

(x) जो खाना न: 8 में हो, दूसरे दुनियावी साथियों के ताल्लुक साथियों के ताल्लुक से किस्मत का असर(बालिहाज उमर)

खाना न: 8 से न: 2 को मँदा असर जाने के वक्त खाना न: 11 का रास्ता होगा. मँदे असर के वक्त खाना न: 11 के ग्रह अगर खाना न: 8 के दुश्मन हों तो खाना न: 8 की जहर खाना न: 2 में न जाएगी.

(अ) खाना न:8 का असर मिल सकता है, खाना न: 2 में, मगर न: 2 का असर नहीं मिला करता न: 8 में, खाना न: 2 और खाना न: 12 आपस में बाहैसियत साधु (खाना न; 2) और समाधी (खाना न; 12) मिलते मिलाते रहा करते हैं. किसी द्रिष्टी के दर्जा का कोई लिहाज नहीं हुआ करता. इसी तरह ही खाना न: 2 - अपना असर मिला दिया करता है खाना न: 6 में और खाना न: 6 अपना असर (सिर्फ वही असर जो खाना न: 6 के ग्रह का हो जैस में कि ऊपर से खाना न: 2 का कोई असर मिला हुआ न हो, यानि खाना न: 2 के असर के बगैर जो भी असर खाना न: 6 का जाति तौर पर हो सकता हो सिर्फ उतना ही असर) खाना न: 2 में मिलाया करता है और न: 12 अपना असर न: 6 में नहीं मिलाता. इस असूल से खाना न: बुध और न: 6 का शनि अलहिदा होंगे. यानिअ न: 12 का बुध अपनी ज़हर न: 6 तक फैंकेगा और न: 6 का शनि (साँप) अपने ज़हर भरे फर्राटे (साँस) से खाना न: 2 के ग्रह को फूँक देगा.
(ब) खाना न: 6 और खाना न: 8 के ग्रह भी आपस में ऐसे ही मिले जुले रहा करते हैं. जैसे कि 2-12 के ग्रह आपस में यानि अगर् 2-12 के ग्रह आपस में साधु समाधी या रात की नींद की नेकी बदी में असर करते हैं तो खाना न: 6 और 8 के ग्रह खुफिया तौर पर पाताल में गैबी ढँग पर मंदी लहरों का कारण होटल रहते हैं. उपर के असूलों से ज़ाहिर होगा कि खाना न: 8- खाना न: 6 की सलाह लेता हुआ खाना न: 11 के रास्ते

खाना न: 2 में अपनी नागहानि (अचानक आनेवाली) मुसीबत (जिन की बुनियाद किसी इँसान हैवान चरिँद - चरने वाले जानवर , परिन्द-(उड़ने वाले जानवर) जो कि खाना न: 8 में बैठे हुए ग्रह से मुत्तलका हों पर होगी) भेजा करता है अगर ऐसी ग्रह चाल में इँसान पर अचानक कोई मुसीबत या मौत का भय (डर) इकट्ठा हो तो दुनिया के दूसरे दुनियावी साथियों के ताल्लुक में भी जो कि ऐसे प्राणी के उमर के साथी हों (किस्मत का कोई नेक असर न होगा. लेकिन अगर 2-12 अच्छे हों साथ ही 8 और 11 आपस में दुश्मन हों तो न ही कोई अचानक मुसीबत आएगी और न ही कोई दुनियादार साथी मुसीबत के वक्त धोखा देगा. अगर किसी वजह से कोई मँदी हवा का झोका आ जावे तो दूसरे हमराही साथी हर तरह से मदद देकर रात की नींद या आराम होने के सामान पैदा कर देगा , जिसमें तरह अचानक मँदी हवा आ निकले इसी तरह ही मददगार साथी बिन बुलाये जाहिरा व गैबी ढँग से दम के दम में मदद देंगे.

(ज) अगर खाना न: 12 और खाना न: 8 मे कोई ऐसे ग्रह बैठे हों जो आपस में मिल जाने पर दुश्मनी का भाव पैदा करें या एक दूसरे के ऊपर असर बरबाद करदें और साथ ही खाना न: 2 खाली हों तो ऐसी हालत में अगर ऐसे टेवे वाला प्राणी धर्म मँदिर में आने जाने लग जावे तो खाना न: 12 और खाना न: 8 के बाहम दुशमन ग्रहों का बुरा असर होना शुरु हो जाएगा दूसरे लफजों में ऐसा प्राणी अगर धर्म अस्थान के अँदर जाने से परहेज करे तो खाना न: 12 और खाना न:8 के बाहम दुशमन ग्रहों का बुरा असर न होगा. ऐसी हालत मे धर्म अस्थान के अँदर मूरती वगैरह को अपना जिस्म का कोई अँग लगा कर अराधना करना मना होगा. धर्म अस्थान के अहाता से बाहम खड़े हो कर अपने देव इष्ट को सिर झुका कर प्रणाम कर लेना कोई बुरा न होगा, इस के बर्खिलाफ:

2.- अगर खाना न: 8 और 12 में कोई बाहम दोस्त ग्रह बैठे हों या खाना न: 6 में कोई उत्तम ग्रह बैठा हो और ऐसी दोनो हालतों में खाना न: 2 खाली हो तो ऐसे प्राणी धर्म अस्थान के अँदर देवाइष्ट को अपना कोई न कोई अँग लगा कर प्रणाम करना सब तरह से नेक असर पैदा करेगा.

खाना 3-11-5-9-10 **मुश्तर्का असर**

किस्मत का गैबी असर व हवाई बारिश या अचानक उतार चढाव मुत्तलका बुज़ुर्गान बचपन और शबाब (जवानी) किस्मत की चमक का जमाना यानि भाईयों के जन्म के दिन से अपना अहद , जवानी और अपने बच्चों के जन्म दिन से आईदा ज़िँदगी का हाल अपने बज़ुर्गों और अपनी औलाद का हाल या अपना माझी अपने जन्म से पह्ले का ज़माना और अपना मुस्तक्बिल जो आईदा नस्लों का हाल होगा.

खाना न: 9 अपने बज़ुर्गों की हालत बताता है. लेकिन जब नँबर 3 में कोई ग्रह हो तो भाईयों के जनम दिन से उस खाना नंबर 9 के ग्रह का असर टेवे वाले पर शुरु होगा. और औलाद के पैदा होने के दिन से उस में तबदीली आयेगी अगर खाना नंबर 5 और नंबर 9 में पापी बैठे हों तो, औलाद के दिन से कोई खास नेक हालत हो जाने की उम्मीद नहीं लेते. बल्कि जब खाना न: 5 में पापी बैठे हों और उधर खाना न: 8 में कोई दुशमन या मँदा ग्रह बैठ रहा हो तो खाना न: 11 का ग्रह बिजली की तरह बुरे असर की की चमक देनी शुरू कर देगा. और बिजली आखिर पर या खाना न: 8 के ग्रह के मुतलका रिश्तेदार या खाना न: 5 के मुत्तलका रिश्तेदार की मार्फत या इस पर (8 या 5) पड़ेगी. अगर खाना न: 11 खाली हो तो अपनी आमदन के ताल्लुक मे सोई हुई किस्मत का ज़माना होगा और भाई बँदों से भी कोई ऐसा फायदा नहीं गिनते. अगर खाना न: 10 और खाना न: 5 में दोनो ही में कोई न कोई ग्रह बैठे हों तो उन दोनो घरों के ग्रह बाहम ज़हिरी दुश्मन होंगे. मसलन खाना न: 10 में चँदर हो और खाना न: 5 में मँगल - अब ये दोनो ग्रह गो आपस में दोस्त हैं मगर ऐसे प्राणी की 24 साला उमर (चँदर का ज़माना) और 28 साला उमर (मँगल का अहद) माता (चँदर) और भाई (मँगल) पर भला न होगा. अगर खाना न: 9 में सूरज या चँदर बैठे हों तो खाना न: न: 5 मे पापी बैठे होने का खाना औलाद पर कोई बुरा असर न होगा. और न ही जिँदगी को तलख करने वाली किसी मँदी बिजली के पडने का खौफ होगा.

खाना न: 9 को अगर एक समुँदर गिने तो खाना न: 2 पहाड़ों का लँबा चौड़ा सिलसिला होगा. दोनो

को चलाने के लिये हवाई ताक़त का मालिक (दोनो ही जहाँ का ग्रह बृहसपति (खाना न: 9 और खाना न: 2) दोनो ही का मालिक बृहसपति गिना है) हवा की लहरों से अपना सुनहरी असर पैदा करता या फोकी उम्मीदों में पहाड़ी और समुँदरी सैरें करता कराता होगा. यानि अगर खाना न:9 से बारिश से लदी हुई मौनसून के हवा चल निकले तो खाना न: 2 के पहाड़ से टकरा कर किस्मत के ताल्लुक में सोने की बारश कर देगी. लेकिन अगर खाना न: 2 खाली ही हो यह खाना न: 9 से निकली होई मौनसूनी हवा खाली ही चली जायेगी यानी खाना न: 9 में उमदा ग्रह हों और खाना न: 2 में भी कोई न कोई ग्रह बैठा हो तो ऐसे प्राणी को खाना न: 2 बैठे हुए ग्रह की उमर में अपने बज़ुर्गों की शान दौलत का फायदा होता होगा. लेकिन खाना न: 2 खाली ही हो बैठे तो बज़ुर्गों के धन दौलत का ऐसे प्राणी को सिर्फ वहमी या गुमान ही रहेगा. मगर कोई ऐसा फायदा न होगा.

2- अगर खाना न: 2 में कोई ग्रह हो और खाना न: 9 खाली हो तो पहाड़ तो होगा मगर उस पर सब्ज़ा ज़ार कुछ न होगा यानि ऐसे प्राणी की आमदन या ज़र ओ माया ख्वाह कितनी ही हो मगर वह सिर्फ एक दिखावे का धन और जले हुए पहाड़ का नज़ारा दिखलाता होगा.

4-10-2 **मुश्तर्का का असर**:

किस्मत के मैदान की लँबाई चैड़ाई - यानि ऐसे प्राणी की किस्मत का मैदान जिसमें वह फैल सकेगा, कितना लँबा चौड़ा होगा - ऐसे मैदान में किसी भी दूसरे भाई बँद , माता पिता औरत या औलाद का ताल्लुक न होगा.

किस्मत के मैदान का रकबा खाना न: 10 का ग्रह बताएगा मगर उस मैदान की मिट्टी की चमक खाना न: 2 (पहाड़ी या मैदानी) पत्थरीला या खुश्की का हमवार टुकडा) और ऐसे मैदान मे आबो हवा की मरतूब या खुशक चरागाहों खुशग्वार इलाक़ा या पानी के चश्मों का हाल खाना न: 4 से जाहिर होगा. अगर खाना न: 4 खाली हो या उस में पापी बैठे हों तो किस्मत के मैदान में खाना न: 2 की ख्वाह लाख चमक हो मगर अपनी प्यास के लिये पानी की ज़रूरत के वक्त वहाँ बैठे हुए पापी साँप (शनी) हाथी(राहू) और सूअर कुत्ते गधे वगैरह (केतू)

के भयानक नजारे पैदा करते हैं यानि धन दौलत के चश्मे पर गँदा पहरेदार (पापी) होने की वजह से चश्मे का पानी कुछ अपनी शान ने देगा, यानि ऐसा प्राणी बेशक अपनी कितनी ही हिम्मत से क्या कुछ ही न बना लेवे मगर जब अपनी थैली में हाथ डाल कर नक्द माया देखनी चाहे तो उस थैली में पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े साँप बिच्छु (शनि) और जलते हुए काले कोयले (राहू) और फटी हुई रँग बिरँगी धज्जियाँ (केतू) अपना जादू दिखा रहे होंगे.

(॥) खाना न: 10 की आलीशान इमारत या बिस्तरा तक जला हुआ शाहजहाँ (शाद जहाँ) या ज़माना का खानदान गलामान के खून का सबूत देने वाला व वही(दही) रँगों का असर जुगनू की तरह टिमटमाता या खानों के कीमती पत्थर हीरे लालों की रोशनी की चमक से अँधेरी रातों में भी चमकते हुए चादँ से उमदा रोशनी देने वाला होगा. यानि अगर खाना न: 8 मँदा हो तो मँदी हवा और मातम का जमाना बिन बुलाये तँग कर रहा होगा. बेशक ख्वाह कोई भी मौत का सदमा या नुकसान हुआ हो या न हो . इस के बर्खिलाफ अगर अगर खाना न: 2 उत्तम हो तो गरीबी की स्याह रातों में मामूली से मामूली चिराग की बजाय कुदरती रोशनी रास्ता दिखाने के लिये खुदबखुद पैदा होगी. ख्वाह ऐसा प्राणी बज़ात ए खुद जन्म से या अपनी उमर के ज़माने से कितना ही नीचे दर्जे का हो.

(ब) अगर खाना न: 2 खाली हो तो खाना न: 10 यानि किस्मत का मैदान ख्वाह कितना ही लँबा चौड़ा हो मगर उस में कोई चमक या शान या दुनियावी ज़िँदगी का साजोसामान और आराम शायद ही कभी मुहिया होता होगा. इसी तरह ही अगर खाना न: 2 में कोई ग्रह बैठा हो और खाना न: 10 खाली हो तो किस्मत में लिखी हुई माल ओ धन का पारस डाक खाने या रेल से स्टेशन पर बेशक पहुँच चुका होगा मगर इस के लेने के लिये अपनी पहचान का सबूत सामान की जिम्मेदारी की कीमत और बाकी रसीद परचा शायद रास्ते में ही कहीं गुम हो गया होगा. जिसमें की तालाश के लिये कई कासिद भेजे मगर वह वापस न आये और ऐसा प्राणी उन की उम्मीद में रास्ते देखता ही देखता थक गया .

(ज) अगर खाना न: 10 और खाना न: 2 दोनो ही खाली हों और खाना न: 4 में कोई कारामद ग्रह बैठा हो तो पीने के लिये पानी नज़र तो आता होगा मगर पता नहीं चलता होगा कि इस जगह पहूँचने का रास्ता किधर है. मृगतृष्ना में ऐसा प्राणी बे उम्मीदी में उम्मीदी बाँधता हुआ अपनी किस्मत के

मैदान में बँधा हुआ पीने के पानी से तरबतर होता हुआ चलेगा. यानि ज़िँदगी और माया दौलत होंगी तो ज़रूर मगर कब अपनी ज़रूरत के लिये मुक्कमल ? इस बात का जवाब देने वाला शायद फिर कभी आयेगा.

1-7-9-11 मुश्तर्का असर:-

इन सब का हाल जैसा भी एक का हो चारों घरों में सब का वैसा ही होगा.

3-11-4-7 मुश्तर्का असर :-

धन की आमदन - फाल्तू धन और खर्च की नह की हालत ,मुफसिल धन दओलत के हाल में देखें.

8-2-4-3 मुश्तरका असर

बीमारी का बहाना सेहत का आखिरी वक्त कूच- जाय्दाद जद्दी चोरी अय्यारी - दोस्ती वगैरह ,मुफसिल हाल सेहत बीमारी और इँसानी उमर के हाल में देखें.`

ख़ास खास असर्

ग्रह दोस्त नहीं बाहम लड़ते	झगड़ा कराते दूसरे हैं
शनि रवि दो इकट्ठे बैठे	लड़ते ग्रह स्त्री से हैं
स्त्री ग्रह जब शनि से मिल कर	बैठे दो या कहीं भी हों
उन बैठे ग्रह जो कोई देखे	मरते आल औलाद से हों
इस जहर को घर 9वें से	राहू केत हटाते हैं
अगर मदद न उन की लेवें	मँगल केतू मर जाते हैं
एक दीवार के घर दो साथी	गेह मुश्तर्का होटल हैं
शत्रु ग्रह गो कभी न मिलते	दोस्त मिले ही गिनते हैं

सफा 180 खत्म 181 शुरु (छँद 181 के हैं)

वजह किसी दीवार फटे[&&] गर	दुगनी ज़हर हो जाती है
अक्ल बुरी किस्मत हो मँदी	मौत खड़ी हो जाती है
ग्रह शत्रु में गुरु जो आवे	वैर खत्म हो जाता है.
माता चँदर जब साथी होवे	मित्र सभी बनाया जाता है.

स्त्री ग्रह जब शनि से मिल कर खाना न: 2 में या कहीं भी और जगह बैठे हों तो जो ग्रह उन (स्त्री ग्रह व शनि मुश्तरका बैठे होवें) को द्रिष्टी के असूलों पर देखेगा, उस ग्रह का मुत्तलका रिश्तेदार आल औलाद की मौतों से दुखिया होगा.

किस खाना न: मे हो	कौन ग्रह हो	तो किस ग्रह पर असर होगा ---->> और क्या असर होगा
1	केतु	सूरज हर तरह से ऊँच होगा
	राहू	सूरज जिस घर में बैठा हो उस घर में सूरज ग्रहण होगा
2	बुध	बृहस्पति हर तरह से बरबाद होगा
4	बुध्	चँदर हर तरह से बर्बाद होगा
6	मँगल	सूरज हर तरह से ऊँच होगा
6	मँगल	केतू हर तरह से बर्बाद होगा
11	राहू	बृहस्पति हर तरह से बरबाद होगा
11	केतू	चँदर हर तरह से बर्बाद होगा
11	बृहस्पति	राहू हर तरह से बर्बाद होगा
12	चँदर	केतू हर तरह से बर्बाद होगा

---

*1 - जब कोई ग्रह ऐसे घर में आवे या बैठा हो जहाँ कि वह नीच मुकरर हो चुका है, या वह ऐसे घर मे बैठा हो जो कि उस ग्रह के दुश्मन ग्रह का घर हो (बहैसियत माल्कियत या पक्का घर) तो ग्रह का असर अमूमन मँदा होगा.इस के बरअक्स जब वह ऐसे घर में हो जो उस के लिये ऊँच हालत का मुकरर् है या अपने दोस्त ग्रहों के घर मे (बहैसियत माल्कियत या पक्का घर) बैठा हो, तो उसका असर अमूमन नेक होगा.जब कोई ग्रह अपने पक्के घर में बैठा हो या कायम हो या इसके साथ उस के बराबर की हैसियत का मुकरर् शुदा ग्रह बैठा हो तो औसत हालत में उसका असर नेक ही होगा.

*कौन सा ग्रह सिर्फ अकेला ही बैठा हो तो कैसा असर होगा

नँबर शुमार्	ग्रह	क्या असर होगा
1	अकेला बृहसपति	टेवे वाले पर कभी मँदा असर न देगा
2	अकेला सूरज	खुद अपनी जद्दोजहद कर के खुद साखता अमीर होगा
3	अकेला चँदर	हमेशा अपनी दयालुता और नर्मी से फाँसी तक की सजा मुआफ करवा कर टेवे वाले की कुल (खानदान) नष्ट न होने देगा
4	अकेला शुकर	कभी बुरा असर न देगा , जब कभी बुरा होगा तो उस बुराई करने कराने में कोई न कोई दूसरा और साथी ज़रूर होगा.
5.	अकेला मँगल	चिड़िया घर का कैदी या बकरीयों में पला हुआ शेर होगा.
6	अकेला बुध	लालची देसपरदेस में खाली चक्कर – मेहनत हालत का असर होगा
7	अकेला सनिचर	अकेले सूरज के साथ खाली बुध ही काम देगा
8	अकेला राहू	एक अकेला तमाम ग्रहों की परवाह न करेगा और जमाना के सब दुश्मनों पर कड़कती हुई बिजली की तरह चमकता और टेवे वाले का हर तरह से तमाम मुसीबतों के ताल्लुक में बचाव पूरा पूरा करेगा मगर माली हाल्त की शर्त न होगी ये मतलब नहीं कि गरीब ही बनादेगा मगर जरूर ही अमीर बनाने की शर्त नहीं.
9	अकेला केतु	ख्वाह कुँडली में राहू से पहले घरों में बैठा हो ख्वाह बाद के घरों में ,हर दो हालत में ये अपना असर देने के लिये राहू के इशारा पर चलेगा और हर वकत यही असूल बनाये रखेगा.

हर ग्रह के अच्छे या मंदे हो जाने की आम निशानियां

नंबर शुमार	नाम ग्रह	मंदा होने की आम निशानियां	मंदी हालत में मददगार बातें
1.	बृहस्पत	सिर पर चोटी (बोदी) की जगह के बाल ख़ुद ब ख़ुद किसी बीमारी की वजह के बग़ैर उड़ जावें। गले में हरदम माला (तस्बीह) रखने का आदी हो जावे। सोने का नुकसान या गुम हो जावे। झूठी अफवाहें बदनामी का कारण हों तालीम ख्वाह म्ख्वाह बंद हो जावे।	माथे या पगड़ी पर जर्द तिलक (निशान) लगाना नाक का पानी ख़ुश्क (नाक सफ़ा) कर के काम शुरु करना मददगार होगा। बचपन की उम्र में जिस दिन से नाक का पानी ख़ुद ब ख़ुद ख़ुश्क हो जावे बृहस्पत मददगार गिना जाएगा।
2.	सूरज	सूरज रंग (लाल) गाय या भूरी भैंस का मर जाना या घर से गुम हो जाना जिस्म के अंगो को हरकत करने कराने की ताकत (खींचना य फैलाना) जाती रही या मुंह से हर दम थूक जारी रहे।	मुंह में मीठा डाल कर पानी के चंद घूंट पी कर काम शुरु करना मुबारक होगा।
3.	चंद्र	घर से दूध वाले जानवर मर जावें। घोड़े की मौत ही जावें। कुआ या तालाब ख़ुश्क हो जावे। महसूस करने की ताकत ख़तम हो जावे	दूसरों के चरण छू कर उनकी आशीर्वाद लेना मददगार होगा।
4.	शुकर	अंगूठा बग़ैर बीमारी निकम्मा हो जावे य जिल्द (इँसान की चमड़ी Skin) ख़राब हो जावे।	पोशाक का ख्याल रखना मददगार होगा।
5.	मंगल	बच्चा पैदा हो कर ख़तम हो जावे। आंख कानी हो जावे। ख़ून ख़राब हो बैठे। जिस्म के जोड़ चलने से रह जावें। ख़ून का रंग मुर्दे की तरह नजर आने लगे। कुव्वत ए बाह तो हो मगर बच्चा पैदा करने की ताकत न हो।	मंगल बद में दिया हुआ इलाज मदद देगा। सुरमा सफेद का इस्तेमाल मददगार होगा।
6.	बुध	दांत बरबाद, ख़ुशबू या बुदबू का फ़र्क मालूम न हो। कुव्वते बाह धोका देवे।	नाक छेदन, दांत सफ़ा रखना मददगार होगा।
7.	सनीचर	मकान गिर जावे भैंस मरे आग लगे। जिस्म पर से बाल बिना बीमारी झड़ जावे ख़ासकर पलकों और भवों के	मिसवाक का इस्तेमाल मददगार होगा।
8.	राहु	पूरे स्याह रंग कुत्तों की मौत या गुम हो जावे, हाथ के नाख़ुन झड़ जाना। दिमाग़ी ख़राबियां। ख्वाह-म्ख्वाह दुश्मन पैदा हों।	मुश्तरका ख़ानादान रहनां ससुराल से ताल्लुक न बिगाड़ना। सिर पर चोटी कायम ख़ुदमुख्तार होकर न चलना मदद देगा।
9.	केतु	पांव के नाख़ुन झड़ जाना, पेशाब या दर्द जोड़ की बीमारियां, औलाद के बिघन या तकलीफे और ख़राबिया।	कान में सुराख़ करवाना। केतु की पालना करना मदद देगी।

औसत हालत का असर अमूमन उन घरों में होगा, जो घर के किसी ग्रह के लिए बतौर पक्का घर मुकर्ऱर नही। कायम और नेक हालत का असर उस वक्त होगा, जबकि इस ग्रह का साथ हो जावे जो उस ग्रह के बराबर का ग्रह मुकर्ऱर है और वह ग्रह जागता हो।

जब[1] दृष्टि की नज़र से बाहर ग्रह अकेला ही बैठा हो	किन घरों अमूमन मंदा होगा[2]	कहां अमूमन अच्छा होगा[3]।
बृहस्पत	6-7-10-11 मंदे गुरु को केतु से मदद होगी।	1 ता 5-8-9-12
सूरज	6-7-10	1 ता 5-8-9-11-12
चंद्र	6-8-10 ता 12	1 ता 5-7-9
शुकर	1-6-9	2 ता 5-7-8-10 ता 12
मंगल	4-8	1 ता 3-5 ता 7-9 ता 12
बुध	3-8 ता 12 ख़ाना नम्बर 9 में हमेशा ही मंदा नही और न ही ख़ाना नम्बर 11 में हमेशा लानती होगा।	1-2-4-5 ता 7
सनीचर	1-4 ता 6	2-3-7 ता 12
राहु	1-2-5-7 ता 12	3-4-6
केतु	3 ता 6-8	1-2-7-9 ता 12

1.- दृष्टि की नजर से बाहर से मुराद यह है कि उस ग्रह?(घर) कोई भी और ग्रह किसी तरह की दृष्टि वगैरह से देख न सकता हो या ऐसा ग्रह अकेला ही बैठा हो।

2.- जब ऐसे घरों में हो जहां कि वह नीच मुकर्रर किए गए है या अपने दुश्मन ग्रह के घर में बैठे होवें।

3.- जब ऐसे घरों में हो जहां 'अपने घर का मालिक'/'ऊंचे मुकर्रर किया जानेके घर' में या अपने दोस्त ग्रह के घर में बैठे होवे।

ग्रह चाल
रंग बिरंगियां

फ़रमान नम्बर11

सिद्ध[1] 12, ब्रहा [बृहस्पत], 9 निधि	मोह[शुकर] माई[चंद्र] आकाश[बुध]
राई[राहु] घटे न तिल[केतु] बढ़े	मच्छ[सनीचर] भाई[मंगल] प्रकाश[सूरज]

1 ग्रहों के अलावा सिर्फ़ नौ निधि बारह सिद्दी के हर्फ़ ख़ाली बचते है इन्हीं दो हर्फ़ से दुनियादारों ने बच्चे का नाम रखा और सिर्फ़ नाम पर ही बाज़ों ने किस्मत का असर माना है।

ब्रह्माँड में ग्रह चाली बच्चे की बदलती हुई अवस्था

बच्चा पैदा हुआ। बँद हवा से इस जमाने की हवा में आया। यह जमाना वह है कि जबकि बच्चे का जिस्म नरम पोला और तबीयत बिल्कुल भोली भाली है। अभी सात ग्रह का असर मुकमल नही हुआ और लोक परलोक के मुश्तरका ख़यालात उसमें पैदा हो रहे है। गुरु से तालीम हासिल की तो उस पर इस जमाना की हवा का असर सोलह आने होने लगा। तब करम धरम करना सीखा और इज्जत बेइज्जती का फर्क मालूम होना शुरु होआ तो उम्र का जमाना वह आया जो रूहानी हालत का हुआ। पट्ठे अब जो बढ़ने थे बढ़ चुके, गोया बृहस्पत की उम्र हुई 16 साल (2) इल्मों हुनर के बाद राजदरबार से ख़ुद अपने हाथों से धन दौलत कमाना शुरु किया तो यह वक्त अहद सूरज हुआ या बच्चा बालिग़ हुआ तो उम्र हुई 22 साल (3) अपनी कमाई से माता की सेवा करने लगा तो चंद्रमा का जमाना आया और उम्र हुई 24 साल (4) स्त्री ताल्लुक. बढ़े। परिवार गृहस्त आश्रम और बाल बच्चों की बरकत का जमाना शुकर का अहद हुआ तो उम्र हुई 25 साल। (5) ख़ाना पीना भाई बंदों की सेवा, जंग ओ जदल, जिस्मानी दुःख बीमारी वगैरह का वक्त मंगल (नेक व बद) गिना गया तो उम्र हुई 28 साल (6) बुद्धि के काम तिजारत ब्योपार हूनर दस्तकारी दिमागी लियाकतों वगै.रह से धन दौलत का जमाना बुध का अहद बना और उम्र हुई 34 साल (7) सन्यास या मकान जायदाद चालाकी की आंख से धन दौलत का ढंग पकड़ा तो सनिचर का राज फैला और उम्र हुई 36 साल (8) दुनिया के अंदेशों की फर्जी सोच विचार और ख़यालात की नक्ल ओ हरकत का जोर हुआ तो राहु का जमाना आया उम्र हुई 42 साल (9) अपने आप से जब दुनिया का मुअम्मा हल न हुआ तो इधर उधर सलाह मशविरा के लिये पांवों की नक्ल ओ हरकत शरु हुई या बच्चा चलने और दौड़ने लगा तो केतु का जमाना उभरा और उम्र हो गई 48 साल या दुनिया का लाल- ग्रह चाली बच्चा 12 राशि के चार चक्कर लगा कर दुनिया की चारों खूंट(कूंट) में आ रोशन हुआ। दूसरे लफ्जों में जब आकाश (ख़ाली जगह) में बृहस्पत (हवा) का असर हुआ या जमाने की हवा में इँसान फिरने लगा, तो उसमें हरकत की ताकत पैदा हो गई अब हरकत से गरमी आग या दुनिया में उसका मुजास्सिम देवता सूरज निकल आया जो निकलते ही सुर्ख़ रंग देखा गया (सुर्ख़ रंग मंगल का है) यह नजारा दिन के नाम से मौसूम हुआ। सूरज जिस कद्र ऊंचा हुआ गरमी बढ़ी लाली घटी और हवा ने सूरज का रुख किया बृहस्पत ग्रहों का गुरू या पिता था

मगर सूरज दुनिया का पिता और रुहानी मालिक बना। बुध की अक्ल का गोल दायरा भी सूरज का अपना ही आकार है। सूरज निकला तो बृहस्पत-मंगल चंद्र और बुध सबके सब एक हो गए और शुकर राहु और सूरज का लड़का सनीचर केतु को साथ लिए बाई तरफ़ हो बैठे जो हर एक के मुड़ने का हाथ है। मगर मुड़ेगा कौन? सूरज जो अपनी गोलाई के चक्कर के सबब हमेशा आगे को ही चलता जा रहा मालूम होता चला आया है। किसी ने उसे मुड़ता नही देखा न उसने अपना रास्ता बदला न पीछे हटा। मंगल दोस्त की लाली, जूं जूं सूरज ऊंचा हुआ सफ़ेदी में बदलती गई और दुनिया को रोशनी करने लगी। गोया मंगल अपनी किरणों से सूरज और दुनिया की जमीन शुकर के दरम्यान खूब जोर से तन गया। दुनिया का दिल या इँसान के दिल चंद्रमां ने अपनी अलहदा खिचड़ी पकानी छोड़ दी और अपना घोड़ा (चंद्र को घोड़ा भी माना है) और दूध सफ़ेद (रंग) सूरज के रथ में जोड़ दिया (सूरज का रथ माना गया है) और ख़ुद सूरज के दिल के अंदर बैठ गया। या इँसान का दिल दुनिया ओर दुनिया का दिल चंद्रमां सूरज के जिस्म में जा बैठा। बृहस्पत की हवा या राजा इंद्र ने परलोक से इस दुनिया का रुख़ किया और निकलते ही सूरज (आग गरमी) के हुक्म को पूरा करने के लिए जर्द हवाई शेर को सिंह राशि के मालिक सूरज के प्रणाम करने को भेजा जो मेख़ नम्बर 1 के मंगल को ऊंच कर रहा है। ओर मंगल की किरणें बना बना कर शुकर की जमीन को ख़ूनी झंडे के मालिक से मैदाने जंग बना रहा है। सिंह का सूरज ख़ुद शेर है। मुंह लाल करने वाला मंगल उसे और भी ऊंच दर ऊंच हालत में कर रहा है। शेर के मुंह को मैदान जंग के ख़ुन की लाली का रंग नही चढ़ता, वह लाल होने की बजाए और भी चमकता चला जा रहा है। मंगल भी नर ग्रह है। मैदाने जंग के उसूली को चलाने वाला हैं मुकाबला पर शुकर की ज़मीन सबको एक ही आंख से देखने वाली कानी औरत है इसलिए मंगल उस पर हमला नहीं करता किरणों को वापिस ले जाता है और सूरज और बृहस्पत के शेरों को कानी अबला (निहायत गरीब) की हकीकत बयान करता है। मंगल आदिल है या अदल का मालिक है। बृहस्पत हवाई शेर रहीम या रहम का मुजस्सिम देवता है। किसी से दुश्मनी नहीं करता। सूरज मुंसिफ़ है जिस में रहम और अदल दोनों शामिल हैं, क्यों कि उसके जाहिरा गुस्से के अंदरुनी वजूद में चंद्रमा का शांति वाला दिल बैठा हुआ नजारा देख रहा है। फैसला होता है कि पांव पड़ी नीचे लेटी एक ही आंख की मालिक

कानी औरत पर मर्दो का हाथ उठाना मंगल का काम और हमला करना शेरों और बहादुरो का नाम नहीं। चुप चाप बैठा हुआ बुध अपनी अक्ल का दायरा वसीह करता है। मिथुन राशि नम्बर 3 पैदा हो जाती है। या मेख नम्बर एक के मंगल व सूरज मिलकर 3 होने पर मत्थन मित्थन (मिथुन मैथुन?) मिलावट या मर्द औरत का जोड़ा या मर्द औरत की मिलावट की बाहमी अक्ल या कामदेव वशै की ताकत साथ मिल बैठती है। बुध शुकर की अपने घर में ही पालना करने लग जाता है। दूसरी तरफ़ सनीचर, जिसने शुकर (जमीन औरत) ..... को देखने के लिए अपनी आंख उधारी दी थी, समझाता है कि मेरे होते हुए यह सब तेरी (शुकर की) आंख की नजर का सिर्फ एक मामूली करिश्मा है। गोया सनीचर ने अपने बाप सूरज के बरखिलाफ़ भी औरत को सलाह दी जो अमूमन भोली भाली ही मानी गई है उसके फरेब में आ गई उसकी आंख सनीचर की मगर मिट्टी शुकर की गो जाहिरा भोली भाली गऊ नजर आ रही है, मगर उसकी शौतान आंख के एक ही तबस्सुम के करिश्में ने सूरज ओर बृहस्पत के शेरों को नीचा कर दिया। सब तरफ़ नीच फल पैदा हो गया। जिस पर दुनिया में जिनाकारी जारी हुई और मंगल □चौकोर शक्ल के पेट में छुरियां फिरने लगीं गोया वह राहु ⊞ बन गया। जिससे दिमाग़ में नकल ओ हरकत होने लगी। अब मंगल की पेश नही जाती। वह सूरज और बृहस्पत दोनों की ख़ातिर जो सबके पिता है आंख से मार देने वाली अबला से तंग होने लगा ओर ख़ुद अपने हाथ से उसे मार देने पर तैयार हुआ। ऐसी हालत में अगर वह अकेला होवे तो कायराना (बुजदिलों की) कारवाई कर जावे, इसलिए चुप है और मंगल के मौजूद होते हुए **राहु भी गुम है। जिस की वजह से मर्द औरत का जोड़ा कामदेव को अंदर छुपाए फिर रहा है** मगर मंगल दुश्मनी नही छोड़ता। जब काबू आया औरत को मार ही देने का उसूल बरतने लगा। किस्सा कोताह **शुकर को केतु की मदद मिलने पर या काम देव की मेहरबानी और मंगल की सलाह से किरणें फिर जमीन पर शुकर**, को मार देने या नीच करने के बजाए **उसे चमकाने की वापिस हुई।** अब जमीन क्या चमके, सब ग्रहों को सनीचर की शैतानी मालूम हो गई। बृहस्पत की हवा हुक्म बजा ला रही है मंगल का मैदाने जंग अंदरूनी तौर पर गरमी नहीं छोड़ता। वह सूरज के हुक्म या मंगल की किरणों को कभी इधर कभी उधर करता है। कशमकश पैदा हो गई। किरणें शुककर का कुछ बिगाड़ नही सकती। बृहस्पत की हवा भी ज़ोर पकड़ रही है। शुकर की माया

के झगड़े ओर मिट्टी के जर्रे साथ उड़कर सब की आंखों में पड़ने लगे। मगर उसकी अपनी आंख बदस्तुर दुख रही है। क्यों कि सनीचर की बनी हुई। यही जर्रे दुनिया के झगड़े है इसलिए उनसे वही बचा जिसने सनीचर की आंख से आंख न मिलाई। जर्रों से गरमी बढ़ी। मैदान गरम हुए मगर ऊंचे पहाड़ ठंडे रहे और कायनात के सरद और गरम दो पहलू हो गए। गर्जे कि औरत के तबस्सुम (मुस्कराहट) की आंख के शरारों से सैकड़ों बखेडे और जंगों जदल होने लग। यहां तक कि दुनिया लड़ाई का मैदान बन गई और सुख दुख की नदियां या रेखाएं हाथ के बर्रेआजाम में बहने लगी। मंगल ने नजारा दिखाया, चंदर ने तमाशा देखा, मगर रेखाओं के समंदर(चंदर का दूसरा नाम) ने शांति ना छोड़ी। पानी हमेशा आहिस्ता गर्म हुआ, मगर खुश्की का तमाम ब्रह्मांड या शुकर की कुल जमीन या हाथ का बर्रेआजम सूरज और शुकर की बाहमी दुश्मनी के सबब से इतना तंग हुआ कि सूरज को दबाने के लिये सारे का सारा ही उठ कर दौड़ता हुआ मालूम होने लगा. बृहस्पत की हवा में शुकर की मिट्टी के जर्रे तूफानी जोर से फैल गये। तमाम मुतालकीन तंग हुए, गो सूरज की तपश को मध्यम किया मगर इस के रथ को रोक ब सके और आखिर पर अब ने अपना ही खराब किया और सूर्ज का कुछ न बिगाड़ सके। मुखतसर्न आहिस्ता आहिस्ता सूरज का रथ छुपने लगा और काली रात सनिचर का चेहरा होने लगा. किरणे खत्म हुई. मंगल चला गया। अब मंगल की गैरहाजिरी में राहु भी आ निकला। रात हो गई, सूरज की पुरानी चमक बृहस्पत की ठंडी चलने लगी. जिसपर रात की बाद दिन के फर्क की हदबंदी या केतु निकल आया।दिन खत्म और रात शुरु के बाद राहु था अब फिर नये सूरज की उम्मीद हुई. या राशी मंडल में ग्रहचाली बच्चे को ज्यूं ज्यूं हवा लगने लगी, बुद्धि या अक्ल आने लगी और जर्द[1] से सब्ज रंग होने लगा। जो बुध का रंग और जमाना है. अब जमाना की हवा अक्ल तो देगी, मगर जर्द रंग से सब्ज कर देगी यानि बृहस्पत की मदद कम होती जायेगी और उस के सब्ज रंग से मिली हुई अक्ल से ही इंसान धन दौलत के कमाने की धुन और लगन में रात दिन मरते फिरना सीखेगा. क्यों कि बुध बृहस्पति

1. कनक जौ के पौधे और दरख्तों के पत्ते भी निकलते ही जर्द रंग होते हैं, बंद बरतन में पैदाशुदा पौधे इस बात को साफ करते हैं 189 खत्म

से दुश्मनी पर है। मां कहती है कि बच्चा बड़ा हुआ मगर बृहस्पत की उमर घटती जायेगी. पैदाइश के कक्त बृहस्पत पूरी उमर का था, हर तरह से साफ था, जमाना की हवा से कई रंग बनने लगे। जर्द से सब्ज हुआ तो(पीला रंग राहु के साथ मिला – गोया दिमाग में नकलो हरकत पैदा हो गई. और नेकी के साथ बदी करने का बीज आ मिला. आखीर यहां तक कि सब जमाना उलझन हो गया। फिक्र ओ उमर खड़े हुये मगर शुकर का मुकाम है कि राहु व बृहस्पत बराबर हैं और बाहम कभी दुश्मन नहीं होते, दोनो के मुलाप से सब्ज रंग पैदा हुआ, तो बुध आ निकला और जर्द बिल्कुल ही जाता रहा।यानि अक्ल पूरी हुई तो जमाना की हवा का एतबार ही उठ गया और "हीले रिज्क बहाने मौत" का मसला खड़ा हो गया गोया फरिश्ता का नोविस्ता या कुदरत लिखा भूल ही गया, इतना ही नहीं बल्कि जब इस बुध या बुद्धि की अक्ल का गोल दायरा बृहस्पति के बुर्ज पर आया तो बृहस्पत की हवा का वह चक्कर बंधा कि इसे निकल्ने को सिर्फ वही खाली जगह आकाश बाकि रह गई. किस्मत की हवा के बाव बगोले बनने और आसमाने की तरफ उठने लगे. मुख्तसरन अब किस्मत का एतबार ही न रहा. बहरहाल इतने में सूरज आसमान पर नजर से गायब हुआ, रात आई आग बुझने और सरदी उभरने लगी. घबराहट खत्म और शांति आने लगी. चंदर चमक रहा है. दिन के हारे सूने लगे. कई तरह की खराबियां होने लगी. जिस के परदे में हवा से आग हुई. आग से पानी, पानी से मि टी बनी या बच्चा जमाने की हवा से गर्मी-सर्दी महसूस् करने और माता पिता के साया में आराम करने लगा और वही बंद मुट्ठी के आकाश की हवा अब उसे सांस का काम देने लगी इसी असूल पर माना है कि हर सांस आने और जाने में इंसान की किस्मत का ताल्लुक होता है. जिस की वजह से कोई बुद्धिमान या बुध का लक(लाख) या अक्लमंद ये नही दवआए دعوے باندھ बांध सकता कि एक के बाद दूसरा सांस आएगा या नहीं.मगर हर दम यही ख्वाहिश करता है कि अगर एक सांस बाहर को ग्या हुआ है तो दूसरा मेरे अंदर ही आ जाये यानि अगर दायें ने किस्मत की हार दी है तो बायां ही मदद करे। यही दायां बायां करता दिन रात 24 घंटे में 12 राशि जर्ब *7* ग्रह या 84 लाख सांस पूरे करलेता है. और इस दुनिया की नर्क चौरासी या बारह राशियों में सातों ग्रहों की जरब या चोट को सहता चला जा रहा है. अगर उए सांस हवा या बृहस्पत न होता तो सब चौरासी खत्म हो जाती क्योंकि बृहस्पत बुध मुश्तर्का – ग्रहचाली बच्चे से बृहस्पत उड़ जाने पर बुध का गोल अंडा या सिफर खाली खलाव ही रह जायेगा, जो दुनियावी ख्याल में अंडे से बृहस्पत की जर्दी निकाला हुआ ऍदे का खाली खोल या ढांचा सिर या बच्चे के ऊपर की झिल्ली या चीज होगी जो बृहस्पत व राहु के दरमयान हदबंदी करनेवाली चाज आसमान की बुनियाद (अफक या निगाह की हद) कहलाएगी.जिस की जांच पड़ताल इस इलम सामुदरिक से होगी.

फरमान नंबर 12
कुंडली की बनावट और दुरुस्ती

कुंडली

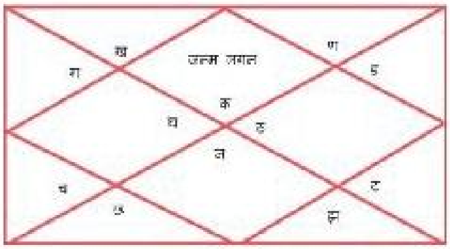
कियाफाः हाथ व पांव की उंगली के नाखुन के सिरे से कलाई व टखनी तक और 9 ग्रह 12 राशि की कुंडली से 12 हीं तरफों के दरम्यानी मैदान में बनातात, जमावात, इंसानात(कौमें) किस्म किस्म के लोग, हैवानात,मकान आम ओ खास व जाये रिहाइश, ख्वाब शगुन, माल मवेशी चरिंद परिंद दरिंद, दोस्त दुश्मन, जहर व अमृत, दुनियावी दीगर साथियों और इल्म कियाफा वगैरह, से जो सामुद्रिक के जरूरी हिस्से हैं, वक्त से पहले ही लिखे हुए नौ निद्धी या बारह सिद्धी के खजाने की कमी बेशी के मुतलका कुदरती और अनमिट (जो मिटाया ना जा सके) लेख या हुक्मनामा को पढ़ा जा सकता है।

टेवे की आसान दुरुस्ती इल्म ज्योतिष के मुताबिक बनाई हुई जन्म कुंडली के लगन के खाना नंबर को एक का हिंदसा देकर जब कुंडली बन चुकी तो मालूम हो जायेगा कि लगन से हर ग्रह कौन कौन से घर है. इस तरह बैठे हुए ग्रहों के मुताबिक मकान कुंडली जो दूसरी जगह दर्ज है, बनाई और जाहिर एक ग्रह के मुत्तलका चीजों से पड़ताल की या उस् के खून के रिश्तेदारों हर एक से मुत्तलका का हाल और सब ग्रहों का फल मिलाया गया, अब तमाम हालत आम उमर और सालवार देख लें। दूसरी हालत में देखें कि हाथ रेखा के असूल पर कुंडली बनाने के ढंग से नर ग्रह कहां कहां मालूम हो रहे हैं. जिस घर मे कोई एक नर ग्रह भी पूरे तौर पर तसल्ली का मालूम

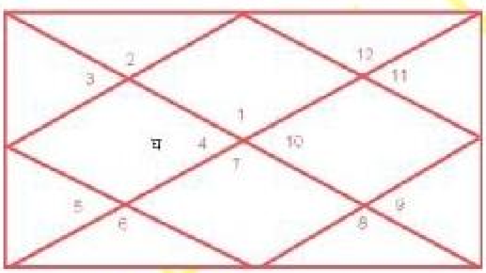


होवे उसे उस घर में मुकर्रर कर के बाकि सब ग्रहों को बतदरीज लिख देवें. अब लगन सारनी के मुताबिक देख लें कि जन्म वक्त दरअसल क्या हुआ, साथ ही इस तरह पर दुरुस्त किये हुए टेवे का फलादेश बोल कर देख लें कि आया गुजरा हुआ हाल मिल गया. ग्रह स्पष्टी के लिये हर ग्रह में इस खानावार असर की दी हुई चीजों व ग्रह मजकोर की आम चीजों का ताल्लुक भी बोल कर देख लें. जब पूरी तसल्ली हो जावे कि मकान कुंडली के मुताबिक भी अब वह टेवा दुरुस्त हो ग्या है तो आगे फलादेश लिखना शुरु करें.

इल्म ज्योतिष में बनाई हुई जन्म कुंडली - इल्म ज्योतिष और सामुद्रिक में राशियों के एक ही नंबर मुकर्रर हैं। कुंडली वाले के जन्म के मुताबिक जो राशी नंबर होता है पंजाब में इल्म ज्योतिष वाले वह हिंदसा सब से ऊपर की चौकोर जगह में लिखते हैं। इस नंबर को वह लोग जन्म लग्न गिनते हैं, इल्म सामुद्रिक में इसी ऊपर की चौकोर को खाना नंबर दे दिया गया है, ताकि बार बार न गिनना पड़े को हर ग्रह जन्म लगन से कौन से नंबर के घर में है. या यूं कहें कि पंजाब के कुंडली के बारह खानों की शक्ल पक्के तौर पर मुकर्रर है. ख्वाह इल्म ज्योतिष वाले ऊपर के चौकोर खाना में जन्म वक्त की राशि के नंबर का हिंदसा लिख देवें ख्वाह सामुद्रिक वाले इस ऊपर के चौकोर को खाना नंबर 1 देवें बात एक ही है।



(1) मेख (2) बृख (3) मिथुन (4) कर्क (5) सिंघ (6) कन्या (7) तुला (8) बृश्चिक (9) धनु (10) मकर (11) कुंभ (12) मीन । फर्जन किसी की जन्म राशि या जन्म लगन की राशि है सिंघ जिस का नंबर है 5वां, ज्योतिष वाले तो लिखेंगे सामुद्रिक वाले खाना 'क' में हिंदसा नंबर 1, 'ख' में हिंदसा नंबर 2 और बातरतीब आखीर के खाना में हिंदसा नंबर 12 लिखेंगे। ज्योतिष वाले खाना नंबर 'ख' को कहेंगे कि वह 'ख' वाला खाना नंबर जन्म लगन से दूसरे नंबर पर है, सामुद्रिक वालों के लिये भी खाना नंबर 'ख' होगा खाना नंबर 2 वगैरह। खाना 'क' से दोनो इल्म वालों

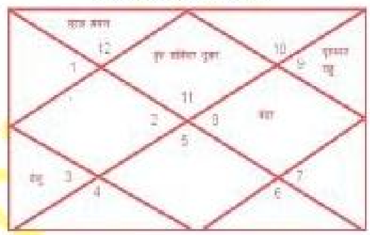


ने शुरु करना है. ज्योतिष में वह लगन कहलाता है, सामुद्रिक में वह 'क' का मुकाम खाना नं 1 होता है गोया खाना 'क' में हिंदसा नंबर 1 लिखने से सामुद्रिक में राशि नंबर 1-मेख मुराद नहीं हो जाती वह लग्न है. 'क' को एक 'ख' को 2, 'ग' को 3, 'घ' को 4 वगैरह बातरतीब हिंदसा देकर लिखी हुई कुंडली मुंदर्जा जैल होगी लाल किताब की पक्की कुंडली खाना नंबर 'घ' में 4 का हिंदसा देखकर ज्योतिष वाले कहेंगे कि वह 'घ' का घर कर्क राशि नंबर 4 और ज्योतिष में जन्म लगन से चौथा घर है। सामुद्रिक में राशि नच्छत्तर को बाद में उड़ा ही दिया गया है। कुंडली के हिंदसा से बदलने से सामुद्रिक वालों ने लगन से हर एक घर गिन लिया। अब ये राशि नंबर का हिंदसा नहीं लेंगे या

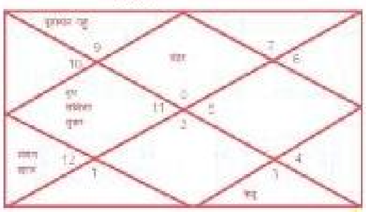
यूं कहो कि सामुद्रिक वाले एक पक्की कुंडली बनाकर इस में सब से ऊपर के चौकोर में एक का हिंदसा लिख कर तमाम 12 खानों में हिंदसे लिख देंगे और जहां समुद्रिक वालों का हिंदसा नंबर 1 है इस घर में ज्योतिष वालों की बनाई हुई कुंडली के इस घर के हिंदसे वाले ग्रह को लिख देंगे, जो हिंदसा कि उन्हों के वक्त की जन्म राशि का सब से ऊपर के चौकोर खाने में लिखा है. अब सामुद्रिक वालों की कुंडली के हिसाब से हर ग्रह का पता लग गया जि वह जन्म लग्न से कौन से घर है। इस तरह पता लग गया कि हर एक खाने में कौन कौन सा ग्रह है तो लाल किताब के मुताबिक जवाब देखना शुरु करें।

लालकिताब की चंदर कुंडली : जिस घर में ज्योतिष वालों ने लफज चंदर का ग्रह लिखा हो उस घर को जन्म लगन वाली राशि का नंबर लगा कर तमाम खानों में 12 हिंदसे पूरे कर देंगे। इस तरह से जहां भी एक का हिंदसा आवे वह घर सामुद्रिक में चंदर कुंडली के देखने के लिये पहला खाना होगा। मसलन पैदाइश 2 चैत संवत 1992 सनिचर वार मुकाम

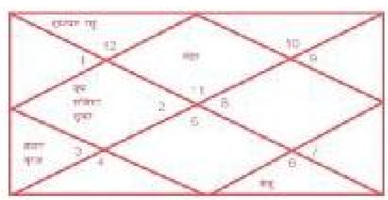
जन्म कुंडली कुंभ लगन



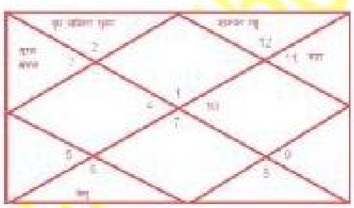
चंदर कुंडली ज्योतिष की



लाहौर छावनी खास 5 बजे सुबह मुताबिक 14/3/36 हो तो इस दिन की अब लाल किताब के लिये पैदाईश के दिन वाली चंदर कुंडली में चंदर को जन्म की राशि यानि हिंदसा नंबर 11 दिया तो वही चंदर कुंडली हस्ब जैल होगी।



हिंदसा नंबर 1 को अपनी ऊपर की जगह किया तो लाल किताब के मुताबिक लाल किताब की चंदर कुंडली होगी।



अब ऊपर की लालकिताब वाली चंदर कुंडली का असर अचानक और सहवन और भूले भुलाये कभी कभी जाहिर होगा और वह भी महांदशा के खाली रखे हुये सालों में:-

यह होगा पक्का भेद जिसे राशी फल कह कर शक का फायदा उठा लेंगे (राशे फल, ग्रह फल का फर्क वगैरह जुदी जगह लिखा गया है) इस शख्स की औरत का हाल इसी तरह ही देख लें जिस तरह कि जनम कुंडली से मर्द का हाल देखते हैं। वर्षफल भी उसी हिसाब और ढंग पर होगा, जिस तरह कि जन्म कुंडली और मर्द का है। फर्क सिर्फ ये है कि शादी से पहले ऊपर की चंदर कुंडली अचानक और सहवन असर दिया करेगी। मगर शादी के दिन या औरत आने पर पूरा पूरा फल देगी जो औरत का

मुफसिल हाल होगा और राशी फल बन कर मदद देगी।

इल्म ज्योतिष में जन्म कुंडली बनाने का तरीका बमूजब इल्म ज्योतिष- सूरज गिना जावेगा जिस राशी नंबर में

नंबर राशी	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
नाम राशि	मेख	बृख	मिथुन	कर्क	सिंघ	कन्या	तुला	बृश्चिक	धनु	मकर	कुंभ	मीन
घंटे -मिनट	1-12	1-36	2-0	2-24	2-24	2-24	2-24	2-24	2-24	2-0	1-36	1-12
मियाद सूरज की राशि की दिन	3 घड़ी	4	5	6	6	6	6	6	6	5	4	3
नाम महीना	वैसाख	ज्येठ	आषाढ	सावन	भादों	आश्विन	कार्तिक	मघर	पौष	माघ	फाल्गुन	चैत

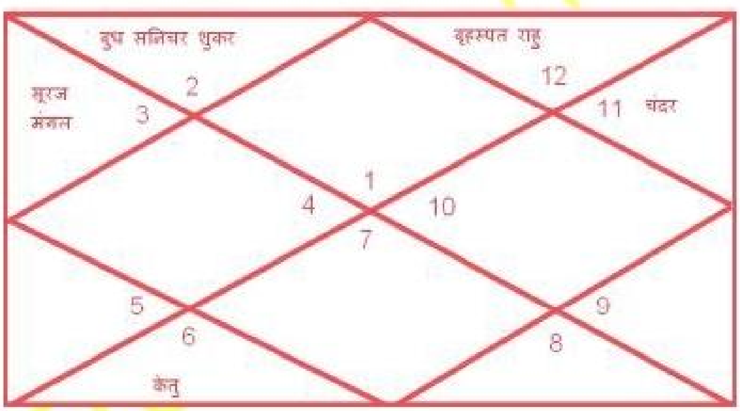
एक घड़ी बराबर होती है 24 मिंट के

राशि नंबर	मियाद घड़ी हर एक राशि में		राशि नंबर	मियाद घड़ी हर एक राशि में
1,12	3		4,9	6
2,11	4		5,8	6
3,10	5		6,7	6

पुन्य काल= असूल वक्त सूरज का राशि मुकर्रर में दाखिल होने का, मेजान कुल – एक दिन मे 60 घड़ी

मिसाल

वक्त पैदाईश सुबह 5 बजे सनिचर वार चैत सम्वत 1992 मुताबिक 14 मार्च सन 1939, सब से पहले कुंडली की शक्ल बनाई मगर इस में कोई भी हिंदसा



वगैरह नहीं लिखा. उर्दु की जंतरी सन 1939 मुसंसिफ पंडित देवी दयाल में लगन सारणी 12 ही महीनों की दी हुई है इस लगन सारणी में हर एक राशि नंबर के सामने वक्त घंटों और मिंटों में लिखा है। यानि हर महीने की हर एक तारीख में वक्त के हिंदसे लिखे हैं। हर एक तारीख में पहली राशि के सामने जो वक्त लिखा है, वह सुबह (AM) सूरज निकलने की तरफ से शुरु होता है। हर राशि के सामने जो वक्त लिखा है,वह वक्त इस राशि के खत्म होने का है। यानि उस राशि का जमाना दिये वक्त पर खत्म हो जायेगा. जिस के बाद उस राशि के बाद की राशि चलेगी।

(2)दिये हुए वक्त पैदाइश के मुताबिक जन्म वक्त की राशि का नंबर 11 या कुंभ मालूम हुआ तो ऊपर की बनाई हुई कुंडली में सब से ऊपर की चौकोर में हिंदसा नंबर 11 लिख दिया और बाकि खानों में बाकि हिंदसे भर दिये यानि 11 से बाद इस के बाद जिस जिस हिंदसा नंबर के साथ जो जो ग्रह जंतरी मे लिखे हैं, वह हूबहू ऐसे के तैसे ही नकल कर देते तो मालूम हुआ के चंदर बाकि रह गया है.

(3) जंतरी में दाखला औकात चंदरमां के खाना में तारीख पैदाईश के सामने राशि का नाम लिखा है और चंदरमां इस राशि में जिस वक्त दाखिल होगा वह वक्त घड़ी पलों में लिखा है जिसको घंटों और मिंटों में हल कर लेंगें।

(4) दाखला औकात चंदरमां के सामने दिये हुये वक्त से मुराद ये है कि सूरज निकलने के बाद चंदरमां इस राशि में दिये हुये वक्त पर जायेगा मगर इस वक्त से पहले नहीं, या इस वक्त के शुरु होने से पहले चंदरमां पहले ही दी हुई राशि में गिना जायेगा.

(5) सूरज निकलने का वक्त भी जंतरी में दिया है. पस तरह से पता लग गया कि कुल कितने बजे के वक्त पर चंदर्मा दी हुई राशी में जायेगा।

(6) इस मिसाल के मुताबिक चंदरमां तो 13 3/34 को ही बृश्चिक राशि में 30 घड़ी – 45 पल दिन चढ़ने पर जा चुका है और 15 3/24 जो 35 घड़ी 19 पल पर बृश्चिक के बाद की राशि में जायेगा. मुख्तसरन 14 3/34 को चंद्रमां बृश्चिक में ही है. इसलिये कुंडली में जिस खाना नंबर में हिंदसा नंबर 8(बृश्चिक) है वहां चंदरमां लिख दिया।

(8) लगन सारनी मद्रास के वक्त की बुनियाद पर बनाई गई है। और मदरास के वक्त के मुताबिक ही सब घड़ियां घंटे चल रहे हैं, और घड़ी टाईम पीस के जरिये ही वक्त पैदाईश देखा गया, इस लिये किसी हालत में भी सूरज उदय के ढंग पर कुंडली बनाने के जो एक तरीका है पड़ने की जरूरत नहीं.

जन्म कुंडली ज्योतिष की: चंदर कुंडली में जिस खाना नंबर में चंदरमां ऊपर के हिसाब से आवे वह खाना नं ऊपर के चौकोर मे लिख कर वही ग्रह के नकल कर देवें। ऊपर की मिसाल की चंदर कुंडली होगी लाल किताब के हिसाब से हालात देखने के लिये वही ज्योतिष वाली जन्म कुंडली सफा 195 वाली होगी * सिर्फ हिंदसा नंबर बदला गया, बाकि वही ग्रह बदस्तूर ज्योतिष वाले, जो जन्म कुंडली में थे, लिखे गये हैं।

वहम (1) इल्म ज्योतिष में कुंडली की बुनियाद व जन्म वक्त का लगन है। जिस का वक्त तकरीबन 1-2 घंटे लगातार एक ही होता है। फर्जन 2 घंटे तक के पैदा शुदा बच्चों के लिये एक ही लगन होगा वह एक लगन के सब ही की किस्मत का जवाब तकरीबन एक ही होगा।

(2) इल्म सामुद्रिक में 12 साला या नाबालग बच्चे की रेखा का ऐतबार नहीं गिनते, ऊपर के दोनो वहमो का जवाब इल्मों की कुंडली के मिल जाने पर दूर होगा लेकिन हो सकता है कि आखीर पर वह कुंडलियां किसी तरह भी न मिलीं, ऐसी हालत में दोनो को गलत समझ लेना मुनासिब म होगा। फर्क ये होगा कि अगर इलम ज्योतिष वाली कुंडली ने सिर्फ इस शख्स का जाति हाल बोला तो हस्त रेखा की कुंडली इस बच्चे की गुजिश्ता पुश्तों का हाल बताएगी यानि अगर उस हस्त रेखा वाली कुंड्ली के जवाब इस शख्स से न मिले तो उस के बाप[1] या बाबे[2] या दादे[3] से जरूर जा मिलेगी। ऐसी हालत में पित्री या मात्री ऋणों के वजह फर्क का सबब होगी। मगर कुंडली गलत न समझी जायेगी। इस लिये ऐसे 'इल्म ज्योतिष वाले टेवे'/हस्त रेखा से के लिये सब से पहले ऋण का उपाय करें। इस फर्क का ये मतलब न लेल लेवें कि दोनोद इल्मों की कुंडलियों पर नजरपानी ही न की जावे कि फर्क क्यों है, लेकिन मकसद ये है कि हर चंदर देखभाल ही लिया जावे। **मर्द का दायां हाथ (सूरज) तदबीर, जाहिरा अपने आप का काम और बायां हाथ(चंदर) तकदीर-बुजुर्गों का हिस्सा गैबी मदद के हालात से मुत्तलका है.** औरत का यही हाल उलट हाथों से माना है। अगर किसी शख्स का दायां और बायां .... दोनो हाथ आपस में फर्क करते हों, तो दोनों हाथों का हाल बिल्कुल जुद जुदा देख कर दोनों के असर का खुलासा लेकर मुकम्मल नतीजा होगा। इस की आम जिंदगी में दायां हाथ ज्यादा असर करेगा। मगर बायें का असर भी अचानक होगा, जो चंदरमां और शुकर के वक्त जरूर असर देगा। नर ग्रह सूरज बृहस्पत और मंगल का फल दायें

हाथ पर ज्यादा होगा। बाकि ग्रह मुख़न्नस (न ही नर और न ही मादा यानी खुसरे ग्रह) हैं।, इसलिए दोनों तरफ यानी दाएं और बाएं के हिसाब वह अपना अपना असर दोनों के वक्त में दे दिया करते हैं। आमतौर पर इँसान दिमाग़ के बाएं तरफ के खानों से काम लेता है जिनका ताल्लूक दाएं हाथ पर होता है और दिमाग़ के दाएं तरफ के खानों से कम ही काम लेता जिनका ताल्लुक बाएं हाथ से है इसलिए अगर कोइ रेखा बाएं हाथ पर ही होवे और दाएं पर ज़ाहिर न हो तो इस रेखा का असर कम ही गिना है क्यों कि इस असर को पैदा करने के लिए इँसान कभी ख्वाबो ख़याल में ही न लाएगा। कुदरती तौर पर असका अगर असर ज़ाहिर हो जावे तो मुमकिन है।

कियाफा की मदद

हस्त रेखा से जन्म कुण्डली बनाने का ढ़ंग जब कोई रेखा एक बुर्ज से दूसरे बुर्ज में चली जावे, तो जिस बुर्ज से निकली थी, उस तरफ के बुर्ज का घर कुण्डली में वह होगा जहां जाकर वह रेखा खत्म हुई। यानी अगर चंद्र से सनीचर को रेखा होवे तो कुण्डली में सनीचर् को खाना नम्बर 4 मिलेगा और चंद्र को खाना नमबर नम्बर 10 मिलेगा बाकि जिस ग्रह का निशान और जिस बुर्ज पर पाया जावे, वह ग्रह उसी नम्बर पर कुण्डली में होगा। यानी अगर चौकौर [] सनीचर के बुर्ज पर हो तो मंगल खाना नम्बर 10 में होगा वग़ैरह वग़ैरह। हाथ में अगर कोई रेखा(या निशान) न ही होवे तो बुर्जो की ऊंचाई नीचाई से ही कुण्डली मुकम्मल होगी। इसी तरह से बुर्जो के घर और निशान और तरतीब हमेशा के लिए मुक़र्र है। जिस बुर्ज का निशान जहां की पाया जावे, उसी हिसाब से ग्रहों को कुण्डली में भर लिया जावेगा। नीचा बुर्ज और वह ग्रह जिसका निशान न मिले नीच फल और नीच राशि का होगा और अगर बुर्ज़ कायम हो और निशान उसका न मिले तो अपने घर को मालिक गिना जाएगा। बुर्ज की मुतअल्लिका रेखा से शक दूर होगा।



हाथ पर जन्म कुण्डली के खाने (1) हर ग्रह की मुर्करर रेखा भी कुण्डली का खाना नम्बर हो जाती है (2) तर्जनी और मध्यमा के दरमियान 'अ' खाना नम्बर 11 सनीचर का हैडकवार्टर **लफ़ज ब की जगह खाना नम्बर 8 होता है।**

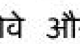
बृहस्पत

किस्मत रेखा की जड़ चाहार शाख़ा खत हो। सूरज के बुर्ज पर बतरफ़ बुध एक चक्कर हो बृहस्पत का खास अपना निशान या दोनों हाथों को इकट्ठा गिनकर उंगलियों पर तादाद में	कुण्डली का खाना नम्बर
सिर्फ़ एक संख या एक चक्कर एक सीधा खत बृहस्पत के अपने बुर्ज पर पाया जावे तो बृहस्पत को मिलेगा कुण्डली का खाना नम्बर	1
2 सदफ़ या बृहस्पत के बुर्ज पर 2 सीधे खत	2
3 सदफ़ 7 चक्कर या 7 सीधे खत या गृहस्त रेखा बृहस्पत के बुर्ज पर	3
4 सदफ़ या 4 संख या 4 खत या 2 चक्कर चंद्र पर संख होवे सिर्फ एक चंद्र रेखा बृहस्पत के बुर्ज पर खत्म होवे।	4
5 सदफ़ 5 चक्कर या 5 खत तमाम उंगलियों पर हों या सेहत रेखा नीचे जाकर किस्मत के शुरू हिस्सा में मिल जावे। यानी कलाई से किस्मत रेखा निकलकर सेहत रेखा से मिल जावे।	5
6 चक्कर या किस्मत रेखा कि जड़ में केतू का निशान हो या बृहस्पत से शाख खाना नम्बर 6 हाथ की मुस्ततील में खत्म होवे।	6
3 चक्कर 3 संख या 3 सदफ़ 3 खत, 6 खत 4 चक्कर 5 संख या शुकर बृहस्पत होवे। यानी या तो बृहस्पत का बुर्ज बहुत बड़ा होवे या नरम हाथ का बृहस्पत होवे। औलाद रेखा शादी रेखा को काटे। किस्मत रेखा की जड़ पर बुध का दायरा O हो। शुकर के बुर्ज पर भाइयों की रेखा लम्बी लम्बी और टेढी होवे। सिर रेखा उम्र रेखा से जुदी होकर बृहस्पत के बुर्ज का रूख करे।	7
2 संख 8 सीधे खत रेखा मानिंद अलिफ़ हो। 8 चक्कर या 11 चक्कर जब 6 उंगलिया हों। किस्मत रेखा सूरज रेखा से न मिले। बृहस्पत का बुर्ज बिल्कुल न होवे। और हाथ पर Δ हो। किस्मत रेखा या दिल रेखा दो शाखी हो < किस्मत रेखा की जड़ पर Δ हो	8
किस्मत रेखा सीधी डंडे की तरह शुरू होकर खड़ी होवे।	9
सूरज के बुर्ज पर बरतफ़ बुध एक सदफ़ हो। 10 चक्कर हो या उम्र रेखा चंद्र पर खत्म हो यानि पितृ रेखा ही हो और ऊर्ध रेखा पाई जावे।	10

बृहस्पत और सनीचर के बुर्ज दो शाखी से मिले हों 9 चक्कर या सिर की श्रेष्ठ रेखा होवे।	11
3 खत 6 संख 12 चक्कर (जब उंगलियां 6 हों) किस्मत रेखा की जड़ पर राहू का निशान हो या मच्छ रेखा. शुकर के बुर्ज पर या शुकर व चंद्र दोनों बुर्जो के दरमियान मुंह उपर को किए होवे और ऊर्ध रेखा या उमर उसके मुंह में हो।	12

नोटः- उंगली की पोरियों से लिया हुआ बुहस्पत सिर्फ़ राशि नम्बर का होगा। बुर्ज नम्बर का न होगा। हाथ की हथेली से लिया हुआ बुहस्पत बुर्जो के खाना नम्बर का होगा बशर्ते कि बृहस्पत के निशान चक्कर संख सदफ से न लिया हुआ होवे क्योंकि ऐसे निशानों से लिया हुआ बृहस्पत भी राशि नम्बर को होता है सिर्फ़ बृहस्पत की रेखा या बृहस्पत का खास निशान  इद्रया से लिया बृहस्पत बुर्ज नम्बर का होगा।

सूरज का ग्रह

शुकर बुध दोनों सूरज की सेहत रेखा से मिल जावें और सूरज रेखा बज़ाते खुद दुरूस्त हालत में बुर्ज नम्बर 1 में पाई जावे। सूरज का सितारा सूरज के अपने बुर्ज पर बतरफ बुध हो। सूरज का बुर्ज कुण्डली की खाना नम्बर 1 है मगर सूरज खाना नम्बर 1 में तब ही होगा जबकि सूरज पर बुध की तरफ सूरज का सितारा कायम हो वरना सूरज खाना नम्बर 5 होगा। (सूरज रेखा या सेहत रेखा खाना नम्बर 11 के आखिर तक)	कुण्डली का खाना नम्बर 1
किस्मत रेखा या सूरज रेखा जब बृहस्पत का रूख करे मगर सनीचर के बुर्ज पर न हों	2
सूरज रेखा से शाख मंगल नेक को।	3
सूरज के बुर्ज से शाख चंद्र के बुर्ज को मगर मंगल बद का ताल्लूक न हो। चंद्र और सूरज के बुर्ज के दरमियान रेखा दोनों बुर्जो को मिलाती मालूम होवे मगर दरअसल मिलावे न। शराफ़त रेखा जब दरमियान से ऊपर से ऊपर को झुकी हो  ।सूरज रेखा दिल रेखा पर खत्म होवे।	4
सूरज रेखा बिल्कुल सीधी सूरज के बुर्ज पर ही हो और सूरज के अपने घर में ही मालूम होवे और सूरज का बुर्ज कायम हो। सेहत रेखा बुध से	5

चलकर हथेली में खाना नमबर 11 तक खत्म होवे	
सूरज रेखा हाथ की बड़ी मुसततील में खत्म होवे।	6
शुकर के बुर्ज से शाख सूरज के बुर्ज को, शुकर का पंतग हथेली पर कायम हो (खाना नम्बर 7 में जो बुध का भी घर है, बुध जुदा असर नही करता।)	7
सूरज के बुर्ज से शाख मंगल बद को, किस्मत रेखा न होवे सूरज रेखा न होवे या किस्मत रेखा और सूरज रेखा दोनों बाहम न मिले।	8
किस्मत रेखा की जड़ पर चहार शाखा खत  हो।	9
सूरज रेखा सनीचर के बुर्ज पर हो।	10
सूरज रेखा हथेली पर खाना नम्बर 11 बचत में खत्म होवे	11
सूरज रेखा हथेली पर खाना नम्बर 12 खर्च में खत्म होवे।	12
चंद्र का ग्रह	
चंद्र में सूरज को रेखा	1
मुहब्बत रेखा किस्मत रेखा चंद्र से शुरू होकर बृहस्पत पर खत्म होवे।	2
मंगल नेक से शाख चंद्र को हो या चंद्र रेखा मंगल नेक के बुर्ज पर खत्म होवे	3
धन रेखा जब चंद्र से शुरू हो या सिर रेखा के नीचे Δ हों	4
दिल रेखा सूरज के बुर्ज की जड़ तक ही खत्म होवे, चंद्र के बुर्ज से शाख सेहत रेखा में जा मिले।	5
चंद्र रेखा जब सिर रेखा को अबूर करके हाथ की बड़ी मुस्ततील में खत्म होवे।	6
दिल रेखा जब कनिष्का की जड़ या बुध के बुर्ज पर ही खत्म हो जावे। **चंद्र रेखा सिर रेखा से मिलकर खत्म हो जावे तो उम्र खत्म मालूम होगी,** ऐसी हालत में फ़कीरी रेखा, नशाबाजी की रेखा शराफ़त रेखा सिर और दिल रेखा मिल जावें। सेहत रेखा दिल रेखा को काटे।	7
सिर रेखा की ऊपर Δ हो मंगल बद से चंद्र को रेखा पितृ रेखा या किस्मत रेखा चंद्र के बुर्ज पर Δ सी बना दें। उम्र रेखा या किस्मत दो शाखी < Λ हो जावें। कलाइ की तरफ खाना नम्बर 9 के करीब बाहम मिलकर।	8

चंद्र का ग्रह जारी	कुण्डली का ख़ाना नम्बर
किस्मत रेखा चंद्र के बुर्ज से कलाई पर शुरू हो।	9
दिल रेखा मद्धमा की जड़ सनीचर के बुर्ज तक हो। उम्र रेखा दिल रेखा से मिल जावे। सिर उम्र और दिल रेखा तीनों मिल जावें।	10
चंद्र या दिल रेखा बृहस्पत को जा निकले मगर बृहस्पत तक न हो या हथेली पर खाना नम्बर 11 बचत में ही खत्म हो जावे।	11
चंद्र रेखा हथेली पर खाना नम्बर 12 खर्च में खत्म हो जावे।	12
शुकर का ग्रह	
शुकर के बुर्ज पर अगूंठे की जड़ में सूरज का सितारा हो। शुकर से शाख सूरज के बुर्ज को हो। शुकर का पतंग पूरा हो।	1
अकेली शुकर रेखा बृहस्पत के बुर्ज पर वाकै हो। मुहब्बत रेखा औलाद रेखा शादी रेखा की काटे। भाइयों की रेखा लम्बी लम्बी और टेढ़ी बृहस्पत को हो।	2
गृहस्त रेखा मंगल नेक से शुकर के बुर्ज में अगूंठे की जड़ में झुक जावे। धन रेखा शुकर के बुर्ज से शुरू होकर मंगल नेक पर खत्म हो होवे।	3
फ़कीरी रेखा, नशा रेखा, शराफ़त रेखा, सीधी लकीर लेटी हुई चंद्र शुकर को मिलावे।	4
सेहत रेखा या सूरज की तरक्की रेखा शुकर से चलकर बुध पर खत्म होवे।	5
सेहत रेखा यो सूरज की तरक्की रेखा जब शुकर से चल कर हथेली की मुस्ततील खाना नम्बर 6 में ख़त्म होवे। शुकर पर राहु का निशान हो।	6
सेहत रेखा बुध से चलकर शुकर के बुर्ज की जड़ में खत्म होवे या शुकर के बुर्ज पर बुध का दायरा o हों।	7
शुकर में मंगल बद को शाख	8
धनु राशि से आकर कोई खत शादी रेखा को काट देवे।	9
शुकर का पतंग यो शुककर रेखा सनीचर के बुर्ज पर मद्धमा की जड़ में वाकै हो।	10

शुकर का ग्रह	कुण्डली का ख़ाना नम्बर
शुकर से शाख हथेली पर खाना नम्बर 11 बचत में खत्म होवे	11
शुकर से शाख हथेली पर खाना नम्बर 12 खर्च में खत्म होवे। या हाथ में मच्छ रेखा हो।	12
मंगल नेक का ग्रह	
सुरज के बुर्ज पर □ हो। मंगल नेक से शाख सूरज के बुर्ज में चली जावे।	1
गृहस्त रेखा बृहस्पत के बुर्ज में जा निकले	2
मंगल नेक पर चौकोर या गृहस्त रेखा मंगल नेक के अंदर अंदर खत्म हो।	3
श्रेष्ठ धन रेखा या पितृ रेखा चंद्र से शुरू होकर मंगल नेक पर खत्म होवे।	4
मंगल नेक से शाख जब सेहत रेखा को काटे।	5
मंगल नेक से शाख जब मुस्ततील खाना नम्बर 6 में खत्म हो।	6
मंगल नेक से गृहस्त रेखा जब शुकर में खत्म हो। मंगल नेक से शाख बुध में जा निकले।	7
मंगल नेक से शाख मंगल बद हो।	8
किस्मत रेखा की जड़ □में हो।	9
गृहस्त रेखा सनीचर पर खत्म होवे।	10
मंगल नेक से शाख खाना नम्बर 11 बचत में होवें।	11
मंगल नेक से शाख खाना नम्बर 12 खर्च में होवें।	12
मंगल बद का ग्रह	
मंगल बद से शाख सूरज के बुर्ज को।	1
मंगल बद से शाख बृहस्पत के बुर्ज को।	2
मंगल बद से शाख मंगल नेक को।	3
मंगल बद से शाख चंद्र को।	4
मंगल बद से शाख सेहत रेखा को काटे या कलाई रेखा हथेली के अंदर घुस जावे	5
मंगल बद से शाख नम्बर 6 मुस्तलील में हो।	6

मंगल बद का ग्रह	कुण्डली का खाना नम्बर
शुकर से शाख मंगल बद में या सिर रेखा मंगल बद में या सिर रेखा आखीर पर दो शाखी	7
सिर रेखा के ऊपर Δ होवे।	8
किस्मत रेखा की जड़ में Δ हो या < V होवे	9
उम्र रेखा दो शाखी < Λ मंगल बद से सनीचर के बुर्ज को रेखा चले	10
मंगल बद से शाख खाना नम्बर 11 बचत में होवे।	11
मंगल बद से शाख खाना नम्बर 12 खर्च में होवे। काग़ रेखा मंगल बद की पूरी निशानी होगी।	12
बुध का ग्रह	
सूरज के बुर्ज से बुध के बुर्ज को रेखा।	1
सिर रेखा जब उम्र रेखा से जुदी होकर बृहस्पत के बुर्ज का रूख करे।	2
सिर रेखा मंगल नेक में खत्म होवे।	3
दिल रेखा और सिर रेखा मिल जावें। सेहत रेखा दिल रेखा को काटें सिर रेखा झुककर चंद्र के बुर्ज में खत्म हावे	4
सेहत या तरक्की रेखा कायम हो। ज़रूरी नहीं कि शुकर के बुर्ज की जड़ तक हावे। सही हालत यह होगी कि हथेली में खाना नम्बर 11 की जड़ तक ही हो।	5
बुध से शुकर तक सेहत रेखा कायम हो सिर की श्रेष्ठ रेखा मौजूद हावे।	6
सिर रेखा की लम्बाई सेहत रेखा की हद तक होवे शादी रेखा बुध पर तादाद में दो = हों	7
सिर रेखा मंगल बद में खत्म होवे या आखीर पर दो शाखी होवे	8
धनु राशि में शाख बुध पर या किस्मत रेखा की जड़ में O दायरा हो	9
बुध का दायरा सनीचर के बुर्ज पर होवे।	10
बुध से शाख खाना नम्बर 11 बचत में होवे।	11
बुध से शाख खाना नम्बर 12 खर्च में होवे।	12

सनीचर का ग्रह	
सनीचर का ग्रह	कुण्डली का ख़ाना नंबर
सूरज का सितारा सनीचर के बुर्ज पर या सूरज के बुर्ज पर बतरफ़ सनीचर हो। या सनीचर से शाख सूरज के बुर्ज को चली जावें।	1
सनीचर रेखा बृहस्पत के बुर्ज से शुरू होवे।	2
सनीचर से शाख उम्र रेखा को काट कर मंगल नेक में गृहस्त रेखा सनीचर के बुर्ज पर।	3
सनीचर रेखा और दिल रेखा मिल जावे।	4
सनीचर से शाख सेहत रेखा को काटे।	5
सनीचर की शाख मुस्ततील में जावे।	6
सनीचर रेखा और सिर रेखा मिली होवे या सनीचर से शाख सिर रेखा पर या शुकर के बुर्ज में होवे।	7
मंगल बद से शाख सनीचर में, सनीचर का हैडकवार्टर खाना नबर 8 होता है।	8
किस्मत रेखा की जड़ पर + त्रिशुल हो। ऊर्ध रेखा होवे।	9
सनीचर के बुर्ज पर अपनी रेखा।	10 अच्छा
बृहस्पत सनीचर के बुर्जों की दरमियानी जगह खाना नम्बर 11 होगा।	11 **बुरा**
मच्छ रेखा जब उम्र रेखा या ऊर्ध रेखा मछली कें मुंह पर होवे।	12

राहु केतु: इन ग्रहो की कोई रेखा मुकर्रर नहीं हैं सिर्फ निशान मुकर्रर हैं।जहां निशान मिले वही घर कुण्डली का होगा और अगर निशान भी न हों तो दोनों ग्रह अपने अपने घर के होंगे। यानी राहु खाना नम्बर 12 में होगा, और केतु खाना नम्बर 6 में होगा। मच्छ रेखा के वक्त केतू ऊंच घरों में यानी राहु नम्बर 6-3 केतु नम्बर 12-9 ऊंच घर काग़ रेखा के वक्त यह दोनों ग्रह नीच घरों के होंगे यानी

नीच घर- राहु 9-12, केतु 6-3

बँद मुट्ठी व कुण्डली का बाहमी ताल्लुक

बुध (आकाश) और बृहस्पत (हवा) के गांठ लगाकर कर बांध लेने वाली चीज़ को बच्चा गिना तो बच्चे की हर गांठ से नौ ग्रहों कि मिलाई हुई चमक इंसानी किस्मत का खज़ाना हुई और इन सब गांठों से गांठा हुआ

सामुद्रिक का इल्म सब भेदों के खोलने वाला मुकर्रर हुआ जिसमें बँद मुट्ठी को ग्रह कुण्डली माना गया तो (यह कुण्डली तमाम ग्रहों के अपने अपने ऊंच होने के घरों की बुनियाद पर रखी गई है) बँद मुट्ठी का अंदर या बच्चा का साथ लाया हुआ अपनी किस्मत का खज़ाना (तमाम ही नर ग्रह) जवानी का हाल देखने के लिए खाना नम्बर 1-7-4-10 होंगे। खुद अपना बचपन और जन्म से पहले वाल्दैन की हालत 9-11-12 होंगे। औलाद के जन्म दिन से अपना बुढापा मरने पर उसके बाकि रहे हुओं का हाल खाना नम्बर 2-3-5-6 होंगे। मौत बिमारी मंदा ज़माना खाना नम्बर 8 मारग अस्थान होगा।जो आगे की बजाए पीछे को देखने वाला मौत निमाणी का फंदा है।

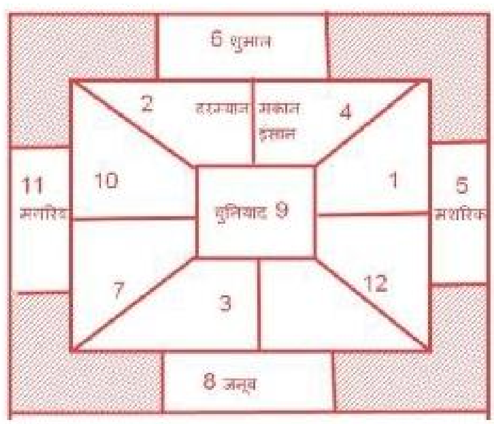
अ   100 फीसदी दृष्टि के खाने 1-7-4-10 होंगे साथ लाए हुए भरे खजाने।

ब   50 फ़ीसदी दृष्टि के खाने 3-11-5-9 होंगे दूसरों की मदद से पैदा करदा हालत

ज   25 फ़ीसदी दृष्टि के खाने 2-6-12 होंगे रिश्तेदारों से ली हुई चीजें।

ग्रह कुण्डली की मकान के हिसाब से दुरूस्ती की जांचः कुण्डली के खाना नम्बर 1 से चल कर अगर नौवें को जावे या मकान से बाहर को निकलें तो जिस तरफ़ दायां हाथ होगा इस तरफ मकान के तमाम ग्रह जो खाना नम्बर 1 से 8 तक हों अपना सबूत देंगे। इसी तरह अगर 12 नम्बर खाने से अपने आपको खाना नम्बर 9 की तरफ आते हुए गिनें या मकान में बाहर से आकर दाखिल होने लगें तो खाना 12 से 12-11-10 के घरों के ग्रह दांए तरफ मकान के सबूत देंगे।

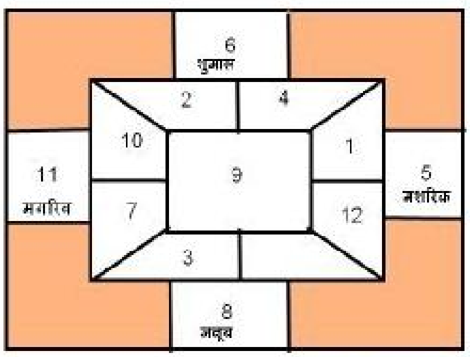
मकान से टेवे की दूरूस्तीः



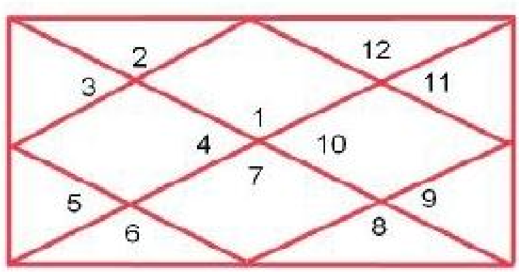
लाल किताब के मुताबिक जब खाना नम्बर 1 लगन को देकर कुण्डली तैयार हो जावे तो मकान कुण्डली में तमाम ग्रहों को नकल कर लेवें। अब मकान कुण्डली में तमाम तरफें शुमाल, जनूब मशरि़क मग़रिब वग़ैरह मुकर्रर है। फ़र्जन जन्म कुण्डली में सूरज खाना नम्बर 9

में हो तो मकान कुण्डली में सूरज कुण्डली के वस्त या मरकज में लिखा जायेगा। जिसकी दुरूस्ती के लिए उस के जद्दी मकान के मरकज़ मे खुला सेहन या सूरज की रोशनी पड़ती होगी। जन्म कुण्डली में शुकर नम्बर 5 का हो तो मकान की कुण्डली में शुकर की मशरिक की दीवार होगी जो कच्ची मिट्टी की होगी या गाय ताल्लुक मशरिकी दीवार के साथ होगा वग़ैरह वग़ैरह। सब ग्रहों की चीज़े होंगी। बचाओ सिर्फ़ यह है कि टेवे में मंदे ग्रह की चीज़ मकान में उस खाना नम्बर (बमूजिब मकान कुण्डली) कायम न होने देवे जिसमें कि वह जन्म कुंडली में है। **एक बाप के कई बेटे मगर सबका जद्दी मकान एक ही हो, तो ज़रूरी नहीं कि हर एक लड़के के टेवे से उनकी मकान कुण्डली मिलती हो।**

मकान की हालत मालूम होने से टेवा बनाने का ढ़ंग



पहले अपने मकान कुण्डली की शकल बना लेवें। अब देखें कि उस घर में कहां कहां ग्रह बैठे है. **बृहस्पतः** हवाई रास्ते दरवाज़े या सामान बृहस्पत। **सूरजः**रोशनी धूप राज हकूमत राजदरबार से मुतअलिका सामान या चीज़े। **चंद्रः** चंद्र की चीज़े जानदार या बेजान। **शुकरः** कच्ची दीवार, गाय या दीगर शुकर की चीजे। **मंगलः** खाने पीने की जगह या मंगल का सामान या जानदार चीज़े। **बुधः** बुध की जानदार या बेजान चीज़े। **सनीचरः** लकड़ियों की जगह वरना सामान सनीचर जिस जगह हो ख्वाह जानदार ख्वाह बेजान। **राहूः** मकान की नाली गंदा पानी ग़र्की, अगर वह न हो तो धुएं की जगह। **केतुः** रोशन दान अगर ज्यादा तरफ़ हों तो रोशनदान सब से कम तादाद में जिस कमरे मे हो इस जगह केतू होगा। अगर जानदार और बेजान चीजें दोनो ही मौजूद होवें तो जानदार चीज़ों की जगह को बुनियाद रखें। जिस ग्रह की कोई चीज़ न हो वह ग्रह अपने पक्के घर का होगा। ऊपर के ढंग पर जब मकान कुण्डली बन जावे तो आम कुण्डली में नकल कर लें।

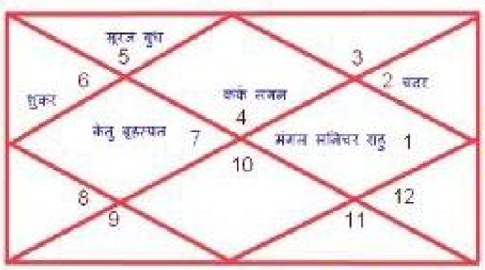
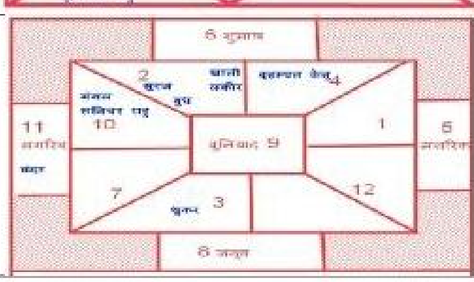
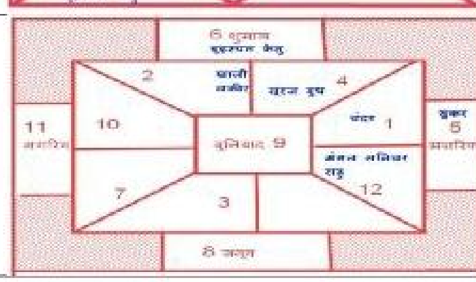


कुण्डली मुश्तरका खानदान:- सूरज- जहां कि खुद टेवे वाले की अपनी कुण्डली में हो

मुश्तरका असर 7 पुश्त तक होगा 3 ऊपर 3 नीचे दरमियान में सूरज खुद टेवे वाला	बृहस्पत-बाबा चंद्र-माता शुकर- स्त्री मंगल-बड़ा भाई बुध-बहन	सनीचर--हम उम्र मगर रिश्ता में फ़र्क राहु-ससूराल केतु- औलाद लड़का	जहां कि बाबे की कुण्डली में बृहस्पत लिखा हो उसी घर में टेवे वाले की कुण्डली में बृहस्पत लिखे इसी तरह सब रिश्तेदार, जो रिश्तेदार हों या मर चुके हों, इन रिश्तेदारों के मुतल्लिका ग्रह टेवे वाले के अपने ही टेवे के बदस्तूर लेवे।

कुण्डली की जांच

एक शख्स ने फरमाया कि 3 भादों संवत् 1968 मुताबिक 18 अगस्त 1911 को शायद सूरज निकलने से पहले 3 या 5 वाले के दरमियान और शायद सूरज छूपने के बाद 3 या 5 घंटे गुजरे हुए अरसा के अंदर अंदर मेरा जन्म हूआ था। माता पिता गुज़र गए हैं और आज 39 साला उम्र गुज़र रही है। कोई पक्की शहादत मौजूद नहीं है सिर्फ़ हाथ को खाका दे सकता हुं। या अपनी जद्दी घर घाट का हाल जानता हूं। कभी कभी अपनी माता से सिर्फ इतना सुना करता था कि मेरा जन्म श्री कृष्ण जी महाराज के जन्म वक्त से मिलता जुलता है।

सुबह के 3 और 5 बजे के दरमियान (कर्क लगन) 3-1 से 5-19 तक	सुबह के 3-1 और 5 बजे के दरमियान(कर्क लगन)3-1 ता 5-19 पढने के लिए और फलादेश देखने के लिए।
	
रात के 11-1/2 बजे 3 घंटे 7 बजे के बाद 12 बजे और 5 घंटे गुजरने पर 12 या 12.10 बजे बृख लगन	18 अगस्त को तुलुअ ए आफताब 6 बजे और गुरुब 7-12 बजे
	
	

उसी का ग्रह चाल

मौजूदा ज्योतिष के मुताबिक बनी हुई जन्म कुण्डलीयों में रखे हूए हिंदसे मिटा दिए गए और फिर लगन के घर को दोबारा हिँदसा नम्बर 1 देकर कुण्डलियों में तरतीबवार एक दो तीन और आखीर जो नम्बर 12 लिखे गए तो यह नई जन्म कुण्डलियां फलादेश देखने के काबिल हो गई। मकान कुण्डलियों में सब ग्रहों को हूबहू इसी हिंदसे नंबर पर नक्ल किया गया. जो बदल कर लिखे जाने के बाद की जन्म कुंडलियों में मुकर्रर हूए मकान में समत पहले ही मुकर्रर है। हर एक ग्रह कि मुतअल्लिका आसियां, कारोबार या रिश्तेदार मुतअल्लिका हर ग्रह भी मुकर्रर हैं। इसलिए ऊपर की कुण्डलियों के मुताबिक ग्रह चाल नीचे लिखी हुई होगी।

नाम ग्रह	सुबह 3-5 बजे वाली कुण्डली के मुताबिक़.		रात को 11½ बजे वाली कुण्डली के मुताबिक	
	किस घर में	मकान के किस तरफ	किस घर में	मकान के किस तरफ़
सूरज बुध	2	शुमाल मग़रिब में	4	शुमाल मशरिक में
शुकर	3	दक्खन में	5	मशरिक की दीवार में
बृहस्पत केतु	4	शुमाल मशरिक में	6	शुमाली दीवार में
मंगल राहु सनीचर	10	मगरिब (मकान के अंदर)	12	जनूब मशरिक. में
चंद्र	11	मगरिबी दीवार	1	मशरिक. (मकान के अंदर)

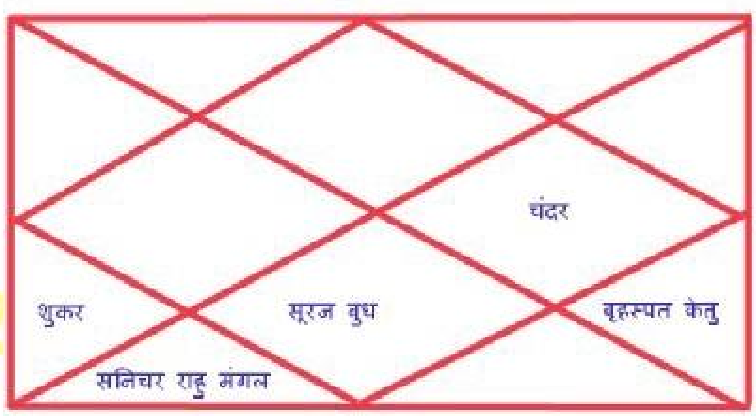
ग्रह स्पष्टी (ग्रहों की दुरस्ती)

ग्रह चाल के मुताबिक क्या होना चाहिए	मगर दरअसल ठीक ठीक क्या है
सूरज बुध नम्बर 2- खुद कमाई (नौकरी या वजीफा वग़ैरह) 25 साला उम्र से शुरू हुई।	वजीफ़ा अगस्त 1935 में मिला था और तारीख शयद 17-18 अगस्त थी 20-22 अगस्त बहरहाल 18 अगस्त जन्म दिन के लगभग थी।

ग्रह चाल के मुताबिक क्या होना चाहिए।	मगर दरअसल ठीक ठीक क्या है
सूरज बुध नम्बर 4 - खुद कमाई 24 साल उम्र से शुरू हुई।	
बुध अकेला नम्बर 2 -पिता की उम्र 16 से 21 तक शक्की	पिता 10 साला उम्र में और माता 20 साला उम्र में गुज़रे।
बुध अकेला नम्बर4- माता की उम्र 16 से 21 तक शक्की	
शुकर नम्बर 3-मकान कच्चा होगा जनूब की तरफ़ का हिस्सा। शुकर नम्बर 5-मकान कच्चा होगा मशरिक की तरफ़ का हिस्सा।	मकान सारे का सारा कच्चा था।
बृहस्पत केतु नम्बर 4- धरम अस्थान शुमाल मशरिक मे होगा।	शुमाल और शुमाल मशरिफ़ के दरमियान धरम मंदिर है। पिता जब तक था शाहाना ठाठ था।
बृहस्पत केतु नम्बर 6- धरम अस्थान शुमाल में।	औलाद 29 वें साल कायम हूई। लड़की पैदा हुई मगर लड़का नहीं और उसी वक्त के लगभग बहन के यहां भी औलाद हुई।
केतु अकेला नम्बर 4-औलाद 29 साला उम्र में कायम।	
केतु अकेला नम्बर 6- औलाद के दिन बहन के घर भी औलाद	
मंगल सनीचर राहू नम्बर 10- बड़ा भाई, चचा ससुर तीनों ही गवर्नमेंट के घर के ताल्लुकदार मानिंद राजा राय साहब राय बहादुर होवे।	दो सरकार के घर में राय साहब, राय बहादुर और तीसरा भारी सरकारी ठेकेदार था। खुद मय भाई बाल बच्चे की बरकत का मालिक मगर ससुर और चचा दोनों लावल्द।
चंद्र नम्बर 11- औलाद माता के मरने के बाद कायम होगी और माता शादी	शादी ही माता के मरने के बाद हुई। ससुराल लावल्द। औरत का भाई कोई नहीं।

ग्रह चाल के मुताबिक क्या होना चाहिए	मगर दरअसल ठीक ठीक क्या है।
से पहले चल बसेगी। स्त्री के भाई (3) ज़रूर होगें	
चंद्र नम्बर 1 - **मकान के मशरिक में कुआं हो नम्बर-2 खाली, जो खु,श्क होगा।**	कुआं मशारिक में मौजद् है जो पानी से भरा रहता
मंगल सनीचर राहु नम्बर 10- अगर शराब का आदि हो तो 34 साल उमर में मैंदाने जंग में मुर्दों क दरमियान मानिंद मुर्दा या बिजली सांप का वाकया भी हो सकता है	कभी कभी मामूली शराब बतौर ज़ायका और शुग़ालिया 34 साल उमर में मैदाने जंग में 7 गोलियों से जख्मी होकर मुर्दों की लाशों में से उठाकर लाया गया अगुठां (मस्नूई शुकर) और बाजू (मंगल) दोनों ही कट गए मगर कटे अगुंठे और कटे बाजू का हाथ पूरा काम करता है।
बृहस्पत केतू नम्बर 9-घर में पूजा अस्थान जान बख्शवा गया। लड़का मौजूद न था। स्त्री (चलन उत्तम) मदद देगी।	दरअसल घर मे एक ख़ास जगह पूजा अस्थान (दिया जलाने की जगह पूजा की) मुकर्रर थी जो हमे हमेशा से मानी गई, अपनी औरत के बगैर दूसरी औरत से कोई ताल्लूक नहीं।

34 साला उम्र बमूज़िब 1 वर्ष बृख लगन



कर्क लगन वाला टेवा दुरुस्त माना गया

हाथ पर बृहस्पत की रेखा खाना नम्बर 4 में हैग। बाकि सब बाते दोनों तरफ़ ही मिलती जुलती एक जैसी शक्की हालत बता रही हैं।

फ़रमान नम्बर 13

बर्षफल

बर्षफल: किस्मत का हाल सालवार देखने के लिए यह ज़रूरी जुज़ है। जब जन्म वक्त दिन माह पक्की उम्र गुजिशता मालूम न हो तो सामुद्रिक में वाकिया की बुनियाद पर बनाया हुआ बर्षफल ज्यादा तसल्लीबख्श होगा। वाकयात से मुराद खुशी या ग़मी के पक्के वाकिया से होती है मसलन शादी का महीना दिन और साल किसी हकीकी खून के ताल्लूकदार की पैदाइश या मौत नर ग्रहों, स्त्री ग्रहों या मुख्नस ग्रहों के मुतअल्लिका असर में से किसी चीज़ का पक्का वाकिया, जन्म दिन (तारीख पैदाइश नहीं इतवार सोमवार वगैरह) इँसान किस ग्रह का है, वाला ग्रह या इसका जद्दी या खुद साख्ता मकान किस ग्रह का है-वाला ग्रह जन्म कुण्डली में लगन के खाना का ग्रह और अगर लगन का खाना खाली हो तो जन्म राशि के घर का मालिक ग्रह, ग़र्ज़ोकि जो भी सही सही और दुरूस्त व पक्का वाकया मिल सके ले लेंवे। फर्ज़न किसी शख्स की शादी का वाकया पक्का मिल गया है। पहली शादी का (अगर कई दफ़ा शादी हो तो पहली शादी का दिन ही गिनने के काबिल होगा) जो उसकी 17 साला उम्र में हुई। यानि 17 साला उम्र से शुक्र शुरू हो गया। अगर शादी का साल महीना दिन मालूम न हो और पहली शादी की औरत की मौत का दिन महीना या साल ही मालूम होवे तो औरत के गुज़र जाने या शुकर के खत्म होने का साल होगा। हर एक ग्रह की दी हुई आम मियाद में शुकर का अर्सा 3 साल दिया है। 17 साला उम्र में शादी हुई तो उसका शुकर का ग्रह 17 साल से शुरू हो गया मानकर 3 साल 19 साल उम्र के आख़िर तक रहा। अगर 17 साला उमर में औरत मर गई तो 17वे साल या औरत के मरने के दिन शुकर खत्म हुआ या औरत के मौत के दिन से 3 साल पहले से चल कर मरने के दिन तक शुकर का दौरा था। बर्षफल बनाने के लिए ग्रहों का दौरा यानि कौन ग्रह किस ग्रह से पहले या बाद अपना असर देगा तरतीबवार दिया है, यानि सबसे पहले बृहस्पत के बाद सूरज के बाद चंद्र वग़ैरह आख़िरी नौवां केतु का नम्बर है। ग्रहों की आम मियाद के सालों में तादाद और तरतीब भी दर्ज है। सारे ही ग्रहों की कुल मियाद का मजमूआ 35 साला उम्र का 1 चक्र होगा। मसलन किसी शख्स का शुकर शुरु हुआ 17 साला उम्र में तो बर्षफल होगा।

6 साल बृहस्पत था	2 साल सूरज था	1 साल चंद्र था	3 साल शुकर हो	6 साल मंगल होगा	2 साल बुध होगा	6 साल सनीचर होगा	6 साल राहु होगा	3 साल केतू होगा	दो हिंदसे शामिल गिनकर हर ग्रह की मियाद होगी
							1 ता 4	5 ता 7	
8-13	14-15	16	17-19	20-25	26-27	28-33	34-39	40-42	
43-48	49-50	51	52-54	55-60	61-62	63-68	69-74	75-77	
78-83	84-85	86	87-89	90-95	96-97	98-103	104-109	110-112	
113-118	119-120	जितने साल तक उम्र चलती या हो जाने वाली होवे या लिख देंवे							

पहचानःकि बर्षफल दुरूस्त है या ग़लत, उम्र के शुरू होने का पहला साल या **हिंदसा नम्बर 1 जिस खाना में हो वहां देखे कि पेशानी पर कौन से ग्रह का नाम लिखा है। दुरूस्त हालत में हिंदसा नम्बर 1 के खाने वाला ग्रह इस कुण्डली के खाना नम्बर 9 या खाना नम्बर 1 में होगा, या उस शख्स का जद्दी मकान हिंदसा नम्बर 1 के खाना के ग्रहों से मिलता या वह शख्स खुद उस ग्रह का होगा।** जन्म के दिन का ग्रह (इतवार के लिए सूरज, सोमवार के लिए चंद्र वगैरह) भी हिंदसा नम्बर 1 के ग्रह हो सकता है। इस जांच के लिए मंगल और सनीचर या सूरज और बुध या सूरज और चंद्र एक ही गिने जाएंगे। वरना दूसरा बर्षफल इस्तेमाल करें। अगर उपर ज़िक्र करदा बातों से कोई भी दुरूस्त मालूम न होवे यानि हिंदसा नम्बर 1 से न मिले तो कोई और वाकया लेकर वर्षफल बनावें।

तमाम उम्र पर असर (आम बर्ष फल)

अज़ साल ता	असर ग्रह	अज़ साल ता	असर ग्रह	अज़ साल ता	असर ग्रह	अज़ साल ता	असर ग्रह
1 ता 6	सनीचर	28 ता 33	मंगल	59	चंद्र	92 ता 93	सूरज
7 ता 12	राहु	34 ता 35	बुध	60 ता 62	शुकर	94	चंद्र
13 ता 15	केतु	36 ता 41	सनीचर	63 ता 68	मंगल	91 ता 97	शुक्र
16 ता 21	बृहस्पत	42 ता 47	राहु	69 ता 70	बुध	98 ता 103	मंगल
22 ता 23	सुरज	48 ता 50	केतु	71 ता 76	सनीचर	104 ता 105	बुध
24	चंद्र	51 ता 56	बृहस्पत	77 ता 82	राहू	106 ता 111	स्नीचर
25 ता 27	शुकर	57 ता 58	सुरज	83 ता 85	केतु	112 ता 117	राहू
				86 ता 91	बृहस्पत	118 ता 120	केतु

बारह साल बच्चे की किस्मत का कोई ऐतबार नहीं 70 साल के बाद मर्द की अपनी किस्मत का कोई ऐतबार नहीं। बच्चों की किस्मत होगी। वह सतरिया बहतरिया हो गया। 35 साल में तमाम ग्रह चलकर पूरा करते हैं। हर एक ग्रह के असर के साल वग़ैरह सिर्फ़ उस शख्स की उम्र के हिसाब से दिए है।जो शख्स कि लाल किताब मे हर ग्रह की ऐन मुकररा मियाद के अंदर अंदर पैदा हुआ होवे, या दिया हुआा नकशा दिखलाता है कि इल्म सामुद्रिक के हिसाब से हो उम्र में कि हर ग्रह की मुकर्रर है वह हर ग्रह की कब ज़ाहिर होंगी। हर एक आम दुनियावी इँसान पर हर ग्रह का दौरा इस इल्म के साल से और होगा।

हर ग्रह के आम साधारण असर का वकत

(1) हर ग्रह की मुतअल्लिका जानदार चीजों पर उस का आम साधारण असर का वक्त देखने के लिए टेवे वाले की उम्र के साल को उस हिँदसा नम्बर पर तकसीम करें जिस खाना नम्बर में कि वह ग्रह जन्म कुण्डली में बैठा हों। बाकि बचने वाले हिँदसा के खाना नम्बर में ग्रह मुतअल्लिका उस उम्र के साल में अपना असर करेगा। खाना नम्बर 1 में बैठे हुए ग्रह की हालत में उम्र के हिँदसा को 12 पर खाना नम्बर 2 के लिए 11 और खाना नम्बर 3 की हालत में 10 पद तकसीम करें।

बाकि सब घरों के ग्रह अपने खाना नम्बर में बैठे हुए हिंदसों पर तकसीम करें **सिफ़र बाकि बचने या बाकि बचे हुए हिँदसा नम्बर वाला घर ख़ाली होने की हालत में ग्रह मुतअल्लिका जन्म कुण्डली वाले घर में ही असर कर रहा गिना जाएगा।**

मिसालः 1- (अ) मसलन किसी शख्स की उम्र का 25वां साल जारी है। और चंद्र जन्म कुण्डली में खाना नम्बर 3 में बैठा है। 25 के हिँदसा को 3 पर तकसीम किया तो बाकि बचा एक यानी उस टेवे का चंद्र जो नम्बर 3 का जन्म कुण्डली में था, उम्र के 25 वें साल वही असर दे रहा होगा जो बमुजिव "फलादेश" चंद्र खाना नम्बर 10 में दिया है। इसी तरह ही सभी ग्रहों का हाल होगा।

(बे) हर काम के लिए जन्म कुण्डली के खास खास खाने भर मुकर्रर है या कुण्डली के 12 ही खानों का जिन जिन चीज़ों या कामों से ताल्लुक है वह हमेशा के लिए मुकर्रर है (देखो पक्का घर नम्बर 1 ता 12)

अब अगर औलाद का हाल 25वें साल देखना है, तो देखें कि औलाद के लिए कौन सा घर मुकर्रर है, वह है खाना नम्बर 5, अगर जन्म कुण्डली में खाना नम्बर 5 खाली हो तो औलाद के लिए केतु के ग्रह की हालत जो भी बमूजिव बर्षफल हो लेंगे। इस लिए 25 के हिँदसा को 5 पर तकसीम किया तो बाकि बचा सिफर तो औलाद का वही हाल लेंगे जो जन्म कुण्डली के मुताबिक खाना नम्बर 5 का होवे। अगर 26 वें साल देखना पड़े तो औलाद मुतल्लिका खाना नम्बर 5 से 26 को तकसीम किया तो बाकी बचा एक। यानी 26वें साल औलाद का वैसा ही हाल होगा जैस कि इस जन्म कुण्डली के मुताबिक खाना नमबर 1 का है। अगर खाना नम्बर 1 खाली हो तो वह हाल लेंगे जो खाना नम्बर 5 को है।

(2) कुण्डली के 12 खानों में बैठे हुए ग्रहों की बाहमी दृष्टि (नज़र) का दर्जा मुकर्रर है (देखो ग्रह दृष्टि)। उनकी बाहमी दोस्ती दुश्मनी और मियादें भी मुकर्रर है इसीलिए जब कभी दो या दो से ज्यादा ग्रहों का असर उनकी दृष्टि या बाहम मुश्तरका होने की वजह से मिल मिलाकर इकट्ठा हो रहा हो तो उनके असर का वक्त तासीर में अच्छी या बुरी हालत के

दर्ज़ा का फर्क ज़रूर हो जाया करता है।

(3) अ. खाना नम्बर 1 बैसाख नम्बर 2 को जेठ और नम्बर 3 को असाढ़ वगैरह वगैरह इसी तरह ही 12 खानों को 12 महीनों मे बांटा गया, **इस तरह जन्म कुण्डली के जिन जिन घरों मे कोई भी ग्रह बैठा हो तों जब कभी भी उन घरों में कोई भी ग्रह बमूजिव बर्षफल में आएगा वह अपना असर उस खाना नम्बर के लिए मुकर्रर के किए हुए महीने के ज़ाहिर करेगा।** मसलन जन्म कुण्डली के खाना नम्बर 2 में कोई ग्रह बैठा है, जिस के लिए ये मायने हुए कि खाना नम्बर दो का असर जेठ में होगा। अब बर्षफल के मुताबिक किसी भी साल में वहां (खाना नम्बर 2 में) बुध आ गया, जो पिता के लिए गैर मुबारक है (देखो फलादेश बुध खाना नम्बर 2) ऐसी ग्रह चाल के वक्त पिता पर हर वक्त मंदगी न होगी, मगर जेठ के महीने में पिता (बृहस्पत की अश्या व रिश्तेदार मुतल्लिका व बृहस्पत) पर मंदी हवा झोकें ज़रूर साथ होंगे।

(बे) **जन्म कुण्डली के मुताबिक जो घर खाली होंगे उन घरों में बर्षफल के मुताबिक जो ग्रह आऐंगे वह (आए हुए ग्रह) अपना मुकर्ररा फल इस महीना नम्बर में देगें, जिस नम्बर में कि सूरज बर्ष फल के मुताबिक बैठा हो।** मसलन **नम्बर 4 जन्म कुण्डली में ख़ाली हो और बमूज़िब बर्षफल मंगल नम्बर 4 में आ जावे, और जब उस साल बर्षफल के मुताबिक सूरज लगन से खाना नम्बर 8 में हो, तो मंगल नम्बर 4 का दिया हुआ फल जन्म दिन से 8वें महीनें में ज़ाहिर होगा**

(4) बर्ष (उम्र के साल) का शुरू व आखिर देसी महीनों की तारीख के हिसाब से लगे। क्यों कि जन्म कुण्डली और बर्षफल सूरज की तबदीली यकम वैशाख से मानी गई है, और यकम वैशाख अंग्रेजी तारीखों के हिसाब से कई दफ़ा 11 अप्रैल या 12 अप्रैल बल्कि 13 अप्रैल को भी हो जाता है। बाज़ इलाकों में देसी महीनों की पहली तारीख़ भी न तो अंग्रेजी तारीखों के ढंग पर हमेंशा एक ही दिन आती है और न ही विक्रमी संवत् के महीनों से मिलती है इसलिए पक्का उसूल यह है, कि सूरज की बुनियाद पर ईलम ज्योतिष चलाता है और सूरज की तबदीली यकम वैशाख से खाना नम्बर 1 या में मेख राशि में गई है। इसी वजह से बाकि सब महीनों की भी तबदीली हो सकती है।

(ज): हर एक ग्रह भी (सिर्फ अकेला ही अकेला)इसी तरह ही घुमाया जा सकता है, यानि जितने नम्बर खाने में कोई ग्रह जन्म कुण्डली बैठा होवे, देखें कि जिस साल का हाल देखना है वह उम्र का कौनसा साल है। उस उम्र के साल हिंदसे को उस नम्बर पर तकसीम करें, जिसमें कि वह ग्रह बैठा है (जन्म कुण्डली में) बाकि जो हिंदसा बचे, उस खाना नम्बर में उस साल (जितने साल की उम्र का हाल देखा जा रहा है) वह ग्रह असर करता है और बोल रहा होगा। सिफर बाकि बचने की हालत में उसी घर (जन्म कुण्डली में जिस नम्बर पर है) असर दे रहा होगा। मसलन में किसी जन्म कुण्डली में सूरज है खाना नम्बर 11 में और उम्र का 52वां साल ज़ारी है। इसी 52 के हिंदसा को 11 पर तङ्कसीम किया तो बाकि बचे 8 अब 52 साला उम्र में सूरज खाना नम्बर 8 में गिना जाएगा और बाकि ग्रह बदस्तूर (जैसे कि वह जन्म कुण्डली में हो) रख कर सूरज की मुतअल्लिका चीज़ों का असर देखा जाएगा। इसी तरह हर एक ग्रह का हाल सालवार देखते जाएंगें। ख्याल रहे जिस ग्रह के मुतअल्लिका चीज़ों का हाल देखना है, सिर्फ़ उसी ग्रह घुमांएगें, बाकि सब ग्रह बदस्तूर (जन्म कुण्डली के खानों के) होंगे। इसी उसूल पर तमाम ही ग्रहों का अकेला अकेला कर के घुमाकर जो कुण्डली बनाएंगे, वह उस साल की औसत हालत जवाब देगी।

जुज़ दोयमः जन्म कुण्डली जो ख्वाह इल्म ज्योतिष के मुताबिक बनाकर और लगन को खाना नम्बर 1 देकर बाकि खाने पूरे किए हो और ख्वाह इल्म सामुद्रिक से बनाई हुई हो, मुकम्मल करने के बाद आगे ही आगे दी हुई फ़ेहरिस्त के मुताबिक अमल दरआमद करें।

सालाना हालत के लिए दिया हुआ बर्षफल मे

माहवारी हालात के लिए सूरज को चलावें	डिग्री के हालात के लिए चंदर को चलावें
रोज़ाना के हालात के लिए मंगल को चलावें	हफ़्तों के हालात के लिए शुकर को चलावें
घंटों के हालात के लिए बृहस्पत को चलावें	रातों के हालात के लिए राहु को चलावें
मिंटों के हालात लिए सनीचर को चलावें	दिनों के हालात के लिए केतु को चलावें
सैकण्डों के हालात के लिए बुध को चलावे	यानी बर्ष की कुण्डली को घुमावें

बर्षफल का असली असर उसी महीना में होगा जिस खाना नम्बर में कि उस साल सूरज बैठा होवे। मसलन अगर बर्षफल सूरज खाना नम्बर 7 में हो तो सूरज का मंदा असर यानि राजदरबार में खराबियां वगैरह उस साल के (जन्म दिन से) 7वें महीने पैदा होंगी। मगर बाकी सब महीनों में सूरज का असर मंदा नही गिन सकते। इसी तरह ही बाकि सब कुण्डलियों (सालाना माहवारी रोज़ाना वगैरह)में असर होगा।

एक साल के अंदर के हालात के लिए उपर के हिसाब से लिए हुए बर्षफल की कुण्डली के जिस खाने में सूरज बैठा होवे उस खाना को उम्र के महीनें का हिंदसा देकर मुकम्मल करलें।

महीनें का शुरू जन्म वक्त से लेंगे। मसलन 31 की पैदाइश तो दूसरे महीने की 30 तक पूरा महीना होगा सूरज की तबदीली चुंकि यकम बैसाख से शुरू होती है। इसलिए जन्म दिन दरअसल देसी महीनों के हिसाब से भी दुरूस्त गिना जाएगा। अंग्रजी तारीख कें हिसाब से सूरज के असर में फरक हो सकता है।

(2) कुण्डली के 12 खाने दरअसल विक्रमी साल जो (तकरीबन 13 अप्रैल वैशाखी से शुरू होगा) के 12 महीने ही हैं, या युं कहो कि 12 खानों का असर हर महीनें मुंदरजा ज़ैल वक्त पर होगा

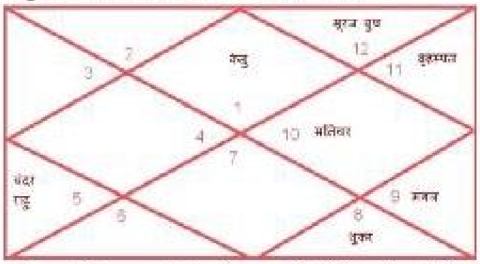
खाना नम्बर	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
असर का महीना	बैसाख	जेठ	असाढ़	सावन	भादों	असौज	कार्तिक	मग्घर	पोह	माघ	फागन	चेत
तकरीबन 10	अप्रैल	मई	जून	जुलाई	अगस्त	सितम्बर	अकतूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च
ता 12	मई	जून	जूलाई	अगस्त	सितंबर	अकतूबर	नवम्बर	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी	मार्च	अप्रैल

एक साल उम्र के बच्चे के लिए भी यही उसूल होगा। मसलन जन्म कुण्डली



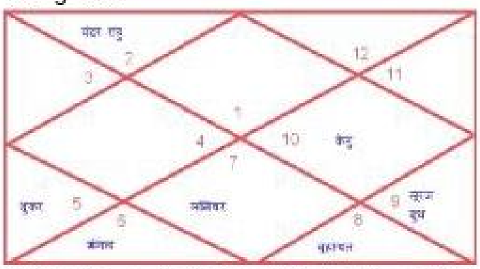
(लगन से हरगिज़) जन्म वक्त 10/5/98 मंगलवार 5-43 बजे शाम 11/5/41 शाम 5-43 बजे के बाद 44वां साल जारी लगन से हर ग्रह (सालाना कुण्डली)

बमुजिब फ़ेहरिस्त बर्षफल बदला गया



5वें महीने का 17वां दिन पहले दिन से 12वें दिन तक 1 से 12 माहवारी कुण्डली में जिस जगह मंगल बैठा है, उस घर को एक से गिन कर 17वें नम्बर यानी नम्बर दिया गया मंगल को।

दिन कुण्डली



घंटों वाली कुण्डली से 25वां मिनट सनीचर को चला गया। - मिनट कुण्डली

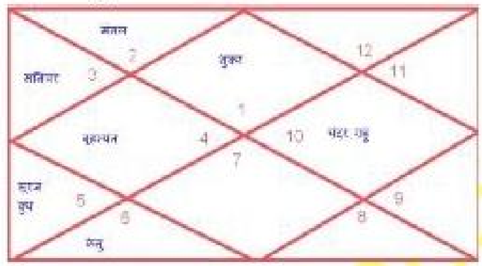


सैकिण्डों वाली कुण्डली से 53 डिग्री पर अब चंद्र को चला गया - डिग्री कुण्डली



11/9/4 शाम 5-43 बजे के बाद 5वां महीना शुरू सूरज बैठा हाने वाले घर को खाना नम्बर 5 दिया गया बर्षफल की कुण्डली को।

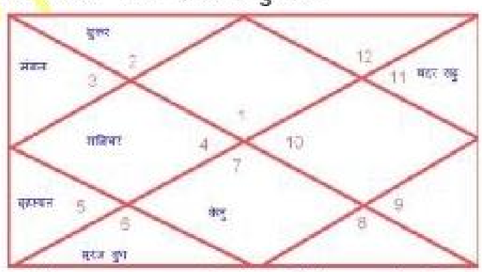
माहवारी कुण्डली



5वें महीने का 23वां घंटा रोज़ाना कुण्डली में बृहस्पत वाले घर को एक गिन कर 23वां नम्बर बृहस्पत को – घंटा कुंडली



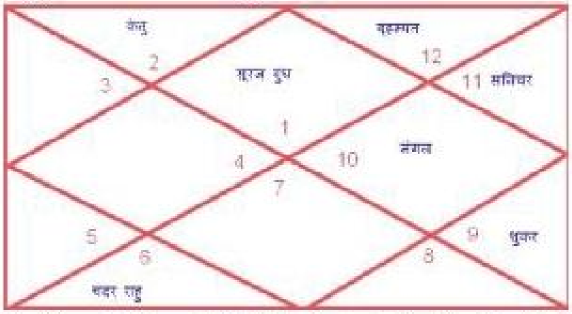
28वां सैकिण्ड- मिनटों वाली कुण्डली से अब बुध को चलाया गया- सैकिण्ड कुण्डली



24वें साल की कुण्डली को रातों के हाल के लिए राहू को चलाया गया यानी उसे खाना नम्बर या अपने हैडकवार्टर में कर दिया।



राहू की तरह अब केतु का खाना नम्बर 2 में दिनों के लिए कर दिया – दिन कुण्डली



फ़ेहरिस्त बर्षफल की पेशानी पर जो हिंदसे लिखे है वह जन्म कुण्डली के खाना नम्बर है, और उम्र के नीचे वह हिंदसे हैं जहां कि उम्र के साल में जन्म कुण्डली के खाना नम्बर का ग्रह चल कर आया हुआ होगा। मसलन जन्म कुण्डली के खाना नम्बर में मंगल है तो उम्र के 16वें साल वही मंगल बर्षफल में खाना नम्बर 12 में होगा वगैरह वगैरह।

फ़ेहरिस्त बर्षफल

उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1	1	9	10	3	5	2	11	7	6	12	4	8
2	4	1	12	9	3	7	5	6	2	8	10	11
3	9	4	1	2	8	3	10	5	7	11	12	6
4	3	8	4	1	10	9	6	11	5	7	2	12
5	11	3	8	4	1	5	9	2	12	6	7	10
6	5	12	3	8	4	11	2	9	1	10	6	7
7	7	6	9	5	12	4	1	10	11	2	8	3
8	2	7	6	12	9	10	3	1	8	5	11	4
9	12	2	7	6	11	1	8	4	10	3	5	9
10	10	11	2	7	6	12	4	8	3	1	9	5
11	8	5	11	10	7	6	12	3	9	4	1	2
12	6	10	5	11	2	8	7	12	4	9	3	1
13	1	5	10	8	11	6	7	2	12	3	9	4
14	4	1	3	2	5	7	8	11	6	12	10	9
15	9	4	1	6	8	5	2	7	11	10	12	3
16	3	9	4	1	12	8	6	5	2	7	11	10
17	11	3	9	4	1	10	5	6	7	8	2	12
18	5	11	6	9	4	1	12	8	10	2	3	7
19	7	10	11	3	9	4	1	12	8	5	6	2

उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
20	2	7	5	12	3	9	10	1	4	6	8	11
21	12	2	8	5	10	3	9	4	1	11	7	6
22	10	12	2	7	6	11	3	9	5	1	4	8
23	8	6	12	10	7	2	11	3	9	4	1	5
24	6	8	7	11	2	12	4	10	3	9	5	1
25	1	6	10	3	2	8	7	4	11	5	12	9
26	4	1	3	8	6	7	2	11	12	9	5	10
27	9	4	1	5	10	11	12	7	6	8	2	3
28	3	9	4	1	11	5	6	8	7	2	10	12
29	11	3	9	4	1	6	8	2	10	12	7	5
30	5	11	8	9	4	1	3	12	2	10	6	7
31	7	5	11	12	9	4	1	10	8	6	3	2
32	2	7	5	11	3	12	10	6	4	1	9	8
33	12	2	6	10	8	3	9	1	5	7	4	11
34	10	12	2	7	5	9	11	3	1	4	8	6
35	8	10	12	6	7	2	4	5	9	3	11	1
36	6	8	7	2	12	10	5	9	3	11	1	4
37	1	3	10	6	9	12	7	5	11	2	4	8
38	4	1	3	8	6	5	2	7	12	10	11	9
39	9	4	1	12	8	2	10	11	6	3	5	7
40	3	9	4	1	11	8	6	12	2	5	7	10
41	11	7	9	4	1	6	8	2	10	12	3	5
42	5	11	8	9	12	1	3	4	7	6	10	2
43	7	5	11	2	3	4	1	10	8	9	12	6
44	2	10	5	3	4	9	12	8	1	7	6	11
45	12	2	6	5	10	7	9	1	3	11	8	4
46	10	12	2	7	5	3	11	6	4	8	9	1
47	8	6	12	10	7	11	4	9	5	1	2	3
48	6	8	7	11	2	10	5	3	9	4	1	12
49	1	7	10	6	12	2	8	4	11	9	3	5
50	4	1	8	3	6	12	5	11	2	7	10	9
51	9	4	1	2	8	3	12	6	7	10	5	11
52	3	9	4	1	11	7	2	12	5	8	6	10

उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
53	11	10	7	4	1	6	3	9	12	5	8	2
54	5	11	3	9	4	1	6	2	10	12	7	8
55	7	5	11	8	3	9	1	10	6	4	2	12
56	2	3	5	11	9	4	10	1	8	6	12	7
57	12	2	6	5	10	8	9	7	4	11	1	3
58	10	12	2	7	5	11	4	8	3	1	9	6
59	8	6	12	10	7	5	11	3	9	2	4	1
60	6	8	9	12	2	10	7	5	1	3	11	4
61	1	11	10	6	12	2	4	7	8	9	5	3
62	4	1	6	8	3	12	2	10	9	5	7	11
63	9	4	1	2	8	6	12	11	7	3	10	5
64	3	9	4	1	6	8	7	12	5	2	11	10
65	11	2	9	4	1	5	8	3	10	12	6	7
66	5	10	3	9	2	1	6	8	11	7	12	4
67	7	5	11	3	10	4	1	9	12	6	8	2
68	2	3	5	11	9	7	10	1	6	8	4	12
69	12	8	7	5	11	3	9	4	1	10	2	6
70	10	12	2	7	5	11	3	6	4	1	9	8
71	8	6	12	10	7	9	11	5	2	4	3	1
72	6	7	8	12	4	10	5	2	3	11	1	9
73	1	4	10	6	12	11	7	8	2	5	9	3
74	4	2	3	8	6	12	1	11	7	10	5	9
75	9	10	1	3	8	6	2	7	5	4	12	11
76	3	9	6	1	2	8	5	11	11	7	10	4
77	11	3	9	4	1	2	8	10	12	6	7	5
78	5	11	4	9	7	1	6	2	10	12	3	8
79	7	5	11	2	9	4	12	6	3	1	8	10
80	2	8	5	11	4	7	10	3	1	9	6	12
81	12	1	7	5	11	10	9	4	8	3	2	6
`82	10	12	2	7	5	3	4	9	6	8	11	1
83	8	6	12	10	3	5	11	1	9	2	4	7
84	6	7	8	12	10	9	3	5	4	11	1	2
85	1	3	10	6	12	2	8	11	5	4	9	7
86	4	1	8	3	6	12	11	2	7	9	10	5
87	9	4	1	7	3	8	12	5	2	6	11	10
88	3	9	4	1	8	10	2	7	12	5	6	11

उम्र	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
11	11	10	9	4	1	6	7	12	3	8	5	2
90	5	11	6	9	4	1	3	8	10	2	7	12
91	7	5	11	2	10	4	6	9	8	3	12	1
92	2	7	5	11	9	3	10	4	1	12	8	6
93	12	8	7	5	2	11	9	1	6	10	3	4
94	10	12	2	8	11	5	4	6	9	7	1	3
95	8	6	12	10	5	7	1	3	4	11	2	9
96	6	2	3	12	7	9	5	10	11	1	4	9
97	1	9	10	6	12	2	7	5	3	4	8	11
98	4	1	6	8	10	12	11	2	9	7	3	5
99	9	4	1	2	6	8	12	11	5	3	10	7
100	3	10	8	1	5	7	6	12	2	9	11	4
101	11	3	9	4	1	6	8	10	7	5	12	2
102	5	11	3	9	4	1	2	6	8	12	7	10
103	7	5	11	3	9	4	1	8	12	10	2	6
104	2	7	5	11	3	9	10	1	6	8	4	12
105	12	2	4	5	11	3	9	7	10	6	1	8
106	10	12	2	7	8	5	3	9	4	11	6	1
107	8	6	12	10	7	11	4	3	1	2	5	9
108	6	8	7	12	2	10	5	4	11	1	9	3
109	1	9	10	6	12	2	7	11	5	3	4	8
110	4	1	6	8	10	12	3	5	7	2	11	9
111	9	4	1	2	5	8	12	10	6	7	3	11
112	3	10	8	9	11	7	4	1	2	12	6	5
113	11	3	9	4	1	6	2	7	10	5	8	12
114	5	11	3	1	4	10	6	8	12	9	7	2
115	7	5	11	3	9	4	1	12	8	10	2	6
116	2	7	5	11	3	9	10	6	4	8	12	1
117	12	2	4	5	6	1	8	9	3	11	10	7
118	10	12	2	7	8	11	9	3	1	6	5	4
119	8	6	12	10	7	5	11	2	9	4	1	3
120	6	8	7	12	2	3	5	4	11	1	9	10

फ़रमान नम्बर 14

टेवे की किस्में

शत्रु[1] बाहम घर 10 में बैठे	टेवा होता ग्रह अंधा हो
सात शनि हो सुरज चौथे	आधा अंधा नहोराता हो
बुध छठे रवि 1-5-11	टेवा बालिग ग्रह होता हो
ख़ाली[2] मुट्ठी, या बुध पापी[3] वां	असर नाबालिग़ देता हो

(बाकि अगले सफ़हः पर)

1.- बुध के साथ बृहस्पत या चंद्र या मंगल हो

2.- मुट्ठी का अंदर से मुराद है कुण्डली का खाना नम्बर 1-7-4-10

3.- पापी-राहु-केतू-सनीचर तीनों ही के लिए एक नाम "पापी" होता है।

शुकर के साथ बृहस्पत या सूरज या चंद्र या राहु हो।
सनीचर के साथ सूरज या चंद्र या मंगल हो।
राहु के साथ सूरज या चंद्र या मंगल या बृहस्पत हो।
केतु के साथ सूरज या चंद्र या चंद्र या मंगल हो।

अंधे ग्रहों के मंदे असर के वक्त केतू का उपाओ या केतु (लड़का,केतू की मुतअल्लिका अश्या) के ज़रिये या केतु (सुबह सादिक) के वक्त किए कामों के फल मुबारक होंगे। एक ही वक्त पर 10 अंधों को बतौर खैरात खुराक तकसीम करने से नम्बर 10 की ज़हर दूर होगी।

11 शनि या सात गुरू का	पाप चंद्र 10 चौथे हो
पिछले जन्म का साधु होगा	धरमी टेवा सुख देवे जो
गुरू शुकर हो टेवे मिलते	चलता जन्म खुद अपना हो
असर जन्म न लेंगे पिछले	साल गुज़रते 12 जो

नहोराता वाले टेवे में नेक ग्रहों के मुतअल्लिका कारेबार रात के वक्त और मंदे ग्रहें के मुतअल्लिका कारोबार दिन के वक्त करने मददगार होंगे।

बालिग़ टेवे का असर खुद बखुद ही होता रहता है। कोई खास कोशिश की जरूरत नहीं। गुरू शुकर मुश्तरका टेवे वाले की हालत में 12 साला उम्र के बाद पिछले जनमों के धक्के या धोके का कोई डर न होगा।

धरमी टेवे वाले हर एक के लिए मददगार और सुख देने वाले हुआ करते है। नाबालिग टेवे वाले को दूसरों की मदद लेकर चलते रहना मददगार होगा क्यों कि इँसान का बच्चा तो नाबालिग से बालिग हो जाएगा मगर ग्रह चाली हालत का नाबालिग टेवा सारी उमर ही नाबालिग़ गिना जाएगा।

टेवा मर्द का प्रबल होगा या कि औरत का

मर्द का टेवा औरत के टेवे को ढांप लेता है मगर कई दफ़ा बाहम बे लिहाज़ी भी हुआ करती हैं, औरत, जब तक शादी न हुई खुद अपने टेवे (औरत के) पर चलती रही और शादी के वक्त मर्द के टेवे का असर दोनों की किस्मत पर हावी (छाया हुआ) होता रहा। कोई ऐसा वक्त भी आ गया कि मर्द चलता बना। (मर गया, छोड़ गया, भाग गया, गुम हो गया, या दो मर्दों की एक ही इकट्ठी औरत बन बैठी वग़ैरह वग़ैरह) तो फिर वही औरत का अपना टेवा किस्मत के मैदान में बहाल हो गया। इसी तरह ही जब तक बच्चा था वाल्दैनी किस्मत का असर और अपने पिछले कर्मों का फल मददगार हुआ।

शादी हुई, औरत का टेवा राशिफल की तरह मददगार होता रहा। औरत चल बसी (मर गई, चली गई,छोड़ गई,गुम हुई या बे-वतन हुई वग़ैरह वग़ैरह) या कोई और साथ साथ (दूसरी शादी माशूका या वैसे ही दुनियावी तमाशबीन की रंग बिरंगियां वगैरह) हुई तो किस्मत के समंदर में कई तरह की हवाओं के झोंके आने लगे। किस्सा कोताह मर्द और औरत की जोड़ी का मिलना और टूटना किस्मत के मैदान में ज़रूर फ़र्क देगा। लेकिन कई दफ़ा वग़ैर टूटे हुए भी या बग़ैर मिले मिलाए भी किस्मत की दो दोरंगियां देखने में आएंगी। लेकिन निहायत ही कम तादाद में, और वह उस वक्त जब ऐसी जोड़ी की खुराक मे शनि की चीज़ों की लहरें या पितृ-ऋण के समंदर का तूफ़ान ठाठें मार रहा होगा।

फ़रमान नम्बर 15

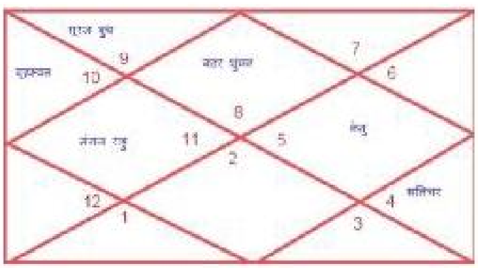
फलादेश

(अकेले अकेले ग्रह)

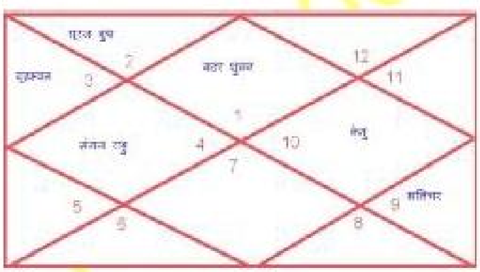
देखने का ढंग

कियाफाः सिर्फ एक ही ग्रह/रेखा का देखकर किया हुआ फ़ैसला कोई मुकम्मल फ़ैसला नहीं होता बल्कि वहम पैदा करने का सबब और धोके में रख लेने वाला हुआ करता है।

(2) तारीख पैदाइश और जन्म वक्त का लिहाज रखते हुए प्राचीन और प्रचलित ज्योतिष के मुताबिक जब जन्म कुण्डली बन चुके तो उसमें से तमाम हिंदसे मिटा देवें और लगन के खाना को हिँदसा नम्बर 1 देकर 12 खानों में तरतीबवार 12 हिंदसे लिखदें। मसलन किसी की पैदाइश 15/2/93 सुबह 5 बजे 6 फागन संवत् 1949 बुधवार हो तो उसकी जन्म कुण्डली हस्बेज़ैल होगी।



(3) अब उस जन्म कुण्डली से फलादेश देखने के लिए सब के सब हिंदसे मिटा दिए और लगन के हिंदसे को(जो इलाका पंजाब में कुण्डली का सबसे ऊपर का चौकोर होता है) हिँदसा नम्बर 1 देकर तरतीबवार 12 हिंदसे सब घरों के दिये मगर ग्रह सब के सब उसी तरह ही लिखे गए सिर्फ़ हिँदसा नम्बर बदला गया, तो वही जन्म कुण्डली हस्बजैल होगी, गो पहली जन्म कुण्डली में लगन के खाना को 8 का हिँदसा दिया है, मगर बाद की कुंडली में उसी खाना को हिंदसा नंबर 1 दिया है। लगन से दूसरे घर को पहले नम्बर 9 मिला था मगर नयी कुण्डली में नम्बर 2 मिला है अब कहेंगे कि सूरज बुध उसके लगन से दूसरे घर में है। इसी उसूल पर फलादेश के लिए सूरज या बुध दोनों का नम्बर 2 (सूरज नम्बर 2 या बुध नम्बर 2 या सूरज बुध नम्बर 2) का दिया हुआ फलादेश देखलें



4.- मुश्तर्का ग्रहों की हालत:- फलादेश के हिस्से में हर एक अकेले अकेले ग्रह में दिया हुआ फल

मुश्तरका ग्रहों की हालत में दिए हुए फलादेश के अलावा होगा। गोया पहले तो हर एक ग्रह का जुदा जुदा दिया हुआ फलादेश देखें फिर मुश्तरका ग्रहों का फल ज़रूर देख लें। क्योंकि बाज़ औकात जुदा जुदा तो भले ही नज़र आते होंगे मगर इकट्ठे हो जाने पर कई दफ़ा नतीजा उलटा ही हो जाता है। मसलन मंगल नम्बर 8 जुदा ही और बुध नम्बर 8 जुदा ही का फलादेश नम्बर 8 के लिए बुरा ही लिखा है। मगर जब दोनों इकट्ठे ही नम्बर 8 में हो तो उत्तम होंगे। इसी तरह ही शुकर नम्बर 9 मंदा होता है, लेकिन जब शुक्र केतु मुश्तरका नम्बर 9 में हों तो, दोनों का मुश्तरका फल निहायत उत्तम होगा।

दूसरी मिसाल: बुध नम्बर 3 या शुकर नम्बर 9 अमूमन मंदे और मंगल बद का असर दिया करते है लेकिन जब जन्म कुण्डली में मंगल बुध मुश्तरका शुकर से पहले घरों में हों तो बुध अपनी नाली की दृष्टि के उसूल पर मंगल और शुकर को बाहम मिला देगा। जिससे टेवे वाला लावलद कभी न होगा। औलाद के योग ख्वाह लाख मंदे हों।

इसी तरह **शुकर केतु मुश्तरका अगर खाना नम्बर 1 में हो जावे तो मर्द नाकाबिले औलाद होगा हालांकि शुकर नम्बर 1 सदाबहार फूल और केतू नम्बर 1 सूरज को ऊंच कर देता है बेशक सूरज टेवे में कैसा ही मंदा बैठा हो।**

(बे) किताब के ग्रहों के मुश्तरका गिरोह (Groups) जो भी उसूल के तौर जायज़ हो सकते हैं, दे दिये गए हैं। ऐसे इकट्ठे दिये हुए ग्रहों के इलावा जो भी यह ग्रह बाकि बचे उसके लिए अलाहदा अलाहदा ग्रहों में दिया हुआ फलादेश दुरूस्त होगा। गर्ज़के **सबसे पहले 7 ग्रह मुश्तरका फिर 6 फिर 5 फिर 3 फिर 2 और आखीर पर अकेले अकेले ग्रहों के हाल में दिया फलादेश देखें।** अपनी ही मर्ज़ी की मनघड़ंत जोड़ियां(Groups)बनाकर फलादेश बना लेना नावाजिब बल्कि वहम का बहाना होगा।

(5)किताब में जगह-बा-जगह हिदायत है कि गोश्त खाना, शराब पीना, झूठ बोलना, बद-दयानती करना बदचलनी का आदी होना वग़ैरह वग़ैरह से ऐसे ऐसे (खास ग्रहों के) टेवे वाले को परहेज़ , से मुराद है कि वह प्राणी (ऐसे टेवे वाला जहां कि किसी काम की मुमानअत(मना करना) की गई है) सिर्फ़ उस नुकस का आदी होगा जिसकी हिदायत की गईं है। जब कहते हैं कि इसका

माता खानदान मातमी हालत में होगा तो मुराद होगी कि मामु तबाह बरबाद और उनकी नसल घटती होगी। ऐसे ही जब कहें कि आप के घर में आप की उम्र सबसे लम्बी होगी तो मुराद होगी तो मुराद होगी कि उसके घर के सब जीव जंतु मर जाएंगे और सब के बाद मरेगा वग़ैरह वग़ैरह। **मतलब असल यह है कि किताब के लफ़्ज़ों को शांति से पढ़े फिर मुहं से निकालें।**

फलादेश की बुनियाद का आम उसूल

कुंडली में घर की मालकीयत के हिसाब से तो कोई और ग्रह हुआ करता है और बहैसियत पक्का घर उसी खाना का मालिक कोई और ग्रह हुआ करता है। या यूँ कहिए कि अगर कुण्डली के हर खाना नम्बर को एक मकान फ़र्ज़ कर लें तो उस मकान की तह ज़मीन में तो उस खाना नम्बर के मालिक ग्रह (बहैसियत घर की मालकियत) की तासीर होगी ओर उसकी इमारत पर उस ग्रह का जो उस खाना के लिए बहैसियत पक्का घर मुकर्रर है असर हो रहा होगा। इस तरह पर उन दो ग्रहों (एक तो तह ज़मीन का मालिक जो घर की मालकीयत की वज़ह से है और दूसरा बहैसियत पक्का घर ताल्लुकदार है) की बाहमी दोस्ती दुश्मनी उस खाना नम्बर के फलादेश में फर्क डालती है। अगर वह दोनों दोस्त हुए तो नेक असर और भी बढ़ गया अगर बाहम दुशमन हुए तो **उस खाना नम्बर का असर दोनों की दुश्मनी की वजह से बरबाद हो गया।** उसके अलावा वह तीसरा ताल्लुकदार और भी बन जाया करता है। यानी वह ग्रह जो उस खाना नम्बर का पहले कहे हुए दो सबबों के हिसाब से कोई ताल्लुकदार नहीं मगर ग्रह चाली गर्दिश के हिसाब से वहां आ निकलता है अब बाहर से आया हुआ ग्रह भी उन दो ग्रहों की बाहमी दोस्ती व दुश्मनी जो उन दो की आपस में थी के अलावा वह खुद अपनी दोस्ती दुश्मनी जो कि उसकी(बाहर से आने वाले की) उन दो ग्रहों (एक तो तह ज़मीन का मालिक और दूसरा मकान की इमारत का मालिक) से है के मुताबिक फलादेश में फर्क डाल देगा। ग़र्ज़ेकि हर खाना नम्बर और हर ग्रह का खानावार फलादेश देखते वक्त इसी उसूल को नज़र में रखना मददगार होगा। मिसाल के तौर पर (1) खाना नम्बर 11 में बहैसियत घर की मालकीयत सनीचर का ताल्लुक है और व बहैसियत पक्का घर बृहस्पत का गिना हुआ है, अब अगर इस खाना नम्बर 11 में सनीचर और बृहस्पत के अलावा राहु आ बैठे तो असर में हस्बेजैल तबदीली होगी। तह ज़मीन का मालिक सनीचर है और यह घर (खाना नम्बर 11) दुनिया का आग़ाज इँसान की आमदन व ज़ाती कमाई

या दुनिया में आना यानि वह वक्त जबकि आग़ाज हुआ या सबसे पहले की जगह या वह जगह जहां से कुल ब्रहामण्ड और तमाम ग्रह वगैरह निकले हुए माने गए हैं वग़ैरह वग़ैरह) का है जिसकी इमारत पर बृहस्पत काबिज़ है। और उसे (खाना नम्बर 11 को) ज़माना के गुरू (बृहस्पत) धरम अदालत के लिए ही मुकर्रर कर दिया है या यूं कहो कि खाना नम्बर 11 की ज़मीन सनीचर की होने के कारण लोहे या पत्थर सफ़ेद संगमरमर (जो सनीचर की चीज़े हैं) की है।

उस पर जो मकान बना है वह जगमग करने वाले दमकते हुए ज़र्द रंग सोने से दुनियावी दिलों को खुश कर रहा हैं। अब इस धर्म अदालत पर राहु शरीफ़ का तस्सलुत(राज) आ हुआ, जो (राहु का ग्रह) सनीचर का एजेंट और सिर्फ बदी का ताल्लुकदार है। सनीचर अगर स्याह रंग मिआमार मिस्त्री था तो बृहस्पत ज़र्द रंग का भण्डारी या सुनार या पूजा पाठी प्राणी धरम देवता ज़माना का गुरू था। उन दो की राजधानी पर राहू का राज आ हुआ है जो ज़माने में स्याह चमकता नीले रंग हाथी की तरह भद्दा सा वजूद ज़मीन के अंदर भूचाल पैदा करता है। नतीजा क्या हूआ। राहु की मेहरबानी से शरारत पर शरारत, सोने की इमारत का रंग स्याह बल्कि नीला हुआ। नीचे से भूचाल आ जाने पर पता न लगा कि वह इमारत गई कहां। धरम पूजा पाठ का निशान न रहा, और हर तरफ़ बदनामी का पहरा हो गया ज़र्द रंग (बृहस्पत) से नीला रंग (राहु) मिलने पर सब्ज़ रंग (बुध खाली खलाव आकाश) पर सनीचर की स्याह रंग ज़हर (ज़हरों का मालिक सनीचर है) का काला रंग चकमने लगा। किस्सा कोताह बृहस्पत नष्ट हुआ। आकाश में राहु का मंदा धुओं भर गया और ज़माने में हर तरफ़ राहु के ज़ालिम जल्लाद की कारवाईयां ज़ोर पर होने लगी **इसीलिए राहु नम्बर 11 में लिखा है कि बृहस्पत कायम करना (या जिस्म पर सोना रखना)) मददगार बल्कि ज़रूरी होगा क्यों कि राहु की मेहरबानी से बृहस्पत नष्ट हो चुका होगा।** उसी ख्याल को ध्यान में रखते हुए राहू का खाना नम्बर 11 में दिया हुआ फलादेश देखने से मालूम होगा कि ऐसा प्राणी अपनी माता के पेट मे आने के लम्हे से ही अपने पिता (बृहस्पत) पर गोली (राहु गोली भी माना है) की तरह हमला करने लग जाता है और बृहस्पत के ज़र्द रंग सोने को पीतल बनाकर उस पर अपना नीले रंग का जंग लगा देता है। इसी तरह राहू बृहस्पत मुश्तरका में दिए हुए फलादेश से ज़ाहिर होगा कि देनों की मिलावट

से मसनुई बुध या खाली आकाश बन जाएगा। बृहस्पत दोनों ही जहां का मालिक है और राहु का नीला आसमान उसकी दो जहानी में हदबंदी करता है। इसीलिए वहां ज़िक्र हुआ है कि राजा फ़कीर होते भी किस्मत दो रंगी होगी यानि राजा होते हुए भी एक दिन फ़कीर या फ़कीर से बादशाह होगा।

ऊपर कहे हुए उसूल पर सब ही ग्रहों का फलादेश मज़मून की असलियत समझा देगा और इस मजमून का वाकिफ हर जगह मौके के मुताबिक हर एक ग्रह का असल फलादेश सही सही ढंग से समझ लेगा।

त

द

न

प

फ

ब

म

व

श